गंगा-पुस्तकमाला का आठवाँ पुष्प

इँगलैंड का इतिहास

[प्रथम भाग]

प्राणनाथ विद्यालंकार

इँगलैंड का इतिहास

[प्रथम भाग]

संपादक

"स्मृति"

उत्तमोत्तम इतिहास-ग्रंथ

अरबी-काव्य-दर्शन	१।)	ग्रीस का इतिहास	१≈)
अलबेरूनी का भारत (२ भाग)	३।)	टॉड-राजस्थान (खड्ग-विलास-प्रेस)	४।)
आयर्लैंड का इतिहास	१॥≈)	प्राचीन भारत	३॥-)
आर्य-कीर्ति	॥)	प्राचीन लेख-मणि-माला	१)
इँगलैंड का इतिहास (२ भाग)	४)	फ़ाहियान का यात्रा-विवरण	१॥)
इटली की स्वाधीनता	॥)	बनारस का इतिहास	-)
इतिहास	≡)	बर्नियर की भारत-यात्रा	२)
इतिहास-समुच्चय (हरिश्चंद्र)	२)	बीसवीं सदी का महाभारत	॥)
इंद्रप्रस्थ अथवा दिल्ली	॥)	भारत का इतिहास	१)
ऐतिहासिक लेख (सचित्र)	।≈)	भारत की प्राचीन झलक (४ भाग)	२)
चीन की राज्य-क्रांति	१॥)	भारत के प्राचीन राज-वंश	३)
जर्मनी का विकास	२)	भारतवर्ष का इतिहास (मिश्रबंधु-कृत; २ खंड)	३॥)
जापान की राजनीतिक प्रगति	२।)	भारतवर्ष का इतिहास (मुसलमानों का शासन)	२)

हिंदुस्थान-भर की हिंदी-पुस्तकें मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ.

गंगा-पुस्तकमाला का आठवाँ पुष्प

इँगलैंड का इतिहास

[प्रथम भाग]

प्रणेता

प्राणनाथ विद्यालंकार

जिससे होता चित्त में स्वाधीनता-विकास,
पढ़िए-सुनिए धन्य वह देशोन्नति-इतिहास।

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय
प्रकाशक और विक्रेता
लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिल्द २॥)] १९७९ [सादी २)
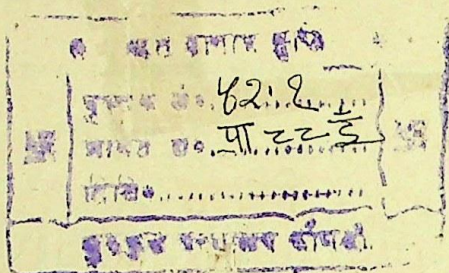
प्रकाशक
श्रीछोटेलाल भार्गव बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०
गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीकेसरीदास सेठ
नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ

निवेदन

कैसे दुर्भाग्य की बात है कि राष्ट्र-भाषा हिंदी में इँगलैंड-जैसे स्वतंत्रता-प्रिय देश का—वर्तमान संसार की प्रधान शक्ति का—एक अच्छा-सा इतिहास भी अभी तक नहीं लिखा गया ! इँगलैंड-जैसे उन्नत देश का इतिहास हम पराधीन भारत-निवासियों के लिये कितना शिक्षाप्रद, कितना उपकारक और कितना सच्चा मार्ग-दर्शक हो सकता है, यह कहना अनावश्यक है। लेकिन तो भी हम भारत-वासी शासन-पद्धति में इँगलैंड को अपना आदर्श नहीं समझ सकते—ऐसा समझना हमारा भारी भ्रम है; क्योंकि भारतवर्ष राष्ट्रात्मक देश है और इँगलैंड एकात्मक। शासन-पद्धति तो हम स्विट्ज़रलैंड, अमेरिका और फ़्रांस से कुछ-कुछ सीख सकते हैं। परंतु शासन-पद्धति का उदय स्वतंत्रता प्राप्त होने पर ही हो सकता है। अब प्रश्न यह है कि वह कौन-सी स्वतंत्रता है, जिसकी प्राप्ति में जनता को यत्नशील होना चाहिए—संपूर्ण जातियों को अथक परिश्रम करना चाहिए ? इसका उत्तर है 'आर्थिक स्वतंत्रता'। आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करके सब प्रकार की स्वतंत्रता

प्राप्त की जा सकती है, और इस रहस्य का उद्घाटन यदि कोई देश कर सकता है, तो वह एकमात्र इँगलैंड ही है।

दासता की विकट बेड़ियों में जकड़ी हुई—परदेशियों के प्रबल पैरों से कुचली हुई—जातियों के लिये इस 'आर्थिक सफलता'-रूपी हथियार का आविष्कार-कर्ता एकमात्र इँगलैंड ही है। अतः स्वतंत्रता-प्रिय आर्य-जाति के लिये यह 'इँगलैंड का इतिहास' बहुत कुछ लाभदायक हो सकता है। अँगरेज़ी की अनेक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुस्तकों को पढ़कर, उनके सहारे, इस ग्रंथ-रत्न की रचना की गई है। भारत-वासियों के उपयोग की दृष्टि से तो इसके जोड़ का इँगलैंड का इतिहास हिंदी-भाषा में नहीं मिल सकता। निस्संदेह यह ग्रंथ हिंदी-साहित्य के गौरव को बढ़ानेवाला है।

इस ग्रंथ के हमने दो भाग कर दिए हैं। पहला भाग आपके कर-कमलों में है। दूसरा छप रहा है। वह दिसंबर, १६२२ तक तैयार हो जायगा। प्रत्येक लाइब्रेरी और पुस्तकालय में इसकी एक-एक प्रति रहनी चाहिए।

हमारी बड़ी इच्छा थी कि हम इतिहास का यह संस्करण सर्वांग-सुंदर और सचित्र निकालें। परंतु कई अनिवार्य कारणों से इस बार हम वैसा नहीं कर सके। एक

बार छपना शुरू होकर बीच में कुछ समय के लिये बंद हो गया था । अर्से के बाद फिर छपना शुरू हुआ, और अब यह पुस्तक प्रकाशित की जाती है । अगर हिंदी-भाषा-भाषियों ने उपयोगिता का ख़याल करके इस पुस्तक का आदर किया, तो हम शीघ्र ही इसका सचित्र संस्करण उनकी सेवा में लेकर उपस्थित होंगे ।

प्रिय पाठकों को यह जानकर और भी प्रसन्नता होगी कि इस उत्कृष्ट और अपूर्व ग्रंथ को हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग ने अपनी मध्यमा-परीक्षा के कोर्स में नियत किया है । कॉलेज के विद्यार्थियों के लिये भी यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी होगा ।

लखनऊ
१ । ११ । २२

संपादक

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

नार्मन-विजय से पूर्व तक ब्रिटन का इतिहास १७

प्रथम परिच्छेद

ब्रिटन में आंग्लों का आगमन [प्रारंभ से ९८७ तक] १०

(१) सालिटक-ब्रिटन का आरंभिक इतिहास

(२) रोमन-ब्रिटन ... २०

(३) रोम का ब्रिटन की सभ्यता में भाग २३

(४) आंग्ल-जाति का दक्षिणीय ब्रिटेन पर आक्रमण ... २५

द्वितीय परिच्छेद

सप्त-राज्यों का इतिहास ३२

(१) साम्राज्य की ओर प्रवृत्ति ...

(क) नार्थब्रिया ... ३३

(ख) वेसेक्स (Wessex)

(ग) मर्सिया ... ३४

(घ) अवशिष्ट राज्य ...

(२) ईसाई-मत का प्रचार ... ३५

(३) डेनिश आक्रमण से पहले तक इँग-
लैंड की राजनैतिक अवस्था ४०

तृतीय परिच्छेद
वेस्ट-सैक्संज़ और डेंज़ का आक्रमण ... ४२
(१) वेस्ट-सैक्संज़ का समुत्थान ...
(२) डेंज़ का भिन्न-भिन्न प्रदेशों को
बसाना ४४
(३) अल्फ्रेड का वेसेक्स पर
आधिपत्य ४६
(क) राजनैतिक सुधार ... ४८
(ख) सामाजिक सुधार ... ४९
(४) अल्फ्रेड के उत्तराधिकारियों का शासन ५०
(क) एडवर्ड-दि-एल्डर (८९९-९२४)
(ख) एथलस्टन (९२४-९४०) ... ५१
(ग) एडमंड (९४०-९४६) ... ५२
(घ) एड्रूड (९४६-९५५)
(ङ) एड्वी (९५५-९५९) ... ५३
(च) शांति-प्रिय एड्गर (९५९-९७५)
(छ) एडवर्ड (९७५-९७८) ... ५४
(ज) एथलूरड प्रमादी (९७८-१०१६) ५५
(५) इँगलैंड में डेनिश-राज्य ... ५६
(क) नट (१०१७-१०३५) ...

(ख) हैरल्ड तथा हार्थनट
(१०३५-१०४२) ... ५७

चतुर्थ परिच्छेद

एडवर्ड और हैरल्ड का राज्य और इँगलैंड पर
नार्मंज़ का आक्रमण ५८

(१) धर्मात्मा एडवर्ड (१०४२-१०६६)

(२) हैरल्ड का शासन (१०६६) ... ६१

(३) नार्मन-विजय से पूर्व आंग्ल सभ्यता... ६२

१—सामाजिक अवस्था ६२

२—राजनैतिक अवस्था ६४

(क) राजा

(ख) शासन-विभाग

(ग) नियम तथा न्याय-विभाग ... ६५

(घ) चर्च (Church) ... ६६

३—प्राचीन आंग्लों के मुख्य-मुख्य राजा ६७

द्वितीय अध्याय

नार्मन और एंजविन राजा ... ६९

प्रथम परिच्छेद

विजयी विलियम प्रथम (१०६६-१०८७)

(१) नार्मंडी तथा नार्मंज़

१—विलियम विजेता ... ७०

२—विलियम तथा नार्मंडी ... ७१
(२) इँगलैंड तथा विजयी विलियम ... ७२
१—विद्रोह ... ७३
२—राज्य-प्रबंध ... ७६
३—राज्य तथा चर्च ... ७९

द्वितीय परिच्छेद
विलियम रूफस द्वितीय (१०८७-११००) ८२
(१) विद्रोह ... ८४
(२) विलियम के अत्याचार ८५
(३) विलियम तथा चर्च ८७
(४) विलियम तथा विदेशी युद्ध ८९

तृतीय परिच्छेद
हैनरी प्रथम (११००-११३५) ... ९०
(१) विद्रोह ... ९१
(२) हैनरी प्रथम तथा चर्च ९२
(३) राज्य-प्रबंध ... ९२
(४) हैनरी तथा विदेशी युद्ध ९३

चतुर्थ परिच्छेद
स्टीफ़न (११३५-११५४) ... ९६
(१) भ्रातृ-युद्ध ... ९८
(२) लिंकान का युद्ध और वालिंगफ़ोर्ड की संधि ... १०१

पंचम परिच्छेद

हैनरी द्वितीय (११५४-११८९) ... १०३
(१) हैनरी द्वितीय तथा चर्च ... १०४
(२) हैनरी द्वितीय तथा राज्य-नियम १०१
(३) हैनरी द्वितीय और विदेशी युद्ध
(क) वेल्ज़ और स्कॉटलैंड ... ११४
(ख) आयर्लैंड ११५
(ग) योरपियन युद्ध ... ११७
(घ) हैनरी द्वितीय का साम्राज्य ... ,,
(४) हैनरी द्वितीय का परिवार ... ११८

षष्ठ परिच्छेद

सिंहराज रिचर्ड तथा जोन लैक्लैंड
(१) सिंहराज रिचर्ड (Reechard I cdeur Debion) (११८९-११९९) १२०
(२) जोन लैक्लैंड १२३
१—जोन और विदेशी युद्ध ... १२४
(क) नार्मंडी और अंजो का खोना १२५
(ख) लारोचआमोन तथा वाविनस के युद्ध (१२१४) ... १२६
२—जोन और चर्च १२६
३—जोन और महास्वतंत्रता-पत्र ... १२८

सप्तम परिच्छेद

नार्मन-ब्रिटन की सभ्यता

(१) नार्मन-विजय के लाभ ... १३२
(२) राजनैतिकावस्था १३३
(क) राजा, महासभा और राज्याधिकारी ,,
(ख) स्थानीय शासन ... १३४
(ग) ग्राम और उनका शासन ...
(३) सामाजिकावस्था ... १३५
(क) जनता ... ... ,,
(ख) निवास के ढंग ... १३७
(ग) भोजन और वेश ...
(४) आर्थिकावस्था ... ...
(क) व्यापार ... ...
(ख) नगर १३९
(५) शिक्षा ... ...
(६) नार्मन और एंजविन राजा ... १४१

तृतीय अध्याय

आंग्लों में जातीयता का उदय (१२१६-१३९९)

प्रथम परिच्छेद

हैनरी तृतीय (१२१६-१२७२) ... १४३
(१) हैनरी तृतीय तथा विदेशी मित्र १४५
(२) आंग्ल-जाति की उन्नति ... १४७

(क) मैड पार्लियामेंट (१२५८) १४८
(ख) बैरन-युद्ध (१२६३) ... १४९
(ग) सीमन की पार्लियामेंट (१२६५) १५१

द्वितीय परिच्छेद

एडवर्ड प्रथम (१२७२-१३०७) ... १५३
(१) एडवर्ड प्रथम और विदेशी युद्ध
(क) वेल्ज़ का प्रथम युद्ध ... १५४
(ख) स्कॉटलैंड-विजय और आदर्श पार्लियामेंट १५५
(२) एडवर्ड प्रथम और राज्य-नियम १६०

तृतीय परिच्छेद

एडवर्ड द्वितीय (१३०७-१३२७) ... १६४
(१) स्कॉटलैंड से युद्ध... ... १६५
(२) ह्यूग डिस्पंसर्ज़ (Hugh Despensers) १६६

चतुर्थ परिच्छेद

एडवर्ड तृतीय (१३२७-१३७७) ... १६८
(१) एडवर्ड तृतीय तथा विदेशी युद्ध
(क) स्कॉटलैंड तथा हेल्डन हिल का युद्ध १७१
(ख) शत-वार्षिक युद्ध के कारण... १७२
(ग) शत-वार्षिक युद्ध का प्रारंभ ... १७३
(२) एडवर्ड तृतीय तथा चर्च ... १७९

(३) इँगलैंड की सामाजिक तथा राजनैतिक अवस्था १८०

पंचम परिच्छेद

रिचर्ड द्वितीय (१३७७-१३९९) ... १८३

(१) कृषक-विद्रोह (१३८१) ... १८४

(२) स्वेच्छाचारी बनने के लिये राजा का यत्न १८७

षष्ठ परिच्छेद

तेरहवीं और चौदहवीं सदी में ब्रिटन की सभ्यता १९१

(१) राजनैतिक अवस्था

(क) राजा की शक्ति

(ख) आंग्ल-प्रजा की शक्ति ... १९२

(ग) लॉर्ड-सभा १९३

(घ) लोक-सभा ... ...

(ङ) पार्लियामेंट की शक्ति ... १९४

(च) प्रिवी-काउंसिल ... १९५

(छ) न्यायालय ... ...

(२) धार्मिक अवस्था १९६

(३) साहित्यिक अवस्था ... १९८

चतुर्थ अध्याय

लंकास्टर और यार्क-वंश १९९

प्रथम परिच्छेद
लंकास्टर-वंश का राज्य
(१) हैनरी चतुर्थ (१३६६-१४१३)
(२) हैनरी पंचम (१४१३-१४२२) ... २०३
(३) हैनरी षष्ठ (१४२२-१४६१) ... २०७
द्वितीय परिच्छेद २१६
यार्क-वंश का राज्य ... ...
(१) एडवर्ड चतुर्थ (१४६१-१४८३)
(२) एडवर्ड पंचम (१४८३-एप्रिल-जून) २१८
(३) रिचर्ड तृतीय (१४८३-१४८५) ... २१६
तृतीय परिच्छेद २२०
पंद्रहवीं सदी में ब्रिटन की सभ्यता
(१) राजनैतिक अवस्था
(२) आर्थिक अवस्था ... २२२
(३) साहित्यिक अवस्था ... २२४

पंचम अध्याय

ट्यूडर-वंश का राज्य २२८
प्रथम परिच्छेद
हैनरी सप्तम (१४८५-१५०६) ...
(१) हैनरी सप्तम तथा विद्रोह ...
(क) लैंबर्ट सिम्नल का विद्रोह (१४८७) २२६
(ख) पार्किन वार्विक का विद्रोह (१४६२) २३०

(२) हैनरी सप्तम की विदेशी नीति ... २३२
(क) ईटाप्ले की संधि ...
(ख) व्यापार की निकृष्ट तथा उत्कृष्ट संधि ... ...
(ग) योरप में राष्ट्रीय शक्ति-संतुलन २३३
(३) हैनरी सप्तम की गृह्य नीति ... २३५

द्वितीय परिच्छेद
हैनरी सप्तम के समय में इँगलैंड की दशा ... २३७
(१) राजनैतिक दशा ... ...
(२) सामाजिक अवस्था ... २३८
(३) विद्योन्नति २४३

तृतीय परिच्छेद
हैनरी अष्टम तथा वूल्ज़े (१५०९-१५२९)... २४७
(१) हैनरी अष्टम तथा योरपीय शक्ति-संतुलन २४८
(२) इगलैंड की अंतरीय अवस्था ... २५२
(क) विद्योन्नति २५४
(ख) धर्मोन्नति २५५
(ग) कैथराइन का तलाक़ और वूल्ज़े का अधःपतन ... २५६

चतुर्थ परिच्छेद
हैनरी अष्टम और धर्म-सुधार ... २५८

(१) हैनरी का स्वेच्छाचारित्व ...
(२) हैनरी का धर्म-परिवर्तन ... २६१
(३) हैनरी के विवाह तथा राज्य-प्रबंध २६४
(क) विवाह ... ...
(ख) राज्य-प्रबंध २६५

पंचम परिच्छेद
एडवर्ड षष्ठ (१५४७-१५५३) ... २६७
(१) सोमर्सट का राज्य-प्रबंध ... २६८
(२) सोमर्सट के धार्मिक सुधार ... २७०
(३) डड्ले का राज्य-प्रबंध तथा धार्मिक संशोधन २७४
(४) नार्थंबरलैंड का राज्य के लिये यत्न २७६

षष्ठ परिच्छेद
मैरी (१५५३-१५५८) २७८
(१) मैरी का कैथोलिक मत के प्रचार में यत्न २७९
(२) मैरी का प्रोटेस्टेंट लोगों को जीते-जी जलाना २८१
(३) मैरी की विदेशी नीति ... २८४
फ़ांस तथा जर्मनी का युद्ध (१५५२-१५५९)
इँगलैंड का फ़ांस से युद्ध

सप्तम परिच्छेद

एलिज़बेथ तथा रानी मैरी (१५५८-१५८७)

(१) एलिज़बेथ का राज्याधिरोहण ... २८५

(२) एलिज़बेथ का धार्मिक परिवर्तन २८६

(३) योरप में धार्मिक परिवर्तन ... २६८

(४) रानी मैरी तथा रानी एलिज़बेथ ३०२

(५) योरप में धार्मिक युद्ध ... ३१०

(६) इँगलैंड में कैथोलिक मत की नई लहर ३१३

अष्टम परिच्छेद

एलिज़बेथ के अंतिम वर्ष (१५८७-१६०३)

(१) इँगलैंड का योरप के राष्ट्रों से संबंध ३१८

(२) एलिज़बेथ के समय में समुद्र-यात्रा ३२४

(३) इँगलैंड और स्पेन का युद्ध ... ३३२

(४ एलिज़बेथ और आयरलैंड ... ३४१

(५ एलिज़बेथ के अंतिम दिन ... ३४५

नवम परिच्छेद

ट्यूडर-काल में इँगलैंड की सभ्यता

(१) इँगलैंड की राजनीतिक दशा ... ३४८

(२) इँगलैंड की सामाजिक दशा ... ३५८

(३) साहित्यिक दशा... ... ३६१

(४) ट्यूडर राजों का वंश-वृक्ष ... ३६४

इँगलैंड का इतिहास

प्रथम अध्याय

नार्मन-विजय से पूर्व तक ब्रिटन का इतिहास

प्रथम परिच्छेद

ब्रिटन में आंग्लों का आगमन [प्रारंभ से ५६७ तक]

(१) साल्टिक-ब्रिटन का आरंभिक इतिहास

ईसा की उत्पत्ति से पहले इँगलैंड की वास्तविक अवस्था क्या थी, इसका कोई प्रामाणिक इतिहास नहीं मिलता। भू-गर्भ तथा शब्द-शास्त्र आदि शास्त्रों के वेत्ता बतलाते हैं कि ब्रिटन का द्वीप चिर-काल से जन-समाज का निवास-स्थान था। गुफाओं और नदियों में पत्थरों के ऐसे-ऐसे हथियार मिले हैं, जिनको देखकर आश्चर्य होता है। पत्थरों के सदृश ही हड्डियों के हथियार तथा उन पर घोड़े आदि की तसवीरें बनी हुई मिली हैं। जिस युग के ब्रिटिश-जन-समाज में उल्लिखित प्रकार के अस्त्रादि

का प्रयोग होता था, उसको आंग्ल-इतिहास-ज्ञ लोग 'प्राचीन-प्रस्तर-युग' (Old Stone Age) के नाम से पुकारते हैं। इसके अनंतर आंग्ल-इतिहास में 'नव-प्रस्तर-युग' (New Stone Age) का प्रारंभ होता है। इस युग के लोगों की सभ्यता तथा आकृति स्पेन के प्राचीन लोगों से बहुत कुछ मिलती थी। अतः आंग्ल-इतिहास-ज्ञ इन्हें 'ईबेरियंज़' नाम भी देते हैं। ईबेरियंज़ पर 'सल्ट-जाति' के दो संघों ने भिन्न-भिन्न समयों में आक्रमण किया और वे ब्रिटन में आकर बस गए। प्रथम संघ के लोगों को 'गायडेलिक' या 'गेलिक' और द्वितीय संघ के लोगों को 'ब्रिथानिक' नाम से पुकारा जाता है। ब्रिथानिक ही ब्रिटंज़ के पूर्वज हैं। इन्होंने पूर्ववर्ती जातियों को पहाड़ी प्रदेशों में भगा दिया और स्वयं इँगलैंड के दक्षिण तथा पूर्व में बस गए। इनके समय में इँगलैंड ने सभ्यता में अच्छी उन्नति की। साल्टिक-लोग उत्तमोत्तम वस्त्र पहनते और सोने व काँच के आभूषण धारण करते थे। पत्थरों के स्थान पर ये पीतल आदि धातुओं के अस्त्र-शस्त्र व्यवहार में लाते थे। इस जाति के मनुष्यों का स्वभाव झगड़ालू था। अपने नेता को छोड़कर अन्य किसी जाति के नेता के आधिपत्य में रहना इनको स्वीकृत न था। ये रथों पर चढ़कर, कवच तथा अन्य अस्त्र-शस्त्रों को धारण करके युद्ध करते थे। इनके पुरोहितों का नाम

'ड्रुयिड्ज़' था, जो भारतीय ब्राह्मणों से बहुत ज़्यादा मिलते थे।

'ड्रुयिड्ज़' लोगों के पास कुछ पुस्तकें थीं, जिनमें प्राचीन इतिहास तथा नियम आदि का उल्लेख विशेष रूप से था। परंतु ब्रिटंज़ के पास इस तरह की पुस्तकें आदि कुछ भी न थीं। फ़्रांस के दक्षिण में 'मैसीलिया' नाम का एक यूनानी उपनिवेश था, जो आज कल मार्सिलीज़ (Marseillies) नाम से पुकारा जाता है। इस उपनिवेश के एक प्रसिद्ध गणित-ज्ञ 'पीथियस' (Pytheas) ने पहले-पहल (३३० बी० सी०) ब्रिटन में प्रवेश किया और उसके विषय में बहुत कुछ लिखा। शोक की बात है, उसकी ब्रिटन-संबंधी पुस्तक सर्वथा लुप्तप्राय है। उस पुस्तक से अन्य ऐतिहासिकों ने जो इधर-उधर उद्धृत किया है, उसीसे जो कुछ पता लगा है, वह हम ऊपर लिख चुके हैं।

पीथियस की यात्रा के बाद ही मध्य-सागरस्थ यूनानी उपनिवेशों का ब्रिटन से व्यापार प्रारंभ हो गया। बहुत-से 'गाल्ज़' (फ़्रांसीसियों के पूर्वज) ब्रिटन में जा बसे और उन्होंने वहाँ की सभ्यता के बढ़ाने में बहुत बड़ा भाग लिया। ब्रिटन से टीन, अंबर, जस्ता तथा मोती आदि यूनान में बिकने के लिये जाने लगे। यह व्यापार इतना बढ़ गया कि ब्रिटन में स्वर्ण की मुद्राएँ तक बनाई जाने लगीं। पीथियस की यात्रा के ३०० वर्ष

बाद तक ब्रिटन यूनानी सभ्यता ग्रहण करता चला गया। इसके उपरांत ब्रिटन का भाग्य रोमंज़ लोगों के हाथ में चला गया, जिसका इतिहास इस प्रकार है।

(२) रोमन-ब्रिटन

(५५ बी० सी०—४४६ ए० डी०)

ईसा की उत्पत्ति से एक शताब्दी पहले रोम ने मध्य-सागरस्थ सब प्रदेशों को जीत लिया। इस विजय का अंतिम स्थान ५८ से ५० बी० सी० तक 'गाल' नाम का प्रदेश रहा। संसार-प्रसिद्ध योद्धा 'गेयस जूलियस सीज़र' ने गाल को पूर्ण रूप से जीता और रोमन-झंडे को इँगलिश-चैनल तक पहुँचा दिया।

रोम के शत्रु गालिश लोगों ने ब्रिटन में शरण ली और रोमंज़ का गाल में ठहरना कठिन कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि ५५ बी० सी० में सीज़र ने ब्रिटन पर आक्रमण कर दिया। सेना के कम होने से सीज़र ब्रिटन को पूर्ण रूप से विजय नहीं कर सका और कुछ ही समय बाद पुनः गाल में लौट आया। ५४ बी० सी० में एक बड़ी सेना के साथ सीज़र ने ब्रिटन पर फिर चढ़ाई की।

ब्रिटन के राजा 'कैसीवैलानस' (Cassivellaunus) ने सीज़र को ब्रिटन-विजय करने से रोकना चाहा, परंतु अपने ही देश की दूसरी जाति के नेता 'ट्रीनावंटस' (Trinovantes) को सीज़र से मिलता हुआ देखकर वह

घबरा गया और सीज़र का मित्र बन गया। कुछ ब्रिटिश-संघों ने रोमंज़ को कर देना स्वीकार किया, और ज़मानत के तौर पर बहुत कुछ दिया। इसके बाद सीज़र अपने प्रदेश को लौट गया और उसने ब्रिटन पर फिर आक्रमण नहीं किया। सीज़र के ब्रिटन-विजय के ६० वर्षों तक रोमन सेनाए ब्रिटन में नहीं दिखलाई दीं। ट्रिना-वंटस जीवन-पर्यंत रोमंज़ का मित्र बना रहा, परंतु उसके उत्तराधिकारियों ने उसकी उस नीति को नहीं पकड़ा। 'सम्राट् कुनोबेलिनस' (Cunobelinus) के समय में ब्रिटन की शक्ति बहुत बढ़ी। सम्राट् ने रोमन विधि से स्वर्ण-मुद्राएँ बनवाईं और उनको अपने देश में प्रचलित किया। रोमंज़ के साथ भी उसने शत्रुता का व्यवहार करना प्रारंभ कर दिया। इस पर उसके एक भाई ने रोमंज़ से मिलना चाहा, परंतु वह ऐसा बुरा काम करने से पहले ही काल के गाल में पहुँच गया। सम्राट् के पुत्र 'कैरक्टकस' (Caractacus) ने पूर्ण रूप से अपने पिता का अनुसरण किया और रोमंज़ को काफ़ी तौर से तंग किया।

इन सब घटनाओं की सूचना रोमन-सम्राट् 'क्लाडियस' को मिली। सन् ४३ में क्लाडियस ने 'आलस प्लाटियस' को एक प्रबल सेना के साथ ब्रिटन-विजय के लिये रवाना किया। यह हंबर तथा सेवर्न नदी के मध्य का संपूर्ण

प्रदेश जीतकर सन् ४७ में रोम लौट गया । इसके अनंतर 'आस्टोरियस् स्कापुला' (Ostorius Scapula) ने वेल्ज़ तथा यार्कशायर का कुछ प्रदेश जीता और पूरी तौर से कैरक्टकस का दमन किया । इसने ब्रिटिश-जनता को अधीन रखने के लिये देवा, विरोकोनियम तथा इसकासिलूरम पर बहुत बड़ी सेना रक्खी ।

'स्यूटोनियस पालिनस' (Suetonius Paullinus) नामक रोमन-गवर्नर (५९-६२ बी० सी०) ने ब्रिटन के पहाड़ी प्रदेशों को जीता और 'सोना' तथा 'आंग्लसी' नाम के द्वीपों को अपने अधीन किया । इसी बीच में मृत राजा 'प्रसुटेगस' (Prasutagos) की विधवा-रानी 'वोडी-सिया' से रोमन-शासकों ने घृणित तथा अत्याचार-पूर्ण व्यवहार किए । इसका परिणाम यह हुआ कि वोडी-सिया ने ब्रिटन की स्वतंत्रता के लिये अंतिम प्रयत्न किया और जब वह पूरी तौर पर सफल न हो सकी, तो उसने विष खाकर आत्म-हत्या कर ली ।

पालिनस के बाद 'जूलियस अग्रिकोला' (७८ से ८५ बी० सी०) ब्रिटन का शासन करने लगा । उसने 'यार्क' नगर को एक 'छावनी' का रूप दिया । यार्क से आगे बढ़कर उसने स्कॉटलैंड के कुछ भाग को भी जीता और फ़र्थ आव् फ़ोर्थ से क्लाइड तक संपूर्ण भूमि में क़िलों की एक क़तार इसलिये बनवाई कि ब्रिटन के उत्तरीय प्रदेश में रोमन-

आधिपत्य स्थिर रहे। परंतु उसके अनंतर उत्तरीय प्रदेश रोमंज़ के हाथ में नहीं रहा। सम्राट् 'हेड्रियन' ने टीन की खाड़ी से साल्वे की खाड़ी तक एक नवीन दुर्ग-श्रेणी बनवाई, जो कि चिर-काल तक रोमन-शासन की स्थिरता बनाए रही।

(३) रोम का ब्रिटन की सभ्यता में भाग

ब्रिटन को अपने अधीन करके रोम ने उसे सभ्य बनाने का यत्न किया। स्थान-स्थान पर पक्की सड़कें बनाईं। इनमें से मुख्य-मुख्य सड़कों के नाम ये हैं—

(१) वाल्टिंग स्ट्रीट (Walting Street)
- (क) डोवर से लंदन
- (ख) वेरुलेमियम से विरोकोनियम
- (ग) विरोकोनियम से इस्का और देवा
- (घ) देवा से सिगोंटियम
- (ङ) देवा से यार्क

(२) अर्माइन स्ट्रीट (Ermine Street)
- (क) यार्क से लिंकान
- (ख) केमुलोडिनम से लंदन

(३) फ़ॉस वे (Fosse Way) लिंडम से एक्सीटर (Exceter)

(४) एक्मैन स्ट्रीट (Akeman Street) केमुलोडिनम से वेरुलेमियम

मुख्य-मुख्य सड़कों के किनारे बड़े-बड़े नगर स्थापित हो गए। जंगल काटकर और दलदलों को सुखाकर उस भूमि पर खेती की गई। इसका परिणाम यह हुआ कि ब्रिटन से सारे योरप में अन्न जाने लगा। रोमन-व्यापारियों से ब्रिटिश-जनता ने लाटिन-भाषा ग्रहण की। ब्रिटिश भूमि-पतियों की लाटिन-भाषा सीखने में विशेष प्रवृत्ति हो गई।

चौथी सदी में रोम में ईसाई-मत फैल गया, परंतु ब्रिटन में वह चौथी सदी से पहले ही फैल चुका था। दृष्टांत-स्वरूप निम्न-लिखित संतों के नाम दिए जाते हैं, जिन्होंने ईसाई-मत को ब्रिटन में फैलाया—

(१) सेंट अल्बान (St. Alban)
(२) सेंट पैट्रिक (St. Patrick)
(३) सेंट निनियन (St. Ninian)

'डायोक्लीशियन' और 'कांस्टैंटाइन' ने ब्रिटिश-द्वीप के शासन में काफ़ी सुधार किए; परंतु इन सुधारों से भी ब्रिटन चिर-काल तक रोम के आधिपत्य में न रहा। इसका कारण रोम का स्वयं अशक्त होना था। 'पिक्ट्स' तथा 'स्काट्स' नाम की जातियों ने ब्रिटन पर आक्रमण करना आरंभ किया। इन जातियों के आक्रमणों से ब्रिटन को बचाने के लिये रोमन-शासकों ने बहुत-से नवीन दुर्ग बनाए, जिनके नाम निम्न-लिखित हैं—

(१) रिचबर्रो (Richborough)

(२) पिवंसी (Pevensey)

(३) बर्ग कैस्ल (Burgh Castle)

(४) हेड्रियन की दुर्ग-श्रेणी (Wall of Hadrian)

४१० ए० डी० में रोम पर 'अलारिक दि गोथ' ने आक्रमण किया। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम के ब्रिटन से सारे संबंध टूट गए और ब्रिटन की रक्षा करने से उसने अपना हाथ खींच लिया। पिक्ट्स तथा स्काट्स लोगों ने ब्रिटन पर आक्रमण किया और वे स्थान-स्थान पर बस गए। इन असभ्य जातियों ने ब्रिटन से रोमन-सभ्यता को उठा दिया और उसको पुनः असभ्यावस्था में लाने का यत्न किया। पाँचवीं सदी के मध्य भाग तक ये लोग ब्रिटन में बसते रहे। इसके अनंतर ब्रिटन पर एक और जाति ने आक्रमण किया, जिसका इतिहास इस प्रकार है—

(४) आंग्ल-जाति का दक्षिणीय ब्रिटन पर आक्रमण

४४६—६०७

पाँचवीं सदी के बाद जर्मनी के किनारे से एक ही जाति के बहुत-से असभ्य लोग भिन्न-भिन्न समयों में इँगलैंड में आकर बसे। ये 'जूट्स' 'सैक्सैन' और 'ऐंग्लन' नामक तीन भागों में विभक्त थे। इन असभ्यों का स्वभाव तथा आचार अति विचित्र था। इनमें स्वतंत्रता के भाव अत्यंत अधिक थे। किसी के सम्मुख सिर झुकाना

इनको पसंद न था । अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर ये लोग इधर-उधर स्वच्छंद विचरते रहते थे । किसी प्रबल राज्य के न होने से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रक्षा अपने अस्त्र-शस्त्रों से ही करनी पड़ती थी । इनमें अपराधों का न्याय एक विचित्र ढंग से होता था। प्रत्येक स्वतंत्र पुरुष के अंग का मूल्य वही अंग होता था। यदि कोई किसी की आँखों को नष्ट कर दे, तो उसे भी वही दंड मिलता था, जिससे उसको सदा के लिये अपनी आँखों से हाथ धोना पड़ता था। सारांश यह कि अपराधी को अपराध के अनुसार ही उचित दंड मिलता था। समयांतर में इसमें परिवर्तन किए गए और मनुष्य के प्रत्येक अंग का मूल्य राज्य की ओर से निश्चित कर दिया गया, जो कि अपराधी के परिवार को देना पड़ता था। यह इसीलिये कि व्यक्ति के अपराध की जवाबदेही परिवार पर थी। आंग्ल-न्याय की उत्पत्ति भी इसी स्थान से है। इन असभ्यों में पारिवारिक शक्ति इतनी अधिक थी कि परिवार के क़सम खाते ही अपराधी अपराध से मुक्त कर दिया जाता था।

इन असभ्यों का धर्म, मूर्ति-पूजा-प्रधान होने के कारण, रोमन-ब्रिटन से सर्वथा भिन्न था। ये लोग वूडन, थार आदि जर्मन-देवताओं के उपासक थे । इनको रोमन-साम्राज्य तथा रोमन-संस्था से कुछ भी प्रेम न था। यही कारण

है कि इन्होंने ब्रिटन से रोमन-सभ्यता की जड़ पूर्ण रूप से उखाड़ डालने का प्रयत्न किया। ऊपर लिखा जा चुका है कि ब्रिटन में इन लोगों का आगमन जर्मनी के तट से हुआ था। ईसा की उत्पत्ति से ५ शताब्दी पहले 'स्लीस्विक' के प्रांत में 'आंग्लन' या 'इँगलैंड' नाम का एक प्रदेश था। स्लीस्विक का प्रांत ही बाल्टिक-सागर को उत्तरीय सागर से पृथक् करता है। आज कल इस प्रांत का जो सौंदर्य है, वह पहले न था। प्राचीन काल में उत्तमोत्तम चरागाहों, टिंबरों, कुटीरों तथा छोटे-छोटे नगरों के स्थान पर जंगल तथा बालू के ढेर थे। स्थान-स्थान पर दलदल-ही-दलदल दिखाई देता था। इसी स्लीस्विक के प्रांत में आंग्लों के पूर्वजों का निवास था। उत्तर में 'जूट्स' तथा दक्षिण में 'सैक्संज़' नाम की जातियाँ रहती थीं। इन जातियों का यह स्वभाव था कि इनके लोग परस्पर मिलकर नहीं रहते थे। एक परिवार दूसरे परिवार से सदा लड़ता-झगड़ता रहता था; परंतु किसी विदेशी शत्रु से युद्ध करते समय ये लोग परस्पर मिल जाते थे और शत्रु के पराजित होते ही फिर परस्पर लड़ना प्रारंभ कर देते थे।

अभी इँगलैंड में रोम का ही राज्य था कि इन्होंने उस पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। 'हंबर' से 'वेट्' के द्वीप तक स्थान-स्थान पर रोमन-शासकों ने, इनसे

ब्रिटन को बचाने के लिये, दुर्ग बनाए और वे चिर-काल तक ब्रिटन को इन भयंकर शत्रुओं से बचाते रहे। इनकी भयंकरता का अनुमान इसी से करना चाहिए कि ये लोग अपनी-अपनी नावों से ब्रिटन के किनारे उतरते थे और ब्रिटिश-जनता को लूटते हुए उनके बालकों, स्त्रियों तथा पुरुषों को ज़बर्दस्ती पकड़कर बेचने के लिये ले जाते थे। ब्रिटन से रोमन-राज्य के हटते ही ब्रिटंज़ पर विपत्ति के पहाड़ फट पड़े! रोमन-परतंत्रता से दुर्बल तथा शक्ति-हीन ब्रिटंज़ आत्म-रक्षा में सर्वथा असमर्थ थे। पारस्परिक कलह से असभ्यों का ब्रिटन में आना बहुत ही सुगम हो गया। ब्रिटंज़ एक ओर पिक्ट्स तथा स्काट्स के अत्याचारों से पीड़ित थे और दूसरी ओर जूट्स, सैक्संज़ आदि सभ्यों के संघ से भी दिन-रात कष्ट उठा रहे थे। इन यातनाओं से बचने के लिये ब्रिटिश-राजा 'वोर्टिजन' ने 'हैंगिस्ट' तथा 'हार्सा' नामक दो जूटिश-नेताओं से पिक्ट्स तथा स्काट्स के विरुद्ध सहायता ली (४४६ ए० डी०)। इन्होंने ब्रिटिश-राजा को पूरी तौर से सहायता दी और क्रेंट के प्रांत में सदा के लिये बस गए। हैंगिस्ट के पुत्र 'एरिक्' ने केंट के पूर्व तथा पश्चिम में दो जूटिश-उपनिवेशों की स्थापना की। हार्सा के युद्ध में मारे जाने से आंग्ल-इतिहास में उसके परिवार का कोई भाग न रहा।

४७७ ए० डी० में 'सैक्संज़' ने भी ब्रिटन में प्रवेश किया

और वे 'रेंगनम' नामक रोमन-नगर के समीप बस गए। इनके नेता 'सिसा' ने 'शिचैस्टर' नामक नगर को अपना नाम दिया और आक्रमण करके 'पिवंसी' के प्रसिद्ध नगर को अपने हस्तगत कर लिया। इसकी क्रूरता इसीसे स्पष्ट है कि इसने पिवंसी में संपूर्ण ब्रिटिश-जाति का क़तल किया। ५२० में राजा 'आर्थर' ने पश्चिमीय सैक्संज़ को ऐसी शिकस्त दी कि वे चिर-काल तक अन्य प्रदेशों को न जीत सके। यही कारण है कि ६० वर्षों के लंबे समय में ये केवल निम्न-लिखित प्रदेशों में ही अपने उपनिवेश बसा सके—

(१) वेसेक्स (वेस्ट सैक्संज़)
(२) ससेक्स (साउथ ,,)
(३) एसेक्स (ईस्ट ,,)
(४) मिडिल सेक्स (मिडिल ,,)

सैक्संज़ के समान ही स्लीस्विक के आंग्लों ने भी ब्रिटन पर आक्रमण किया। आंग्लों ने प्रथम आक्रमण में 'डेरा' (Daira) में और द्वितिय आक्रमण में (५४७ ए० डी०) 'वर्नीसिया' प्रदेश में अपने उपनिवेश बसाए। ६०३ ए० डी० में वर्नीसिया तथा डेरा परस्पर मिल गए। आंग्लों ने साल्टिक जाति को पार्वतीय प्रदेशों में भगा दिया। आंग्लों ने तृतीय आक्रमण के द्वारा 'ईस्ट-ऐंग्लिया' नामक प्रदेश में अपने उपनिवेश बसाए। इनके बाद जो

आंग्ल स्लीस्विग-प्रदेश से आए, वे इँगलैंड के मध्य में बस गए। इस प्रकार पहाड़ी प्रदेशों को छोड़कर सारे ब्रिटन में जूटस, सैक्संज़ तथा आंग्ल बस गए। छठी शताब्दी के बाद ब्रिटन सप्त-राज्यों में चिर-काल तक बटा रहा। प्रत्येक राज्य की सीमा समय-समय पर जुदी-जुदी हो जाती थी। कभी कोई राज्य बड़ा हो जाता था, और कभी कोई राज्य। सप्त-राज्यों के नाम निम्न-लिखित हैं—

सप्त-राज्य

राज्य-प्रदेश	जाति
(१) केंट	जूटस
(२) ससेक्स	सैक्संज़
(३) वेसेक्स	
(४) एसेक्स	
(५) नार्थंब्रिया	आंग्ल
(६) ऐंग्लिया	
(७) मर्सिया	

इन सप्त राज्यों का इतिहास लिखने के पहले यह लिखना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है कि इन जातियों की राजनैतिक अवस्था कैसी थी। रोमन-राज्य के हटते ही ब्रिटन की अवस्था दिन-पर-दिन अवनत होने लगी। जो नगर बड़ी-बड़ी पक्की रोमन-सड़कों के किनारे थे, उनमें जन-संख्या बहुत ही थोड़ी थी। स्थान-स्थान पर

ग्राम बसे हुए थे । ग्रामों में सब से बड़ा मकान अर्ल-लोगों का होता था। अर्लों को भारतीय ग्रामों के चौधरियों की या प्रधान की उपमा दी जा सकती है। अर्ल से नीचे की श्रेणी में 'कर्ल' गिने जाते थे। इनकी अपनी-अपनी भूमियाँ होती थीं और ये अपने ही मकान में रहते थे। इनके सिवा 'लेट्स' श्रेणी के लोग भी स्वतंत्र लोगों में गिने जाते थे। चौथी श्रेणी 'दासों' की थी। इनका क्रय-विक्रय साधारण चीज़ों की तरह किया जाता था।

गाँवों का प्रबंध एक 'जन-सभा' के द्वारा किया जाता था। यही ग्रामीणों के झगड़ों का न्याय करती थी। इन असभ्यों में 'दैवी न्याय' का बहुत अधिक प्रचार था। गाँव की सीमा पार करते समय नए आदमी को सिंगी बजानी पड़ती थी। यदि कोई भूल से ऐसा न करे, तो वह मार डाला जाता था। सारे राज्य की एक सभा थी, जो 'विट्नेजिमार्ट' (Witenagemort) के नाम से पुकारी जाती थी। ग्राम तथा नगरों के प्रतिनिधि इसके सभ्य होते थे। नियम-निर्माण तथा युद्ध की घोषणा के कार्य यही सभा करती थी। सभा की आज्ञा के बिना राजा कोई भी नया कार्य नहीं कर सकता था। राजा को यह अधिकार न था कि वह अपना उत्तराधिकारी नियत कर सके। एक राजा की मृत्यु पर सभा के ही द्वारा दूसरा राजा चुना जाता था। प्रायः राजा-

लोग किसी एक परिवार में से ही चुने जाते थे। इसका मुख्य कारण, उन असभ्यों का अपने धार्मिक देवता से किसी एक परिवार की उत्पत्ति मानना ही था।

द्वितीय परिच्छेद

सप्त-राज्यों का इतिहास

(१) साम्राज्य की ओर प्रवृत्ति

स्लीस्विग-प्रदेश की जातियों से किस तरह सारा ब्रिटन सात राज्यों में विभक्त हो गया था, इसका उल्लेख किया जा चुका है। प्रत्येक राज्य दूसरे राज्य को जीतकर अपनी शक्ति बढ़ाने का यत्न करता था। इसका परिणाम यह होता था कि कभी कोई राज्य बहुत ही बड़ा और कभी कोई राज्य बहुत ही छोटा हो जाता था। उस असभ्य-काल में इस प्रकार की घटनाएँ प्रायः प्रति वर्ष हुआ करती थीं। बड़े-बड़े राजों के समय में प्रत्येक राज्य की सभ्यता बहुत कुछ उन्नत हो जाती थी। दृष्टांत के तौर पर नार्थंब्रिया ने राजा 'एथल्फ्रिथ' के समय में और मर्सिया ने 'पंडा' के समय में बड़ी उन्नति की। भिन्न-भिन्न राजों ने जूटिश-उपनिवेश की सीमाओं को भी काफ़ी तौर से अधिक बढ़ाने का यत्न किया। सप्त-राज्यों के प्रत्येक राज्य का संक्षेप से कुछ

इतिहास लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है, अतः अब उसी पर कुछ लिखा जायगा।

(क) नार्थंब्रिया

(५९३–६१७)

वर्नीसिया के राजा ने हंबर नदी से ऊपर का सारा प्रदेश जीता। यह आंग्ल-इतिहास में 'एथल्फ्रिथ' के नाम से प्रसिद्ध है। इसने दाक्षिणीय प्रदेश की जाति को 'डेरा' पर हराया और उसके राजा को देश से निकालकर अपनी शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ा ली। यहीं पर बस न करके उसने वेल्ज़-निवासियों को 'चस्टर' पर पराजित करके पार्वतीय प्रदेशों में ढकेल दिया। इसका समय ५९३ से ६१७ ए० डी० है।

(ख) वेसक्स (Wessex)

(५६०–५९३)

एथल्फ्रिथ के समान ही वेसेक्स के राजा 'कालिन' (Ceawlin) ने अपने राज्य को बहुत ही अधिक बढ़ाया। इसने निम्न-लिखित प्रदेश जीते—

(१) जूट्स लोगों से वाइट (Wight) का उप-निवेश जीत लिया।
(२) सैक्संज़ से सर्रे का प्रदेश छीन लिया।
(३) व्हिल्टशायर (Wiltshire), बर्कशायर तथा डोर्सेटशायर को अपने राज्य में मिला लिया।
(४) मिड्लैंड का कुछ प्रदेश जीता।

(५) डर्हम पर विजय प्राप्त करके सोमर्सट का कुछ भाग और संपूर्ण ग्लाउसस्टर अपने अधीन किया।

(ग) मर्सिया
(६२६–६५५)

नार्थंब्रिया तथा वेसेक्स के समुत्थान के एक शताब्दी बाद मर्सिया ने अपूर्व शक्ति प्राप्त की। 'पंडा' के राज्य-काल से पहले तक मर्सिया का राज्य बहुत ही छोटा तथा अल्प-शक्ति समझा जाता था। 'पंडा' ने प्रबल प्रयत्न से मिड्लैंड के संपूर्ण राजों को नीचा दिखाया और उनसे नार्थंब्रिया तथा वेसेक्स के बहुत-से प्रदेश जीतकर मर्सिया में मिला दिए। इसका परिणाम यह हुआ कि मर्सिया की सीमा बहुत ही अधिक विस्तृत हो गई।

(घ) अवशिष्ट राज्य

मर्सिया, वेसेक्स तथा नार्थंब्रिया के साथ-साथ ऐंग्लिया, एसेक्स, केंट तथा ससेक्स के छोटे-छोटे राज्य भी सदा विद्यमान रहे। भिन्न-भिन्न शक्तिशाली राजों के उत्पन्न हो जाने से केंट तथा ईस्ट-ऐंग्लिया के राज्य नष्ट होने से बचते रहे। 'वेसेक्स' के एक प्रबल राजा, 'कालिन' की मृत्यु पर केंट के राजा, 'एथल्वर्ट' ने शक्ति प्राप्त की। इसने फ़्रांस के एक

राजा की कन्या 'वर्था' से विवाह किया। वर्था ईसाई-मतावलंबिनी थी। इसने इँगलैंड में फिर ईसाई-मत का प्रचार किया। एथल्वर्ट की मृत्यु पर ईस्ट-ऐंग्लिया के राजा, 'रेड्वाल्ड' (Redwald) ने केंट का राज्य सन् ६१६ में प्राप्त किया। 'वर्था' ने ब्रिटन में ईसाई-मत का पुनरुद्धार किस तरह किया, इस पर अब कुछ शब्द लिखे जायँगे।

(२) ईसाई-मत का प्रचार

स्लीस्विग-प्रदेश की जातियों के आक्रमण से पहले 'साल्टिक ब्रिटन' ईसाई-मतावलंबी था। इसका उल्लेख किया जा चुका है। विदेशियों के आक्रमण से पीड़ित होकर साल्टिक-जाति ने पर्वतों की शरण ली और ईसाई-मत को अंत तक न छोड़ा। 'ह्वेल्ज़' (Wales) में साल्टिक-जाति ने ईसाई-मत की बहुत उन्नति की। इन्हीं दिनों में 'ह्वेल्ज़' में बड़े-बड़े संतों ने जन्म लिया, जिनके नाम ये हैं—

(१) सेंट डेविड (St. David)

(२) सेंट डेनियल (St. Daniel)

(३) सेंट डिव्रिग (St. Dyvrig)

(४) सेंट कंटिजर्न (St. Kentigern)

'कोलंबा' ने आयर्लैंड में ईसाई-मत के प्रचार में बड़ा भाग लिया। स्कॉटलैंड के ईसाई-मत में भी इसका बड़ा भारी भाग है। यह सब होते हुए भी शेष इँगलैंड मूर्ति-पूजक ही था।

बर्था के साथ 'एथल्वर्ट' के विवाह करने से शेष इँगलैंड में भी ईसाई-मत के प्रचार की आशा हो गई। एथल्वर्ट ने बर्था के लिये 'कैंटर्बरी' में एक चर्च बना दिया। इन्हीं दिनों रोम के भीतर 'ग्रिगोरी प्रथम' नामक 'रोमन पोप' शासन करता था। यह बड़े ही उच्च विचार का आदमी था। चिर-काल से इसकी इच्छा थी कि ब्रिटन में फिर ईसाई-मत का प्रचार करे। इस उद्देश की पूर्ति के लिये पोप ने संत 'अगस्टाइन' को बहुत-से ईसाई-भिक्षुओं के साथ ब्रिटन में धर्म-प्रचार के लिये भेजा। एथल्वर्ट ने इनका स्वागत किया और धर्म-प्रचार में इन्हें पूर्ण स्वतंत्रता दी। इन संतों तथा भिक्षुओं के पवित्र आचरणों को देखकर एथल्वर्ट ने भी ईसाई-मत में प्रवेश किया। इस प्रकार 'कैंटर्बरी' ईसाई-मत का केंद्र हो गया। लंडन तथा रॉचेस्टर आदि नगरों में भी ईसाई-मत फैल गया और वहाँ चर्च आदि बनाए गए। परंतु मर्सिया के पुराने राजा 'पंडा' को ईसाई-मत पसंद न था। एथल्वर्ट की मृत्यु होने पर उसने मूर्ति-पूजा के प्रचार का यत्न करना आरंभ किया। एथल्वर्ट की एक कन्या 'एथल्वर्गा' का विवाह नार्थंब्रिया के राजा 'एड्विन' से हुआ था। ६२७ में स्त्री का प्रभाव पड़ने से—उसके कहने-सुनने से—एड्विन ने ईसाई-मत ग्रहण किया और 'यार्क' नगर को कैंटर्बरी के ही समान ईसाई-मत का केंद्र बनाया।

पंडा की एड्विन से भयंकर शत्रुता थी । पंडा ने बड़ी चतुरता से वेल्ज़ के राजा 'काडवालन' (Cadwallon) को अपने साथ मिलाकर एड्विन पर चढ़ाई की और एक युद्ध में उसको मार डाला । एक वर्ष तक काडवालन और पंडा ने नार्थंब्रिया पर भयंकर अत्याचार किए और ईसाई-मत को जड़ से उखाड़ डालने का यत्न किया । एक वर्ष के बाद ही 'एथल्फ्रिथ' के पुत्र, 'आस्वाल्ड' ने नार्थंब्रिया को स्वतंत्र कर दिया और 'काडवालन' को एक युद्ध में हराया । काडवालन की मृत्यु होने पर 'आस्वाल्ड' ने 'कंब्रिया' प्रदेश को 'वेल्ज़' से पृथक् करके नार्थंब्रिया में मिला दिया । 'आस्वाल्ड' ईसाई-मत के स्कॉटिश संप्रदाय का था । इसने नार्थंब्रिया में ईसाई-मत का प्रचार करना चाहा, परंतु उसे 'पंडा' ने 'मास-फ़ील्ड' के युद्ध में मार डाला । पंडा ने नार्थंब्रिया को नष्ट करना चाहा, परंतु आस्वाल्ड के भाई 'आस्यू' (Oswin) ने उसको ऐसा नहीं करने दिया । आस्यू ने 'विनवुड' (Winwood) के युद्ध (६५५ ए० डी०) में पंडा को मार डाला ।

पंडा ही ईसाई-मत का मुख्य कंटक था । पंडा की मृत्यु होने पर ब्रिटन में ईसाई-मत बहुत शीघ्रता के साथ फैलने लगा । यह एक आश्चर्य की बात है कि पंडा जैसे मूर्ति-पूजक का पुत्र दृढ़ ईसाई था । नार्थंब्रिया के पादरियों ने

पंडा की मृत्यु होने पर 'मर्सिया' में ईसाई-मत का प्रचार किया। मर्सिया में ईसाई-मत का केंद्र 'लिचफ़ील्ड' बनाया गया। मर्सिया में 'चैद' नाम के ईसाई-मत-प्रचारक का नाम अति प्रसिद्ध है।

स्कॉटलैंड तथा रोम के ईसाई-मत में बहुत अंतर था। इसका परिणाम यह होता था कि दोनों धर्मों के पादरी अपनी-अपनी बातों को ही सर्वथा सत्य प्रकट करते थे। इस धर्म-भेद को मिटाने के लिये 'आस्यू' ने ब्रिटन तथा इँगलैंड के मुख्य-मुख्य पादरियों को एकत्र करके एक 'धर्म-सभा' (६६४ सन्) जोड़ी, जो कि आंग्ल-इतिहास में 'विटबी की सिनद' (Synod of Whitby) के नाम से प्रसिद्ध है। बहुत विवाद के बाद आस्यू ने रोमन-चर्च के पक्ष में अपनी सम्मति दे दी। इँगलैंड के लिये यह बहुत ही अच्छी घटना हुई, क्योंकि इस निर्णय के द्वारा इँगलैंड का संबंध रोम के साथ बहुत ही घनिष्ठ हो गया और इँगलैंड रोम की सभ्यता से अपने को समुन्नत करने में समर्थ हो सका।

सन् ६६४ की धर्म-सभा के निर्णय के बाद 'थियोडोर' नामक एक यूनानी, कैंटर्बरी के आर्च-बिशप के तौर पर, रोम से इँगलैंड में आया। इसने आस्यू के साथ घनिष्ठ मित्रता रक्खी और उसकी मृत्यु होने पर उसके पुत्र 'एगफ्रिथ' के साथ भी अच्छे संबंध बनाए रक्खे। अपनी

मृत्यु से पहले ही आर्च-बिशप ने समुचित रीति पर आंग्ल-चर्चों का संगठन कर दिया । प्रत्येक आंग्ल-बिशप को बाध्य किया कि वह कैंटर्बरी के आर्च-बिशप को अपना शिरोमणि समझे और उसी के कहने के अनुसार चले। इसने बालकों की शिक्षा के लिये स्थान-स्थान पर पाठशालाएँ खोलीं और इस बात पर तीक्ष्ण दृष्टि रक्खी कि प्रत्येक बिशप अपना काम पूर्ण रीति से करता है या नहीं । बिशपों की शक्ति बढ़ाने के लिये थियोडोर ने उनको 'धार्मिक जातीय सभा' में पूरे तौर पर भाग लेने के लिये आज्ञा दी । धार्मिक जातीय सभा के निर्माण तथा चर्चों के संगठन के द्वारा थियोडोर ने इँगलैंड को एक-जाति के रूप में परिवर्तित करने का यत्न किया।

सन् ६९० में थियोडोर की मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु के अनंतर भी चिर-काल तक आंग्ल-चर्च पूर्ण रीति से उन्नति ही करता रहा। आठवीं सदी में इँगलैंड ने बहुत-से पादरियों को प्रचार के लिये जर्मनी भेजा ।

'विटबी' के एक विहार में हिल्दा नाम के प्रसिद्ध कवि ने जन्म लिया और 'टीन' नदी के किनारे स्थित एक मठ में 'वीड' का जन्म हुआ, जो कि (Ecclesiastical History of the English people) 'आंग्लों का धार्मिक इतिहास' का प्रसिद्ध लेखक है। एग्वर्ट नाम के प्रसिद्ध बिशप ने

यार्क नगर को भी 'कैंटर्बरी' के समान 'आर्च-बिशपरिक' बनाने का यत्न किया और अपने यत्न में पूर्ण रूप से सफल हुआ। यार्क ने भी शीघ्र ही विद्या-पीठ का रूप धारण किया। यही कारण था कि प्रसिद्ध विद्वान् 'आल्किन' को 'चार्ल्स-दि-ग्रेट' ने अपनी पाठशालाओं के संचालन के लिये फ्रांस में निमंत्रित किया।

(३) डेनिश आक्रमण से पहले तक इँगलैंड की राजनैतिक अवस्था

आठवीं सदी में नार्थंब्रिया ने धार्मिक उन्नति तो यथेष्ट अधिक की परंतु उसकी राजनैतिक अवस्था सर्वथा शोकजनक हो गई। आस्यू के पुत्र, 'एगफ्रिथ' ने पिक्ट्स को जीतने का यत्न किया, परंतु पराजित हुआ और नेक्टंस्मियर (Nectansmere) के प्रसिद्ध युद्ध में मारा गया। उसका कोई भी उत्तराधिकारी इतना शक्तिशाली भी न हुआ कि अपने राज्य तक का शासन कर सके।

नार्थंब्रिया के अधःपतन के अनंतर मर्सिया ने प्रबलता प्राप्त की। 'एथल्वाल्ड' नाम का मर्सियन-राजा इतना शक्तिशाली तथा विजयी था कि उसने अपने को 'दक्षिणी इँगलैंड के राजा' के तौर पर कहना शुरू कर दिया। इसका उत्तराधिकारी 'ओफा-दि-माइटी' बहुत ही वीर तथा बलवान् था। ओफा ने नार्थंब्रिया का बहुत-सा भाग जीतकर मर्सिया के साथ मिला

दिया। उसने पश्चिमी सैक्संज़ (West Saxans) के संपूर्ण प्रदेशों पर आधिपत्य प्राप्त करके उनको भी अपने ही राज्य का भाग बना लिया। मर्सिया तथा वेल्ज़ को इसने एक खाई के द्वारा पृथक् कर दिया। 'ओफाज़ डाइक' के नाम से यह खाड़ी आंग्ल-इतिहास में प्रसिद्ध है। विदेशी राजों के साथ भी ओफा ने मित्रता की। प्रसिद्ध फ्रेंच सम्राट् 'चार्ल्स-दि-ग्रेट' ओफा का परम मित्र था। ओफा ने आंग्ल-चर्च को पूर्ण सहायता दी और स्वयं ही 'सेंट अल्बान का मठ' बनवाया। ओफा ने 'लिच-फ़ील्ड' को आर्च-बिशपरिक बनाने का यत्न किया, परंतु उसकी यह इच्छा चिर-काल तक न पूरी हो सकी। यदि लिचफ़ील्ड आर्च-बिशपरिक बन जाता, तो इँगलैंड का धर्म-संबंधी संगठन सर्वथा टूट जाता। ओफा का उत्तराधिकारी 'सिनल्फ़' (Cenulf ७९६–८२१) शक्ति-हीन था। कैंटर्बरी से तंग आकर इसने लिचफ़ील्ड को आर्च-बिशपरिक से सर्वथा हटा दिया। सिनल्फ़ की मृत्यु होने पर मर्सिया की स्थिति छिन्न-भिन्न हो गई। एक-सत्ताक शासन-पद्धति का सब से बड़ा दूषण यही है कि उसमें राजा के अनुसार ही राज्य की दशा रहती है, परंतु उचित तो यह है कि राज्य के अनुसार राजा की अवस्था हो।

प्रजा-सत्ताक शासन-पद्धति के द्वारा इँगलैंड ने किस प्रकार राजा की दशाओं में परिवर्तन होने को रोका, इसका

आगे चलकर सविस्तर वर्णन किया जायगा। मर्सिया के अधःपतन के अनंतर 'वेसेक्स' का समुत्थान हुआ और साथ ही इँगलैंड पर 'डेंज़' ने आक्रमण करना प्रारंभ किया। इस संपूर्ण इतिवृत्त को अगले परिच्छेद में लिखने का यत्न किया जायगा, अतः अब वही प्रकरण प्रारंभ किया जाता है।

तृतीय परिच्छेद

वेस्ट-सैक्संज़ और डेंज़ का आक्रमण

(१) वेस्ट-सैक्संज़ का समुत्थान

मर्सिया के समुत्थान के कारण वेस्ट-सैक्संज़ की उन्नति कुछ समय के लिये रुक गई थी। ओफा-दि-ग्रेट की मृत्यु होने पर वेसेक्स ने पुनः शक्ति प्राप्त करने का यत्न किया।

मर्सिया के समुत्थान के दिनों में ही वेसेक्स ने पश्चिमीय वेल्ज़ के कुछ प्रदेशों को अपने हस्तगत कर लिया था। ओफा-दि-माइटी ने वेसेक्स के राजा एग्बर्ट पर आक्रमण किया था और उसे युद्ध में पराजित करके फ़्रांस भाग जाने के लिये बाध्य कर दिया था। ओफा के मरते ही सन् ८०० में 'एग्वर्ट' ने पुनः वेसेक्स का राज्य प्राप्त किया। विदेश में रहने से एग्वर्ट यथेष्ट अनुभवी

तथा राज-नीति में निपुण हो गया था। इसने राज्य प्राप्त करते ही पश्चिमीय वेल्ज़ पर आक्रमण किया और तामूर तक संपूर्ण डेवनशायर अपने हस्तगत किया। मर्सियन राजा सिनल्फ़ सन् ८२१ में मर गया। अतएव एग्वर्ट ने मर्सिया पर आक्रमण कर दिया और एलंडून पर मर्सियनों को पराजित किया।

इसका परिणाम यह हुआ कि मर्सिया एग्वर्ट के आधिपत्य में आ गया। केंट, ससेक्स तथा एसेक्स भी जीते गए, और ये सब वेसेक्स के ही एक प्रांत बना दिए गए। ईस्ट-ऐंग्लिया ने मर्सिया से क्रुद्ध होकर वेसेक्स से मित्रता कर ली।

ऊपर-लिखी इन सब विजयों को प्राप्त करते हुए भी एग्वर्ट को मृत्यु-पर्यंत शांति प्राप्त नहीं हुई। यद्यपि ब्रिटन में उसका कोई भी प्रबल शत्रु न था, तो भी उसके शत्रुओं की कमी न थी। डेन्मार्क के किनारे से एक नवीन जाति ने इँगलैंड पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। इँगलैंड-वासी इस जाति को 'डेंज़', जर्मंज़ 'ईस्टमैन' तथा फ़्रेंच 'नॉर्थमैन' के नाम से पुकारते थे। डेंज़ के मुख्य निवास-स्थान 'डेन्मार्क', 'नार्वे' तथा 'स्कंडनीविया' थे। डेंज़ चार्ल्स-दि-ग्रेट के राज्य करने के कारण फ़्रांस में न बढ़ सके। अतः उन्होंने इँगलैंड पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। 'कार्निश वाल्श' (Cornish Walsh) वेसेक्स से

भयभीत होकर डेंज़ से मिल गए, परंतु वीर एग्बर्ट ने दोनों ही जातियों को 'हैंग्स्टन डाउन' (Hengston Down) के युद्ध में पराजित किया।

इस प्रसिद्ध युद्ध के दो वर्ष बाद वीर एग्बर्ट मर गया (सन् ८३९)। इसके बाद इसका पुत्र 'एथल्वुल्फ़' राज्य पर बैठा। इसने १९ वर्ष तक डेंज़ के आक्रमणों से इँगलैंड को बचाया और सन् ८५८ में मृत्यु को प्राप्त हुआ। एथल्वुल्फ़ के चार पुत्र थे—

(१) एथल्वाल्ड
(२) एथल्बर्ट
(३) एथल्रड
(४) अल्फ़्रेड

एथल्वुल्फ़ के ऊपर-लिखे तीनों पुत्र कुछ वर्षों तक राज्य करके मर गए और अल्फ़्रेड पर संपूर्ण राज्य का भार आ पड़ा।

(२) डेंज़ का भिन्न-भिन्न प्रदेशों को बसाना

डेंज़-जाति के साहस को देखकर आश्चर्य होता है। अपने राजा के आधिपत्य से पीड़ित होकर स्वतंत्रता-प्रिय डेंज़ ने 'नार्वे प्रदेश' को परित्याग करने की इच्छा से इधर-उधर भ्रमण करना प्रारंभ किया। सब से पहले इन्होंने 'आइसलैंड' (Iceland) में एक उपनिवेश बसाया। इसके अनंतर कुछ साहसी डेंज़ ने 'ग्रीनलैंड' में भी

पदार्पण किया और उसमें भी अपना एक उपनिवेश स्थापित किया। इतना ही होता तो भी कोई बात न थी। इन्होंने 'कोलंबस' से बहुत पहले ही 'अमेरिका' को ढूँढ़ निकाला और उसमें 'वाइनलैंड' नामक स्थान को आबाद किया।

इन्होंने ब्रिटन में आयर्लैंड को बसाते हुए साथ ही स्कॉटलैंड के निम्न-लिखित द्वीपों को भी बसाया—

(१) हैब्रिडेस (Hebrides)

(२) फ़ेरो आइलेंड (Faroe Island)

(३) आर्कनी (Orkney)

(४) शैटलैंड (Shatland)

ऊपर-लिखे उपनिवेशों से ही स्पष्ट हो गया होगा कि डेंज़ कितने साहसी थे। विचित्रता तो यह है कि इन्होंने शीघ्र ही 'ईस्ट-ऐंग्लिया', 'दक्षिणी नार्थंब्रिया' तथा 'उत्तरी मर्सिया' को भी अपने अधीन कर लिया। 'वेसेक्स' को जीतने पर भी इन्होंने कमर कसी, परंतु चिर-काल तक सफल न हो सके। सन् ८९९ तक अल्फ़्रेड वीरतापूर्वक वेसेक्स पर राज्य करता रहा। सन् ८७१ में अल्फ़्रेड को डेंज़ से ९ सम्मुख-युद्ध करने पड़े। अंतिम युद्ध में डेंज़ 'रीडिङ्' नामक स्थान में चले गए। अल्फ़्रेड ने डेंज़ को इस वीरता से पराजित किया कि उन्होंने बड़ी ख़ुशी से संधि कर ली, और कुछ वर्षों तक अल्फ़्रेड

से किसी प्रकार की भी छेड़-छाड़ नहीं की। सन् ८७८ के जनवरी महीने में 'गुथरम' नामक वीर-नेता के साथ डेंज़ ने वेसेक्स पर पुनः आक्रमण किया। इँगलैंड में शीत ऋतु में युद्ध नहीं किए जाते थे, अतः अल्फ्रेड युद्ध के लिये तैयार नहीं था। इसका परिणाम यह हुआ कि अल्फ्रेड गुथरम से पराजित होकर 'एथल्ने' नामक द्वीप में भाग गया और अपने देश की स्वतंत्रता के उपाय सोचने लगा। अल्फ्रेड ने अपने देश को किस प्रकार स्वतंत्र किया, इस पर ही अब कुछ शब्द लिखे जायँगे।

(३) अल्फ्रेड का वेसेक्स पर आधिपत्य

अल्फ्रेड ने एथल्ने में एक दुर्ग बनाया और वहाँ से ही वह मौक़े-बे-मौक़े सहसा डेंज़ पर आक्रमण कर देता था। कुछ समय बाद एक प्रबल सेना के द्वारा उसने गुथरम को 'विल्टशायर' में 'एडिंग्टन' नामक स्थान पर बहुत बुरी तरह से पराजित किया। डेंज़ घबराकर 'चिपन्हम' में जमा हुए, परंतु उसने वहाँ पर भी उनको ठहरने न दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि गुथरम ने बड़ी खुशी से संधि कर ली। संधि के अनुसार गुथरम को ईसाई बनना पड़ा, और उसको अल्फ्रेड के संपूर्ण प्रदेश सदा के लिये छोड़ने पड़े। आंग्ल-इतिहास में यह संधि 'वेडमोअर' की संधि के नाम से प्रसिद्ध है।

वेडमोअर की संधि के ७ वर्ष बाद गुथरम से अल्फ्रेड

का पुनः युद्ध हुआ, परंतु इस युद्ध म भी गुथरम को ही नीचा देखना पड़ा। सन् ८८६ के युद्ध में पुनः गुथरम पराजित हुआ और उसको 'अल्फ्रेड-गुथरम' नाम की संधि (Alfred & Guthrum's Peace) करनी पड़ी। इसके अनुसार अल्फ्रेड का राज्य 'लंडन', 'वेड्फोर्ड' तथा 'चैस्टर' तक विस्तृत हो गया। अल्फ्रेड ने 'मर्सिया' का शासन एथल्रड के हाथ में दिया और साथ ही उससे अपनी कन्या एथल्फ्रेड का विवाह भी कर दिया।

डेंज़ के आधिपत्य में जो आंग्ल-प्रदेश थे, वे 'डेनला' (Danelaw) के नाम से पुकारे जाते थे; क्योंकि उनका शासन डेनिश-नियमों के अनुसार होता था। इँगलैंड के सौभाग्य से डेंज़ की भाषा तथा रस्म-रवाज आंग्लों से सर्वथा भिन्न न थे। इसका परिणाम यह हुआ कि वे शीघ्र ही आंग्ल-जाति से मिल गए और गुथरम की देखा-देखी ईसाई भी बन गए। डेंज़ के आंग्लों से मिल जाने से आंग्लों की शक्ति तथा साहस पहले की अपेक्षा दूना हो गया। डेंज़ में एका न था। यही कारण है कि डेनला के प्रदेशों पर भिन्न-भिन्न कई मांडलिक राजा थे। इन छोटे-छोटे अल्प-शक्तिशाली राजों पर प्रभुत्व प्राप्त करना अल्फ्रेड के लिये बहुत ही सहज था। 'आंग्ल-क्रानिकल' का कहना है कि 'डेनला को छोड़कर समस्त आंग्ल-प्रदेशों पर अल्फ्रेड का ही आधिपत्य था।'

अल्फ़्रेड बहुत ही दूरदर्शी, बुद्धिमान् तथा आत्म-संयमी था। इसने आंग्लों की सामाजिक तथा राजनैतिक अवस्था में बहुत-से सुधार किए, जो कि इस प्रकार हैं—

(क) राजनैतिक सुधार

अल्फ़्रेड ने भावी आक्रमणों से आंग्लों को सुरक्षित करने के लिये नौ-सेना तथा स्थल-सेना का सर्वदा स्थिर रूप से तयार रहना आवश्यक समझा। इस उद्देश की पूर्ति के लिये उसने स्थल-सेना को दो भागों में विभक्त किया। एक भाग छः महीने सेना के स्वरूप में देश की रक्षा के लिये सदा तैयार रहता था और दूसरा भाग अपने-अपने खेतों तथा नगरों की रक्षा का काम करता रहता था। प्रत्येक छमाही में दोनों ही भाग एक-दूसरे का कार्य बदल लेते थे।

असभ्यों का समुद्र-मार्ग से आना रोकने के लिये अल्फ़्रेड ने एक नौ-सेना बनाई। शनैः-शनैः इसकी उन्नति होती रही। अल्फ़्रेड के उत्तराधिकारी के समय में नौकाओं की संख्या सौ तक पहुँच गई। इस तरह सेना-संबंधी सुधारों को करके अल्फ़्रेड ने राज्य-संबंधी सुधारों की ओर ध्यान दिया।

देश में प्रचलित ग्राम्य-पंचायत (Hundred-moot) तथा मांडलिक 'न्यायालयों' (Shire-moot) को अल्फ़्रेड ने बहुत ही अधिक शक्ति दी। भूमि-पति तथा कृषकों

को उपरि-लिखित न्यायालयों के न्याय को मानने के लिये बाध्य किया। जब कभी कोई न्यायाधीश अन्याय करता था, तब अल्फ्रेड स्वयं उसको बुलाता था और कुल मामले में तहक़ीक़ात करता था। अल्फ्रेड का कथन था कि 'दुःखियों तथा दरिद्रियों का राजा को छोड़कर और कोई भी वास्तविक सहायक नहीं होता।'

(ख) सामाजिक सुधार

अल्फ्रेड ने आंग्लों की शिक्षा के लिये जो प्रबल प्रयत्न किया, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। शिक्षा की अवनति देखकर उसको बहुत ही शोक था। डेंज़ ने प्राचीन शिक्षणालयों को नष्ट कर दिया था। नार्थंब्रिया में वीड तथा एग्बर्ट के काल की कुछ थोड़ी-सी पाठ-शालाएँ अवशिष्ट रह गई थीं। इन शोक-जनक अवस्थाओं को देखकर अल्फ्रेड ने प्रत्येक स्वतंत्र पुरुष को आंग्ल-भाषा सीखने के लिये बाध्य किया। भूमि-पतियों के लिये उसने एक विद्यालय खोला, जिसका निरीक्षण वह स्वयं करता था। उसने बड़े-बड़े विद्वानों को विदेशों से बुलाया और शिक्षा की उन्नति में कोई बात उठा नहीं रक्खी।

उपरि-लिखित कार्यों से ही अल्फ्रेड के दैविक जीवन का अनुमान किया जा सकता है। रुग्ण होते हुए भी उसने देश-संबंधी कार्यों में कभी प्रमाद नहीं किया। वह सत्यवादी तथा धर्मात्मा था। उसकी महानुभावता तथा

उदारता सर्वत्र विख्यात थी । उसमें न्यायशीलता तथा दरिद्रों के प्रति प्रीति कूट-कूटकर भरी हुई थी । ८४९ में संपूर्ण प्रजा को रुलाते हुए वह स्वर्गवासी हो गया। अल्फ्रेड के महत्त्व को देखकर आंग्ल-इतिहास-ज्ञ उसको 'अल्फ्रेड-दि-ग्रेट' के नाम से पुकारते हैं । सच तो यह है कि जब तक आंग्ल-जाति जीती-जागती है, तब तक अल्फ्रेड का नाम अमर है ।

(४) अल्फ्रेड के उत्तराधिकारियों का शासन

(क) एडवर्ड-दि-एल्डर (८९९–९२४)

अल्फ्रेड की मृत्यु होने पर उसका पुत्र एडवर्ड वेसेक्स के सिंहासन पर बैठा । यह एडवर्ड-दि-एल्डर के नाम से आंग्ल-इतिहास में प्रसिद्ध है । यह शांति के स्थान पर युद्ध-प्रिय था । अल्फ्रेड के सदृश ही वीर होते हुए इसने इँगलैंड में एक-सत्ताक राज्य स्थापित करने का प्रबल प्रयास किया । अल्फ्रेड की कन्या एथल्फ़्लड (Ethelflaed) पूर्ण क्षत्रिया थी । इसने संपूर्ण डेनला को अपने हाथ में किया और शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हुई ।

बहन के मरने पर एडवर्ड ने मर्सिया का कोई दूसरा शासक नियत नहीं किया । वह स्वयं ही वहाँ का शासन करने लगा । ईस्ट-ऐंग्लिया पर आक्रमण करके उसको भी उसने अपने ही राज्य में मिला लिया । ९२३ में 'मंचेस्टर' को जीतकर एडवर्ड ने नार्थम्ब्रिया के भी विजय की

भूमिका बाँध दी । एडवर्ड की वीरता तथा शक्ति देख-कर वेल्ज़ के राजा, 'हावल-दि-गुड' ने स्वयं ही उसकी अधीनता मान ली । ९२४ में एडवर्ड की मृत्यु हो गई । यह पहला ही राजा था, जो अपने को ऐंग्लो-सैक्संज़ का राजा समझता था और जिसने इंगलैंड में एक-सत्ताक राज्य प्रचलित करने का यत्न किया ।

(ख) एथल्स्टन (९२४–९४०)

एडवर्ड की मृत्यु होने पर उसका पुत्र 'एथल्स्टन' राज्य पर बैठा । यह अपने को ब्रिटन का सम्राट् (Emperor) समझता था, क्योंकि सब ब्रिटिश-राजा उसकी अधीनता स्वीकृत करते थे । इसकी शक्ति का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि विदेशीय राजा उसकी बहनों से विवाह करने के लिये सदा उत्सुक रहते थे । 'सम्राट् ओटो' की धर्मपत्नी एथल्स्टन की बहन, 'एडिथ' ही थी । 'चार्ल्स-दि-सिंपल' को भी इसकी एक बहन ब्याही थी । सारांश यह कि एथल्स्टन की शक्ति विदेशीय राष्ट्रों तक विख्यात थी । 'वर्नावर' के प्रसिद्ध युद्ध में एथल्स्टन ने स्कॉटलैंड, डेंज़ तथा वेल्ज़ की सम्मिलित सेना को पराजित किया और ऐसी श्रेष्ठ कीर्ति प्राप्त की, जो चिर-काल तक आंग्ल-गीतों द्वारा गाई जाती रही । ९४० में इसकी मृत्यु हो गई और इसका छोटा भाई, 'एडमंड' राज्य पर बैठा ।

(ग) एडमंड (९४०—९४६)

एडमंड के राज्य-काल में मार्सिया तथा डेरा के डेंज़ ने विद्रोह किया। परंतु इसने सहज में ही उस विद्रोह को शांत कर दिया। इसने स्कॉटलैंड के राजा 'मलकान' को कंबरलैंड देकर अपने साथ मिला लिया और उससे यह प्रण करा लिया कि वह इसको जल-सेना और स्थल-सेना से सदा सहायता देता रहेगा। ९४६ में यह मार डाला गया। इसके एड्वी तथा एड्गर नाम के दो पुत्र थे। परंतु ये अल्प-वयस्क थे, इससे इनको राज्य-सिंहासन पर न बैठाकर इनके स्थान पर एडवर्ड-दि-एल्डर का वंशज 'एड्रूड' राज्य-सिंहासन पर बिठाया गया।

(घ) एड्रूड (९४६—९५५)

'एड्रूड' अपने पूर्वजों के समान शक्तिशाली तथा वीर न था। अतः इसने अपूर्व दूर-दर्शिता से संपूर्ण राज्य-कार्य 'डंस्टन' के हाथ में दे दिया। डंस्टन इँगलैंड में सब से योग्य व्यक्ति समझा जाता था। डंस्टन ने ९५४ में नार्थ-ब्रिया को जीत लिया। एड्रूड को अपने राज्य-विस्तार का इतना अभिमान था कि वह अपने को ब्रिटन के सम्राट् तथा सीज़र के नाम से पुकारता था। इसके समय में ही डेंज़ तथा आंग्ल परस्पर बहुत कुछ मिल गए थे—उनमें पहले की तरह भेद-भाव नहीं रहा था। ९५५ में एड्रूड की मृत्यु होने पर एडमंड का पुत्र 'एड्वी' राजगद्दी पर बैठा।

(ङ) एड्वी (६५५–६५६)

एड्वी स्वच्छंद प्रकृति का था । राज्य पाते ही उसकी डंस्टन से लड़ाई हो गई । इस पर उसने डंस्टन को राज्य से बहिष्कृत कर दिया और नार्थंब्रिया तथा मर्सिया पर कठोरता से शासन करने लगा । इसका परिणाम यह हुआ कि नार्थंब्रिया तथा मर्सिया ने विद्रोह करके एड्वी को राज्य-च्युत कर दिया और उसके भाई, 'एड्गर' को राज्य करने के लिये बुलाया ।

(च) शांति-प्रिय एड्गर (६५६–६७५)

एड्गर राज्य प्राप्त करते ही डंस्टन का परम मित्र हो गया । इसने डंस्टन को संपूर्ण राज्य-कार्य सौंप दिया और उसको लंदन का बिशप बनाया । एड्गर का भाई, एड्वी वेसेक्स पर ही शासन करता रहा । शीघ्र ही एड्वी की मृत्यु होने पर संपूर्ण इँगलैंड पुनः एक ही राजा की अधीनता में आ गया । जनता ने एड्गर को 'शांति-प्रिय' की उपाधि दी थी । इसका कारण यह था कि उसने मृत्यु-पर्यंत बिना युद्ध के शांति के साथ ही संपूर्ण देश पर शासन किया । एड्गर ने देश को युद्ध से सुरक्षित रखने के लिये स्कॉटलैंड के राजा को 'एडिनबरा' का नगर दे दिया, यद्यपि इस नगर पर वास्तविक अधिकार उसी का था ।

एड्गर प्रजा-प्रिय राजा था । एक बार की घटना है कि प्रेम-वश 'चेस्टर' पर छः मांडलिक राजाओं ने बहुत

प्रसन्नता से उसकी नौका को स्वयं ही खेया। आश्चर्य की बात है कि आयर्लैंड के अदम्य डेनिश-राजा भी उसकी अधीनता को स्वीकार करते थे। एड्गर को 'ब्रिटन के एंपरर' या 'अगस्टस' के नाम से पुकारा जाता है।

एड्गर न्याय-परायण तथा कठोर शासक था। उसको विदेशियों से बहुत प्रेम था। डंस्टन अति उत्साही तथा धर्मात्मा था। उन दिनों आंग्ल-चर्च की दशा बहुत अवनत थी। डंस्टन ने इसके सुधार का यत्न किया और बिशपों तथा पादरियों को 'संत बेनडिक्ट' (Benedict) के नियमों के अनुसार चलने के लिये बाध्य किया। ये नियम धार्मिक नेताओं के लिये दरिद्रता, ब्रह्मचर्य तथा आज्ञा-पालन अत्यंत आवश्यक बतलाते थे। ९७५ में एड्गर की मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के साथ राज्य की पुरातन महत्ता भी लुप्त होने लगी।

(छ) एडवर्ड (९७५–९७८)

एड्गर के 'एडवर्ड' तथा 'एथल्रड' नाम के दो पुत्र थे। दोनों पुत्रों में राज्य के बटवारे के बारे में झगड़ा उठ खड़ा हुआ। डंस्टन के प्रभाव से एडवर्ड को राज्य मिला। ९७८ में एडवर्ड को किसी ने ख़ंजर से मार डाला। इसकी मृत्यु होने पर 'प्रमादी एथल्रड द्वितीय' राज्य पर बैठा।

एथल्रड के राज-पद पर आते ही डंस्टन ने राजनैतिक कार्यों से अपना हाथ खींच लिया और धार्मिक सुधारों में

ही अपना अंतिम जीवन व्यतीत करने का यत्न किया। डंस्टन ने आंग्ल-इतिहास में जो महान् कार्य किया है, वह बिल्कुल प्रत्यक्ष है। डंस्टन ने अल्फ्रेड की नीति की पूर्णता की और देश की एकता में कोई बात उठा नहीं रक्खी।

(ज) एथलरड प्रमादी (९७८—१०१६)

'एथलरड' का स्वभाव कलह-प्रिय था। शक्की होने के कारण वह शासन-कार्य के सर्वथा अयोग्य था। इन सब दुर्गुणों के साथ-साथ उसमें प्रमाद भी बेहद था। इसीसे तत्कालीन आंग्ल-जनता घृणा के मारे उसको प्रमादी के नाम से पुकारती थी। इसके राज्य-काल में साम्राज्य की एकता छिन्न-भिन्न हो गई और डेंज़ इँगलैंड के चारों ओर पुनः मँडलाने लगे।

उसने डेंज़ के आक्रमण को वीरता से न रोककर रुपयों के सहारे रोकने का यत्न किया और इसीलिये जनता पर डेन्गल्ड (Danegeld) नाम का कर लगाया। रुपयों के लोभ से डेनिश-संघ एथलरड को प्रत्येक वर्ष इँगलैंड पर आक्रमण करने की धमकियाँ देने लगा। इन धमकियों का प्रतिकार करने के उद्देश से एथलरड ने नार्मंडी की शासिका 'एम्मा' से विवाह किया और मूर्खता से 'संत ब्राइस के महोत्सव' के दिन (१३ नवंबर, १००२) डेंज़ लोगों की हत्या करवाई।

हत्या-कांड का समाचार शीघ्र ही डेन्मार्क पहुँचा। इस घटना से क्रुद्ध होकर डेनिश-सम्राट् 'स्वीजन' (Swegen)

ने इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया। डेनिश-लोगों ने १० वर्षों तक इँगलैंड को क्रमशः जीता, परंतु प्रमादी एथल्रड का प्रमाद अंत तक न छूटा। १०१३ में स्वीजन ने इँगलैंड का बहुत प्रदेश जीत लिया। इस घटना के बाद एथल्रड देश को छोड़कर नार्मंडी भाग गया। इसका परिणाम यह हुआ कि डेनिश-सैनिकों ने स्वीजन के पुत्र, 'नट' (Cnut) को इँगलैंड का राजा उद्घोषित किया।

(५) इँगलैंड में डेनिश-राज्य

(क) नट (१०१७–१०३५)

'नट' वीर क्षत्रिय, नीति-निपुण तथा अत्यंत दूरदर्शी था। बहुत-से आंग्लों ने मूर्खता से पुनः एथल्रड को नार्मंडी से बुला लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि नट तथा उसमें १०१६ तक लगातार युद्ध होता रहा। १०१६ में एथल्रड की मृत्यु होने पर उसके वीर पुत्र, 'एडमंड आयर्न साइड' ने नट से युद्ध जारी रक्खा। छः प्रसिद्ध-प्रसिद्ध सम्मुख युद्धों के अनंतर भी कोई पक्ष प्रबल नहीं हुआ। युद्ध से तंग आकर दोनों ही वीरों ने 'आल्नी' पर संधि कर ली। संधि के अनुसार वेसेक्स का राज्य एडमंड को मिला। कुछ ही समय के बाद एडमंड का स्वर्ग-वास हो गया। वेसेक्स के कुलीन सर्दारों ने युद्ध से भयभीत होकर नट को ही अपना शासक चुना।

नट ने इँगलैंड का राज्य प्राप्त करते ही डेनिश-सेना को डेन्मार्क भेज दिया और आंग्लों पर अधिक विश्वास

करने लगा। उसने एडमंड की माता के साथ विवाह कर लिया। उसने एड्गर के नियमों के अनुसार ही देश का शासन करना प्रारंभ किया। प्रसिद्ध है कि उसके समय में इँगलैंड की समृद्धि बेहद बढ़ी। नट इँगलैंड के उत्तम-से-उत्तम राजाओं में एक समझा जाता है। नट ने इँगलैंड को चार प्रांतों में विभक्त किया—

(१) नार्थंब्रिया (३) ईस्ट-ऐंग्लिया

(२) मर्सिया (४) वेसेक्स

उसने अपनी मृत्यु के पूर्व भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को उपरि-लिखित चारों प्रांतों का अधिपति नियत किया। वेसेक्स के शासक 'गाड्विन' पर उसकी विशेष कृपा थी। नट ने गाड्विन का विवाह एक राज-वंशी डेनिश-कन्या के साथ किया। १०३५ में नट की मृत्यु हो गई और उसके दो पुत्रों में से किसको राज्य मिले, इस पर विवाद प्रारंभ हुआ।

(ख) हैरल्ड तथा हार्थनट (१०३५–१०४२)

नट का पुत्र 'हार्थनट' एम्मा से उत्पन्न हुआ था। अतः गाड्विन उसी को इँगलैंड का राजा बनाना चाहता था। परंतु हार्थनट के डेन्मार्क में होने से 'हैरल्ड' अपने भाई के प्रतिनिधि की तरह इँगलैंड का शासक नियत किया गया। १०३७ में हार्थनट के देश में सर्वथा ही अनुपस्थित रहने से हैरल्ड ही राजा चुन लिया गया। हैरल्ड ने राज्य प्राप्त करते ही एम्मा को देश से बाहर निकाल

दिया। परंतु उसके लिये इसका फल बहुत ही बुरा हुआ। हार्थनट ने अपनी माता का अपमान सुनकर इँगलैंड पर आक्रमण करने का इरादा किया। आंग्ल-जनता ने यह सुनते ही हार्थनट को अपना राजा चुन लिया। हार्थनट ने अपने भाई के शव के साथ निंदनीय व्यवहार और हैरल्ड के पक्षपातियों पर अत्याचार किया। दैवी घटना से १०४२ में अचानक उसकी मृत्यु हो गई। एम्मा तथा गाड्विन ने एथलरड के पुत्र, 'धर्मात्मा एडवर्ड' को १०४२ में राजा बनाया। एडवर्ड के राज्याभिषेक की ख़बर सुनकर आंग्ल-प्रजा को अपार प्रसन्नता हुई, क्योंकि कुछ समय के विप्लव के बाद पुनः अल्फ्रेड के वंशज को ही इँगलैंड का राज्य मिल रहा था। आंग्ल-प्रजा अल्फ्रेड के वंशजों को ही अपना राजा बनाना चाहती थी।

चतुर्थ परिच्छेद

एडवर्ड और हैरल्ड का राज्य और इँगलैंड पर नार्मंज़ का आक्रमण

(१) धर्मात्मा एडवर्ड (१०४२–१०६६)

एडवर्ड ४० वर्ष की आयु में इँगलैंड का राजा बना। संपूर्ण आयु विदेश में व्यतीत होने के कारण इस पर आंग्ल-जाति का कुछ भी चिह्न न था। एडवर्ड भाषा, रुचि, संगति

तथा स्वभाव आदि में पूर्णतया विदेशी था। प्रेमी, साधु-स्वभाव तथा पवित्राचारी होने के कारण आंग्ल-प्रजा इसको धर्मात्मा एडवर्ड के नाम से पुकारने लगी। अल्प-शक्ति होने के कारण इसकी संपूर्ण राज्य-शक्ति भिन्न-भिन्न अर्लों के ही हाथ में चली गई। गाड्विन ने एडवर्ड को राज्य दिलाया था, अतः वह एडवर्ड का विशेष कृपा-पात्र था। एडवर्ड ने गाड्विन की पुत्री, 'एडिथ' के साथ विवाह किया।

राज्य-कार्य में गाड्विन के मुख्य सहायक प्रायः उसके दोनों पुत्र 'हैरल्ड' तथा 'टास्टिग' ही थे। धीरे-धीरे एडवर्ड का जी गाड्विन से फिरता गया। राजा ने मुख्य-मुख्य स्थानों पर क्रमशः नार्मंज़ को नियत करना आरंभ किया। आंग्लों की अपेक्षा नार्मंज़ की सभ्यता उच्च थी। एडवर्ड के समय में नार्मंडी का राजा 'विलियम' था। एडवर्ड विलियम पर बहुत विश्वास रखता था।

गाड्विन ने बहुत-सी सेना एकत्र करके एडवर्ड के नार्मन-दर्बारियों को देश से निकालना चाहा, परंतु कृतकार्य न हो सका। इसका परिणाम यह हुआ कि उसको स्वयं ही इँगलैंड से निकलना पड़ा। इसी बीच में नार्मंडी का राजा, विलियम इँगलैंड में आया। एडवर्ड ने उसका बहुत स्वागत किया और किंवदंती है कि उसने विलियम को यह वचन भी दिया कि मेरे मरने के बाद इँगलैंड का राजा तू ही बनेगा।

१०५२ में गाड्विन तथा हैरल्ड ने इँगलैंड पर आक्रमण किया। एडवर्ड उनके आक्रमण को रोकने में सर्वथा असमर्थ था। अतः एडवर्ड ने उनसे संधि कर ली और उनके राज्य उनको सौंप दिए। गाड्विन ने राज्य में शक्ति प्राप्त करते ही देश से संपूर्ण विदेशियों को निकाल दिया। कुछ ही समय बाद गाड्विन मर गया और उसके स्थान पर हैरल्ड वेस्ट-सैक्संज़ का अर्ल बना। हैरल्ड वीर तथा नीति-निपुण था। धीरे-धीरे इसने अपने भाइयों को दो भिन्न-भिन्न प्रांतों का अर्ल बना दिया। १०६४ में हैरल्ड ने वेल्ज़ को जीता और उसका शासन भी उसने अपने ही हाथ में ले लिया।

हैरल्ड का भाई, 'टास्टिग' शासन के अयोग्य था। नार्थंब्रियावालों ने उसको अर्ल-पद से पृथक् करके 'मोर्कार्ट' को अपना अर्ल चुना। इस घटना से हैरल्ड की शक्ति को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। इन्हीं दिनों में एडवर्ड ने 'वेस्ट-मिनिस्टर' का प्रसिद्ध विहार बनाया। स्वास्थ्य के ठीक न होने के कारण १०६६ की ५ जनवरी को एडवर्ड का स्वर्ग-वास हो गया और 'हैरल्ड' इँगलैंड का राजा चुना गया। राजा बनने के पूर्व ही हैरल्ड जहाज़ के टूट जाने से नार्मंडी में विलियम के हाथ में पड़कर क़ैद हो गया था। विलियम ने हैरल्ड से वचन ले लिया था कि वह उसको ही इँगलैंड का राजा बनाएगा। एडवर्ड की मृत्यु होने पर

हैरल्ड के, विलियम के स्थान पर, स्वयं ही राजा बनने से जो घटनाएँ घटित हुईं, उनका उल्लेख आगे चलकर किया जायगा।

(२) हैरल्ड का शासन (१०६६ की ५ जनवरी से १४ ऑक्टोबर तक)

एडवर्ड की मृत्यु होने पर एडमंड आयर्नसाइड के पोते 'एड्गर-दि-एथ्लिङ्' का आंग्ल-राज्य पर वास्तविक अधिकार था। परंतु हैरल्ड को शक्ति में अधिक देखकर 'विट्नेजिमाट' ने उसी को इँगलैंड का राजा बना दिया। हैरल्ड के भाइयों को उसकी वृद्धि असह्य हुई। नार्मंडी के राजा विलियम ने भी हैरल्ड को उसके असत्याचरण के लिये धमकी दी, क्योंकि पहले वह विलियम को आंग्ल-राजा बनाने का वचन दे चुका था किंतु अंत को वह स्वयं राजा बन गया।

इन्हीं दिनों में नार्वे के राजा, 'हार्द्रादा' की सहायता से टास्टिग ने बलपूर्वक नार्थंब्रिया का राज्य प्राप्त करने का यत्न किया। इन दोनों ने ही मोर्कांट तथा उसके भाई एड्विन को फुलफ़ोर्ड पर परास्त किया। इस शोक-जनक समाचार को सुनकर हैरल्ड ने सेना-सहित यार्क की ओर प्रस्थान किया और स्टैंफ़ोर्ड ब्रिज (Stamford Bridge) पर दोनों ही को परास्त कर दिया। टास्टिग तथा हार्द्रादा युद्ध में मारे गए। विजय के तीन दिन बाद ही

हैरल्ड को सूचना मिली कि नार्मंडी के विलियम ने पिवंसी पर अपने जहाज़ों से उतरकर इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया है। हैरल्ड ने बिना किसी प्रकार की विशेष तैयारी के विलियम से युद्ध करने के लिये शीघ्र ही प्रस्थान किया। हैरल्ड हेस्टिंग के प्रसिद्ध युद्ध में १४ ऑक्टोबर को मारा गया और इँगलैंड पर विलियम का आधिपत्य आरंभ हुआ। वेस्ट-मिनिस्टर के विहार में २५ दिसंबर, १०६६ में आंग्ल-प्रजा ने विलियम का राज्याभिषेक किया और उसके इँगलेंड के राजा होने की घोषणा कर दी।

(३) नार्मन-विजय से पूर्व आंग्ल-सभ्यता

१—सामाजिक अवस्था

नार्मन-विजय से पूर्व इँगलैंड योरोपियन महाद्वीप से सर्वथा पृथक् था। विदेशी व्यापार तो दूर रहा, स्वदेशी व्यापार की सत्ता भी बहुत ही कम थी। जनता विशेषतः खेती करती थी। जन-संख्या २० लाख से अधिक न थी।

समृद्धि तथा वैभव की दृष्टि से आंग्ल-जनता तीन भागों में विभक्त थी। बड़े-बड़े ताल्लुक़ेदारों को थेंज़, मध्यम भूमि-पतियों तथा स्वतंत्र पुरुषों को कर्लेज़ और दासों को थ्यूज़ (Theows) के नाम से पुकारा जाता था। व्यापार तथा व्यवसाय के न होने से नगरों की संख्या बहुत ही

कम थी। इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि डेंज़ के आगमन से स्थान-स्थान पर आंग्ल-नगरों की नींव पड़ गई थी। कुछ नगरों का व्यापार-व्यवसाय के कारण और कुछ नगरों का छावनी के कारण समुत्थान हो गया था। रोमन-सड़कों के किनारे भी बहुत-से छोटे-छोटे नगर बन गए थे। दृष्टांत के तौर पर लंदन, चेस्टर, यार्क तथा लिंकन आदि नगरों का समुत्थान रोमन-सड़क से ही हुआ है।

ताल्लुक़ेदारों तक के गृह लकड़ी ही के थे, क्योंकि आंग्ल-जनता को पत्थर के मकान बनाने का ज्ञान न था। भोजन के पकाने में किसी प्रकार की विशेष चतुरता न थी। अमीर-ग़रीबों का भोजन एक ही-सा अस्वादिष्ठ होता था। ताल्लुक़ेदार लोग विदेशी रेशमी तथा सूती वस्त्रों का इस्तेमाल करते थे। उन्हें चाँदी के बर्तन रखने का बहुत शौक़ था। एडवर्ड का वेस्ट-मिनिस्टर का विहार बनवाना आंग्लों के लिये अतिशय लाभप्रद सिद्ध हुआ। इससे आंग्लों ने नार्मनों से कुछ-कुछ गृह-निर्माण की कला सीख ली।

अल्फ्रेड ने आंग्ल-साहित्य की उन्नति में जो प्रयास किया, वह भी भुलाया नहीं जा सकता। आंग्ल-क्रानिकल का लिखना इसी समय से प्रारंभ हुआ था। साहित्य के प्रति जनता में यथेष्ट प्रेम था। संतों के क़िस्से-कहानियाँ,

धार्मिक पुस्तकों के अनुवाद आदि ही मुख्य कार्य थे, जिनमें विद्वानों की लेखनी चलती थी। आंग्ल-भाषा में बहुत-से डेनिश-शब्द घुस गए थे। इससे आंग्ल-भाषा की समृद्धि यथेष्ट रूप से अधिक बढ़ गई।

२ राजनैतिक अवस्था

(क) राजा

राज्य की संपूर्ण शक्ति राजा के ही हाथ में थी। उसकी आय बहुत थोड़ी होती थी। नट से पहले तक इँगलैंड के राजाओं के पास स्थिर सेना न होती थी। मुख्य-मुख्य धार्मिक उत्सवों पर राज्य के बड़े-बड़े भूमि-पति और पादरी एकत्र होते थे और राजा को राज्य-कार्य के बारे में सलाहें देते थे। इस धर्म-सभा का प्राचीन नाम विट्नेजिमाट था। यही सभा एक राजा की मृत्यु पर द्वितीय राजा को चुनती थी। नवीन-नवीन नियमों का निर्माण करना भी इसी के हाथ में था।

(ख) शासन-विभाग

राजा का मुख्य अधिकारी एल्डर्मैन होता था। नट के राज्य के बाद एल्डर्मैन हां 'अर्ल' के नाम से पुकारा जाने लगा प्रत्येक मंडल पर एक अर्ल का शासन होता था। अक्सर राजा एक ही अर्ल को बहुत-से मंडल सुपुर्द कर देता था। इस दशा में अर्लों को प्रत्येक मंडल के शासन के लिये शैरिफ नियत करना पड़ता

था। नार्मन-काल से शैरिफ ही मंडल का मुख्य शासक रह जायगा और अर्ल मुख्य सेनापति का रूप धारण कर लेंगे।

जनता प्रति दस पुरुषों में विभक्त थी। प्रत्येक प्रकार के व्यक्तिगत अपराधों के वे दस पुरुष उत्तरदायी होते थे। यह होते हुए भी इँगलैंड में चोर-डाकुओं की कुछ कमी न थी। प्रत्येक जंगल तथा दलदल में ये लोग बहु-संख्या में छिपे रहते थे।

(ग) नियम तथा न्याय-विभाग

प्राचीन काल में इँगलैंड में राज्य-नियमों की संख्या बहुत कम थी। अलफ्रेड-जैसे स्मृतिकार भी नियम-संग्रह के सिवा कोई विशेष नियम नहीं बनाते थे। प्रत्येक अपराध के लिये जुर्माना नियत था। घातक को मृत पुरुष के परिवार को जुर्माने में रुपया देना पड़ता था। संपूर्ण आंग्ल-प्रदेश भिन्न-भिन्न मंडलों (ज़िले या शायर) में और प्रत्येक मंडल सौ-सौ भागों में विभक्त था। डेनिश-ज़िलों में ऐसे प्रत्येक भाग को 'वेपंटेकस' के नाम से पुकारा जाता था।

मंडल तथा वेपंटेकस के पृथक्-पृथक् न्यायालय होते थे। न्यायालयों में चार बड़े-बड़े पुरुषों का उपस्थित होना आवश्यक होता था। स्वेच्छानुसार अन्य भूमि-पति आदि भी न्यायालय में उपस्थित हो सकते थे। वेपंटेकस

के न्यायालयों की अपीलें मंडल के न्यायालय सुनते थे। अपराधों का निर्णय साक्षी तथा दैवी-विधि से किया जाता था। साक्षी-विधि में साक्षियों के शपथ खाने पर अपराधी अपराध से मुक्त हो जाता था। दैवी-विधि में जलती आग, गरम लोहे आदि से अपराधी को दग्ध करने का यत्न किया जाता था। जो दग्ध होने से बच जाता था, वह निरपराध समझा जाता था।

इन दोनों विधियों के अतिरिक्त अक्सर द्वंद्व-युद्ध के द्वारा भी अपराधी का निर्णय किया जाता था। युद्ध में जो विजयी होता था, वही निरपराध समझा जाता था।

(घ) चर्च (Church)

आंग्ल-शासन-पद्धति में चर्च की शक्ति यथेष्ट अधिक थी। पादरियों के बहुत योग्य तथा विद्वान् होने के कारण चर्च की स्थिति राज्य से अत्यंत उच्च थी। डंस्टन पादरी था और राज्य-कार्य भी चलाता था। ११ वीं सदी में प्रायः पादरी ही देश के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध राज-नीति-ज्ञ होंगे। विट्नेजिमाट में राजा को बहुत-सी सलाहें पादरी लोग ही देते थे। प्रत्येक आर्च-बिशप पोप से 'पैलियम' (Pallieim) लेने के लिये रोम में जाता था। इससे चर्च के द्वारा विदेशी राष्ट्रों से इँगलैंड कुछ-कुछ सम्मिलित था।

३—प्राचीन आंग्लों के मुख्य-मुख्य राजा
सन् ४४९
केंट में जूट्स का आगमन
४९७ में केंट का राजा, 'एथल्वर्ट' था
सन् ४७७
'सिसा' के आधिपत्य में सैक्संज़ का आगमन
ससेक्स, वेसेक्स, ऐसेक्स
८०२—८३९ एग्वर्ट
८३९—८५८ एथल्वुल्फ़
सन् ५४७
एंग्लज़ का इँगलैंड में आगमन
नार्थम्ब्रिया
५४७ ईदा
६१७—६३३ एड्विन
ऐंग्लिया
मर्सिया
६२७—६५५ पंडा
७५७—७९५ ओफा
एथल्वाल्ड ८५८—८६०
एथल्वर्ट ८६०—८६६
एकल्रड १ ८६६—८७१
अल्फ़ेड-दि-ग्रेट ८७१—९०१
एडवर्ड-दि-एल्डर ९०१—९२५
एथल्फ़्लड मर्सिया की रानी
९२५—९४० एथल्स्टन
९४०—९४६ एड्मंड १
९४६—९५५ एड्रड

९५५—९५९
एड्वी
९५९—९७५
शांति-प्रिय एड्गर
एडवर्ड
९७५—९७८
प्रमादी एथल्रड
९७८—१०१६
१०१६
एड्मंड आयर्न-साइड (७ मास तक राज्य किया)
डेनिश राजा—
१०१६—१०३५
नट
१०४२—१०६६
एडवर्ड-दि-कांफ़ैसर
एडवर्ड
हैरल्ड १
१०३५—१०४०
१०४०—१०४२
हार्थनट
एड्गर एथलिङ्
मार्गरेट (स्कॉटलैंड के राजा मल्काम ३ की धर्मपत्नी)
एडिथ या मटिल्डा
(इँगलैंड के हैनरी १ की धर्मपत्नी)
१०६६
हैरल्ड २
अर्ल गाड्विन का पुत्र
(लोक-सभा द्वारा ५ जनवरी को राजा बना और २४ ऑक्टोबर को हेस्टिंग के युद्ध में मरा)

द्वितीय अध्याय

नार्मन और एंजविन राजा

प्रथम परिच्छेद

विजयी विलियम प्रथम (१०६६–१०८७)

(१) नार्मंडी तथा नार्मंज

राल्फ़ (Hrolf) नाम के नेता के आधिपत्य में डेनिश-जाति ने सीन के मुहाने के पार्श्ववर्ती प्रदेशों को जीता। फ्रांसीसी डेनिश-जाति को नार्थमैन या नार्मन नाम से पुकारते थे। चार्ल्स-दि-सिंपल (फ्रेंच-राजा) ने एक संधि के द्वारा सीन के पार्श्ववर्ती प्रदेशों पर नार्मंज़ का मांडलिक राज्य मान लिया। गुथरम के समान राल्फ़ भी ईसाई बन गया। फ्रेंच-राजा ने अपनी कन्या के साथ उसका विवाह कर दिया। राल्फ़ की मृत्यु होने पर विलियम लाङ्स्वोर्ड (William Longsword) नार्मंडी का ड्यूक बना। यह मूर्ति-पूजक था। अतः नार्मंज़ चिर-काल तक ईसाई-मत के अनुयायी नहीं हुए। विलियम की मृत्यु होने पर उसके पुत्र निर्भय रिचर्ड (Richard the Fearless) ने नार्मंडी का राज्य प्राप्त किया। इसके समय में नार्मंज़

कट्टर ईसाई बन गए। प्रत्येक स्थान पर बड़े-बड़े विहार बनाए जाने लगे। वीर हरलोइन (Herlouin) ने वक नामक पार्वतीय नद के तट पर 'वक' का प्रसिद्ध विहार बनाया। लंबार्ड-निवासी विद्वान् लैंफ्रैंक (Lanfranc) वक का संचालक तथा स्वामी नियत किया गया। उसकी विद्वत्ता से कुछ ही वर्षों में वक एक प्रसिद्ध शिक्षणालय बन गया। लैंफ्रैंक के नीचे ही एन्सल्म (Anselm) नामक एक अन्य इटैलियन धर्मात्मा विद्वान् रहता था। लैंफ्रैंक का उत्तराधिकारी एन्सल्म ही नियत किया गया। योरप में धर्म-शास्त्र का उदय इसी से माना जाता है। यह प्रथम व्यक्ति था, जिसने योरप में तर्क द्वारा ईश्वर को सिद्ध किया।

१—विलियम विजेता (William the Conqueror)

(१०४२—१०६६)

ड्यूक राबर्ट की मृत्यु होने पर विलियम को अल्पायु में ही राज्य-भार सँभालना पड़ा। उसको कमसिन देखकर उद्दंड नार्मंज़ ने समझा कि उन्हें स्वतंत्रता के लिये स्वर्ण-सुयोग मिल गया। परंतु विलियम की वीरता तथा नीति-निपुणता ने उद्दंड नार्मंज़ की एक न चलने दी। नार्मंज़ उसको देखकर ही भयभीत होने लगे। आंग्ल-क्रानिकल का कथन है कि "विलियम की भयंकरता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने का साहस किसी भी दर्बारी में न था।"

नार्मंडी की वृद्धि से अंजो-प्रदेशियों को भय हुआ। उन्होंने बहुत बुद्धिमत्ता के साथ फ्रांस के राजा को नार्मंडी के विरुद्ध कर दिया। फ्रांस के राजा ने एक प्रबल सेना को नार्मंडी-विजय के लिये भेजा, परंतु विलियम ने मार्ग में ही उसको तहस-नहस कर दिया। आश्चर्य की बात है कि कई बार फ्रांस के राजा ने बड़ी-बड़ी सेनाएँ नार्मंडी को जीतने के लिये भेजीं, परंतु विलियम के आगे किसी की दाल नहीं गली। विलियम ने ब्रिटनी को अपने अधीन किया और अंजो-प्रांतियों की शरारतों से अपने को सुरक्षित रक्खा।

२—विलियम तथा नार्मंडी

विलियम ने नार्मंडी में व्यापार-व्यवसाय की वृद्धि का बहुत प्रयत्न किया। नार्मन-बैरंज़ विलियम के इस उच्च कार्य के विरुद्ध थे। वे लोग विलियम की विजयों को देख-देख-कर भयभीत थे, अतः उसको कुछ भी हानि पहुँचाने में समर्थ न थे। पादरियों के आचार को सुधारने में विजयी विलियम ने जो कष्ट उठाए, वे स्मरणीय हैं। विलियम ने फ़्लैंडर्ज़ की राजपुत्री मटिल्डा से विवाह किया। इस कारण पोप उससे रुष्ट हो गया। वक के संचालक, लैंफ्रैंक ने पोप का पक्ष लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि विजयी विलियम ने क्रुद्ध होकर लैंफ़्रैंक से नार्मंडी छोड़कर चलेजाने के लिये कहा। लैंफ्रैंक लँगड़ी घोड़ी पर चढ़कर

धीरे-धीरे इटली की ओर रवाना हुआ। विजयी विलियम ने क्रुद्ध होकर उससे कहा कि शीघ्र ही नार्मंडी से चले जाओ। लैंफ्रैंक ने उत्तर दिया कि "मुझको एक उत्तम घोड़ा दे दो, मैं शीघ्र ही चला जाऊँ।" इस उत्तर पर और लँगड़े टट्टू को देखकर विलियम को हँसी आ गई और उसने लैंफ्रैंक को अपना मंत्री बना लिया। इन्हीं दिनों में एम्मा से एथल्ड ने विवाह किया और विजयी विलियम के हृदय में आंग्ल-राज्य-विजय की आशा उत्पन्न हुई। एडवर्ड के आंग्ल-राज्य पर बैठते ही विलियम ने उसके उत्तराधिकारी बनने के जो प्रयत्न किए, उनका उल्लेख किया जा चुका है।

(२) इँगलैंड तथा विजयी विलियम

राज्याभिषेक के अनंतर कई सालों तक विलियम इँगलैंड में शांतिपूर्वक राज्य करता रहा। विलियम के साथ युद्ध करने में जिन आंग्लों ने हैरल्ड का साथ दिया था, उनकी भूमियाँ छीन ली गईं। यह सब होते हुए भी, विजयी विलियम ने आंग्ल-नियमों के अनुसार ही शासन करने का प्रण किया।

विलियम स्वेच्छाचारी प्रकृति का था। वचन देकर भी उसने आंग्ल-नियमों को तोड़ा और जनता पर मन-माना शासन किया। १०६७ में विलियम को नार्मंडी जाना पड़ा। तब उसने अपने स्थान पर बिशप

ओडो को आंग्ल-शासन के लिये नियत किया। ओडो ने आंग्लों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया और उनकी भूमियाँ छीनने तथा उन पर दुर्ग बनाने के लिये नार्मंज़ को प्रोत्साहित किया। टेम्स नदी के उत्तरीय प्रदेशों ने विलियम की अधीनता स्वयं ही स्वीकार कर ली थी। ओडो के स्वेच्छाचार तथा अत्याचार के व्यवहार से पीड़ित होकर उन्होंने विद्रोह करना प्रारंभ कर दिया।

१—विद्रोह

ओडो के अत्याचार से संपूर्ण उत्तरीय इँगलैंड में विद्रोह हो गया था। अतः विद्रोह शांत करने के लिये विजयी विलियम नार्मंडी से शीघ्र ही इँगलैंड आ गया। १०७१ तक उसको किसी प्रकार भी शांति न मिली। स्थान-स्थान पर विद्रोह होते ही रहे। यदि आंग्ल परस्पर मिलकर प्रयत्न करते, तो इन विद्रोहों को शांत करना उसके लिये असंभव हो जाता। ऐक्याभाव के कारण कोई भी विद्रोह सफल न हुआ और विलियम के स्वेच्छाचार ने पूर्ण रूप धारण किया।

जिन-जिन भूमियों को विजयी विलियम क्रमशः जीतता था, उन पर दुर्ग बनाता जाता था और उनमें नार्मन-सेनाओं को रखता जाता था। यह इसीलिये कि आंग्ल पुनः विद्रोह न कर सकें।

(१) १०६८ में वेसेक्स के लोगों ने विद्रोह किया

और हैरल्ड के पुत्रों को अपने शासन के लिये बुला लिया। विलियम ने एक्ज़ीटर (Exeter) नगर को सहसा हस्तगत कर लिया और वेसेक्स के विद्रोह का दमन किया। एड्विन तथा मोर्कार ने भी कई बार विद्रोह किया, परंतु पारस्परिक असंघटन के कारण कभी कृतकार्य न हो सके।

(२) स्कॉटलैंड के राजा मल्काम केनमूर (Malcolm Canmore) की सहायता की आशा से एड्गर-दि-एथलिङ् ने नार्मंज़ के विरुद्ध विद्रोह किया। परंतु सहायता न पाकर विलियम से पराजित हुआ। विलियम ने दया करके उसको उसका राज्य सौंप दिया।

(३) १०७१ में हर्वर्ड (Hereword) के नेतृत्व में आंग्लों ने पुनः विद्रोह किया। इस विद्रोह में एड्विन तथा मोर्कार पुनः सम्मिलित हो गए। विजयी विलियम ने इस सम्मिलित प्रयत्न को भी निष्फल कर दिया और मोर्कार तथा हर्वर्ड को क्षमा-प्रदान किया। एड्विन इसी विद्रोह में मारा गया। अंत काल तक हर्वर्ड विलियम का विश्वास-पात्र रहा।

(४) १०७५ में रोज़र तथा राल्फ़ ने विलियम के विरुद्ध षड्यंत्र रचा और साथ ही उन्होंने इस षड्यंत्र में वुल्थियाफ़ (Woltheof) नाम के आंग्ल-अर्ल को भी सम्मिलित करने का यत्न किया। षड्यंत्र का

मुख्य उद्देश विलियम को तख़्त से उतारकर इँगलैंड को परस्पर तीन भागों में विभक्त करना था। वुल्थियाफ़ की स्त्री विजेता की भतीजी जूडिथ थी। जूडिथ को इस षड्यंत्र का पता लग गया। उसने संपूर्ण घटना से विजेता विलियम को सूचित कर दिया। राल्फ़ तथा रोज़र के विद्रोह करने पर विलियम ने रोज़र को जन्म-भर के लिये बंदी-घर में डाल दिया और वुल्थियाफ़ को मृत्यु-दंड दिया। राल्फ़ योरप भाग गया था, अतः विलियम के हाथ न लगा।

(५) नार्मन-बैरंज़ स्वेच्छाचारी थे। इस कारण उनको विलियम का आधिपत्य पसंद न था। १०७७ में विलियम के बड़े पुत्र राबर्ट ने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया। राबर्ट को इँगलैंड तथा नार्मंडी के नार्मन-बैरंज़ ने यथेष्ट सहायता पहुँचाई। विलियम ने बड़े परिश्रम से विद्रोह शांत किया। राबर्ट को क्षमा-प्रदान करके विलियम ने नार्मंज़ पर से अपना विश्वास हटा लिया और आंग्लों पर विश्वास करना प्रारंभ किया।

विजेता को विजय स्थापित करने में जिन-जिन विद्रोहों का दमन करना पड़ा, उनका उल्लेख किया जा चुका। अब इस विषय पर प्रकाश डालने का यत्न किया जायगा कि उसने इँगलैंड में किस प्रकार राज्य का प्रबंध किया और आंग्ल-सभ्यता बढ़ाने के क्या-क्या साधन किए।

२—राज्य-प्रबंध

विजयी विलियम ने योरप की तरह इँगलैंड में भी फ़्यूडलिज़्म (Feudalism) प्रचलित कर दिया । फ़्यूड-लिज़्म के अनुसार संपूर्ण आंग्ल-भूमि पर विलियम का आधिपत्य तथा स्वामित्व स्थापित हो गया । प्रत्येक भूमि-पति उसका वैसल (Vassal) हो गया । राजा से भूमियाँ लेते समय भूमि-पतियों को शपथ खानी पड़ती थी कि 'हे राजन्, मैं तुम्हारा सदा साथ दूँगा और कभी विश्वास-घात नहीं करूँगा ।' इस शपथ के साथ उनको यह प्रण करना पड़ता था कि युद्ध के समय वे सैनिक तथा सामान देंगे । बड़े-बड़े भूमि-पति जब अपनी भूमि कृषकों को देते थे, तो वे भी उनसे वैसी ही शपथें तथा वचन लेते थे । बड़े-बड़े भूमि-पतियों को इँगलैंड में बैरन कहते थे । विलियम के राज्य-काल के अंत में नार्मंज़ ही इँगलैंड में बैरन के पद पर थे । आंग्ल-जनता तो उनके अधीन हो ही चुकी थी ।

बैरंज़ के विश्वास-घातों से क्रुद्ध होकर विजेता ने अपने अंतिम दिनों में क्रमशः आंग्लों को अपना विश्वास-पात्र बनाना प्रारंभ कर दिया । यही कारण है कि हर्वर्ड क्रमशः बढ़ता ही चला गया और अंत को एक प्रबल सेनापति बन गया । विलियम ने आंग्लों पर अधिक कर लगाए और अधिक-से-अधिक रुपया प्राप्त करने का यत्न

किया। आंग्ल-क्रानिक्लर का कथन है कि 'राजा तथा उसके दर्बारी चाँदी और सोने के बड़े लोभी हैं। उनको धन जमा करने की हर समय चिंता रहती है। राजा धन जमा करने का ओहदा उसी को दे देता है, जो उसे अधिक-से-अधिक धन बटोर देने का प्रण दे।' इसके साथ-ही-साथ क्रानिक्लर का यह भी कथन है कि 'विलियम कठोर तथा तेजस्वी था। उसकी इच्छा के विरुद्ध चलने का किसी भी मनुष्य को साहस न था। देश में उसने जो नियम तथा शांति स्थापित की, वह कभी भुलाई नहीं जा सकती। वह वास्तव में बड़ा बुद्धिमान् तथा महा-पुरुष था।'

१०८६ में विजयी विलियम ने 'सैलस्बरी' पर एक बड़ा दर्बार किया और उसमें संपूर्ण छोटे तथा बड़े भूमि-पतियों से राज-भक्ति का प्रण लिया। उसने बड़े-बड़े भूमि-पतियों को दूर-दूर के मंडलों का शासन-कार्य दिया और साथ ही इस बात का विशेष ध्यान रक्खा कि एक ही बैरन के स्वामित्व में बहुत-से समीपस्थ तथा संघटित मंडल आ न सकें, जिससे उसकी शक्ति अपरिमित बढ़ न जाय। देश को विदेशियों के आक्रमणों से सुरक्षित रखने के लिये उसने सीमा-प्रांत के लॉर्डों को अधिक शक्ति दे दी। आंग्ल-इतिहास में यह लॉर्ड 'पैलेटाइन लॉर्ड' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

विलियम को शिकार का बहुत शौक़ था । इस उद्देश से उसने भिन्न-भिन्न प्रांतों में बहुत-से सरकारी बंद जंगल बनवाए, जिनसे आंग्ल-जनता को कई सदियों तक बहुत कष्ट उठाना पड़ा ; क्योंकि जंगलात के नियम बहुत कठोर थे । यदि कोई किसान किसी सरकारी जंगल के पशु को मार देता था, तो उसको प्राण-दंड तक दे दिया जाता था । ऐसी दशा में अपराधी मनुष्य को अंग-हीन बना देना तो राजा के लिये साधारण-सी बात थी ।

१०८६ में इँगलैंड की संपत्ति का पता लगाने के लिये विलियम ने एक 'गणना-विभाग' स्थापित किया । गणना-विभाग के राज-कर्मचारियों ने प्रत्येक प्रांत में निम्न-लिखित बातों की जाँच की—

(क) प्रत्येक मंडल में कितनी भूमि है ?

(ख) प्रत्येक मंडल में राजा की कौन-कौन-सी भूमि है ?

(ग) प्रत्येक मंडल में कितने पशु हैं ?

(घ) राजा को कितना कर लेना चाहिए ?

अन्वेषण या गणना-विभाग ने अपना कार्य अति उत्तमता से किया । गणना हो जाने पर आंग्लों पर कर बहुत ही अधिक हो गए । यही कारण है कि चिर-काल तक 'गणना-पुस्तक' को आंग्ल-जनता घृणा तथा क्रोध

की दृष्टि से देखती रही। जो हो, आंग्ल-इतिहास-निर्माण में गणना-पुस्तक ने जो सहायता पहुँचाई है, वह कभी भुलाई नहीं जा सकती।

३—राज्य तथा चर्च

विजयी विलियम के आगमन से इँगलैंड में राज्य के सदृश ही धर्म में भी क्रांति आ गई। पोप के प्रेम-पात्र तथा भक्त होने के कारण विलियम ने आंग्ल-चर्च का भी योरोपियन-चर्च की ही तरह संगठन कर दिया। इस-से आंग्ल-चर्च पर भी पोप की प्रधानता स्थापित हो गई। विजेता ने लैंफ्रैंक को कैंटर्बरी का आर्च-बिशप नियत किया। आर्च-बिशप तथा विलियम ने परस्पर मिलकर संपूर्ण आंग्ल-विहारों तथा मठों पर नार्मंज़ का ही प्रभुत्व स्थापित कर दिया। नार्मन-पादरी नगरों में रहने के अभ्यस्त थे, अतः उन्होंने अपने-अपने मठ तथा विहारों के समीपस्थ नगरों में रहना प्रारंभ कर दिया। नार्मंज़ के इँगलैंड में आने से आंग्लों ने भी योरप के सदृश ही सभ्यता तथा शिक्षा में उन्नति करना प्रारंभ कर दिया।

वर्गंडी के क्लनी नामक विहार के भिक्षुओं ने 'चर्च-राज्य' का सिद्धांत आविष्कृत किया। ग्रेगरी सप्तम (रोम का पोप) उन सिद्धांतों का अनन्य भक्त था और योरप में उन सिद्धांतों का प्रचार बहुत शीघ्र करना चाहता था।

विषय की स्पष्टता के लिये चर्च-राज्य के सिद्धांत यहाँ पर लिखे जाते हैं—

(क) चर्च के कार्यों में राष्ट्र का कुछ भी हस्त-क्षेप न हो।

(ख) चर्च स्वयं ही अपना शासन तथा न्याय करे।

(ग) चर्च ही चर्च-संबंधी नियमों का निर्माण करे। राष्ट्र का इसमें कुछ भी हस्तक्षेप न होना चाहिए।

(घ) भिक्षुओं की तरह पादरी लोग भी विवाह न करें।

(ङ) राजा लोग पादरियों का न्याय न करें।

(च) पोप के कथन पर चलना संपूर्ण पादरियों का कर्तव्य है।

इन उपरि-लिखित सिद्धांतों को राजा लोग कब मानने लगे। सम्राट् हैनरी चतुर्थ ने इनका काफ़ी विरोध किया। ५० वर्ष तक पोप तथा योरोपियन सम्राटों में झगड़ा होता रहा। योरोपियन इतिहास में यह झगड़ा 'अधिकार-युद्ध' (Investiture Contest) के नाम से प्रसिद्ध है।

विलियम तथा लैंफ्रैंक ग्रेगरी सप्तम के पक्ष में थे। राष्ट्रीय राज्य से चर्च को पृथक् करने के लिये विलियम ने बहुत-से नियम पास किए। इन नियमों के अनुसार चर्च के न्यायालय राजकीय न्यायालयों से पृथक् कर दिए

गए और यह नियम कर दिया गया कि पादरियों का न्याय चर्च के ही न्यायालय करें। राजकीय न्यायालयों का पादरियों के मामले में हस्तक्षेप न होगा। लैंफ्रक ने पोप के नियमों को देश में प्रचलित करने के लिये एक धर्म-सभा जोड़ी और पादरियों को विवाह करने से रोका। इसी समय से इँगलैंड में राष्ट्रीय राज्य से चर्च-राज्य पृथक् हो गया और आंग्ल-प्रजा पर पोप का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

विलियम चर्च की बढ़ती हुई शक्ति से पहले से ही सावधान था। अतः उसने बहुत-से चर्च-संबंधी नियमों के साथ यह भी नियम जोड़ दिया कि राजा की आज्ञा के बिना कोई भी पादरी किसी भी पोप के कहने पर नहीं चल सकता। विलियम अपनी आज्ञा के बिना किसी भी चर्च-सभा को चर्च-संबंधी नियम नहीं बनाने देता था। जब ग्रेगरी सप्तम ने विलियम से रोमन-चर्च के लिये रुपया माँगा, तो उसने इस आधार पर नहीं दिया कि किसी भी आंग्ल-राजा ने पहले ऐसा नहीं किया है, फिर वह क्यों दे?

विलियम के समुत्थान में फ्रांसीसी राजा ने जो-जो बाधाएँ डाली थीं, उनका आरंभ में ही उल्लेख किया जा चुका है। राबर्ट को विद्रोह करने के लिये फिलिप ने ही उत्साहित किया था, अतः १०८७ में विलियम तथा

फिलिप में युद्ध छिड़ गया । विलियम ने नार्मंडी से आगे बढ़कर 'मंटस' नामक नगर को हस्तगत कर लिया और उसमें आग लगा दी । जलते हुए नगर को देखने के लिये वह आगे बढ़ा ही था कि उसके घोड़े ने घबराकर उसको गिरा दिया । घोड़े से गिरते ही उसको सांघातिक आघात पहुँचा और १०८७ की ६ सेप्टेंबर को उसकी मृत्यु हो गई । विलियम के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१०६६	विलियम प्रथम का राज्यारोहण
१०६७–१०७०	आंग्ल-विद्रोह
१०७१	हर्वर्ड का पराजय
१०७५	राल्फ तथा रोजर का षड्यंत्र
१०८६	गणना-पुस्तक का निर्माण (Doomsday Book)
१०८७	विलियम प्रथम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

विलियम रूफस द्वितीय (१०८७–११००)

विजेता विलियम की स्त्री मटिल्डा के राबर्ट, विलियम तथा हैनरी नामक तीन पुत्र थे । राबर्ट पिता के विरुद्ध विद्रोह कर चुका था और निर्बल होने के कारण आंग्ल-

शासन के लिये अयोग्य था। विलियम ने इँगलैंड को अपन बाहु-बल से जीता था, अतः वह इँगलैंड का राज्य अपने जिस पुत्र को चाहता, दे सकता था। परंतु नार्मंडी के बारे में यह बात न थी। विलियम ने नार्मंडी अपने पूर्वजों से प्राप्त की थी। अतः उस पर राबर्ट का ही स्वत्व था।

अपनी मृत्यु से पूर्व विजेता ने अपने द्वितीय पुत्र विलियम रूफस को आंग्ल-प्रदेश का राजा स्वीकार किया और उसको लैंफ्रैंक के नाम एक पत्र देकर इँगलैंड भेजा। पत्र में लिखा था कि 'मेरी मृत्यु के बाद इँगलैंड का राज्य विलियम रूफस को ही दिया जाय।'

आर्च-बिशप लैंफ्रैंक विजेता का अनन्य भक्त था। पत्र पाते ही उसने विलियम रूफस को इँगलैंड का राजा बना दिया। राज्य प्राप्त करते ही रूफस ने विजेता के बहुत-से क़ैदियों को कारागार से मुक्ति दी, जिनमें मोर्कार तथा ओडो भी थ।

वेस्ट-मिनिस्टर ऐबे में (२८ सेप्टेंबर, १०८७ में) विलियम रूफस का राज्याभिषेक हुआ और किसी भी आंग्ल ने इस विषय में कुछ विरोध का भाव नहीं प्रकट किया। रूफस आंग्ल-इतिहास में विलियम द्वितीय के नाम से पुकारा जाता है। यह शरीर से हृष्ट-पुष्ट था। रक्त वर्ण होने के कारण आंग्ल-प्रजा इसको रूफस के नाम से पुकारती थी। इसके

आचार-व्यवहार का इसी से अनुमान किया जा सकता है कि यह दृढ़ाभिलाषी, अंध-स्वार्थी तथा भयंकर स्वेच्छाचारी था। धर्म तथा दया को तो यह जानता ही न था। इसको न्याय तथा कर्तव्य-परायणता से किसी प्रकार का भी प्रेम न था।

(१) विद्रोह

बैरन लोग पूर्ण स्वार्थी थे। राजा का शक्तिशाली होना उनको सर्वथा पसंद न था। विलियम रूफस को शक्तिशाली तथा स्वेच्छाचारी देखकर उन्होंने राबर्ट को शासक बनाना चाहा, क्योंकि राबर्ट शक्तिशाली तथा स्वेच्छाचारी न था। १०८८ में बैरंज़ ने राबर्ट के पक्ष में विद्रोह कर दिया। प्रमाद तथा आलस्य से राबर्ट ने विद्रोहियों को कुछ भी सहायता न पहुँचाई। यह होते हुए भी ओडो की सहायता से विद्रोह ने भयंकर रूप धारण कर लिया।

इस विपत्ति से भयभीत होकर रूफस ने आंग्लों का सहारा लिया और उनको वचन दिया कि वह उन पर अनुचित कर नहीं लगावेगा और जंगलात के नियमों की कठोरता को भी कम कर देगा। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत-से आंग्ल रूफस के चारो ओर जमा हो गए। आंग्लों से सहायता प्राप्त करके उसने बिशप ओडो को रोचस्टर के क़िले में घेर लिया। बहुत समय के घेरे के

बाद क़िला फ़तह किया गया और बिशप ओडो को देश-निकाले का दंड दिया गया । कुछ वर्षों तक राज्य में शांति रही । अंत में (१०९५ सन्) नार्थंबरलैंड के अर्ल राबर्ट माउब्रे (Robert Mowbray) ने राजा के विरुद्ध शस्त्र उठाने का साहस किया । राजा के स-सैन्य आने पर माउब्रे बाम्बर्ग (Bomburgh) नाम के क़िले में चला गया ।

बाम्बर्ग का दुर्ग राजा के लिये अजेय था । यह समझ-कर रूफस ने उसके समीप ही 'मालवायिन' (Molvoisin) नाम का एक और दुर्ग बनाया और उसमें अपनी सेना रखकर पीछे लौट गया । एक बार माउब्रे ने दुर्ग से निकल भागने का साहस किया, परंतु क़ैद होकर राजा के आगे उपस्थित किया गया । राजा ने उसको जन्म-भर के लिये बंदीगृह में डाल दिया ; उसकी सब रियासत ज़ब्त कर ली ।

लैंफ्रैंक के जीवन-काल तक विलियम उद्दंड तथा पूर्ण स्वेच्छाचारी न हो सका । १०८९ में उसकी मृत्यु होने पर विलियम ने रेनल्फ-फ्लैंबर्ड को अपना मंत्री या जस्टीकार बनाया ।

(२) विलियम के अत्याचार

रेनल्फ अति चतुर था । इसने अपनी संपूर्ण चतुरता प्रजा से रुपए निकालने में ख़र्च की । जिन भिन्न-

भिन्न विधियों से वह प्रजा के रुपए लेता था, वे ये हैं—

(क) रिलीफ़—जब कोई लॉर्ड मर जाता था, तो उसके पुत्र को जायदाद प्राप्त करने के पहले राजा को बहुत-सा रुपया रिलीफ़ के तौर पर देना पड़ता था।

(ख) एड—भिन्न-भिन्न आवश्यक अवसरों पर प्रजा से सहायतार्थ रुपया लिया जाता था, जो कि एड के नाम से पुकारा जाता था।

(ग) गार्डियन—छोटी उमर के भूमि-पतियों से 'संरक्षण-कर' लिया जाता था।

(घ) विवाह-कर—प्रत्येक भूमि-पति को विवाह करने से पूर्व राजा को 'विवाह-कर' देना पड़ता था।

उपरि-लिखित करों से रूफस तथा रेनल्फ ने बैरंज़ की शक्ति को चकनाचूर कर दिया। रियासतों को उजाड़कर और जंगलों को कटवाकर उन्होंने आंग्ल-प्रजा को भी बहुत अधिक कष्ट पहुँचाया। धर्म का मज़ाक़ उड़ाना, मठों तथा विहारों को लूटना तो उनके लिये साधारण बात थी। जब कोई पादरी मर जाता था, तो वे उसके स्थान पर किसी भी मनुष्य को पादरी नहीं नियत करते थे और उसकी जायदाद से खूब आय प्राप्त करने का यत्न करते थे। यही दशा किसी भूमि-पति की मृत्यु होने पर उसकी भूमियों की की जाती थी।

यह विचित्र बात है कि लैंफ्रैंक की मृत्यु होने पर उन्होंने

किसी भी व्यक्ति को आर्च-बिशप नियत नहीं किया। लैंफ्रैंक की जायदाद को जहाँ तक लूट सके, उन्होंने लूटा। १०९३ में रूफस बहुत भयंकर रोग से ग्रस्त हुआ और उसको अपनी मृत्यु समीप दिखाई देने लगी। मृत्यु को समीप आता देखकर उसका धैर्य जाता रहा और उसको अपने पुराने कर्मों पर बहुत ही पश्चात्ताप हुआ। इन दिनों वक के विहार का स्वामी अन्सल्म था। रूफस ने अन्सल्म को आर्च-बिशप नियत किया, परंतु उसने स्वीकार नहीं किया। मगर जब रूफस ने अन्सल्म को इस पद के लिये वारंवार बाधित किया, तो उसने स्वीकार कर लिया।

(३) विलियम तथा चर्च

विलियम विजेता ने चर्च को शक्तिशाली कर दिया था। अन्सल्म के आर्च-बिशप बनते ही चर्च ने और भी अधिक शक्ति प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया। विलियम रूफस फ़िज़ूलख़र्च तथा बदमाश था। उसके दुराचारों को ठीक करने के उद्देश से आर्च-बिशप ने एक धर्म-सभा जोड़ी और भिन्न-भिन्न मठों तथा विहारों पर पादरियों को नियत करने के लिये उसको बाध्य किया। इस घटना से अन्सल्म पर रूफस की क्रोधाग्नि भभक उठी। इन्हीं दिनों योरप में 'अधिकार-युद्ध' (Investiture Contest) प्रारंभ हुआ था। उर्बन तथा क्लिमेंट नाम के

दो पोपों में भयंकर कलह थी। कुछ योरोपियन राजा उर्बन को पोप मानते थे और कुछ क्लिमंट को। १०६५ में 'राकिंघम' नगर में 'किसको पोप मानना चाहिए ?,' इस बात के निर्णय के लिये एक बड़ी धर्म-सभा हुई। रूफस ने क्रुद्ध होकर अन्सल्म को डरा दिया कि यदि तुमने पोप का कहना माना, तो मैं तुमको पद-च्युत कर दूँगा।

१०६५ के अनंतर आर्च-बिशप तथा राजा के संबंध दिन-पर-दिन बिगड़ते ही चले गए। अन्सल्म ने रूफस को रुपयों की सहायता देना बंद कर दिया और वेल्ज़-युद्ध में यथेष्ट सेना भी नहीं भेजी। इसका परिणाम यह हुआ कि रूफस ने आर्च-बिशप के अपराध का निर्णय अपने न्यायालय में करना चाहा, परंतु उसने यह स्वीकार नहीं किया और पोप के पास रोम चला गया।

पैलस्टाइन में ईसाई-यात्रियों पर तुर्क लोग अत्याचार करते थे। इन अत्याचारों को दूर करने के लिये १०६५ में उर्बन द्वितीय ने संपूर्ण योरप को तुर्कों के साथ युद्ध करने के लिये उत्तेजित किया। यह पवित्र युद्ध आंग्ल-इतिहास में क्रूसेड (Crusade) के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रथम क्रूसेड में योरोपियन योद्धाओं को अपूर्व सफलता प्राप्त हुई। पैलस्टाइन से तुर्क निकाल दिए गए और गाड्फ्रे वहाँ का शासक नियत किया गया।

(४) विलियम तथा विदेशी युद्ध

संपूर्ण आंग्ल-प्रदेश का शासक होते ही विलियम ने स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया और १०९२ में 'कंबरलैंड' को जीता। १०९३ में स्काच-राजा मल्काम कन्मूर ने इँगलैंड पर आक्रमण किया, परंतु आलिन्वक पर मारा गया।

वेल्ज़ के विजय में सीमा-प्रांत के लॉर्डों ने बड़ा भारी भाग लिया। रूफस के स्वेच्छाचार-पूर्ण शक्तिशाली राज्य में राजा बनना असंभव समझकर उन्होंने वेल्ज़ के बहुत-से भागों को जीता और वहाँ स्वेच्छा-पूर्ण शासन करना प्रारंभ किया। इन सीमा-प्रांत के लॉर्डों में पैंब्रुक, ग्लैमरगान, ब्रेकन तथा मांटगुमरी के लॉर्ड अत्यंत शक्तिशाली तथा स्वेच्छाचारी थे।

विलियम का बड़ा भाई राबर्ट दुर्बल तथा शक्ति-हीन था। उसने आवश्यक धन प्राप्त करके नार्मंडी के कुछ प्रदेश अपने छोटे भाई हैनरी को दे दिए। रूफस के आक्रमण के भय से उसको भी राबर्ट ने नार्मंडी का कुछ भाग दे दिया। १०९५ में क्रूसेड पर जाने की इच्छा से राबर्ट ने अपना संपूर्ण राज्य रूफस के हाथ बेच डाला। रूफस ने नार्मंडी प्राप्त करते ही फ़्रांस के विजय का निश्चय किया और लिमैंज़ (Le Mans) का प्रदेश हस्तगत भी कर लिया। ११०० सन् की २ अगस्त को न्यूफ़ारेस्ट में किसी ने विलियम को मार डाला। रूफस के राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१०८७	विलियम द्वितीय का राज्यारोहण
१०८८	नार्मन-बैरंज़ का विद्रोह
१०८६	लैंफ्रैंक की मृत्यु
१०९३	अन्सल्म का आर्च-बिशप होना
१०९५	प्रथम क्रूसेड
१०९७	अन्सल्म का देश-निकाला
११००	विलियम द्वितीय की मृत्यु

तृतीय परिच्छेद

हैनरी प्रथम (११००-११३५)

विलियम रूफस का छोटा भाई हैनरी था। रूफस के मरते ही हैनरी विंचस्टर की ओर गया और राज्य-कोष को हस्तगत करके कुछ लॉर्डों के द्वारा अपने को इँगलैंड का राजा कहलवा दिया। ११०० की ५ अगस्त को उसका राज्याभिषेक किया गया। राज्याभिषेक के समय हैनरी ने एक स्वतंत्रता-पत्र पढ़ा, जिसके अनुसार उसने बैरंज़ को अधिक राज्य-कर न लेने का वचन और प्रजा को अत्याचारों से सुरक्षित रखने का भरोसा दिया। जंगलात के कठोर नियमों के विषय में स्वतंत्रता-पत्र में कुछ भी नहीं लिखा था।

प्रजा को प्रसन्न करने के उद्देश से उसने रेनल्फ को लंडन टावर में क़ैद कर दिया और अन्सल्म को फिर इँगलैंड बुला लिया। यही नहीं, उसने मल्काम कन्मूर की कन्या एडिथ से विवाह कर लिया और आंग्ल-प्रजा को प्रसन्न करने के लिये उसका आंग्ल नाम मैटिल्डा रक्खा।

(१) विद्रोह

हैनरी के राज्यारोहण के कुछ ही सप्ताह बाद राबर्ट क्रूसेड से लौट आया और नार्मंडी का शासन करने लगा। रेनल्फ लंडन-टावर से भागकर राबर्ट के पास पहुँचा और उसने उसको इँगलैंड-विजय के लिये प्रोत्साहित करते हुए कहा कि नार्मन-बैरंज़ इस विजय के काम में तुझको पूर्ण सहायता देंगे। ११०१ में राबर्ट ने इँगलैंड पर आक्रमण किया, परंतु कृतकार्य न हो सका। हैनरी ने कुछ रुपए पेंशन के तौर पर देना स्वीकार करके अपने भाई से पीछा छुड़ाया। राबर्ट की सहायता से वंचित नार्मन-बैरंज़ पर हैनरी की क्रोधाग्नि भभक उठी। बैरंज़ का नेता क्रूर तथा स्वेच्छाचारी बैलमी का लॉर्ड, 'राबर्ट' था। ११०२ में हैनरी ने उससे झगड़ा किया और उसके संपूर्ण प्रदेशों को उससे छीन लिया। राबर्ट इँगलैंड को छोड़कर नार्मंडी चला गया। इस अत्याचारी के अधःपतन पर आंग्ल-जनता को अपार प्रसन्नता हुई।

(२) हैनरी प्रथम तथा चर्च

अन्सलम ने इँगलैंड लौटकर बैरंज़ के विरुद्ध हैनरी को पूर्ण सहायता पहुँचाई। आर्च-बिशप का हैनरी से भी सिद्धांतों के मामले में झगड़ा उठ खड़ा हुआ। अन्सलम ने एक धर्म-सभा में यह प्रण किया कि वह आयंदा से राजाओं के हाथ से किसी प्रकार के भी पद को नहीं लेगा। इसी कारण उसने नवीन राजा हैनरी को कर के तौर पर कुछ भी नहीं दिया। हैनरी भी अपने सिद्धांत तथा अधिकार पर पूर्ववत् ही दृढ़ रहा। ११०३ में सारे झगड़े के निर्णय के लिये अन्सलम रोम में पोप के पास चला गया। ११०७ में चिट्ठियों के द्वारा कुल झगड़ा ख़तम हो गया और आर्च-बिशप इँगलैंड लौट आया। निर्णय के अनुसार पूर्ववत् पादरियों पर हैनरी का प्रभुत्व बना रहा तथा वह सब पादरियों से राज्य-कर भी ले सकता था। हैनरी ने केवल अपने अधिकार आर्च-बिशप के ही मामले में छोड़ दिए। ४ वर्ष की चिट्ठी-पत्रियों से आर्च-बिशप तथा हैनरी में जो निर्णय शांतिपूर्वक हो गया, उसी को, ४० वर्ष के लगातार युद्ध के बाद कांकार्डैट आव् वार्म्ज़ (Concordat of Worms) की संधि के अनुसार योरप ने स्वीकार किया।

(३) राज्य-प्रबंध

हैनरी ने इँगलैंड में अपने पिता के ही समान स्वेच्छा-

पूर्ण शासन किया। इसने 'रोजर' नाम के एक राज-नीति-ज्ञ, राज-भक्त विद्वान् को अपना जस्टीकार नियत किया। जस्टीकार ने बहुत-से व्यक्तियों को क्लॉर्क के तौर पर नियत किया और वह राज्य का शासन बड़ी योग्यता से करने लगा। राजकीय-न्यायालय का कार्य पहले से बढ़ा दिया गया। प्रत्येक मंडल में राजकीय-न्यायालय की ओर से न्यायाधीश भेजे जाते थे, जो आंग्ल-प्रजा की प्रार्थनाओं को सुनते और यथोचित न्याय करते थे। इससे आंग्ल-प्रजा को बहुत ही सुख मिला और उसने हैनरी को 'न्याय-केसरी' (Liou of Righteousness) के नाम से पुकारना प्रारंभ कर दिया।

न्यायालय-सुधार के सिवा हैनरी ने राज्य-कोष का प्रबंध भी बहुत ही उत्तम विधि से किया। बहुत-से व्यक्ति कोषाध्यक्ष के नीचे नियत किए गए, जो कि राज्य-कर जमा करते और हिसाब-किताब करके संपूर्ण कर राज्य-कोष में जमा कर देते थे। ११२० में जहाज़ के टूट जाने से हैनरी का इकलौता पुत्र डूब गया। पुत्र की मृत्यु से हैनरी को जो धक्का पहुँचा, उसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि ११२० के बाद मृत्यु-पर्यंत वह कभी नहीं हँसा।

(४) हैनरी तथा विदेशी युद्ध

राबर्ट की अक्षमता से नार्मंडी का राज्य क्रमशः उसके

आधिपत्य से निकलता जाता था। हैनरी ने दो युद्धों के द्वारा नार्मंडी का बहुत-सा प्रदेश जीत लिया। ११०६ के टिंचब्रे (Tinchebray) के प्रसिद्ध युद्ध में हैनरी ने राबर्ट को क़ैद कर लिया। इसी युद्ध में राबर्ट के साथी एड्गर-दि-एथलिंग तथा वैलमी का राबर्ट भी उसके हाथ आ गए, परंतु उसने दोनों को छोड़ दिया। इसके अनंतर हैनरी इँगलैंड तथा नार्मंडी का शासक हो गया।

स्कॉटलैंड के राजा के साथ हैनरी का संबंध बहुत ही अच्छा रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत-से नार्मन-बैरंज़ स्कॉटलैंड के राजा के कृपा-पात्र हो गए और बहुत-से स्काच-प्रदेशों के स्वामी बन गए। इससे स्कॉटलैंड में भी नार्मन-सभ्यता बहुत शीघ्र फैल गई।

रूफस के समय में सीमा-प्रांत के लॉर्डों ने जो वेल्ज़ को जीतना शुरू किया था, वह हैनरी के समय में बहुत कुछ पूर्ण हो गया। हैनरी ने अपने कामज पुत्र, राबर्ट को ग्लैमरगान की रानी से ब्याहकर उसे वहाँ का शासक बना दिया। राबर्ट एक अति प्रसिद्ध योद्धा और साहित्य तथा विद्या का प्रेमी था। उसकी आज्ञा के अनुसार मन्मथ के जिआफ्रे (Geoffrey of Monmouth) ने ब्रिटन का एक इतिहास (History of Britain) लिखा, जिसकी प्रसिद्धि शीघ्र ही संपूर्ण योरप में हो गई।

डयूक राबर्ट के पुत्र, विलियम ने लूइस छठे से सहायता प्राप्त करके हैनरी से नार्मंडी का प्रदेश छीनना चाहा, परंतु किसी भी युद्ध में कृतकार्य न हो सका। अंत को उसकी मृत्यु होने पर हैनरी नार्मंडी के मामले में भी निश्चिंत हो गया। हैनरी के कोई पुत्र न था। अतः उसने अपनी विधवा-कन्या को ही इँगलैंड तथा नार्मंडी की रानी बनाना चाहा। उन दिनों स्त्रियों का रानी होना किसी को भी पसंद न था, अतः नार्मन-बैरंज़ हैनरी के इस अनुचित प्रस्ताव के विरुद्ध थे।

एक-एक करके संपूर्ण नार्मन-बैरंज़ से हैनरी ने अपनी कन्या को रानी बनाना स्वीकार करा लिया। परंतु दैवी घटना से मैटिल्डा (हैनरी की विधवा-कन्या) का प्रेम अंजो के शासक जिम्राफ़े से हो गया। हैनरी ने उसका विवाह जिम्राफ़े से कर दिया। मैटिल्डा के जिम्राफ़े से एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम हैनरी था।

११३५ में हैनरी की मृत्यु हो गई। वह रीडिङ् एबी में दफ़न किया गया। इँगलैंड के उत्तम राजाओं में से हैनरी भी एक है। आंग्ल-प्रजा उसका मान करती थी और उसे डरती भी थी। आंग्ल-क्रानिक्लर का कथन है कि 'वह एक उत्तम मनुष्य था। उसका आतंक सर्वत्र विद्यमान था। उसने पशु तथा मनुष्यों के लिये इँगलैंड में शांति स्थापित की। उसको बुरा कहने

का किसी भी मनुष्य को साहस न था।' हैनरी प्रथम के राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
११००	हैनरी प्रथम का राज्यारोहण
११०२	वैलमी के राबर्ट का अधःपतन
११०६	टिंचब्रे का युद्ध
११०७	हैनरी तथा अन्सल्म का निर्णय
११२०	हैनरी के एकमात्र पुत्र का जहाज़ के टूट जाने से मरना
११३५	हैनरी प्रथम की मृत्यु

चतुर्थ परिच्छेद

स्टीफन (११३५–११५४)

स्टीफन हैनरी प्रथम का संबंधी था। हैनरी ने उसको शासन के लिये बहुत-से मंडल दिए थे और उसकी शक्ति भी यथेष्ट बढ़ा दी थी। वह फ्रांस तथा अंजो के मध्यस्थ देश 'लोअर' (Loire) का शासक था। उसकी माता अडेला विजेता विलियम की पुत्री थी। हैनरी प्रथम ने बालाग्न (Boulogne) प्रदेश की उत्तराधिकारिणी मैटिल्डा के साथ उसका विवाह कर दिया था और उसके भाई हैनरी को विंचस्टर का बिशप बना दिया था।

स्टीफन राजा के जीवन-काल तक विश्वास-पात्र बना रहा। राजा के विशेष अनुनय करने पर उसने मैटिल्डा को आंग्ल-रानी बनाने का वचन दिया था। हैनरी के मरते ही उसके सब प्रण काफ़ूर हो गए और उसने स्वयं इँगलैंड का राजा बनने का यत्न किया। आंग्ल-बैरंज़ ने उसका स्वागत किया। जस्टीकार रोजर ने भी स्टीफन का कोई विरोध नहीं किया। सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि कैंटबरी के आर्च-बिशप विलियम (William of Corbeil) ने बड़ी प्रसन्नता से उसका राज्याभिषेक किया।

हैनरी प्रथम की तरह राज्याभिषेक के समय स्टीफन ने एक 'स्वतंत्रता-पत्र' निकाला। इस स्वतंत्रता-पत्र के द्वारा उसने सब ओर से सहायता प्राप्त करने का यत्न किया। स्वतंत्रता-पत्र में निम्न-लिखित बातें मुख्य थीं—

(१) सब प्रकार के अन्याय तथा अधिक राज्य-करों को दूर करने का यत्न किया जायगा।

(२) अच्छे-अच्छे प्राचीन नियमों तथा रीति-रिवाजों को प्रचलित रखने का यथासाध्य यत्न किया जायगा।

(३) हैनरी प्रथम ने जिन नवीन जंगलों को बना रक्खा था, उनको नष्ट कर दिया जायगा।

आरंभ में स्टीफन को सभी ने अपना राजा स्वीकार किया। नार्मंडी के बैरंज़ अंजो-निवासियों के शत्रु थे,

अतः उनको मैटिल्डा तथा उसके पुत्र का राज्य बिल्कुल पसंद न था। कुछ आंग्ल-बैरंज़ ने स्टीफन को शक्तिशाली तथा वीर देखकर विद्रोह किया, परंतु कृतकार्य न हो सके। स्काच-राजा डेविड ने अपने को मैटिल्डा का पक्षपाती प्रकट करके इँगलैंड पर आक्रमण और आंग्ल-प्रजा को बहुत पीड़ित किया। प्रजा के कष्टों तथा यातनाओं को देखकर यार्क के आर्च-बिशप, थर्स्टन ने एक प्रबल सेना एकत्र की। यार्क के तीन संतों की झंडियाँ तथा राजकीय झंडे को एक गाड़ी पर रखकर आंग्ल-सेना ने नार्थलर्टन (Northallerton) नाम के स्थान पर स्काच-सेना से एक भयंकर युद्ध किया। युद्ध में स्काच-सेना हारी। इस युद्ध को आंग्ल-इतिहास में 'पताका-युद्ध' (Battle of the Standard) कहते हैं।

जस्टीकार रोजर की शक्ति अपरिमित थी। रोजर का पुत्र चांसलर था और उसके दो चाचा एली तथा लिंकन नामक स्थानों के बिशप थे। इस अपरिमित शक्ति को देखकर स्टीफन को भय हुआ। ११३८ में स्टीफन ने रोजर को आज्ञा दी कि वह अपने संपूर्ण दुर्गों को गिरा दे। इसका परिणाम यह हुआ कि दोनों में परस्पर भयंकर वैमनस्य हो गया।

(१) भ्रातृ-युद्ध

ग्लाउसस्टर का अर्ल, राबर्ट मैटिल्डा का पक्षपाती

था। रोजर के अपमान के कुछ ही सप्ताह बाद उसने इँगलैंड में प्रवेश किया। उसके साथ ही रानी मैटिल्डा भी सेना-सहित इँगलैंड में आ पहुँची। इसका परिणाम यह हुआ कि स्टीफन और मैटिल्डा में भयंकर युद्ध छिड़ गया, जो स्टीफन के राज्य-काल के अंत में समाप्त हुआ। दोनों ही पक्ष इतने सबल न थे कि एक दूसरे को सदा के लिये पराजित कर सकते। स्टीफन की सेना में मुख्य रूप से फ्लीमिश लोग थे। आंग्लों से पूर्ण सहायता लेने का उसने यत्न ही नहीं किया।

मैटिल्डा की दशा स्टीफन से भी बुरी थी। इसका कारण यह था कि मैटिल्डा के सहायक बैरंज़ थे, जो अपने ही स्वार्थ को देखते थे। उनका स्वार्थ इसी में था कि दोनों पक्षों की निरंतर लड़ाई होती रहे और किसी से कोई भी प्रबल न हो सके। इस भ्रातृ-युद्ध से बैरंज़ ने जो स्वेच्छाचारिता तथा शक्ति प्राप्त की और प्रजा पर जो-जो अत्याचार किए, उनका वर्णन आंग्ल-क्रानिक्लर इस प्रकार करता है—

"भ्रातृ-युद्ध से लाभ तथा शक्ति प्राप्त करके प्रत्येक बैरन ने अपने-अपने दुर्ग बना लिए। इसका परिणाम यह हुआ कि संपूर्ण आंग्ल-भूमि दुर्गों से व्याप्त दिखाई देने लगी। दुर्गों के बन चुकने पर बैरनों ने उनको

अत्याचारी, क्रूर तथा पापिष्ठ पुरुषों से भर दिया। प्रत्येक संपत्तिशाली समृद्ध पुरुष क़ैद कर लिया जाता था और प्रत्येक प्रकार के कष्टों तथा यातनाओं के द्वारा उससे संपत्ति छीनने का यत्न किया जाता था। ग्रामों पर भारी-से-भारी कर लगाए गए। जब दरिद्र ग्रामीण कर देने में असमर्थ हो जाते थे, तो ग्रामों में आग लगा दी जाती थी। अनाज महँगा हो गया। जनता को मक्खन तथा मांस देखने तक को नहीं मिलता था। दरिद्र पुरुष भूख से मरने लगे। जो एक समय समृद्ध गिने जाते थे, वे भिखमंगों की श्रेणियों में दिखाई देने लगे। बैरन लोगों ने चर्चों तथा पादरियों को भी लूटने से न छोड़ा। कष्ट से पीड़ित होकर लोग कहने लग गए थे कि ईसा और उसके संत सब सो गए हैं।" आंग्ल-क्रानिक्लर के सदृश ही एक और लेखक का कथन है कि "भ्रातृ-युद्ध के समय इँगलैंड में उतने ही स्वेच्छाचारी राजा हो गए थे, जितने कि लॉर्ड थे।"

बहुत-से लोभी बैरनों ने स्टीफन और मैटिल्डा में से एक दूसरे का पक्ष लेते हुए अपने स्वार्थों को सिद्ध करने का यत्न किया। उन लोभी बैरनों का अगुआ मैंडेविल का जिआफ़्रे (Geoffrey of Mandeville) था। उसने अपनी धूर्तता से धीरे-धीरे बहुत-से मंडल प्राप्त कर लिए और अंत में वह एसेक्स का अर्ल बन गया। उसकी

धूर्तताओं से क्रुद्ध होकर स्टीफन ने उसके नाश के लिये एक प्रबल प्रयत्न किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्टीफन के क्रोध से भयभीत होकर जिआफ़े जंगलों में भागा और अपने ही साथी के हाथ से मारा गया।

(२) लिंकान का युद्ध और वालिंगफ़ोर्ड की संधि

स्टीफन और मैटिल्डा का युद्ध चिर-काल तक चलता रहा, परंतु देश को इससे कुछ भी लाभ न पहुँचा। स्टीफन के सहायक लंडन-निवासी तथा दक्षिणी इँगलैंड के समृद्धिशाली लोग थे। मैटिल्डा के सहायक बैरन लोग थे। ११४१ में लिंकान-नगर का घेरा डालकर अंत को स्टीफन मैटिल्डा का क़ैदी हो गया। इस विपत्ति में स्टीफन के बहुत-से साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया। अधिक क्या, उसके सगे भाई हैनरी ने भी उसी को दोषी ठहराया।

स्टीफन को क़ैद करके मैटिल्डा ने राज्य करने के विचार से लंडन की ओर प्रस्थान किया। उसके अभिमानी तथा रूखे स्वभाव से क्रुद्ध होकर लंडन-निवासियों ने उसको अपने नगर से बाहर निकाल दिया। इसी समय स्टीफन का भाई हैनरी फिर मैटिल्डा का विरोधी हो गया। विंचस्टर के प्रसिद्ध युद्ध में मैटिल्डा का प्रसिद्ध पक्ष-पोषक राबर्ट क़ैद हो गया। ११४८ में मैटिल्डा का वीर भाई भी मर गया। इससे उसका पक्ष बहुत कुछ निर्बल हो गया।

स्टीफन और राबर्ट की धर्म-पत्नी, दोनों ही मैटिल्डाओं ने अपने-अपने पतियों की अदला-बदली कर ली।

११५३ में मैटिल्डा का बड़ा पुत्र हैनरी द्वितीय बड़ी भारी सेना के साथ इँगलैंड आया। उसने २० वर्ष की आयु में ही नार्मडी का शासन करना प्रारंभ कर दिया था। पिता की मृत्यु होने पर अंजो का प्रदेश और अपनी स्त्री की ओर से संपूर्ण फ्रांस का प्रदेश उसी को ही मिलना था। उस प्रबल शत्रु से भयभीत होकर स्टीफन ने हैनरी से 'वालिंगफ़ोर्ड' की प्रसिद्ध संधि कर ली। इस संधि के अनुसार इँगलैंड का उत्तराधिकारी हैनरी द्वितीय ही माना गया। संधि हो जाने के अनंतर हैनरी इँगलैंड में ही रहा और स्टीफन को राज्य-कार्य में यथेष्ट सहायता पहुँचाता रहा। ११५४ में स्टीफन की मृत्यु हो गई और हैनरी द्वितीय इँगलैंड का राजा बना। स्टीफन के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
११३५	स्टीफन का राज्यारोहण
११३८	पताका-युद्ध
११४१	लिंकान का युद्ध
११५३	वालिंगफ़ोर्ड की संधि
११५४	स्टीफन की मृत्यु

पंचम परिच्छेद

हैनरी द्वितीय (११५४–११८९)

यह दृढ़-प्रकृति, कार्य-परायण तथा बहुत परिश्रमी था। इसका संपूर्ण समय राज्य-कार्य तथा भिन्न-भिन्न समितियों के अधिवेशनों में ही बीता। लोक-प्रथा में इसको कुछ भी विश्वास न था। राज्य और शासन में जितनी नई-नई जाँचें इसने कीं, उतनी कदाचित् ही किसी पूर्ववर्ती आंग्ल-राजा ने की हों। शूरवीर योद्धा होने के साथ ही यह राज-नीति-ज्ञ और सुवक्ता भी था। इसने बहुत ही उत्तम शिक्षा प्राप्त की थी और इसको शिकार तथा स्वाध्याय में बहुत ही रुचि थी। इसने सर्व-प्रियता प्राप्त करने का कोई भी उपाय नहीं किया और इसको शान-शौकत तथा चमक-दमक से कुछ विशेष प्रेम न था। विचारशील तथा दूर-दर्शी होकर भी कभी-कभी यह क्रोध के वशीभूत होकर अपने आपे से बाहर हो जाता था और समीपवर्तियों के लिये भयंकर रूप धारण कर लेता था।

राज्य-सिंहासन पर बैठते ही हैनरी ने देश में शांति लाने का यत्न किया और स्टीफन ने जो फ्लीमिश-सेना अपने युद्धों के लिये रक्खी थी, उसको बर्ख़ास्त कर दिया। इसने बैरनों को यह आज्ञा दी कि राजा की आज्ञा के बिना

जो-जो नवीन दुर्ग स्टीफन के समय में बनाए गए हैं, उनको गिरा दिया जाय । इस आज्ञा पर कुछ बैरनों ने राजा का विरोध करना चाहा, परंतु कृतकार्य न हो सके । हैनरी ने उनके विद्रोहों को शीघ्र ही शांत कर दिया ।

डेविड की मृत्यु होने पर 'मलकान चतुर्थ' स्कॉटलैंड का राजा बना । हैनरी ने उत्तरीय आंग्ल-प्रदेशों के लिये राज्य-कर देने को उसे विवश किया । यही नहीं, उसने वेल्ज़ पर भी धावा किया, परंतु कृतकार्य न हुआ । वेल्ज़ के राजकुमार 'ओवन' को उसकी अपरिमित शक्ति का पूर्ण ज्ञान था, अतः उसने हैनरी से संधि कर ली । इस संधि के द्वारा ओवन ने ग्वीनड-प्रदेश की स्वतंत्रता को सुरक्षित किया । यह होने पर भी सीमा-प्रांतीय लॉर्डों ने वेल्ज़ का बहुत-सा भाग हस्तगत कर ही लिया ।

(१) हैनरी द्वितीय तथा चर्च

हैनरी को निम्न-लिखित व्यक्तियों ने राज्य-कार्य में यथेष्ट सहायता पहुँचाई—

(१) लूसी-प्रांतस्थ रिचर्ड

(२) लीसस्टर का अर्ल, राबर्ट

(३) ऐली का बिशप, नीगल

(४) टामस बैकट

इनमें से रिचर्ड और राबर्ट जस्टीकार, नीगल कोषाध्यक्ष और बैकट चांसलर था । बैकट एक व्यापारी का पुत्र था ।

उसकी राज-भक्ति तथा कर्मण्यता को देखकर हैनरी ने उसे कैंटर्बरी का आर्च-बिशप बनाया। इस कार्य में हैनरी का उद्देश बैकट के द्वारा चर्च पर प्रभुत्व पाना था। जो हो, उसने बैकट को आर्च-बिशप बनाकर बड़ी भारी भूल की, क्योंकि बैकट एक विचित्र प्रकृति का आदमी था। वह जिस कार्य में लगता था, उसको अपना ही काम समझकर उसी के हित में अपनी संपूर्ण शक्ति लगा देता था। चांसलर-पद पर बैकट ने राजा की अपूर्व सेवा की थी और अब आर्च-बिशप के पद पर उसने चर्च की शक्ति को बढ़ाना ही अपना मुख्य उद्देश बना लिया।

इस घटना से हैनरी को बहुत ही निराशा हुई, क्योंकि वह चर्च की बढ़ती शक्ति को सदा के लिये रोकना चाहता था। उसने बैकट को आर्च-बिशप बनाकर यह समझा था कि अपने ही आदमी के आर्च-बिशप हो जाने से चर्च की शक्ति बहुत कुछ कम की जा सकेगी। बैकट ने हैनरी को पूरी तौर पर निराश करके चर्च के धार्मिक सुधारों के लिये अपने को एक स्तंभ बना लिया। उसने चांसलर-पद त्याग करते ही भिक्षुओं की तरह साधारण वेश में रहना प्रारंभ कर दिया और अन्सलम को अपना आदर्श मानकर प्रत्येक काम करना चाहा।

उपरि-लिखित अवस्थाओं का यह परिणाम हुआ कि

हेनरी और वैकट में भयंकर कलह हो गई। वैकट ने राजा पर यह दोष लगाया कि उसने चर्च की संपत्ति को ज़ब्त कर लिया है और राज्य-कर लगाने की विधि बदल दी है। चर्च के साधारण क्लॉर्कों के अपराधों के निर्णय में यह झगड़ा और भी अधिक बढ़ गया।

विजेता विलियम ने लैंफ्रैंक की सहायता से राजकीय न्यायालयों से चर्च के न्यायालयों को पृथक् कर दिया था, इसका उल्लेख किया जा चुका है। स्टीफन की अराजकता के समय में राजकीय न्यायालयों के विच्छिन्न हो जाने से देश में एकमात्र चर्च के ही न्यायालय बच गए थे। निरंतर कार्य करने से इनकी शक्ति पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक बढ़ गई थी और ये जनता में भी सर्व-प्रिय हो गए थे। चर्च की शक्ति-वृद्धि इसी से जानी जा सकती है कि पादरियों से संयुक्त प्रत्येक व्यक्ति का न्याय चर्च के न्यायालय ही करते थे और जो कोई भी लैटिन के अक्षर बाँच सकता हो, वह क्लॉर्कों में गिन लिया जाता था।

हेनरी चर्च की शक्ति-वृद्धि के सर्वथा विरुद्ध था। इसको वह अपने अधिकारों पर हस्तक्षेप समझता था। अतः उसने बहुत-से क्लॉर्कों का निर्णय अपने ही न्यायालय के द्वारा किया। वैकट ने राजा के उपरि-लिखित कार्य को राज्य-नियम-विरुद्ध ठहराया। इन सब झगड़ों

को मिटाने के लिये हैनरी ने वेस्ट-मिनिस्टर में एक धर्म-सभा जोड़ी और पादरियों से प्रार्थना की कि वे विजेता विलियम के नियमों पर चलने का यत्न करें। पादरियों ने हैनरी का प्रस्ताव स्वीकार किया और साथ ही यह भी कहा कि "चर्च के अधिकारों के विषय में वे कभी ढील न करेंगे।" ११६४ की जनवरी में क्लेरंडन की धर्म-सभा में संपूर्ण (चर्च तथा राज्य-संबंधी) प्राचीन नियमों को हैनरी ने समुपस्थित किया। इन नियमों को आंग्ल-इतिहास में 'क्लेरंडन के धर्म-नियम' (Constitutions of Clarendon) के नाम से पुकारा जाता है।

'क्लेरंडन धर्म-नियम' में मुख्यतः १६ धाराएँ थीं, जो राजा तथा चर्च के संबंध में निम्न-लिखित बातों को प्रकट करती थीं—

(क) चर्च से संबंध रखनेवाले पुरुषों का न्याय राजकीय न्यायालय में नहीं होगा।

(ख) यदि कोई व्यक्ति राजकीय न्यायालय में अपने को चर्च का सेवक प्रकट करेगा, तो उसका निर्णय चर्च-न्यायालय में होगा। उसके अपराधी सिद्ध होने पर चर्च उसको अपने यहाँ से पृथक् कर देगा। यह इसी लिये कि राजकीय न्यायालयों के द्वारा उसको कठोर दंड दिया जा सके।

(ग) चर्च केवल धर्म-संबंधी कार्यों में ही हस्तक्षेप करे।

(घ) क्लैरंडन की नियम-धाराओं में विजेता विलियम के बहुत-से संदेहास्पद नियमों को ठीक किया गया।

(ङ) अन्सलम तथा हैनरी प्रथम के बीच का समझौता फिर से दृढ़ किया गया और बिशपों को अन्य भूमि-पतियों की तरह राजा के अधीन ही माना गया।

(च) राजा की आज्ञा के बिना रोम में किसी प्रकार की भी प्रार्थना भेजना राज्य-नियम-विरुद्ध ठहराया गया।

(छ) प्रिलेट्स का चुनाव राजा के सामने राज-प्रासाद में ही होना निश्चित किया गया।

कुछ समय की शांति के बाद बैकट ने कहा कि "ये नियम चर्च की स्वतंत्रता के बाधक हैं, अतः मुझको स्वीकार नहीं हैं।" इस कथन पर हैनरी द्वितीय के क्रोध की सीमा न रही और उसने बैकट के सत्यानाश का दृढ़ निश्चय किया। उसने राज-दर्बारियों को बैकट के विरुद्ध अभियोग खड़ा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कुछ ही समय बाद हैनरी ने बैकट पर यह दोष लगाया कि "उसने चांसलर के पद पर राजकीय धन को उड़ाया और अपने कामों में ख़र्च किया है" और उसको अपने अपराध का निर्णय कराने के लिये राजकीय न्यायालय में बुलाया। परंतु बैकट ने यह स्वीकार नहीं किया और कहा

कि चर्च-न्यायालयों की इसीलिये तो विशेष आवश्यकता है कि पादरियों को राजा के अत्याचारों से बचाया जाय। ११६४ के ऑक्टोबर में नार्थंपटन में जो सभा हुई, उसमें बैकट ने राजा की अधीनता स्वीकार नहीं की और पूर्ववत् अपनी बात पर दृढ़ रहा। इस पर जस्टीकार ने उसको देश-द्रोही कहा। इस घटना के कुछ ही दिनों बाद वह फ़्रांस में चला गया। क्रोध में आकर हैनरी ने बैकट के सब संबंधियों को देश-निकाला दे दिया।

बैकट ६ वर्षों तक विदेश में ही रहा और राजा से पत्रों द्वारा विवाद करता रहा। उसने 'अलक्ज़ेंडर तृतीय' नामक पोप से सहायता माँगी। परंतु पोप ने उचित सहायता नहीं दी। इसका कारण यही था कि उन दिनों पोप की सम्राट् 'फ़्रैडरिक बार्बोसा' से लड़ाई थी। पोप हैनरी द्वितीय-जैसे शक्तिशाली राजा से बिगाड़ नहीं करना चाहता था। इधर हैनरी की नीति भी पोप से झगड़ा करने की न थी। अतः वह भी धीरे-धीरे शिथिल हो रहा था। ११७० में बैकट तथा हैनरी फ़्रांस में मिले। मिलते ही दोनों में सुलह हो गई। बैकट के विदेश में रहने से बहुत-से काम हैनरी यार्क के आर्च-बिशप से करवा लेता था, यहाँ तक कि हैनरी के पुत्र का यौवराज्याभिषेक भी यार्क के आर्च-बिशप ने ही कर दिया था, यद्यपि यह अधिकार विशेषतया कैंटर्बरी के आर्च-बिशप को ही था।

११७० की एक दिसंबर को वैकट सपरिवार इँगलैंड आया और आते ही उसने यार्क के आर्च-बिशप, रोजर को धर्म से बहिष्कृत कर दिया। अब हैनरी के क्रोध की सीमा नहीं रही। क्रोध में ही उसने ये शब्द कह दिए कि "किस मूर्ख को मैंने अपने घर में पाला है, क्या कोई भी इस क्लॉर्क से मेरा बदला न लेगा।" ये शब्द सुनते ही चार नाइट कैंटबरी की ओर रवाना हो गए।

कैंटबरी के क्राइस्ट-चर्च में चारों नाइट वैकट को मारने के लिये घुसे। आर्च-बिशप के सेवकों ने चर्च के दरवाज़े बंद करने चाहे, परंतु उसने ऐसा न करने दिया। चर्च में घुसते ही नाइटों ने कहा कि 'देश-द्रोही कहाँ है?' वैकट ने पीछे मुड़कर उत्तर दिया कि 'यह मैं हूँ; देश-द्रोही नहीं, बल्कि ईश्वर का पुरोहित।' नाइटों ने तलवार खींचकर उसको मार डाला। मरते समय वैकट ने ये शब्द कहे कि 'ईसा के नाम पर और चर्च की रक्षा के लिये मैं मृत्यु को स्वीकार करता हूँ।'

घातकों ने हैनरी द्वितीय के लिये बहुत ही बुरा काम किया। वकट यार्क-संबंधी झगड़े के कारण मारा गया, परंतु जनता ने उसको चर्च के कारण ही मारा गया समझा। इसीसे उन्होंने उसको शहीद मानकर अपने प्राचीन संतों में एक उच्च स्थान दिया। उसकी धर्म-परायणता और भक्ति की कहानियाँ सर्वत्र फैल गईं।

संपूर्ण आंग्ल-जनता को इसमें विश्वास हो गया कि बैकट के मृत शरीर ने बहुत-से अपूर्व चमत्कार दिखाए थे। यात्रियों के संघ-के-संघ बैकट की समाधि पर चढ़ावा चढ़ाने तथा दर्शनों के लिये आने लगे। हैनरी को स्वयं भी आर्च-बिशप की समाधि पर जाना पड़ा और वहाँ जाकर उसने अपने पाप का प्रायश्चित्त किया।

बैकट की मृत्यु से चर्च की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई। हैनरी को अपनी पुरानी इच्छाएँ छोड़नी पड़ीं। वह जो कुछ कर सका, वह यही था कि प्रत्येक अपराधी राज्य के न्यायालय में उपस्थित किया जाता था। यदि अपराधी यह सिद्ध कर दे कि वह पादरी है, तो उसको चर्च-न्यायालय के सुपुर्द कर दिया जाता था। आश्चर्य की घटना है कि एकमात्र लैटिन के अक्षर पढ़ देने से ही कोई आदमी अपने को पादरी सिद्ध कर सकता था।

(२) हैनरी द्वितीय तथा राज्य-नियम

चर्च-संबंधी झमेलों के कारण हैनरी बहुत-से राज्य-संबंधी सुधारों को नहीं कर सका। आंग्ल-देश की अवस्था हैनरी प्रथम की तरह ही बनाकर वह संतुष्ट हो गया। उसने बहुत-से नए-नए राज्य-नियम बनाए, जो कि आंग्ल-इतिहास में बहुत प्रसिद्ध हैं। आंग्लों तथा नार्मनों को मिलाने में उसने बड़ा भाग लिया। प्राचीन तथा नवीन न्यायालयों के संघटन में उसने

पर्याप्त ध्यान दिया। इसके समय में आंग्ल-जनता एक जाति में परिवर्तित होने लगी। नार्मनों तथा आंग्लों में से क्रमशः प्राचीन भेद लुप्त होने लगा। फ्रांसीसी-भाषा-भाषी नार्मंज़ भी आंग्ल-भाषा बोलने का यत्न करने लग गए।

अभी लिखा जा चुका है कि हैनरी आंग्ल-नियम-निर्माताओं में से एक समझा जाता है। उसने निम्न-लिखित नवीन राज्य-नियम बनाए—

(क) क्लेरंडन-राज्य-नियम (Assize of Clarendon)—हैनरी प्रथम के समय से न्यायालयों का सुधार किया जा रहा था। क्लेरंडन-राज्य-नियमों के अनुसार हैनरी द्वितीय ने उस सुधार को पूर्ण किया। इसके अनुसार राजकीय न्यायालय का संघटन इस प्रकार हो गया—

(१) राजा के न्यायाधीश प्रति वर्ष प्रत्येक मंडल में भ्रमण किया करें और अपराधियों के अपराध का निर्णय करें।

(२) राज-न्यायाधीश के पहुँचते ही मांडलिक न्यायालय बहुत-से भूमि-पतियों की एक उप-समिति बनावें। उप-समिति के सभ्य ही मंडलांतर्गत अपराधियों का राज-न्यायाधीश को पता दें।

इस उप-समिति का द्वितीय नाम 'साक्षी उप-समिति' या ज्यूरी भी है, क्योंकि इसके सभ्य इस बात की

शपथ खाते थे कि वे किसी भी निरपराध व्यक्ति को अपराधी नहीं कहेंगे। वर्तमान-कालीन ग्रांड ज्यूरी का आरंभ इसी उप-समिति से समझना चाहिए। दश वर्षों के बाद क्लेरंडन-राज्य-नियमों के स्थान पर 'नार्थपटन-राज्य-नियम' (Assize of Northampton) बनाए गए, जिनके अनुसार प्रत्येक अपराध पर पहले से अधिक कठोर दंड कर दिए गए।

(ख) महाराज्य-नियम (Grand Assize)—इस राज्य-नियम के निर्माण की तिथि निश्चित नहीं है। नार्मन-विजय के बाद अपराधों का निर्णय प्रायः द्वंद्व-युद्ध के द्वारा किया जाता था। इस निर्णय का आधार यह था कि परमात्मा न्यायकर्ता है। द्वंद्व-युद्ध में जो अपराधी होगा, वही मारा जायगा। इस न्याय-विधि के दूषण स्पष्ट ही हैं। महाराज्य-नियम के द्वारा अपराधियों को यह अधिकार मिला कि वे द्वंद्व-युद्ध के स्थान पर अपने अभियोगों का निर्णय साक्षी-उप-समिति के द्वारा करवा सकते हैं। दुर्बल तथा निःशक्त पुरुषों की रक्षा करने में इस राज्य-नियम की जो उपयोगिता है, वह इसकी सर्व-प्रियता से ही स्पष्ट है।

(ग) सैनिक राज्य-नियम (Assize of Arms)—हैनरी ने सैनिक राज्य-नियम के द्वारा प्राचीन जातीय सेना का बहुत कुछ सुधार किया। इस राज्य-नियम की धाराएँ निम्न-लिखित थीं—

(१) प्रत्येक स्वतंत्र पुरुष को अपनी-अपनी संपत्ति के अनुसार उचित अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित रहना चाहिए।

(२) जो स्वतंत्र पुरुष युद्ध में जाना स्वीकार न करे, वह 'युद्ध-कर' (Scutage) के तौर पर राजा को कर दे। इस कर के द्वारा हैनरी द्वितीय विदेशी सैनिकों की स्थिर-सेना रखता था, जो विदेशों में युद्ध का काम करती थी। वह प्रायः जातीय सेना से ही इँगलैंड की रक्षा करता था।

(घ) जंगल-राज्य-नियम (Assize of Woodstock)—हैनरी को शिकार का बहुत शौक़ था। वह मंडलांतर्गत जंगलों पर एकमात्र अपना स्वत्व समझता था। जंगल-राज्य-नियम बहुत कठोर थे। इन कठोर नियमों को देखकर भी आंग्ल-जनता को कुछ-कुछ आश्वास मिला, क्योंकि इससे पूर्व जंगलों के मामले में राजा का स्वेच्छाचार-पूर्ण शासन था और अपने को निरपराध सिद्ध करने में प्रजा को कोई भी साधन प्राप्त नहीं था।

हैनरी ने जंगलों के लिये एक अलग ही न्यायालय बनाया। यह भी राजकीय न्यायालय की तरह काम करता था। इसमें अंतर केवल यह था कि इसकी शक्ति एकमात्र जंगलों तक ही परिमित थी।

(३) हैनरी द्वितीय और विदेशी युद्ध

(क) वेल्ज़ और स्कॉटलैंड

विजेता विलियम की तरह ही हैनरी ने संपूर्ण ब्रिटन

पर प्रभुत्व प्राप्त करने का यत्न किया। सीमा-प्रांत के लॉर्डों ने वेल्ज़ के बहुत-से प्रदेशों को विजय किया। यह होने पर भी ग्वीनड (Gwynedd) के राजाओं ने अपनी स्वतंत्रता बहुत कुछ बचाई। हैनरी ने तीन बार उनके प्रदेशों पर आक्रमण किया, परंतु एक बार भी सफलता न पा सका। इसका परिणाम यह हुआ कि चिर-काल तक उत्तरीय वेल्ज़ एक स्वतंत्र राष्ट्र रहा। धर्म की दृष्टि से वेल्ज़ तथा इँगलैंड परस्पर सम्मिलित थे, क्योंकि आंग्लों की ही तरह वैल्श (Welsh) पादरी कैंटर्बरी के आर्च-बिशप के प्रभुत्व को स्वीकार करते थे। ११८८ में आल्ड्विन ने वेल्ज़ के प्रत्येक मंडल में नवीन क्रूसेड का प्रचार किया। हैनरी ने स्कॉटलैंड को नीचा दिखाने में अपूर्व सफलता प्राप्त की। ११७३ में हैनरी के विरुद्ध नार्मन-बैरंज़ को स्कॉटलैंड के राजा ने सहायता पहुँचाई। दैवी घटना से स्कॉटलैंड का राजा अल्न्विक में हैनरी के हाथ क़ैद हो गया। उसने क़ैद से छुटकारा पाने के लिये 'फैले की संधि' पर हस्ताक्षर कर दिया। इस संधि के अनुसार वह आंग्ल-राजा का वैसल हो गया और एडिन्बरा आंग्ल-छावनी बन गई।

(ख) आयर्लैंड

हैनरी द्वितीय का राज्य इसलिये भी प्रसिद्ध है कि नार्मन-शक्ति का आयर्लैंड में प्रवेश तथा विस्तार हुआ।

आयर्लैंड में बहुत-से मांडलिक राजा थे, जो दिन-रात परस्पर युद्ध करते रहते थे। सामुद्रिक नगर डेनिश-जनता के प्रभुत्व में थे। इस पारस्परिक कलह से नार्मन लोगों ने पूर्ण लाभ उठाने का यत्न किया। दक्षिणी वेल्ज़ के सीमा-प्रांतीय नार्मन-लॉर्डों ने आयर्लैंड-विजय का श्रीगणेश किया। ११६६ में लिस्टर का राजा डर्माट अपने शत्रु से पराजित होकर वेल्ज़ भाग आया। इसने नार्मन-लॉर्डों से सहायता माँगी। नार्मन-लॉर्ड तो यह पहले से ही चाहते थे। रिचर्ड (Richard of Clare) के नेतृत्व में बहुत-से नार्मन-लॉर्डों ने आयर्लैंड पर आक्रमण किया और डर्माट को पुनः राजा बना दिया। इस उपकार के बदले में रिचर्ड ने डर्माट की कन्या से विवाह कर लिया और उसकी मृत्यु होने पर स्वयं ही उसके राज्य का राजा बन गया। इसकी तरह ही बहुत-से नार्मन-लॉर्डों ने आयर्लैंड के भिन्न-भिन्न मंडलों का राज्य प्राप्त कर लिया और वहाँ पर भी नार्मन-सभ्यता का प्रचार किया।

११७१ में हैनरी ने आयर्लैंड पर आक्रमण किया और संपूर्ण प्रदेश शीघ्र ही जीतकर अपने को आयर्लैंड का भी स्वामी (Lord of Ireland) बना लिया। डब्लिन में उसने आयर्लैंड के शासन के लिये एक गवर्नर नियत किया। आंग्ल-व्यापारियों ने आयरिश-नगरों में व्यापार करना प्रारंभ किया। हैनरी ने बड़ी बुद्धिमत्ता से आयरिश-

चर्च का संगठन आंग्ल-चर्च से कर दिया। आंग्ल-इतिहास में हैनरी द्वितीय वह प्रथम राजा है, जिसने संपूर्ण ब्रिटिश-द्वीपों पर शासन किया।

(ग) योरोपियन युद्ध

समीपवर्ती राजाओं को हैनरी की अपरिमित शक्ति सह्य न थी। उसका मुख्य शत्रु तालाउस (Toulouse) का शासक था। ११५९ में हैनरी ने उसके विरुद्ध युद्ध करना प्रारंभ किया और उसकी शक्ति को मर्दित करके उसे अपने अधीन कर लिया। तालाउस का सर्वनाश ही हो जाता, यदि फ़्रांस का राजा लूइस सप्तम उसको सहायता न पहुँचाता। हैनरी लूइस से युद्ध करने में झिझकता था। फ़्रांस से मित्रता करने के विचार से उसने अपने बड़े पुत्र का विवाह फ़्रांस-राजकुमारी से कर दिया। लूइस ने बड़ी चतुरता से हैनरी के पुत्रों को उसी के विरुद्ध कर दिया। स्कॉटलैंड के राजा तथा नार्मंडी और इँगलैंड के बैरनों ने इनका साथ दिया। इस प्रकार ११७३ और ११७४ में ट्वीड से आरंभ करके पिरिनीज़ पर्वत-श्रेणी तक सब प्रदेशों में भयंकर युद्ध हुए, जिनमें हैनरी ही सर्वत्र विजयी हुआ। इस सफलता का मुख्य कारण आंग्लों की राज-भक्ति ही कही जा सकती है।

(घ) हैनरी द्वितीय का साम्राज्य

हैनरी द्वितीय का शासन बहुत-से योरोपीय तथा

आंग्ल-प्रदेशों पर था। उसको किस प्रदेश का शासन किस प्रकार मिला, यह इस प्रकार दिखाया जा सकता है—

हैनरी के भिन्न-भिन्न प्रदेश	प्रदेशों की प्राप्ति किस प्रकार हुई ?
(क) अंजों तथा तोरेन	पिता से मिला
(ख) नार्मंडी तथा मेन	माता से मिला
(ग) एक्विटेन	इलीनर नामक अपनी स्त्री से मिला
(घ) इँगलैंड	वालिंगफ़ोर्ड की संधि से प्राप्त हुआ
(ङ) स्कॉटलैंड	अल्निवक के युद्ध से और फैले की प्रसिद्ध संधि से स्कॉटलैंड को अधीन किया
(च) आयलैंड	सेना द्वारा विजय किया

इस उपरि-लिखित सूची से स्पष्ट है कि हैनरी ने बहुत-से प्रदेश विवाह तथा माता-पिता के द्वारा प्राप्त किए। एक्विटेन का प्रदेश बहुत विस्तृत था। संपूर्ण दक्षिण-पश्चिमी फ़्रांस इस प्रदेश में सम्मिलित था। आयलैंड तथा स्कॉटलैंड पर हैनरी ने कैसे प्रभुत्व प्राप्त किया, इसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है।

(४) हैनरी द्वितीय का परिवार

हैनरी की धर्मपत्नी इलीनर (Eleanor) अति उद्दंड प्रकृति

की थी। अपने पति लूइस सप्तम को उसने इसीलिये छोड़ दिया था कि उसकी उससे बनती न थी। हैनरी से भी उसकी चिर-काल तक न निभी। यही कारण था कि उसने अपने पुत्रों को अपने पूर्व पति से मिलाकर हैनरी को कष्ट पहुँचाने का पूर्ण यत्न किया, परंतु कृतकार्य न हो सकी।

हैनरी प्रेमी स्वभाव का था। उसने अपने चारों पुत्रों को राज्य-कार्य में पूर्ण भाग दिया। प्रथम पुत्र हैनरी को आंग्ल-युवराज बनाया और द्वितीय पुत्र रिचर्ड को एक्विटेन का शासक नियत किया। जिआफ़्रे तथा जोन, उसके तृतीय और चतुर्थ पुत्र, भी भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न-भिन्न प्रदेशों के शासक रहे। इनमें से हैनरी तथा जिआफ़्रे की मृत्यु उसके जीवन-काल में ही हो गई। रिचर्ड और जोन ही रह गए। ११८९ में रिचर्ड ने हैनरी द्वितीय के साथ विद्रोह किया और अपने छोटे भाई जोन को भी अपने साथ मिला लिया।

जोन को हैनरी बहुत ही प्यार करता था। उसके विद्रोही होने से उसको बहुत ही चोट पहुँची और वह मृत्यु-शय्या पर लेट गया। हैनरी की मृत्यु एक ऐतिहासिक घटना है। 'विजयी राजा पर शर्म-शर्म'—ये शब्द कहते हुए हैनरी द्वितीय परलोक सिधारा। हैनरी के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
११५४	हैनरी द्वितीय का राज्यारोहण
११५९	तालाउस का युद्ध
११६४	क्लेरंडन-धर्म-नियम
११६६	क्लेरंडन-राज्य-नियम
११७०	संत टामस बैकट की मृत्यु
११७१	आयर्लैंड का नार्मन-विजय
११७४	विद्रोह-दमन
११८१	सैनिक राज्य-नियम
११८४	जंगल-राज्य-नियम
११८९	हैनरी द्वितीय की मृत्यु

षष्ठ परिच्छेद

सिंहराज रिचर्ड तथा जोन लैकलैंड

(१) सिंहराज रिचर्ड (Richard I Cœur De Lion)

(११८९–११९९)

हैनरी द्वितीय की मृत्यु होने पर रिचर्ड उसके संपूर्ण साम्राज्य का अधिपति बना। पितृ-द्रोही होने पर भी वह दुष्ट-प्रकृति न था। किंवदंती है कि पिता की मृत्यु सुनते ही रिचर्ड बहुत रोया। माता के प्रदेश पर बचपन से ही शासन करने से वह अतिशय वीर तथा साहसी हो

गया था। वह लैटिन का अपूर्व विद्वान्, कविता का प्रेमी और स्वयं भी एक उत्तम कवि था। दक्षिणी फ्रांस का सब से बड़ा कवि 'बर्ट्रैंड डि वार्न' इसका परम मित्र था। इसमें राज्य करने की शक्ति थी, परंतु इस ओर इसका ध्यान ही नहीं था। दस वर्षों के राज्य में केवल दो ही बार इसने इँगलैंड में दर्शन दिए।

रिचर्ड के राज्य-सिंहासन पर आने के समय संपूर्ण योरप 'तृतीय क्रूसेड' से गूँज रहा था, क्योंकि प्रसिद्ध वीर सुल्तान सालादीन ने ११८७ में ईसाइयों पर अपूर्व विजय प्राप्त की और जैरुस्सलम को हस्तगत कर लिया। सम्राट् फ्रैडरिक वार्बरोसा और फ्रेंच-युवराज फिलिप आगस्टस इस क्रूसेड में जाने के लिये तैयार हुए। सिंहराज रिचर्ड ने भी क्रूसेड पर जाने का निश्चय किया और धन लेने के लिये इँगलैंड आया। आते ही उसने उच्च-से-उच्च राज्य-पद नीलाम कर दिए। 'विलियम लांग-कैंप' नामक एक विदेशी ने बहुत-सा रुपया देकर चांसलर तथा जस्टीकार का पद ख़रीद लिया। स्कॉटलैंड के राजा ने बहुत-से रुपयों के बदले में फैले की संधि रद करवा दी। इन सब तरीक़ों से रुपया एकत्र कर वह क्रूसेड पर चला गया।

'अक्र' नामक स्थान की विजय के बाद रिचर्ड ने जैरुस्सलम की विजय के लिये प्रस्थान किया, परंतु फ़्रांसीसी

तथा आंग्लों की पारस्परिक कलह के कारण वह जेरुस्सलम की विजय में सर्वथा असमर्थ हो गया और मुसल्मानों से एक संधि करके इँगलैंड की ओर रवाना हुआ। फिलिप आगस्टस की शत्रुता के कारण फ्रांस का मार्ग निष्कंटक न था। अतः उसने गुप्त वेश में आस्ट्रिया के मार्ग से लौटना चाहा, परंतु बीना के निकट ही क़ैद होकर सम्राट् हैनरी षष्ठ के पास पहुँचा। हैनरी षष्ठ ने १० लाख पौंड तथा आजीवन-पराधीनता की शर्त पर उसको क़ैद से छोड़ दिया।

रिचर्ड की पाँच वर्ष की अनुपस्थिति में इँगलैंड में भ्रातृ-युद्ध तथा अराजकता फैल गई। 'लांगकप' शासन करने में असमर्थ था, अतः चांसलर तथा जस्टीकार-पद से हटा दिया गया और 'काउटैंसिज़ का वाल्टर' (Walter of Coutances) उसके स्थान पर नियत किया गया।

'ह्यूवर्ट वाल्टर' शासन के कार्य में बहुत ही चतुर था। क्रूसेड से लौटकर द्वितीय बार रिचर्ड ने इँगलैंड में पदार्पण किया और बहुत-सा रुपया एकत्र करके फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। ह्यूवर्ट वाल्टर समय-समय पर राजा को धन तथा सैनिकों से यथेष्ट सहायता पहुँचाता रहता था। रूत तथा नार्मंडी-प्रदेश को फ्रांसीसी आक्रमण से सुरक्षित रखने के लिये उसने 'चेतियो गिलर्ड' (Chateau Gaillard) नामक प्रसिद्ध दुर्ग बनाया, जो योरप के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है।

रिचर्ड 'कैले' नामक दुर्ग का घेरा डालते समय एक बाण के द्वारा ११९९ में घायल हुआ। उसकी मृत्यु से पहले ही क़िला फ़तह किया गया और वह सैनिक रिचर्ड के सामने उपस्थित किया गया, जिसने उसको मारा था। मृत्यु-शय्या पर पड़े-पड़े ही उस वीर ने सैनिक से पूछा कि "मैंने तेरा क्या किया था, जो तूने मुझको मारा?" इस पर सैनिक ने उत्तर दिया कि "तूने मेरे पिता तथा दो भाइयों की हत्या की है। तुझको मारकर अब मैं संतुष्ट हूँ। जो तेरी इच्छा हो कर।" यह उत्तर सुनते ही रिचर्ड ने आज्ञा दी कि इस मनुष्य को सर्वथा छोड़ दो और इसे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाओ। ११९९ की ६ एप्रिल को वीर रिचर्ड परलोक सिधारा। बैरंज़ ने राजा की मृत्यु होने के बाद ही उस सैनिक को भी मार डाला, जिसने राजा को घायल किया था।

(२) जोन लैकूलैंड

रिचर्ड की मृत्यु होते ही जोन इँगलैंड पहुँचा और उसने अपने आपको राजा चुनवाया। राज्य पर वास्तविक अधिकार जिआफ़्रे के पुत्र, आर्थर का था। आर्थर के अल्प-वयस्क होने से जाति-सभा ने जोन को ही अपना राजा स्वीकार किया।

जोन ने पिता से जो विद्रोह किया था, उसका उल्लेख किया ही जा चुका है। पिता ने जब उसको आयलैंड

का शासक नियत करके भेजा तो वह अपनी मूर्खता और अभिमान के कारण उस कार्य में सर्वथा असमर्थ सिद्ध हुआ। उसमें स्वार्थ की सीमा आवश्यकता से अधिक थी। इसी कारण उसने पिता का संपूर्ण साम्राज्य धीरे-धीरे खो दिया। धोखेबाज़ी, क्रूरता तथा मूर्खता में उसने सब आंग्ल-राजाओं को मात कर दिया। कुछ समय तक उसका राज्य शांतिपूर्वक चलता रहा। परंतु जब उसकी माता इलीनर, चांसलर ह्यूबर्ट वाल्टर और जस्टीकार जिओफ्रे फ़िट्ज़पीटर की क्रमशः मृत्यु हो गई, तब संपूर्ण साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और देश में अराजकता फैल गई। उसकी माता के मरते ही नार्मंडी फ्रांस के हाथ में चला गया। वाल्टर की मृत्यु होने पर चर्च से उसका झगड़ा हो गया और फ़िट्ज़पीटर का स्वर्गवास होने पर उसकी आंग्ल-बैरनों से लड़ाई हो गई, जिसमें उसने अपनी स्वतंत्रता खो दी।

१—जोन और विदेशी युद्ध

फ्रांस-राजा के द्वारा इलीनर ने बहुत ही अधिक परिश्रम से अंजो-प्रदेश का उत्तराधिकारी जोन को नियत करवाया। जोन ने मूर्खता से अपनी पहली स्त्री ग्लाउसस्टर की शासिका, इसावेला को त्याग दिया और अंगोलीम की शासिका, इसावेला से विवाह कर लिया। उसकी सगाई पहले से ही लामार्चे के शासक के साथ हो

चुकी थी। इस अपराध का निर्णय करने के लिये १२०२ में फ़्रांसीसी राजा, फिलिप ने जोन को अपने न्यायालय में उपस्थित होने के लिये बुलाया, परंतु जोन न गया। इस उद्दंडता पर क्रुद्ध होकर फ्रेंच राज-दर्बारियों ने उसको संपूर्ण फ्रेंच-प्रदेशों के शासकत्व से हटा दिया।

फिलिप ने नार्मंडी पर आक्रमण किया और आर्थर को अंजो तथा एक्विटेन का शासक नियत किया। आर्थर ने बड़ी वीरता से जोन के विरुद्ध युद्ध किया, परंतु 'मिरेवो' पर पकड़ा जाकर अपने चाचा की आज्ञा से १२०३ में मरवा डाला गया। इस घटना के एक वर्ष बाद ही इलीनर भी मर गई और जोन का राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा।

(क) नार्मंडी और अंजो का खोना

फिलिप द्वितीय ने अपनी संपूर्ण शक्ति नार्मंडी-विजय में लगा दी, परंतु जोन ने इसकी कुछ भी चिंता नहीं की। अपने शत्रु की सफलताओं को सुनकर उसने कहा कि "फिलिप को बढ़ने दो। वह जो कुछ जीतेगा, उसे मैं एक ही दिन में छीन लूँगा।" कुछ दिनों के बाद फिलिप द्वितीय ने 'चेतियो-गिलर्ड' को भी हस्तगत कर लिया। १२०४ की जून में रून को जीतते ही संपूर्ण नार्मंडी फ़्रांस के हाथ में चली गई। दूसरे ही वर्ष पोईशियो (Poitou) तथा अंजो का प्रदेश भी फ़्रांस ने अपने हाथ में ले लिया। इस प्रकार जोन के शासन से फ़्रांस

के संपूर्ण प्रदेश निकल गए। एकमात्र कैरंटे का प्रदेश ही उसके हाथ में रह गया।

(ख) लारोचआमोन तथा वाविनस के युद्ध (१२१४)

जोन ने अपने राज्य के अंतिम दिनों में पिता के फ्रेंच-प्रदेशों को जीतने का कुछ-कुछ यत्न किया, परंतु सफलता न मिल सकी। १२१३ में पोईशियो और अंजो की विजय के लिये उसने एक प्रबल प्रयत्न किया। उसका भांजा ओटो जर्मनी का सम्राट् था। ओटो का पोप से झगड़ा था। जोन भी पोप के पक्ष में नहीं था। अतः मामा और भांजे दोनों ही पोप के विरुद्ध मिल गए। फ्रांस पोप के पक्ष में था, अतः फ्रांस और पोप एकसाथ हो गए। दोनों पक्षों का एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें जोन और ओटो पराजित हुए। वाविनस पर ओटो को और लारोचआमोन पर जोन को नीचा देखना पड़ा। जोन के लिये इस प्रकार पराजित होना एक हतक की बात थी। परंतु इँगलैंड के लिये तो नार्मंडी का फ्रांस के पास चला जाना अच्छा ही हुआ। इसी से नार्मनों ने इँगलैंड को अपना देश समझा और राजा बनने की जगह आंग्ल-राजा की शक्ति को परिमित करना अपना उद्देश बना लिया।

२—जोन और चर्च

१२०५ में 'ह्यूवर्ट वाल्टर' का स्वर्गवास हो गया। यह कैंटबरी का आर्च-बिशप था। इसकी मृत्यु होने पर

क्राइस्ट-चर्च के भिक्षुओं ने 'रेजिनाल्ड' नामक व्यक्ति को गुप्त रूप से आर्च-बिशप चुना और उसको पोप से पैलियम ले आने के लिये शीघ्र ही रोम चले जाने को कहा। इस उच्च पद को प्राप्त करने के पहले ही रेजिनाल्ड ने संपूर्ण गुप्त मंत्रणा किसी पर प्रकट कर दी। जोन को इस बात का पता लगते ही बुरा लगा और उसने अपने एक मंत्री, 'जोन डिग्रे' को आर्च-बिशप नियत करने के लिये पादरियों को विवश किया। जब इस घटना का पोप को पता लगा, तो उसने 'स्टीफन लैंगटन' नाम के एक आंग्ल-विद्वान् को आर्च-बिशप नियत करके भेजा। परंतु जोन ने उसको अपने देश में घुसने नहीं दिया और उसको आर्च-बिशप भी नहीं माना।

इसका परिणाम यह हुआ कि पोप और जोन का परस्पर झगड़ा हो गया। पोप ने जोन को धर्म-बहिष्कृत (interdict) कर दिया। इसके द्वारा आंग्ल-देश में संपूर्ण पूजा-पाठ बंद कर दिया गया। प्रत्येक प्रकार के संस्कार किए जाना रोक दिया गया। परंतु जोन 'धर्म-बहिष्कृत' के दंड से टस का मस न हुआ। उसने आंग्ल-पादरियों को पोप के विरुद्ध चलने के लिये विवश किया। लाचार होकर पोप ने जोन को 'कर्म-बहिष्कृत' (Excommunication) किया, जिससे धर्म के मामले में जोन का प्रत्येक प्रकार का हस्तक्षेप रोक दिया गया। परंतु जोन

को इसकी भी क्या परवा थी । अंत में पोप ने फ़्रांसीसी राजा फिलिप को इँगलैंड जीतने के लिये उद्यत किया । यह देखते ही जोन डर गया और उसने लैंगटन को आर्च-बिशप मान लिया । पोप भी अति चतुर व्यक्ति था । उसने इस स्वर्ण-सुयोग से पूर्ण लाभ उठाया और जोन को अपना वैसल बनने के लिये विवश किया । १२१३ में डोबर पर उसने पोप के प्रतिनिधि पांडल्फ (Pandulf) से आंग्ल-राज्य लिया और अधीनता-सूचक कर के तौर पर १०० मार्क्स पोप को देना स्वीकार किया । जोन का पोप की अधीनता स्वीकार करना बे-मतलब न था । इसमें भी उसने पूर्ण धूर्तता से काम लिया । पोप का प्रतिनिधि होने से आंग्लों पर उसने उच्छृंखलता से राज्य करना प्रारंभ किया और फ़्रांस पर भी आक्रमण करने की तैयारियाँ करने लगा । इँगलैंड को पोप के अधीन कर देने से आंग्ल-प्रजा का उसको कुछ भी भय न रहा और फ़्रांस के आक्रमण से भी वह निश्चिंत हो गया । जो हो, जोन की इस धूर्तता से इँगलैंड को भविष्य में यथेष्ट हानि पहुँची ।

३—जोन और महास्वतंत्रता-पत्र

जोन की स्वेच्छाचारिता और लोभ से संपूर्ण आंग्ल-प्रजा पीड़ित थी । फ़्रांसीसी प्रदेशों के इँगलैंड से पृथक् हो जाने से नार्मन-बैरन इँगलैंड को ही अपना घर

समझने लगे और राजा की शक्ति को परिमित करने का अवसर देखने लगे। जोन फ़ांसीसी प्रदेशों की विजय की धुन में था। इधर आंग्ल तथा नार्मन-बैरनों ने लैंगटन से मिलकर एक 'महास्वतंत्रता-पत्र' तैयार किया। १२१४ में जब जोन फ़्रांस से पराजित होकर इँगलैंड लौटा, तो बैरनों ने उसके विरुद्ध हथियार उठा लिए और उसको महास्वतंत्रता-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिये विवश किया। १२१५ की १५ जून में 'रन्नीमीड' (Runnymede) पर जोन ने उस महास्वतंत्रता-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। जोन औवल नंबर का बदमाश था। उसने हस्ताक्षर करके भी महास्वतंत्रता-पत्र की किसी भी धारा पर चलने का यत्न नहीं किया। इतना ही नहीं, उसने पोप को वहँकाया कि महास्वतंत्रता-पत्र के द्वारा पोप की शक्ति को बड़ा भारी धक्का पहुँचता है। इसका परिणाम यह हुआ कि पोप ने महास्वतंत्रता-पत्र को अनुचित और नियम-विरुद्ध ठहराया। जोन ने विदेशियों की एक बड़ी भारी सेना एकत्र की और नार्मन-बैरंज़ के विरुद्ध युद्ध करना प्रारंभ कर दिया। इँगलैंड के सौभाग्य से १२१६ की १६ ऑक्टोबर को जोन की मृत्यु हो गई और आंग्ल-प्रजा को इस अत्याचारी से छुटकारा मिल गया।

महास्वतंत्रता-पत्र (Magna Carta) की एक प्रति आंग्ल-अजायब-घर में अब तक विद्यमान है। प्रत्येक आंग्ल इस

स्वतंत्रता-पत्र को अति पूज्य दृष्टि से देखता है। महास्वतंत्रता-पत्र की धाराएँ प्रायः हैनरी प्रथम के स्वतंत्रता-पत्र की ही धाराएँ हैं। न्याय के संबंध में महास्वतंत्रता-पत्र में लिखा है कि "किसी भी स्वतंत्र पुरुष को बंदी, नियम-विरुद्ध तथा नष्ट न किया जायगा। जाति के नियमों के अनुसार ही प्रत्येक स्वतंत्र पुरुष का न्याय किया जायगा। न्यायाधीशों को वर्ष में चार बार प्रत्येक प्रांत में घूमना होगा। न्यायालय-संबंधी अनुचित तथा अधिक फ़ीस आगे से नहीं ली जायगी। दुर्गों के सिपाही से लेकर किसी उच्च अधिकारी तक को न्याय करने का अधिकार न होगा।" पुलिस की शक्ति पर भी महास्वतंत्रता-पत्र ने यथेष्ट प्रतिबंध लगाए। यदि कोई पुलिस का व्यक्ति किसी भी स्वतंत्र पुरुष को तंग करेगा, तो उस पर उसके पद के अनुसार जुर्माना किया जायगा। पुलिस के ही सदृश सैनिकों की शक्ति को भी आर्थिक दृष्टि से कम करने का यत्न किया गया। साथ ही उनको विवाह तथा दायाद-संबंधी मामलों में स्वतंत्रता दी गई। महास्वतंत्रता-पत्र में राजा की आर्थिक शक्ति को बहुत ही अधिक परिमित कर दिया गया। इस संबंध में उसकी कुछ धाराएँ यहाँ लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है—

(१) लंदन तथा अन्य नगरों को अपनी प्राचीन स्वतंत्रताएँ प्राप्त होंगी।

(२) व्यापारियों के पदार्थ सुरक्षित रहेंगे और उन पर अनुचित अधिक कर नहीं लगाया जायगा।

(३) सारे इँगलैंड में एक ही तोल तथा नाप होगी।

(४) किसी भी नगर या स्वतंत्र पुरुष को पुल बाँधने के लिये विवश नहीं किया जायगा।

(५) किसी भी व्यक्ति का कोई भी पदार्थ, राजा भी, उसकी आज्ञा के बिना नहीं ले सकेगा।

(६) नए जंगलों को पुनः कटवा दिया जायगा।

(७) जंगल से बाहर रहनेवालों को 'जंगल-न्यायालय' के सम्मुख उपस्थित नहीं किया जायगा।

'जोन' को महास्वतंत्रता-पत्र की धाराओं के अनुसार चलाने के लिये २५ लॉर्डों की एक उप-समिति नियत की गई। महास्वतंत्रता-पत्र की सहस्रों प्रतियाँ सारे इँगलैंड में बाँटी गई। महास्वतंत्रता-पत्र की एक मुख्य धारा यह थी कि **'जनता की स्वीकृति के बिना राजा किसी भी प्रकार का कर या आर्थिक सहायता नहीं ले सकता।'** इस धारा का आगे चलकर स्थान-स्थान पर काम पड़ेगा, अतः इसको याद रखना चाहिए। रिचर्ड तथा जोन के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
११८९	सिंहराज रिचर्ड का राज्याधिरोहण
११८९–११९२	रिचर्ड का क्रूसेड पर जाना

११६४	रिचर्ड का क़ैद से छूटकर इँगलैंड आना
११६६	रिचर्ड प्रथम की मृत्यु
११६६	जोनलैंड का राज्याधिरोहण
१२०४	नार्मंडी का खोना
१२०८	इँगलैंड का पोप द्वारा धर्म-बहिष्कृत होना
१२१३	जोन का पोप की अधीनता स्वीकार करना
१२१५	महास्वतंत्रता-पत्र
१२१६	जोन की मृत्यु

सप्तम परिच्छेद

नार्मन-ब्रिटन की सभ्यता

(१) नार्मन-विजय के लाभ

नार्मन-विजय को सारे देश के ऐक्य का बीजोत्पादक कहना कोई अत्युक्ति नहीं है, क्योंकि इस विजय से ही देश की शक्ति बढ़ी, एकता की स्थापना हुई और भिन्नता की दीवारें टूट गईं । नार्मन लोगों ने यदि सारे ब्रिटन-द्वीपों को जीता न होता, तो इस देश का इतिहास दूसरी ही तरह का होता ।

नार्मन द्वारा फ्यूडल-विधि की स्थापना से योरप की साधारण सभ्यता ब्रिटन में भी फैल गई । नए विचारों और सामयिक हलचलों में इँगलैंड ने पूर्ण भाग लिया और कई

एक में अग्रणी भी होना प्रारंभ कर दिया। विदेशों में भी यहाँ के राजा की धाक बैठ गई थी और फ्यूडल-संस्थाएँ भी और देशों की ऐसी ही थीं। इँगलैंड ने धर्म-युद्धों और अंतर्जातीय मामलों में पूरा भाग लेना प्रारंभ कर दिया। कार्य-जगत् की अपेक्षा विचार-जगत् में सहानुभूति का यह संबंध अत्यधिक था। विस्तृत रूप से यह धार्मिकावस्था के शीर्षक में देखा जायगा।

(२) राजनैतिकावस्था

(क) राजा, महासभा और राज्याधिकारी

विटनेजिमाट नाम की जातीय सभा का स्थान 'महा-सभा' ने ले लिया। यह नियंत्रण और शक्ति में उसी के समान थी। इसकी रचना १२ वीं शताब्दी में राजा की अध्यक्षता में टेनैंट लोगों द्वारा की गई थी। नए नियम और असाधारण कर इसी के द्वारा नियत होते थे; परंतु जातीय सभा की तरह इसका भी शक्तिशाली राजाओं की इच्छाओं को बंद या उसका विरोध कर सकना असंभव था। 'क्यूरियारेज़िस' और 'ऐक्सचैकर-विभाग' के अधिकारियों को राजा ही नियत करता था। दोनों में राजा का प्रधान मंत्री मुख्य स्थान पाता था। शेष राज्याधिकारी निम्न-लिखित हुआ करते थे—

(१) जस्टीकार—राजा की उपस्थिति में प्रधान मंत्री और अनुपस्थिति में राजा का कार्य करता था।

(२) चांसलर-पद पर दो व्यक्ति होते थे, जो मुख्य मंत्री समझे जाते थे।

(३) कोषाध्यक्ष आर्थिक मामलों का निर्णय तथा नियंत्रण करता था। [ये पद प्रायः पढ़े-लिखे धार्मिक लोगों को ही दिए जाया करते थे। ये लोग इन्हें अपने वंशों में नहीं चला सकते थे।]

(४) मार्शल और

(५) कांस्टेबिल अर्थात् सेनापति और नायक के पदों पर लॉर्ड नियत किए जाते थे। ये पद वंश-परंपरा-गत थे।

(ख) स्थानीय शासन

भिन्न-भिन्न ज़िलों के स्थानीय न्यायालय अब तक विद्यमान थे। हैनरी द्वितीय के सर्किट (Circuit) और साक्षी (Jury) विधि ने इनका राज्य से संबंध जोड़ दिया था और राजाओं ने इन्हें धन और जन-सम्मति प्राप्त करने का अच्छा साधन समझ रक्खा था। इनके प्रतिनिधि वर्ष में दो बार वेस्ट-मिनिस्टर के ऐक्सचैकर के पास धन और उसका हिसाब देने जाया करते थे। ये ही अपने प्रांतों में राजा के प्रतिनिधि और स्थानीय शासकों से व्यवहार करते थे।

(ग) ग्राम और उनका शासन

नोबल लोगों की भूमियाँ ग्राम-समूहों (Manors) में

विभक्त थीं और यह सब एक ही प्रकार की थीं। प्रत्येक मंडल (Manor) का स्वामी लॉर्ड कहा जाता था, जो सारी भूमि का नियंत्रण और अपनी भूमि के निवासियों का अपने न्यायालय में न्याय करता था। दोषों की परीक्षा के लिये इसकी सहायतार्थ एक न्याय-समिति होती थी, जिसे ऐतिहासिक कोर्टलीट (Court leet) कहते हैं। जिनके स्वामित्व में अधिक भूमि थी, उनकी वह भूमि दो भागों में विभक्त होती थी। एक भाग डैमे (Demesne) कहाता था, जिसमें लॉर्ड लोगों के नौकर ग्रामीणों द्वारा कृषि करवाया करते थे। ग्रामीण लोगों के कुछ दिन निश्चित होते थे, जिनमें वे लॉर्ड लोगों का ही कार्य करते थे। शेष भूमि उन लोगों में बाँट दी जाती थी, जो इसी भू-भाग के आधार पर अपना पेट पालते थे। इनके पास निवासार्थ कुटिया, भोजनार्थ मांस, रोटी आदि, जीवन-निर्वाहार्थ भूमि और शीत-काल के लिये पर्याप्त वस्त्र होते थे। सैनिक कार्यों का अभ्यास इनको नहीं कराया जाता था, पर युद्ध के समय में सब से अधिक कष्ट येही लोग भोगते थे। यद्यपि इस प्रकार के अधम लोगों की श्रेणी देश में बहुत बढ़ गई थी, पर प्राचीन घृणित दासता बहुत कुछ लुप्त हो गई थी।

(३) सामाजिकावस्था

(क) जनता

जनता वैसा ही जीवन व्यतीत करती थी, जैसा उसके

पूर्वज नार्मन-विजय से पहले किया करते थे। प्रत्येक का जीवनाधार कृषि ही होती थी। नार्मन लोग भी ज़मींदार बनने लग गए थे, पर राजनैतिक मामलों में ये राजा के संदेह-पात्र होते थे और पारस्परिक कलह में फँसे रहते थे। जनता निम्न-लिखित श्रेणियों में बँटी हुई थी—

(१) भिन्न-भिन्न मंडलों के वंश-परंपरा-गत शासक अर्ल लोग संख्या में थोड़े और शक्ति में सब से बड़े और स्वेच्छाचारी होते थे।

(२) बड़े बड़े ताल्लुक़ेदार उत्कृष्ट बैरन (Greater Barans) कहलाते थे। ये महासभा के सभ्य होते थे। १३ वीं शताब्दी के प्रारंभ में ये १०० से ज़्यादा नहीं थे। आंग्ल-राजा महासभा के अधिवेशन में विशेष पत्र (Special Writ) द्वारा इनको बुलाता था। छोटे-छोटे ताल्लुक़ेदार लोग (Lesser Barans) निकृष्ट बैरंज़ कहलाते थे।

(३) निकृष्ट बैरंज़ प्रांतीय शासकों के पास भेजे हुए साधारण पत्र (General Writ) को पाकर महासभा के अधिवेशन में जाते थे। धीरे-धीरे ये लोग नाइट के रूप में बदल गए।

(४) शुरू-शुरू में नाइट लोगों की एक विशेष श्रेणी थी, जो धर्म-युद्धों में जाती थी।

नाइट लोग शस्त्रास्त्र से सज्जित रहते और अश्वा-

रोहण में चतुर होते थे। नाइट-पद की प्राप्ति राजा तक के लिये गौरव और अभिमान का कारण समझी जाती थी। १३ वीं शताब्दी में 'नाइट' शब्द का प्रयोग निकृष्ट बैरंज़ या छोटे-छोटे भूमि-पतियों के लिये ही रह गया।

(ख) निवास के ढंग

अब तक लोगों का जीवन सरल और कठोर था। ऐशो-आराम के सामान राजा और नोबल लोगों से भी दूर थे। घर लकड़ियों के थे। क़िले अंधकार से आच्छन्न और मैले से भरे रहते थे। एक ही मकान में पकाना, खाना-पीना, सोना आदि सब काम होते थे। कोई आनंद के साधन न थे।

(ग) भोजन और वेश

नार्मन-लोगों ने और बातों के साथ-साथ भोजन-विधि को भी अत्युत्तम बनाया। मदिरा का पान कम किया। अच्छे-अच्छे शानदार वस्त्रों और बूटों का पहनना शुरू किया। नार्मन लोग दाढ़ी-मूछ मुड़वाकर रहते थे। विवाहित स्त्री-पुरुष सिर नंगा रखते थे, केवल वर्षा और आँधी के दिनों में टोपी रख लिया करते थे। धनी लोग पक्षियों के सुंदर-सुंदर बालों का भी प्रयोग करते थे।

(४) आर्थिकावस्था

(क) व्यापार

नार्मन-विजय का परिणाम नगरों की स्थापना और

व्यापार-वृद्धि भी हुआ । कई नगर व्यापार और कला-कौशल के केंद्र हो गए । व्यापारियों के संघों (Merchant Guilds) की स्थापना हो गई । व्यापार का एकाधिकार भी प्रारंभ हो गया । नार्मन लोग सैनिक कार्यों की तरह व्यापार में भी कुशल थे । धर्मात्मा एडवर्ड के समय में इन्होंने लंदन में आकर व्यापार से ही उच्च स्थिति बना ली थी । उदाहरणार्थ संत टामस वैकट का पिता, जो नार्मन था, व्यापार से ही इतना उच्च हुआ कि उसके पुत्र का नाम इतिहास में अमर हो गया है ।

यहूदी लोगों ने भी बड़े-बड़े नगरों में रहना प्रारंभ कर दिया था । ये महाजनी का काम किया करते थे । क्रिश्चियन लोगों का धार्मिक नियम उन्हें धन को व्याज पर देने से रोकता था, अतः इन लोगों का इस कार्य में क्रियात्मक एकाधिकार था । ये लोग अधमर्णों (जो प्रायः क्रिश्चियन होते थे) को बहुत तंग करते थे । व्याज की मात्रा अधिक कर रक्खी थी, अतः क्रिश्चियन भी इन्हें अत्यधिक तंग करते थे और अक्सर तो बड़ी क्रूरता से इनको मार डालते थे । ये लोग विशेष प्रकार के वस्त्र पहनते थे और नगर के विशेष भाग में रहते थे । राजा को ये खूब ऋण देते थे, अतः राजा की कृपा के विशेष पात्र थे । धीरे-धीरे इन्होंने भी नियम, न्यायालय और रीति-

रिवाजों में भाग लेना शुरू किया । ये बहुत धनी थे और पत्थरों के घरों में रहते थे ।

(ख) नगर

नगरों में "लंदन" टेम्स नदी के तट पर सब से बड़ा नगर था। इसने महात्मा एडवर्ड के समय से राजधानी का रूप ग्रहण किया। स्वतंत्रता-पत्रों से इसके निवासियों ने विशेष स्वतंत्रताएँ प्राप्त कीं और हैनरी प्रथम के स्वतंत्रता-पत्र से इसे अत्यधिक स्वतंत्रता मिली। इसके निवासी राजनैतिक मामलों में अच्छा भाग लेते थे। स्टीफन और मैटिल्डा के पारस्परिक कलह में स्टीफन की सहायता और फिर जोन का विरोध (महास्वतंत्रता-पत्र पर हस्ताक्षर करवाते समय) ध्यान देने योग्य है। दूसरी श्रेणी का नगर 'यार्क' था, जो उत्तरीय प्रांतों की राजधानी था। तीसरा "एग्जीटर" था, जो पश्चिम का मुख्य नगर था। "ब्रिसल" लंदन से दूसरा बंदरगाह था। "नौर्विच" कला-कौशल के लिये मुख्य नगर था। पूर्व-दक्षिण के ५ बंदर "सिंके पोर्ट्स" (Cinque Ports) कहाते थे; वे युद्ध के समय अपने जहाज़ों द्वारा राजा की सहायता किया करते थे। इनमें मुख्य "डोवर" था, जो यात्रियों के लिये योरप आने-जाने का मुख्य बंदरगाह था।

(५) शिक्षा

बारहवीं शताब्दी में राज्य में अनेक सुधार हुए।

धर्म और सभ्यता की अच्छी उन्नति हुई। स्वाध्याय और शिक्षा का जीवन भी इसी समय समुन्नत हुआ। 'लैंफ्रैंक' और 'अन्सलम'-जैसे विद्वानों ने विद्यार्थियों के झुंड-के-झुंड इकट्ठे करके पढ़ाना और उनमें विद्या-प्रेम पैदा करना प्रारंभ किया। धीरे-धीरे जगह-जगह विद्या-पीठों और विश्वविद्यालयों की स्थापना शुरू हो गई। पूर्व में 'पेरिस' का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था, जिसके शिष्य स्थान-स्थान पर सारे योरप में जाया करते थे। हैनरी द्वितीय के समय 'ऑक्सफ़ोर्ड' में इसी नाम का विश्वविद्यालय स्थापित हुआ, जो आंग्लों का अपना पहला और मुख्य विद्या-पीठ था। १२ वीं शताब्दी तक विद्या-पीठों का पूर्ण सुधार हो गया और इन्होंने विद्या और विचार के जगत् में यथेष्ट भाग लिया। ग्लाउसस्टर के राबर्ट ने, जैसा कि लिखा जा चुका है, ऐतिहासिक शिक्षा के लिये बहुत कुछ किया। पादरियों, राज-नीति-ज्ञों और विद्यार्थियों की भाषा लैटिन ही थी। यही शिक्षा का माध्यम थी। मन्मथ के जिआफ़्रे ने अपनी एक पुस्तक इसी भाषा में लिखी। इस प्रकार अनेक पुस्तकें लैटिन में ही इस समय प्रकाशित हुईं।

अब "आंग्लों की जातीयता का उदय कैसे हुआ" इस पर कुछ विचार करते हैं।

(६) नार्मन और एंजविन राजा

विलियम प्रथम (१०६६—१०८७)

राबर्ट नार्मंडी का ड्यूक — विलियम

विलियम द्वितीय १०८७-११००

हैनरी प्रथम ११००-११३५ — विलियम (११२० में जहाज़ से डूबकर मर गया), मैटिल्डा स्त्री—(१) सम्राट् हैनरी पंचम (२) अंजो के काउंट जिआफ़्रे

अडेला — स्टीफन ११३५-११५४, ब्लायस का हैनरी विंचस्टर का बिशप

हैनरी द्वितीय ११५४-११८९

हैनरी ११७३ | रिचर्ड प्रथम ११८९-११९९ | जिआफ़्रे ब्रिटनी का काउंट | जोन ११९९-१२१६ | कन्या | कन्या | कन्या | कन्या

जोन — स्त्री—(१) ग्लाउसस्टर की इसाबेला (२) अंगोलीम की इसाबेला

*

*
(२)
हैनरी तृतीय
१२१६-१२७२
(२)
रिचर्ड
कार्नवाल का अर्ल
(२)
इलीनर(कन्या)
स्त्री-मांटफ़ोर्ट का
समिन
कन्या
एडवर्ड प्रथम
१२७२-१३०७
एडमंड
लंकास्टर का अर्ल
एडवर्ड द्वितीय
१३०७-१३२७
एडवर्ड तृतीय
१३२७-१३७७
एडवर्ड-दि-
ब्लैकप्रिंस
(मृ. १३७६)
विलियम
आफ़ हैट
फ़ील्ड
लायोनल
क्लेयरंस का
ड्यूक
जोन आफ़
घेंट लंका-
स्टर का
ड्यूक
टामस
ग्लाउसस्टर
का ड्यूक
१३६७
एडमंड
यार्क का
ड्यूक
रिचर्ड द्वितीय
१३७७-१३६६
हैनरी चतुर्थ
१३६६-१४१३

तृतीय अध्याय

आंग्लों में जातीयता का उदय

(१२१६–१३६६)

प्रथम परिच्छेद

हैनरी तृतीय (१२१६–१२७२)

जोन का बड़ा पुत्र ६ वर्ष ही का था कि राजा के मित्रों ने उसे हैनरी तृतीय के नाम से इँगलैंड का राजा उद्घोषित कर दिया। हैनरी के बालक होने के कारण उसके स्थान पर पैंब्रुक के अर्ल, विलियम मार्शल ने इँगलैंड तथा आयर्लैंड का शासन करना प्रारंभ किया। पोप के प्रतिनिधि, गेली ने उसको शासन के कार्य में यथेष्ट सहायता दी। इन दोनों के दूर-दर्शिता-पूर्ण कार्य से बालक-राजा के मित्रों की संख्या क्रमशः बढ़ती गई। बैरंज़ के विद्रोहों को शांत करने के लिये हैनरी तृतीय के नाम से 'महास्वतंत्रता-पत्र' निकालकर पैंब्रुक ने बहुत ही उत्तम कार्य किया, क्योंकि इससे लूइस को धूर्तता करने का अवसर नहीं मिल सका। १२१७ में पैंब्रुक ने लिंकानें पर लूइस को एक सम्मुख-युद्ध में बुरी तरह से पराजित किया और इसी समय 'ह्यूबर्ट-डि-वर्ग' (Hübert De Burgh)

ने उसके जहाज़ी बेड़े को सैंड्विच से परे ही नष्ट कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने विलियम मार्शल से 'लैंबेथ' की संधि कर ली, जिसके अनुसार उसने इँगलैंड का पीछा छोड़ दिया। लूइस के इँगलैंड छोड़ते ही 'महास्वतंत्रता-पत्र' पुनः एक नवीन रूप में निकाला गया। इसमें 'जंगल-नियमों' की कठोरताओं को बहुत कुछ कम करने का यत्न किया गया।

१२१९ में नियम-परायण, दूर-दर्शी विलियम मार्शल की मृत्यु हो गई। इसके अनंतर कैंटबरी के आर्च-बिशप, लैंगटन ने ही राज्य-कार्य चलाना प्रारंभ किया। पोप के प्रतिनिधि, पांडल्फ के हस्ताक्षेपों से तंग आकर आर्च-बिशप नें उसको रोम में बुला लेने के लिये पोप को विवश किया। इन्हीं दिनों फाल्कस तथा रोचिज़ (जोन के मित्र) नामक विदेशियों ने राज्य-कार्य में विघ्न डालना चाहा, परंतु उन्हें ह्यूबर्ट-डि-बर्ग ने दबा दिया।

१२२७ में पोप ने हैनरी तृतीय को स्वयं ही राज्य-कार्य चलाने के लिये आज्ञा दे दी। १२२८ में लैंगटन की मृत्यु हो गई। १२३२ में पीटर-डि-रोचिज़ ने 'हैनरी' को अपने वश कर लिया और ह्यूबर्ट को पद-च्युत करवाकर स्वयं उसका स्थान ले लिया। इन दिनों कैंटबरी का आर्च-बिशप 'एडमंड रिच' था। इसने हैनरी तृतीय को समझाया कि तू पीटर-डि-रोचिज़ को इँगलैंड से निकाल दे। आर्च-

बिशप की बात उसकी समझ में आ गई और इस पर उसने रोचिज़ को निकाल दिया।

हैनरी तृतीय स्वभाव का प्रमादी तथा अकर्मण्य था। इसी कारण वह सफलतापूर्वक राज्य नहीं कर सका। इसमें संदेह नहीं कि वह धर्मात्मा तथा कोमल-हृदय था। विद्या तथा पुस्तकों से उसको प्रेम था। अपने आंग्ल होने का उसको अभिमान था और इसीलिये उसने अपने बड़े पुत्र का नाम एडवर्ड रक्खा था। बैरन लोगों पर इसका बिल्कुल विश्वास नहीं था; अतः उसने विदेशियों के द्वारा ही इँगलैंड का शासन करना चाहा। १२३४ से १२५८ तक इँगलैंड में विदेशियों के झुंड-के-झुंड आते गए और सब उच्च-पद क्रमशः उन्हीं के हाथ में चले गए।

(१) हैनरी तृतीय तथा विदेशी मित्र

१२३६ में हैनरी ने प्रावंस के शासक की कन्या, 'इलीनर' के साथ विवाह कर लिया। लूइस नवम की स्त्री मार्गरट इसकी बहन थी और 'सैवाय' का शासक इसका नाना था। सैवाय तथा प्रावंस के छोटे-छोटे ताल्लुक़ेदारों ने इलीनर के कारण इँगलैंड आना प्रारंभ किया और हैनरी की कृपा से वे अपने को मालामाल करने लगे। इन्हीं विदेशियों में से मांटफ़ोर्ट के 'सीमन' ने राजा की कृपा से लीसस्टर के अर्ल का पद प्राप्त किया और उसकी बहन से विवाह भी कर लिया।

इन्हीं दिनों पोप ने भी इँगलैंड को लूटने का पूरा प्रयत्न किया। 'इन्नोसंट तृतीय' के उत्तराधिकारी ने इँगलैंड पर अपने और भी अधिक अधिकार प्रकट किए। उसने अच्छे-अच्छे गिरजाघरों का स्वामित्व फ़्रांसीसी तथा इटैलियन पुरोहितों को दे दिया। ये लोग धर्म का काम तो कुछ नहीं करते थे। हाँ, गिरजाघरों की संपत्ति से रुपया इकट्ठा करके अपने को समृद्ध बनाना इनका काम था। पोप तथा सम्राट् फ़ैडरिक द्वितीय के युद्धों के कारण इँगलैंड पर पहले से अधिक कर लगाए गए। पोप ने 'ओटो' नामक इटैलियन को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा। ओटो के व्यवहार से आंग्ल क्रुद्ध थे। १२३८ में ऑक्सफ़ोर्ड के विद्वानों से उसका झगड़ा हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसको इटली लौट जाना पड़ा।

आर्च-बिशप, एडमंड ने आंग्लों को राजा तथा पोप के अत्याचारों तथा लूटों से बचाना चाहा। परंतु जब वह इस कठिन कार्य के करने में असमर्थ हो गया, तब वह निराश होकर विदेश चला गया और वहाँ पर ही मर गया। उसके धर्मात्मापन के प्रभाव से लोग उसे 'संत एडमंड' के नाम से पुकारने लगे। उसकी प्रसिद्धि सर्वत्र फैल गई।

१२४२ में हैनरी ने अपने पिता के खोए हुए राज्यों

को फ्रांस से जीतना चाहा, परंतु 'टेलिबरी' के युद्ध में पराजित होकर वह इँगलैंड लौट आया । १२४८ में गास्कनी के उद्दंड ताल्लुक़ेदारों के शासन के लिये उसने सीमन को वहाँ भेजा । गास्कनी में पहुँचते ही सीमन ने कठोरता से शासन किया और सारे राज्य में पूर्ण शांति स्थापित कर दी । उसके कठोर व्यवहार से क्रुद्ध होकर कुछ गास्कनों ने हैनरी से उसकी शिकायत की । अतएव हैनरी ने उसको इँगलैंड बुला लिया । इस घटना से 'सीमन' हैनरी का विरोधी हो गया और अन्य असंतुष्ट आंग्ल-बैरनों के साथ मिल गया । इन्हीं दिनों पोप ने हैनरी को धोका दिया कि यदि वह उसको बहुत-सा रुपया दे दे, तो वह सिसली का प्रदेश जीतकर उसके पुत्र, 'एडमंड' को ही वहाँ का राजा बना दे । बेचारा हैनरी पोप की चालाकी को नहीं समझा और उसके धोके में आ गया । परिणाम इसका यह हुआ कि उससे रुपया लेकर पोप ने अपना काम निकाला और उसे अंत तक चकमा ही देता रहा ।

(२) आंग्ल-जाति की उन्नति

हैनरी तथा पोप के कार्यों से आंग्ल-जनता को जो कष्ट पहुँचे थे, उनका उल्लेख किया जा चुका है । हैनरी का दुष्प्रबंध आंग्ल-जनता को इसलिये भी असह्य था कि वह राजनैतिक विषयों में दिन-दिन अवनति कर रही थी ।

हाँ, धार्मिक विषयों में उसकी उन्नति हो रही थी। इन्हीं दिनों 'मेंडिकैंट' भिक्षुओं का उदय हुआ था, जिनके डामिमिनिकंज़ तथा फ्रांसिस्कंज़ नामक दो संघों ने योरप में बहुत ज़्यादा प्रसिद्धि प्राप्त की थी। १२२१ से १२२४ तक इन भिक्षुओं ने इँगलैंड पर भी पदार्पण किया और उसमें एक नवीन धार्मिक जान डाल दी। आश्चर्य की बात है कि इँगलैंड में विश्व-विद्यालयों का प्रारंभ भी इसी समय से हो जाता है और मध्य-कालीन कला-कौशल पूर्णता पाता है। इन दिनों व्यापार तथा व्यवसाय, नगर तथा क़स्बों के उदय होने से इँगलैंड दिन-दिन समृद्ध हो रहा था। जातीयता का भाव भी उसमें अंकुरित हो गया था। १२५८ में अर्ल 'सीमन' के नेतृत्व में आंग्ल-बैरनों ने राजा तथा उसके मित्रों की शक्ति को नष्ट कर दिया।

(क) मैड पार्लियामेंट (१२५८)

१२५८ में राजा को धन की अत्यंत अधिक आवश्यकता हुई। अतः उसने वेस्ट-मिनिस्टर में पार्लियामेंट का अधिवेशन किया और बैरनों से रुपया माँगा, परंतु उन्होंने नहीं दिया। कुछ मास बाद 'जून' में पुनः पार्लियामेंट का अधिवेशन किया गया। इसमें सब बैरंज़ स-शस्त्र और स-सैन्य आए थे, क्योंकि उनको वेल्ज़ में युद्ध करने के लिये जाना था। राजा के मित्रों ने ऑक्सफ़ोर्ड की

इस पार्लियामेंट को 'मैड पार्लियामेंट' का नाम दिया, क्योंकि इसने राजा के अधिकारों को पद-दलित और उसके मित्रों की शक्ति सर्वथा नष्ट कर दी। मैड पार्लियामेंट ने २४ व्यक्तियों की एक उप-समिति को यह कार्य सुपुर्द किया कि वह 'आगे इँगलैंड का राज्य कस चलाया जाय,' इस पर अपनी सम्मति प्रकट करे। कुछ ही दिनों बाद उप-समिति की सम्मति आई, जिसके अनुसार पंद्रह व्यक्तियों की एक स्थिर उप-सभा नियत की गई, जो राजा को प्रबंध के मामले में सदा ही सलाह दिया करे। सब विदेशियों को देश-निकाला दे दिया गया। सारी पार्लियामेंट ने १२ व्यक्तियों को अपना प्रतिनिधि चुना, जो वर्ष में तीन बार 'स्थिर उप-समिति' के साथ संपूर्ण राजकीय प्रश्नों पर विचार किया करें। १२५६ में इँगलैंड ने फ़्रांस से संधि कर ली। यह संधि 'पैरिस की संधि' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार राजा के संपूर्ण फ़्रेंच-प्रदेश लूइस ने ले लिए और गास्कनी तथा इँगलिश चैनल के कुछ द्वीप आंग्लों को दे दिए।

(ख) बैरन-युद्ध (१२६३)

मैड पार्लियामेंट द्वारा नियत की गई १५ व्यक्तियों की उप-समिति ने राज्य-कार्य अच्छी तरह नहीं चलाया। इस से आंग्लों में भयंकर असंतोष फैल गया। लीसस्टर

के अर्ल, सीमन ने असंतोषी पार्टी का नेतृत्व ग्रहण किया, परंतु ग्लाउसस्टर के अर्ल, रिचर्ड ने उसका साथ नहीं दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बैरनों के दो हिस्से हो गए। हैनरी तथा उसके पुत्र एडवर्ड ने इस झगड़े से पूर्ण लाभ उठाया और अपने को आंग्ल-जनता का नेता बना लिया। कुछ समय तक एडवर्ड तथा सीमन साथ मिलकर काम करते रहे, परंतु अंत में दोनों की नहीं बनी और एडवर्ड सीमन का जानी दुश्मन हो गया। हैनरी ने १५ व्यक्तियों की उप-समिति तोड़ दी और स्वच्छंदता-पूर्ण शासन करने लगा। इससे संपूर्ण बैरंज़ सीमन से मिल गए और राजा से युद्ध करने के लिये तैयारियाँ करने लगे। राजा तथा बैरंज़ शक्ति में बराबर थे, अतः चिर-काल की कलह का कोई परिणाम नहीं हुआ। १२६३ की दिसंबर में दोनों ही दलों ने संपूर्ण निर्णय फ्रांस के राजा लूइस पर छोड़ दिया। उसने हैनरी के पक्ष में ही अपना निर्णय दिया। सीमन को यह कब स्वीकृत हो सकता था? उसने फ़ौरन हैनरी के विरुद्ध लड़ाई ठान दी। आरंभ में राजा ने बड़ी सफलता प्राप्त की और केंट तथा ससेक्स जीतकर वह ल्यूज़ नाम के स्थान पर जा पहुँचा। सीमन ने अपूर्व चतुरता से हैनरी और एडवर्ड दोनों को ही वहाँ क़ैद कर लिया और उनको नई रीति पर राज्य करने के लिये

विवश किया। ९ व्यक्तियों की एक उप-समिति बनाई गई। राजा के स्थान पर वास्तव में यह उप-समिति ही इँगलैंड का शासन करने लगी। इन्हीं दिनों रानी इलीनर तथा वेल्ज़ के सीमा-प्रांतीय लॉर्डों ने फ्रांस में सेना एकत्र की और वे इँगलैंड पर आक्रमण करने का अवसर देखने लगे।

(ग) सीमन की पार्लियामेंट (१२६५)

रानी तथा सीमा-प्रांतीय लॉर्डों के आक्रमण से देश को सुरक्षित रखने के लिये सीमन ने आंग्ल-जनता को अपनी ओर मिला लेना आवश्यक समझा। १२६५ में उसने लोक-सभा (House of Commons) का अधिवेशन किया। इसमें संपूर्ण जनता के प्रतिनिधि समुपस्थित थे। आंग्ल-इतिहास में सीमन की यह पार्लियामेंट बहुत विख्यात है। आंग्ल-जनता सीमन को बहुत पूज्य दृष्टि से देखती है; क्योंकि यही पहला व्यक्ति है, जिसने उनको स्वतंत्रता तथा शक्ति का मार्ग दिखाया। पार्लियामेंट से सहायता मिलने पर भी सीमन की शक्ति नहीं बढ़ी। इसका कारण यह था कि बैरन लोग स्वार्थी थे और उनको सीमन की नीति पसंद नहीं थी। ग्लाउसस्टर के अर्ल ने सब से पहले उसका विरोध किया और ग्लैमरगान में उसके विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया। सीमन ग्लैमरगान की ओर शीघ्र ही सेना-सहित चल पड़ा और अपने साथ हैनरी तथा

एडवर्ड को भी लेता गया। अवसर पाकर एडवर्ड उसकी क़ैद से भाग गया और ग्लाउसस्टर से मिल गया।

'ऐवशाम' नाम के स्थान पर सीमन तथा एडवर्ड का भयंकर युद्ध हुआ। सीमन के पास सेना बहुत थोड़ी थी, अतः वह युद्ध में परास्त हुआ और युद्ध में ही मर गया। एडवर्ड ने अपने पिता को सीमन की क़ैद से छुड़ा लिया। वेल्ज़ का राजा सीमन का साथी था। उसको शांत करने के लिये एडवर्ड ने उससे 'श्रूयस्वरी' की संधि कर ली और शासन करने के लिये उसको वेल्ज़ के बहुत-से प्रदेश दे दिए। थोड़े समय बाद ही वह क्रूसेड पर चला गया और वृद्ध हैनरी अकेला ही इँगलैंड का शासन करता रहा। १२७२ की नवंबर में वृद्ध राजा की मृत्यु हो गई और वह वेस्ट-मिनिस्टर के गिरजाघर में गाड़ा गया। हैनरी तृतीय के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१२१६	हैनरी तृतीय का राज्याधिरोहण
१२१७	लिंकान का युद्ध
१२१९	विलियम मार्शल की मृत्यु
१२३२	ह्यूबर्ट-डि-बर्ग का अधःपतन
१२४८	सीमन गास्कनी का शासक नियत किया गया

१२५८	ऑक्सफ़ोर्ड के नियम
१२५६	पैरिस की संधि
१२६४	ल्यूज़ का युद्ध
१२६५	सीमन की पार्लियामेंट
१२६५	ऐवशाम का युद्ध
१२६७	श्रूयस्वरी की संधि
१२७२	हैनरी तृतीय की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

एडवर्ड प्रथम (१२७२–१३०७)

एडवर्ड प्रथम तेंतीस वर्ष की आयु में राज्य पर बठा। इसने बैरन-युद्ध में पिता की जिस प्रकार सहायता की थी, उसका उल्लेख किया जा चुका है। यह दृढ़ प्रकृति, साहसी, कर्मण्य तथा स्वेच्छाचारी था। इसम शक्ति प्राप्त करने की बहुत प्रबल इच्छा थी। अतः इसने प्रजा के प्रति बहुत अधिक सहानुभूति प्रकट की और उसकी सहायता से बैरंज़ पर पूरी तौर पर स्वेच्छाचारी शासन किया। वह मिज़ाज का गरम था और क्रोध म आकर अक्सर क्रूर-से-क्रूर कर्म कर बैठता था। आंग्ल-इतिहास म इसका राज्य अत्यंत आवश्यक है। आंग्ल-ऐतिहासिक इसको स्कॉटलैंड के प्रथम विजेता तथा प्रसिद्ध नियम-निर्माता की उपाधि से सुशोभित करते हैं।

(१) एडवर्ड प्रथम और विदेशी युद्ध

(क) वेल्ज़ का प्रथम युद्ध

वेल्ज़ के राजाओं ने एडवर्ड प्रथम को राज्य पर आते ही कष्ट पहुँचाया। 'ल्यूलिन' नामक वेल्श राजा ने अपने आपको 'साइमन' का शिष्य प्रकट किया और १२७५ में साइमन की कन्या से विवाह करने के लिये उद्योग करने लगा। दैवी घटना से साइमन की कन्या वेल्ज़ जाते समय एडवर्ड के मित्रों के हाथ पड़ गई और उन्होंने उसको लंदन भेज दिया। १२७७ में एडवर्ड ने उत्तरीय वेल्ज़ पर एक भयंकर आक्रमण किया और वेल्श राजा को 'कान्वे की संधि' (Treaty of Conway) की शर्तों को स्वीकृत करने पर बाध्य किया। इस संधि के अनुसार उससे संपूर्ण वेल्श प्रांत छीन लिए गए, जो उसने 'श्रूयस्वरी' के युद्ध में जीते थे।

जीते हुए प्रांतों पर एडवर्ड तथा उसके प्रतिनिधियों का शासन बहुत कठोर हुआ। इससे वेल्श प्रजा में भयंकर असंतोष फैला और वह विद्रोह करने को तैयार हो गई। ल्यूलिन तथा उसके भाई डेविड ने इन विद्रोहियों को पूर्ण सहायता पहुँचाई। इसका परिणाम यह हुआ कि १२८२ में एक बड़ी सेना के साथ एडवर्ड ने वेल्ज़ पर आक्रमण किया और 'ओर्वीनब्रिज' के युद्ध में डेविड तथा ल्यूलिन को पराजित किया। ल्यूलिन युद्ध में ही

मारा गया और डेविड पकड़ा जाकर फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

१२८४ में एडवर्ड प्रथम ने वेल्ज़ के शासन के लिये बहुत-से राज्य-नियम बनाए। इसने संपूर्ण वेल्ज़ को पाँच मंडलों में विभक्त कर दिया, जो इस प्रकार हैं—

(१) आंग्लसे
(२) कार्नरवान
(३) मेरिपानथ
(४) कार्डिगान
(५) कार्मरदन

स्नाउडान के मंडल को पूर्ण रूप से वश में रखने के लिये एडवर्ड ने उसके चारों ओर बहुत-से दुर्ग बनाए और दुर्गों के बाहर आंग्ल-उपनिवेशों को स्थापित किया, जिससे वेल्ज़-निवासी फिर कभी विद्रोह न कर सकें। इन संपूर्ण वेल्श-प्रदेशों का शासक उसने अपने पुत्र, एडवर्ड द्वितीय को निश्चित किया और उसको 'प्रिंस आव् वेल्ज़' का नाम दिया।

(ख) स्कॉटलैंड-विजय और आदर्श पार्लियामेंट

१२८६ में स्कॉटलैंड का राजा 'अलेग्ज़ेंडर' तृतीय की मृत्यु हो गई। यह निस्संतान मरा। इसके एक कन्या थी, परंतु वह भी मर चुकी थी। उस कन्या से नार्वे के

राजा के द्वारा 'मार्गरट' नामक एक कन्या उत्पन्न हुई थी, परंतु नाना की मृत्यु के समय वह अभी अल्प-वयस्का थी। स्काच-सर्दारों ने मार्गरट को ही अपनी रानी प्रसिद्ध कर दिया।

एडवर्ड प्रथम स्कॉटलैंड की संपूर्ण घटनाओं को बहुत ध्यान से देख रहा था। मार्गरट के रानी प्रसिद्ध होते ही एडवर्ड ने स्काच-सर्दारों से रानी का अपने पुत्र के साथ विवाह कर देने के लिये कहा। उन्होंने बहुत प्रसन्नता से एडवर्ड का प्रस्ताव मान लिया। स्कॉटलैंड के दौर्भाग्य से नार्वे से स्कॉटलैंड आते समय मार्गरट मार्ग में ही मर गई। इसकी मृत्यु का समाचार पहुँचते ही स्काच-सर्दारों में उत्तराधिकारित्व का झगड़ा प्रारंभ हो गया।

इस झगड़े का निर्णय स्काच-सर्दारों ने एडवर्ड पर छोड़ा। एडवर्ड ने मार्गरट का उत्तराधिकारी 'जोन बैलियल' को प्रकट किया। बैलियल ने एडवर्ड को अधीनता-सूचक कर दिया और वह स्कॉटलैंड के सिंहासन पर बैठा।

स्कॉटलैंड के बहुत-से झगड़ों को तय करने के लिये अभियुक्तों को एडवर्ड ने इंगलैंड में ही बुलाना प्रारंभ किया। इस बात से क्रुद्ध होकर स्काच-सर्दारों ने सब से पहले 'जोन बैलियल' पर ही अपना हाथ साफ़ किया और उसको १२ लॉर्डों की एक उप-समिति के द्वारा शासन

करने के लिये विवश किया। इस उप-समिति ने एडव के साथ अपने सारे संबंध तोड़ दिए और फ़्रांस के साथ मित्रता करनी प्रारंभ की। इन्हीं दिनों फ़्रांस तथा इँगलैंड के संबंध खिंच रहे थे, जिसके निम्न-लिखित कारण थे—

(१) एडवर्ड का गास्कनी पर पहले से ही राज्य था अपनी स्त्री इलीनर के द्वारा उसको पोंथियों का राज्य भी प्राप्त हो गया। इस प्रकार एडवर्ड की शक्ति फ़्रांस में क्रमशः बढ़ रही थी, जो फ़्रांस के राजा फिलिप पंचम को सह्य नहीं थी।

(२) इन्हीं दिनों फ़्रांसीसी तथा आंग्ल-मल्लाहों में झगड़ा हो गया। फ़्रांसीसी मल्लाहों ने शरारत करके कुत्ते तथा आंग्ल-मल्लाह को एक ही स्थान पर लटका रक्खा था और यह दिखाते फिरते थे कि कुत्ते तथा आंग्लों में कोई अंतर नहीं है।

(३) १२९३ में आंग्ल-मल्लाहों ने फ़्रांसीसी मल्लाहों पर आक्रमण कर दिया और उनको क्रूरता के साथ मारा। एडवर्ड ने फिलिप से मिलकर इस झगड़े को तय करना चाहा; परंतु जब झगड़ा तय न हुआ, तो उसने फ़्रांस के विरुद्ध युद्ध प्रारंभ कर दिया।

फ़्रांस ने एडवर्ड के आक्रमणों से अपने को सुरक्षित करने के लिये स्कॉटलैंड को सहायता पहुँचाई और स्काच-सर्दारों को इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित

किया। इस विपत्ति के समय में एडवर्ड ने आंग्ल-प्रजा से सहायता लेने का निश्चय किया। अतः उसने १२९५ में पादरियों, नागरिकों तथा बैरनों के प्रतिनिधियों को बुलाया और उनसे युद्धार्थ धन माँगा। आंग्ल-इतिहास में यह पार्लियामेंट आदर्श-पार्लियामेंट के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि इसमें कुल जनता के प्रतिनिधि उपस्थित थे। आदर्श-पार्लियामेंट ने एडवर्ड को बहुत-सा धन दिया।

१२९६ में एडवर्ड ने स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया। जोन बैलियल ने शीघ्र ही उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। इस पर उसने संपूर्ण स्काच-भूमि-पतियों से अधीनता-सूचक कर लिया और स्कॉटलैंड के 'पवित्र पत्थर' को इँगलैंड में पहुँचा दिया। इन्हीं दिनों एडवर्ड के साथ चर्च तथा बैरंज़ ने शत्रु का काम किया। कैंटबेरी के आर्च-बिशप, 'राबर्ट विंचलसी' ने उसको अधिक कर देना बंद कर दिया और १२९७ की सलिस्बरी की पार्लियामेंट में नार्फ़ाक और हर्फ़ोर्ड के अर्लों ने गास्कनी में लड़ने के लिये जाने से इंकार कर दिया और जब एडवर्ड ने उनको फाँसी की धमकी दी, तो उन्होंने विंचलसी के साथ मिलकर एक बड़ी भारी सेना एकत्र की। एडवर्ड के फ्रांस जाते ही इन दोनों अर्लों ने लंदन में प्रवेश किया और स्वतंत्रता-पत्र में अन्य बहुत-सी बातें जोड़कर उस पर

एडवर्ड के प्रतिनिधि से हस्ताक्षर करवाए और उसको फ्रांस भेज दिया। लाचार होकर एडवर्ड ने उस पर हस्ताक्षर कर दिए।

स्कॉटलैंड को एक बार पराजित करके भी उसको पूर्ण शांति नहीं मिली, क्योंकि सर विलियम वालेस के नेतृत्व में स्काच-सर्दारों ने आंग्लों के विरुद्ध पुनः विद्रोह कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि एडवर्ड को फ़्रांस छोड़कर पुनः स्कॉटलैंड पर आक्रमण करने के लिये स-सैन्य प्रस्थान करना पड़ा। उसने वालेस को फाल्कर्क के प्रसिद्ध युद्ध में हराया। वालेस हारकर फ़्रांस भाग गया। यह देख उसने समझ लिया कि वह फ़्रांस तथा स्कॉटलैंड के साथ एक साथ नहीं लड़ सकता है। अतः उसने १२९९ में फ़्रांस के साथ संधि कर ली और फिलिप की बहन, 'मार्गरट' के साथ विवाह भी कर लिया।

१३०३ में फिलिप ने पोप बोनिफेस को पराजित किया। इसके अनंतर एक गास्कनी-निवासी क्लिमंट पंचम के नाम से पोप बना। पोप बनने के अनंतर भी यह फ़्रांस में ही रहा और इसने एडवर्ड के साथ भी झगड़ा नहीं किया। एडवर्ड ने ऐसा स्वर्णीय अवसर प्राप्त करके विंचलसी को देश-निकाला दे दिया और इस प्रकार बैरंज़ के साथ मिलने का उससे पूरा बदला लिया। उसने

आर्च-बिशप के सदृश ही बैरंज़ को भी नीचा दिखाने का यत्न किया, परंतु १३०० में उसको स्वयं ही नीचा देखना पड़ा । १३०० में बैरंज़ ने उससे जो स्वतंत्रता-पत्र लिया, वह 'आर्टिकुली सुपरकार्टस' कहलाता है । इसमें उसका जंगलों पर प्रभुत्व बहुत कुछ कम करने का यत्न किया गया ।

१३०३ में एडवर्ड ने संपूर्ण बल से स्कॉटलंड पर आक्रमण किया और १३०४ में स्टर्लिंग के प्रसिद्ध नगर को हस्तगत कर लिया । इस आक्रमण में वालेस आंग्लों के हाथ क़ैद हो गया और १३०५ में लंदन के अंदर मरवा डाला गया । स्काच-जनता में वालेस का वही मान है, जो राणा प्रताप का आर्य-जनता में । अपने देश की स्वतंत्रता के लिये उसने जो कुछ भी किया, वह प्रशंसनीय है ।

एडवर्ड ने अभी स्कॉटलैंड के शासन के विषय में विचार करना प्रारंभ ही किया था कि राबर्ट ब्रूस के नेतृत्व में स्कॉटलैंड ने पुनः विद्रोह कर दिया । १३०७ में उसने ७० वर्ष की उमर में पुनः स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया, परंतु मार्ग में ही मर गया । इसकी मृत्यु से स्कॉटलैंड सदा के लिये स्वतंत्र हो गया ।

(२) एडवर्ड प्रथम और राज्य-नियम

आंग्ल-इतिहास में एडवर्ड प्रथम नियम-निर्माता और

योग्य शासक प्रसिद्ध है। राज्य-प्रबंध को उत्तम बनाने के लिये उसने समय-समय पर जो-जो नियम बनाए, वे इस प्रकार हैं—

(१) वेस्ट-मिनिस्टर का प्रथम नियम (१२७५) —इस नियम के अनुसार आंग्ल-जनता को पार्लियामेंट के सभ्यों के चुनाव के विषय में बहुत स्वतंत्रता दी गई। इसी के एक भाग में राजा को ऊन तथा अन्य व्यापारीय पदार्थों पर कर लगाने का अधिकार दिया गया।

(२) ग्लाउसेस्टर का नियम (१२७८)— इस नियम के अनुसार बरना के न्यायालयों की जाँच की गई। प्रत्येक बैरन से 'न्याय करने का अधिकार-पत्र' माँगा गया और जिनके पास अधिकार-पत्र नहीं निकले उनको न्याय करने से मना कर दिया गया। इस नियम से बैरनों की क्रोधाग्नि भभक उठी; किंतु एडवर्ड के शक्तिशाली तथा प्रबल राज्य में शांत रहने के सिवा वे कर ही क्या सकते थे? एडवर्ड ने भी इस नियम का पूरा उपयोग नहीं किया।

(३) मार्टमेन का नियम (१२७९)—यह नियम केवल इस उद्देश से पास किया गया कि चर्चों को भूमि दान में न दी जाय। इस नियम के द्वारा एडवर्ड का मुख्य उद्देश चर्च की शक्ति तथा संपत्ति को कम करना ही था। कैंटर्बरी के आर्च-बिशप ने इस नियम का पूर्ण

विरोध किया परंतु विरोध में कृतकार्य नहीं हो सका।

(४) वेस्ट-मिनिस्टर का द्वितीय नियम (१२८५) —यह नियम भूमि के दान-प्रतिदान को उचित रीति पर लाने के लिये बनाया गया था। यह इसी नियम का परिणाम है कि आंग्ल-लॉर्डों में सारी भौमिक संपत्ति सब पुत्रों में बराबर-बराबर बँटने की जगह एकमात्र बड़े पुत्र को ही मिलती है।

(५) विंचेस्टर का नियम (१२८५)— इस नियम के अनुसार सौ-सौ पुरुषों के प्रत्येक संघ पर, वैयक्तिक अपराध, षड्यंत्र, गुप्त मंत्रणा, विद्रोह आदि बुराइयों के रोकने तथा पता लगाने का उत्तरदातृत्व डाला गया। जातीय सेना के लिये सैनिक तैयार करना भी इसी संघ का काम था।

(६) वेस्ट-मिनिस्टर का तृतीय नियम (१२९०) —इस नियम के अनुसार आंग्ल-भूमि-पतियों को भूमि के क्रय-विक्रय में स्वतंत्रता दी गई। भूमि के क्रेता का राजा के साथ वही संबंध हो जाता था, जो पहले विक्रेता का राजा के साथ था। इस नियम का अंतिम प्रभाव यह हुआ कि बैरन लोगों की शक्ति कम हो गई।

इन नियमों के साथ-साथ एडवर्ड ने शासन पर भी तीक्ष्ण दृष्टि रक्खी। १२८६ से १२८९ तक वह विदेश में रहा। अतः उसके पीछे न्यायाधीशों ने बहुत उत्कोच लिया। विदेश से लौटने पर उसने न्यायाधीशों के उत्कोच का अन्वे-

पण किया और चार को छोड़कर सब पर जुर्माना किया।

यहूदी लोगों से आंग्ल-प्रजा पीड़ित थी, क्योंकि ये लोग अधिक सूद पर रुपया उधार देकर ग़रीबों को सताते थे। एडवर्ड ने इनको इँगलैंड से निकाल दिया। एडवर्ड के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१२७२	एडवर्ड प्रथम का राज्याधिरोहण
१२७७	प्रथम वेल्श-युद्ध
१२७९	मार्टमेन का नियम
१२८२–१२८३	उत्तरीय वेल्ज़ की विजय
१२८५	वेस्ट-मिनिस्टर का द्वितीय नियम और विंचेस्टर का नियम
१२९०	वेस्ट-मिनिस्टर का तृतीय नियम
१२९२	जोनबैलियल का स्कॉटलैंड का राजा बनना
१२९५	आदर्श पार्लियामेंट
१२९६	स्कॉटलैंड की प्रथम विजय
१२९८	फाल्कर्क का युद्ध
१३०३–१३०४	स्कॉटलैंड की द्वितीय विजय
१३०६	राबर्ट ब्रूस का विद्रोह
१३०७	एडवर्ड प्रथम की मृत्यु

तृतीय परिच्छेद

एडवर्ड द्वितीय (१३०७-१३२७)

एडवर्ड द्वितीय २३ वर्ष की आयु में इँगलैंड के सिंहासन पर बैठा। पिता की तरह ही आकृति में सुंदर तथा अच्छे डील-डौल का होने पर भी यह बहुत प्रमादी तथा तुच्छ प्रकृति का था। अपने कृपा-पात्रों के वशीभूत होकर ही इसने अपना सारा राज्य नष्ट कर दिया। एडवर्ड द्वितीय का इतिहास उसके मित्रों का इतिहास है। बचपन में ही इसकी मित्रता 'गैवस्टन' नाम के गास्कनी-निवासी से हो गई थी। एडवर्ड प्रथम ने इस गैवस्टन को बुरी संगति में पड़ते देखकर इँगलैंड से निकाल दिया था किंतु एडवर्ड द्वितीय ने राज्य पर बैठते ही उसे विदेश से फिर बुला लिया और उस पर अनुग्रह पर अनुग्रह करना शुरू किया, यहाँ तक कि ग्लाउसस्टर के अर्लकी बहन से उसका विवाह करके उसे कार्नवाल का अर्ल बना दिया। गैवस्टन में कटु-भाषण का सब से बड़ा दोष था। उसकी कटु वाणी तथा अभिमान से क्रुद्ध होकर आंग्ल-बैरनों ने १३०८ की पार्लियामेंट में उसको देश-निकाले का दंड दे दिया। एडवर्ड ने उसके दंड को हलका किया और उसको आयर्लैंड का शासक बनाकर भेज दिया। १३०९ में एडवर्ड ने राज्य में बहुत-से सुधार किए। इन सुधारों से प्रसन्न होकर पार्लि-

यामेंट ने 'गैवस्टन' का उसके पास रहना स्वीकृत कर लिया। १३१० में गैवस्टन से क्रुद्ध होकर बैरनों ने २१ लॉर्डों की सभा के द्वारा ही शासन करने के लिये एडवर्ड को विवश किया और गैवस्टन को जीवन-भर के लिये देश-निकाला दे दिया। १३१२ में एडवर्ड ने उसको फिर बुला लिया। यह बात सुनते ही बैरन लोगों ने सेना एकत्र कर ली और 'स्कारबरो' के दुर्ग में उसको क़ैद कर लिया, लेकिन फिर अभय-दान देकर छोड़ दिया। वार्विक का अर्ल उसका जानी दुश्मन था, अतः उसने मौक़ा पाकर उसको मरवा डाला।

(१) स्कॉटलैंड से युद्ध

स्कॉटलैंड के राजा, राबर्ट ब्रूस पर एडवर्ड प्रथम ने आक्रमण किया था, यह पहले ही लिखा जा चुका है। एडवर्ड प्रथम की मृत्यु होने पर ब्रूस की शक्ति बहुत बढ़ गई। उसने संपूर्ण स्कॉटलैंड को जीत लिया। एडवर्ड प्रथम ने स्कॉटलैंड को वशीभूत करने के लिये जो दुर्ग बनाए थे, उनको भी उसने शीघ्र ही हस्तगत कर लिया। कोई दुर्ग बचा था, तो केवल स्टर्लिंग का। बहुत बड़ी तैयारी के साथ ब्रूस ने स्टर्लिंग के दुर्ग को घेर लिया और दुर्ग-वासियों को इतना पीड़ित किया कि उन्होंने २४ जून, १३१४ को दुर्ग के फाटक खोल देने का प्रण कर लिया।

एडवर्ड द्वितीय ने स्टर्लिंग के दुर्ग को सुरक्षित करने के लिये सेना एकत्र की। अत्यंत आलस्य तथा प्रमाद के साथ वह २३ जून को स्टर्लिंग के समीप पहुँचा। ब्रूस ने उस से बड़ी चतुरता के साथ युद्ध किया और आंग्लों को पूरी तरह हराया। आंग्ल-इतिहास में यह युद्ध "बैनकबर्न (Bannockburn) का युद्ध" प्रसिद्ध है।

(२) ह्यूग डिस्पंसर्ज़ (Hugh Despensers)

बैनकबर्न के लज्जा-प्रद युद्ध के बाद एडवर्ड की शक्ति और भी कम हो गई। विंचलसी के आर्च-बिशप की मृत्यु होने पर अर्ल थामस का समुत्थान हुआ। यह बहुत स्वार्थी, लोभी तथा अयोग्य था। स्कॉच लोगों के आक्रमण से उत्तरीय आंग्ल प्रजा पीड़ित थी। पर इसने उनकी रक्षा के लिये कुछ भी यत्न नहीं किया। इन बातों के कारण अर्ल थामस प्रजा को अप्रिय हो उठा और एडवर्ड ने फिर सिर उठाया। 'गैवस्टन' की मृत्यु होने के बाद ह्यूग डिस्पंसर्ज़ ने एडवर्ड की कृपा प्राप्त करने का यत्न किया। १३२१ में पार्लियामेंट के द्वारा ह्यूग डिस्पंसर्ज़ को भी बैरन लोगों ने देश-निकाला दे दिया।

इस बात को सुनते ही एडवर्ड ने क्रुद्ध होकर सेना एकत्र की और अर्ल थामस को बरोंब्रिज (Battle of Borough bridge) के युद्ध में परास्त करके मरवा डाला और डिस्पंसर्ज़ को इँगलैंड बुला लिया। १३२६

के बाद उसी के द्वारा वह आंग्ल-प्रजा का शासन करने लगा। डिस्पंसर्ज़ अभिमानी, लोभी तथा अति स्वार्थी था। उसने मूर्खता से रानी इसावेला तथा अन्य बहुत-से व्यक्तियों का अपमान किया।

अपमान से क्रुद्ध होकर इसावेला ने फ्रांस से सहायता माँगी; पर जब वहाँ से उसको सहायता नहीं मिली, तब उसने हेनाल्ट-प्रदेश से सहायता लेने का यत्न किया। हेनाल्ट-राजकुमारी फिलिप्पा के साथ अपने पुत्र एडवर्ड तृतीय का विवाह करके इसावेला ने एक बड़ी सेना के साथ इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया।

मुख्य-मुख्य आंग्ल-बैरनों तथा लंडन-निवासियों ने एडवर्ड द्वितीय का साथ छोड़ दिया। वे रानी इसावेला के पक्ष में हो गए। डिस्पंसर्ज़ क़ैद होकर मारा गया। एडवर्ड द्वितीय भी निस्सहाय होकर इसावेला के हाथ में क़ैद हो गया। १३२७ में, वेस्ट-मिनिस्टर में, पार्लियामेंट का अधिवेशन हुआ और एडवर्ड तृतीय इँगलैंड का राजा बनाया गया। एक वर्ष के बाद ही एडवर्ड द्वितीय की किसी ने हत्या कर डाली।

एडवर्ड द्वितीय के समय की मुख्य ऐतिहासिक घटना १३२२ की पार्लियामेंट है। अर्ल थामस की मृत्यु हो जाने पर यार्क में इस पार्लियामेंट का अधिवेशन हुआ था। इसमें यह प्रस्ताव पास हुआ था कि "आगे से कोई

राज्य-नियम तब तक 'नियम' न समझा जायगा, जब तक उसमें लॉर्ड-सभा के साथ लोक-सभा की भी स्वीकृति न हो।" 'लोक-सभा' की शक्ति का स्रोत इसी पार्लियामेंट में है। इसी समय से 'लोक-सभा' की सम्मति का कुछ मूल्य हुआ। एडवर्ड द्वितीय के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१३०७	एडवर्ड द्वितीय का राज्याधिरोहण
१३१२	गैवस्टन की मृत्यु
१३१४	बैनकबर्न का युद्ध
१३२२	बरोंब्रिज का युद्ध
१३२६	इसावेला का इँगलैंड पर आक्रमण
१३२७	एडवर्ड द्वितीय सिंहासन से च्युत किया गया

चतुर्थ परिच्छेद

एडवर्ड तृतीय (१३२७–१३७७)

१४ वर्ष की अवस्था में ही एडवर्ड तृतीय इंगलैंड के राज्य पर बैठा। तीन वर्ष तक इसावेला तथा मार्टिमर उसके नाम पर शासन करते रहे। लॉर्ड-सभा का सभापति लंकास्टर का हैनरी था। मार्टिमर ने इसको राज्य-कार्य में भाग लेने का कुछ भी अवसर नहीं दिया। इसका

परिणाम यह हुआ कि यह उसके अधःपतन के उपाय सोचने लगा।

इन्हीं दिनों स्कॉटलैंड तथा फ़्रांस से इँगलैंड को बहुत अधिक कष्ट मिला। आंग्ल-राज्य की दुर्बलताओं से लाभ उठाने की इच्छा से राबर्ट ब्रूस ने इँगलैंड के उत्तरीय प्रदेशों को खूब लूटा। १३२८ में नार्थंपटन की संधि के द्वारा राबर्ट ब्रूस शांत कर दिया गया। आंग्लों के लिये यह अतिशय लज्जा-प्रद संध थी, क्योंकि इसके द्वारा राबर्ट ब्रूस न केवल स्कॉटलैंड का राजा माना गया, बल्कि एडवर्ड की छोटी बहन से उसका विवाह भी कर दिया गया। इसी प्रकार की लज्जा-प्रद संधि फ़्रांस के साथ भी (treaty of Paris. १३२७) की गई, जिसके अनुसार बोर्डो तथा बेयान के मंडलों को छोड़कर संपूर्ण आंग्ल-प्रदेश फ़्रांस को दे दिए गए।

१३२८ में चार्ल्स चतुर्थ की मृत्यु हो गई। फ़्रांस में इसके उत्तराधिकारित्व का झगड़ा खड़ा हुआ। इसा-बेला चार्ल्स की बहन थी। अतः वह एडवर्ड तृतीय को फ़्रांस का राजा बनाना चाहती थी, परंतु फ़्रांसीसियों ने ऐसा न करके 'वैलोय'-प्रदेश के शासक फिलिप को फ़्रांस का राजा बना दिया और फिलिप षष्ठ के नाम से उसको उद्घोषित किया। विषय स्पष्ट करने के लिये फ़्रांस का राज-वंश-वृक्ष नीचे दिया जाता है—

ह्यूग कैपे
९८७–९९६
|
राबर्ट
९९६–१०३१
|
हैनरी प्रथम
१०३१–१०६०
|
फिलिप प्रथम
१०६०–११०८
|
लूइस सप्तम
११३७–११८०
|
फिलिप द्वितीय अगस्टस
|
लूइस अष्टम
११२२–१२२६

लूइस नवम — अंजो का चार्ल्स (सिसली का राजा)

लूइस नवम:
फिलिप चतुर्थ १२८५–१३१४ — वैलोय का शासक, चार्ल्स
वैलोय का शासक, चार्ल्स → वैलोय का शासक, फिलिप षष्ठ १३२८–१८५०

फिलिप चतुर्थ:
लूइस दशम १३१४–१३१६ — फिलिप पंचम १३१६–१३२२ — चार्ल्स चतुर्थ १३२२–१३२८ — इसाबेला (स्त्री-एडवर्ड प्रथम इँगलैंड का राजा)
|
एडवर्ड तृतीय

इन सब ऊपर-लिखी असफलताओं का फल मार्टिमर तथा इसावेला के लिये बहुत ही बुरा हुआ। १३३० में लंकास्टर के हैनरी तथा एडवर्ड तृतीय ने एक षड्यंत्र रचा और बड़ी चतुरता से नार्टिंघम के क़िले में बहुत-से सैनिकों को पहुँचा दिया। इन्होंने मार्टिमर को शीघ्र ही पकड़कर फाँसी पर चढ़ा दिया और इसावेला को संपूर्ण राष्ट्र-कार्यों से अलग कर दिया।

एडवर्ड तृतीय एडवर्ड प्रथम के सदृश कोई महापुरुष नहीं था। आंग्ल-इतिहास में अपनी कर्मण्यता के कारण ही इसने एक उच्च स्थान प्राप्त किया है। इसके जीवन का उद्देश कीर्ति प्राप्त करना था, परंतु इसमें भी वह पूर्ण रूप से सफल नहीं हो सका।

(१) एडवर्ड तृतीय तथा विदेशी युद्ध

(क) स्कॉटलैंड तथा हेल्डन हिल का युद्ध

एडवर्ड तृतीय नार्थपटन की संधि के अत्यंत विरुद्ध था। वह इस संधि को मटियामेट करने का अवसर ही देख रहा था कि दैवी घटना से १३२९ में रॉबर्ट ब्रूस का स्वर्गवास हो गया और उसका अल्प-वयस्क पुत्र डेविड स्कॉटलैंड के राज्य पर बैठा। राजा को बालक देखकर रॉबर्ट ब्रूस के शत्रुओं ने स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया और डेविड के साथियों पर विजय प्राप्त करके एडवर्ड बैलियल को राजा बनाया। बैलियल ने एडवर्ड तृतीय

से कहा कि यदि तू मुझको स्कॉटलैंड का राजा मान ले, तो मैं तुझको 'वार्विक' का नगर दे दूँगा। एडवर्ड ने यह स्वीकार कर लिया। चार महीने के बाद ही डेविड के साथियों ने प्रबलता प्राप्त करके वैलियल को इँगलैंड भगा दिया। एडवर्ड तृतीय ने वैलियल को राजा बनाने के बहाने से स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया और १३३३ में हेल्डन हिल के युद्ध के द्वारा वार्विक नगर हस्तगत करके चुपचाप बैठ गया।

(ख) शत-वार्षिक युद्ध के कारण

एक तो स्कॉटलैंड का राजा डेविड फ़्रांस में ही रहता था और दूसरे फिलिप चतुर्थ ने गास्कनी का बहुत-सा प्रदेश फ़्रांस-राज्य में मिला लिया था, इन दो कारणों से एडवर्ड तृतीय ने फ़्रांस से जो युद्ध प्रारंभ किया, वह शत-वार्षिक युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। ऊपर-लिखे दो कारणों के अतिरिक्त इस युद्ध के अन्य भी बहुत-से गौण कारण हैं—

(१) फ़्लैंडर्ज़ में इँगलैंड तथा फ़्रांस के स्वार्थ सर्वथा भिन्न-भिन्न थे। उत्तरीय योरप में फ़्लैंडर्ज़ एक मुख्य व्यावसायिक प्रदेश था। इसके घंट, ब्रुगस तथा विप्रस आदि मुख्य-मुख्य नगरों का ग्राहक इँगलैंड ही था। इन नगरों से ऊन के कपड़े बनकर इँगलैंड में बिकने जाते थे और इँगलैंड से इनमें कच्चा ऊन आता था। इन नगरों की शक्ति बहुत अधिक थी। ये अपने काउंट तथा

फ़्रांस के राजा के नाममात्र ही अधीन थे। फ़्लीमिश नगरों के शासक ने फ़िलिप से नागरिकों की स्वेच्छा-चारिता की शिकायत की। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़्लीमिश नगरों ने एडवर्ड तृतीय से संधि कर ली और फ़्रांस के विरुद्ध युद्ध करने के लिये तुल गए।

(२) बवेरिया का सम्राट् लूइस एडवर्ड का साला था। इसकी पोप से लड़ाई थी। १३८८ में एडवर्ड तथा लूइस की संधि हो गई और दोनों ही ने फ़्रांस को नीचा दिखाने का प्रण किया।

(३) इन ऊपर-लिखे राजनैतिक कारणों के साथ शत-वार्षिक युद्ध का एक व्यापारिक कारण भी था। आंग्ल तथा फ़्रांसीसी मल्लाह १२६३ की तरह बराबर एक-दूसरे से लड़ते रहते थे। इनके झगड़े ने जातीय झगड़े का रूप धारण कर लिया था।

(ग) शत-वार्षिक युद्ध का प्रारंभ

(१) इस लंबे युद्ध का प्रारंभ १३३७ में हुआ, परंतु १३३९ तक इसने कोई बड़ा रूप धारण नहीं किया। १३३९ में एडवर्ड एक भारी सेना के साथ नीदरलैंड पहुँचा और अपने फ़्लीमिश साथियों की सेना के साथ उसने फ़्रांस के उत्तरीय प्रदेशों पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। जर्मन-सैनिकों की अकर्मण्यता तथा फ़िलिप के सम्मुख-युद्ध में न आने से इस युद्ध का कुछ भी अंतिम परिणाम न निकला।

(२) १३४० में फ़्रांस ने अपने जहाज़ी बेड़े के साथ इँगलैंड पर आक्रमण करना चाहा, परंतु स्ल्यूज़ (Sluys) के सामुद्रिक युद्ध में उसके सब जहाज़ नष्ट हो गए और वह सदा के लिये इँगलैंड पर आक्रमण करने में असमर्थ हो गया। इस सामुद्रिक विजय के बाद एडवर्ड ने अपने को समुद्राधिपति के नाम से पुकारना प्रारंभ कर दिया।

(३) १२४० से पूर्व ही एडवर्ड ने फ़्रांस के साथ एक क्षणिक संधि की, क्योंकि उसके पास युद्ध को और जारी रखने के लिये धन न था। इसी समय मांट-फ़ोर्ट तथा वैलाय के चार्ल्स में ब्रिटनी के उत्तराधिकारित्व का झगड़ा उठ खड़ा हुआ। फिलिप चार्ल्स के पक्ष में था। अतः एडवर्ड ने मांटफ़ोर्ट का पक्ष लिया और १३४५ में फिर फ़्रांस के साथ युद्ध प्रारंभ कर दिया।

(४) १३४६ में युद्ध का कुछ रूप प्रकट हुआ। एडवर्ड अपने पुत्र ब्लैकप्रिंस को साथ लेकर नार्मंडी पहुँचा। नार्मंडी को भयंकर ढंग से लूटकर एडवर्ड की सेनाएँ सीन नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ती हुईं पैरिस तक जा पहुँचीं। राजधानी की रक्षा के लिये फिलिप ने एक बड़ी भारी सेना एकत्र की और एडवर्ड से युद्ध करने को तैयार हुआ। सम्मुख-युद्ध में प्रवृत्त होना अनुचित समझकर एडवर्ड ने पीछे हटना प्रारंभ किया। फ़्रांसी-सियों ने उसका भयंकर रूप से पीछा किया और उसको

क्रेसी नगर के निकट सम्मुख-युद्ध के लिये विवश किया। इस युद्ध में फ़्रांसीसी सेनापतियों की शीघ्रता तथा मूर्खता से एडवर्ड विजयी रहा। शीघ्र ही इँगलैंड न लौटकर एडवर्ड ने 'कैले' के प्रसिद्ध व्यापारिक नगर पर घेरा डाला। एक वर्ष के घेरे के बाद कैले-निवासियों ने दुर्भिक्ष से पीड़ित होकर फाटक खोल दिए और एडवर्ड की अधीनता स्वीकार कर ली।

इन्हीं दिनों लंकास्टर के हैनरी ने गास्कनी में विजय प्राप्त की और स्कॉटलैंड का राजा डेविड आंग्ल-प्रदेशों पर आक्रमण करता हुआ नैविलेजक्रास के प्रसिद्ध युद्ध में आंग्लों के हाथ क़ैद हो गया। १३४७ में 'लारोच डिरेन' के युद्ध में वैलाय का 'चार्ल्स' भी क़ैद होकर एडवर्ड के सामने उपस्थित किया गया।

१३४८ से १३४९ तक इँगलैंड में प्लेग का कोप रहा। इससे इँगलैंड का संपूर्ण इतिहास ही बदल गया। किंवदंती है कि इस प्लेग से $\frac{1}{3}$ आंग्ल मृत्यु को प्राप्त हुए। प्लेग की विपत्ति देखते हुए भी एडवर्ड की युद्ध-पिपासा सर्वथा नहीं बुझी।

(९) १३५५ में उसने ब्लैकप्रिंस को गास्कनी भेजा। बड़ी चतुरता से गैरोन-घाटी को जीतकर वह मध्यसागर के तट तक पहुँच गया।

ब्लैकप्रिंस को इँगलैंड लौट जाने से रोकने के लिये फ्रांस

के राजा ने उस पर पीछे से आक्रमण किया। एडवर्ड भी ब्लैकप्रिंस के साथ था। यदि ये दोनों ही फ्रांस के हाथ में पड़ जाते, तो आंग्लों को बहुत हानि पहुँचती। एडवर्ड ने बड़ी चतुरता से एक पर्वत पर अपनी सेना को स्थापित किया और फ्रांसीसियों से युद्ध करने के लिये तैयार हुआ। युद्ध शुरू होते ही उसने सेना के एक भाग को एक लंबे तथा गुप्त मार्ग के द्वारा फ्रांसीसियों के पीछे पहुँच जाने की आज्ञा दी। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांसीसी सेना चारों ओर से घिरकर परास्त हो गई और फ्रांस का राजा 'जोन' स्वयं आंग्लों के हाथ क़ैद हो गया।

(६) इन ऊपर-लिखी विजयों से प्रसन्न होकर एडवर्ड इँगलैंड पहुँचा और एक बड़ी सेना के साथ फ्रांस-विजय के लिये फिर प्रस्तुत हुआ। इस बार भी विजय-लक्ष्मी उसके साथ ही रही और वह पैरिस तक बिना किसी प्रकार की रुकावट के पहुँच गया। १३६० की मई में फ्रांसीसियों ने एडवर्ड से संधि के वास्ते बातचीत शुरू की और ऑक्टोबर तक एक संधि कर भी ली, जो आंग्ल-इतिहास में 'कैले की संधि' के नाम से प्रसिद्ध है। इस संधि के अनुसार—

१—एडवर्ड ने फ्रांस-राज्य पर अपना स्वत्व छोड़ दिया।

२—राजा जोन क़ैदख़ाने से मुक्त कर दिया गया।

३—एडवर्ड को निम्न-लिखित फ्रांसीसी-प्रदेश मिले—

(क) कैले

(ख) पॉथियो

(ग) संपूर्ण एक्विटेन

(घ) पोईशियो

(ङ) लिमाउसिन

४—एडवर्ड को बहुत-सा रुपया देना भी फ्रांस ने स्वीकार किया

इस उत्तम संधि को सुनकर आंग्ल-जनता अत्यंत प्रसन्न हुई। राजा जोन ने फ्रांस पहुँचते ही अपनी प्रजा को अति दीन अवस्था में देखा। अतः उसने उन पर कर लगाना उचित नहीं समझा। परंतु कर लगाए बिना आंग्लों को वह उतना बेशुमार रुपया कैसे दे सकता था, जितना उसने कैले की संधि में आंग्लों को देना स्वीकार किया था? सत्य-परायण जोन ने प्रण-पालन तथा संधि की शर्तों को पूरा करने में अपने को असमर्थ देखकर इँगलैंड को प्रस्थान किया और वह आंग्लों की क़ैद में ही परलोकवासी हुआ।

(७) कैस्टाइल-प्रदेश का राजा क्रूरपीटर था। प्रजा ने उसके अत्याचारों से पीड़ित होकर विद्रोह किया और उसको राज्य से च्युत करके उसके भाई हैनरी को राज्य

पर बिठाया। हैनरी अपनी अस्थिरता तथा निःशक्तता को पूर्णरूप से समझता था, अतः उसने चार्ल्स पंचम से सहायता माँगी। इधर पीटर ने ब्लैकप्रिंस का सहारा लिया। १३६७ की ३ एप्रिल को 'नेजरा' नाम के ग्राम में हैनरी तथा पीटर में युद्ध हुआ। ब्लैकप्रिंस की सहायता से पीटर ने विजय प्राप्त की और कैस्टाइल के सिंहासन पर बलात् आरूढ़ हुआ। १३६८ में हैनरी ने स्पेन से लौटकर पीटर से फिर युद्ध किया और पीटर को युद्ध में ही मारकर कैस्टाइल का राजा बन गया।

(८) क्रूरपीटर को सहायता देने के बाद ब्लैकप्रिंस का भाग्य फिरा। एक तो उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया और द्वितीय उसकी प्रजा भी उससे 'अधिक कर' लगाने के कारण रुष्ट हो गई। एक्विटेन की प्रजा ने अधिक कर-विषयक शिकायत फ्रांस के राजा के पास की। इसका परिणाम यह हुआ कि उसको फ्रांसीसी राज-दर्बार में उपस्थित होना पड़ा।

रोगी होने पर भी वीरता उसमें पूर्ववत् ही थी। जब चार्ल्स पंचम ने प्रजा की शिकायतों का उससे उत्तर माँगा, तो उसने उसका उत्तर तलवार तथा ६० हज़ार सैनिकों के द्वारा देने का प्रण किया। एडवर्ड ने अपने को फ्रांस का राजा उद्घोषित किया और फ्रांस तथा इँगलैंड में फिर युद्ध प्रारंभ हो गया।

इस बार फ़्रांस ने आंग्लों से सम्मुख युद्ध न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। १३७३ में ब्लैकप्रिंस के भाई, 'जोन' ने फ़्रांस पर आक्रमण किया और दूर तक फ़्रांस-राज्य में घुस गया। परंतु जब उससे किसी ने भी युद्ध न किया, तो वह इँगलैंड की ओर लौटा। मार्ग में उसके सैनिक भूख तथा ठंड से बहुत ही पीड़ित हुए। बहुत-से काल के ग्रास भी हो गए। कैस्टाइल की सहायता से फ़्रांसीसियों ने आंग्ल-सामुद्रिक सेना को परास्त किया और आंग्लों का फ़्रांस पर आक्रमण करना सर्वदा के लिये रोक दिया। कुछ वर्षों के निरंतर युद्ध के अनंतर फ़्रांसीसियों ने अपने संपूर्ण प्रदेश आंग्लों से छीन लिए। १३६० के बाद आंग्लों के पास जो फ़्रांसीसी नगर बचे, वे निम्न-लिखित थे—

(क) कैले (ग) ब्रेस्ट

(ख) कर्वर्ग (घ) वेयान

(ङ) वोर्डो

(२) एडवर्ड तृतीय तथा चर्च

शत-वार्षिक युद्ध का प्रारंभ होने पर आंग्लों तथा फ़्रांसीसियों की पारस्परिक घृणा ने भयंकर रूप धारण कर लिया। दोनों ही जातियाँ एक-दूसरे की सामाजिक अवस्था को घृणा से देखने लगीं। पोप के फ़्रांसीसियों का साथ देने से आंग्लों में पोप के प्रति भी अश्रद्धा हो गई।

एडवर्ड तृतीय-जैसे शक्तिशाली राजा को पोप की शक्ति पहले से ही पसंद न थी । १३५१ में एक नियम पास किया गया, जिसके अनुसार आंग्लों ने पोप की शक्ति से अपने को छुड़ाने का यत्न किया । १३५३ में 'प्रिमूनियर का नियम' नामक राज्य-नियम बनाया गया । इसके द्वारा स्वजातीय अभियोगों तथा प्रार्थनाओं को विदेश में ले जाना निषिद्ध ठहराया गया । इस नियम का मुख्य उद्देश यही था कि आंग्लों के लिये पोप मुख्य न्यायाधीश न रहे । इसके साथ ही एडवर्ड ने पोप को 'अधीनता-कर' देना भी बंद कर दिया, जो वह 'जोन लैकूलैंड' के समय से ले रहा था । १३६६ में पार्लियामेंट ने यह नियम पास किया कि जनता की स्वीकृति के बिना जोन या अन्य कोई आंग्ल-राजा इँगलैंड को किसी दूसरे के अधीन नहीं कर सकता ।

इन्हीं दिनों ऑक्सफ़ोर्ड के एक महोपाध्याय 'जोन वाइक्लिफ़' ने एक नए ही सिद्धांत का आविष्कार किया और पोप तथा पादरियों की संपत्ति तथा राजनैतिक शक्ति के विरुद्ध लेख और व्याख्यान देना प्रारंभ किया । इँगलैंड में पोप की शक्ति के शीघ्र ही नष्ट हो जाने का एक यह भी मुख्य कारण था ।

(२) इँगलैंड की सामाजिक तथा राजनैतिक अवस्था

१३४८ तथा १३४९ में इँगलैंड में जो प्लेग का कोप

हुआ था, उसका उल्लेख किया जा चुका है। १३६२ तथा १३६९ में प्लेग ने फिर ज़ोर पकड़ा और बहुत-से आंग्ल काल के गाल में पहुँच गए। मृत्यु की अधिकता का इसीसे अनुमान हो सकता है कि इँगलैंड में मज़दूर ढूँढ़े नहीं मिलते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि हर तरह की मज़दूरी की दर बढ़ गई और पदार्थों का मूल्य भी चढ़ गया।

मज़दूरी का बढ़ना लॉर्डों को अभीष्ट न था। अतः उन्होंने १३५१ की पार्लियामेंट में 'श्रम-नियम' पास कराया और 'भृति-वृद्धि' को नियम-विरुद्ध ठहराकर मज़-दूरों को पहले की मज़दूरी पर ही काम करने के लिये बाध्य किया। इससे संपूर्ण आंग्ल-कृषकों तथा श्रमियों में बहुत ही असंतोष फैला। इस असंतोष का ही यह परिणाम हुआ कि १३८१ में 'कृषक-विद्रोह' हो गया। एडवर्ड के समय में पार्लियामेंट के बहुत ज़्यादा अधिवेशन हुए। पार्लियामेंट ने जो अधिकार माँगे, वे उसको एडवर्ड ने इस शर्त पर दे दिए कि वह उसको फ़ांस में युद्ध करने के लिये रुपए देती रहे। फ़्रांसीसी युद्ध की समाप्ति में जोन और ब्लैकप्रिंस में परस्पर झगड़ा हो गया और वह पार्लियामेंट तक पहुँचा। जोन ने लॉर्डों का और ब्लैकप्रिंस ने साधारण जनता का पक्ष लिया। १३७६ में जो पार्लियामेंट जुड़ी, वह गुड पार्लियामेंट के नाम से

पुकारी जाती है। गुड पार्लियामेंट में ब्लैकप्रिंस का नेतृत्व प्राप्त करके आंग्ल-प्रजा ने बहुत ही अधिक शक्ति प्राप्त की और राजा के बहुत-से दर्बारियों पर लॉर्ड-सभा में अभियोग चलाया तथा उनको यथोचित दंड भी दिलवाया। इस प्रकार के उत्तम कार्य करते-करते ब्लैकप्रिंस की मृत्यु हो गई और राज-पक्षपातियों ने गुड पार्लियामेंट के संपूर्ण नियमों को फिर बदल दिया।

जोन वाइक्लिफ़ के विचारों से पादरी-मंडल अत्यंत रुष्ट था। उसने वाइक्लिफ़ पर अभियोग चलाया, जिसका निर्णय सेंटपाल के गिरजाघर में किया जाना निश्चित हुआ। वाइक्लिफ़ के पक्षपाती बहुत-से राज-दर्बारी थे। अतः पादरी-मंडल उसको अधिक हानि पहुँचाने में सर्वथा असमर्थ था। सेंटपाल के गिरजाघर में वाइक्लिफ़ तथा पादरियों में भयंकर कलह उत्पन्न हो गई। यह कलह अभी समाप्त ही हुई थी कि १३७७ की २१ जून को एडवर्ड तृतीय परलोक सिधार गया। मृत्यु के समय उसके सब दर्बारियों ने उसका साथ छोड़ दिया था और एलिक्पैरर्क्ज़ ने तो उसके हाथ की अँगूठी ही चुरा ली थी। एडवर्ड तृतीय के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१३२७	एडवर्ड तृतीय का राज्याधिरोहण

१३२८	नार्थंपटन की संधि
१३३०	मार्टिमर का अधःपतन
१३३३	हेल्डन हिल का युद्ध
१३३७	शत-वार्षिक युद्ध का प्रारंभ
१३४०	स्ल्यूज़ का युद्ध
१३४६	क्रेसी तथा नेविलक्रास का युद्ध
१३४८	प्लेग
१३५३	प्रिमूनियर का नियम
१३६०	कैले की संधि
१३६७	नैजरा का युद्ध
१३६९	शत-वार्षिक युद्ध का पुनः प्रारंभ
१३७६	गुड पार्लियामेंट
१३७७	एडवर्ड तृतीय की मृत्यु

पंचम परिच्छेद

रिचर्ड द्वितीय (१३७७–१३९९)

ब्लैकप्रिंस की मृत्यु हो चुकी थी। अतः एडवर्ड तृतीय के बाद उसका पुत्र रिचर्ड राज-सिंहासन पर बैठा। रिचर्ड द्वितीय की आयु केवल १० ही वर्ष की थी। इसलिये उसके संरक्षण के लिये जोन नियत किया गया। जॉन ने जनता पर बहुत अधिक कर लगाए, परंतु

उन करों के द्वारा जनता को जो शांति तथा सुख मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। नोबल्ज़ परस्पर लड़ते रहते थे और उन्हें देश की रक्षा का कुछ भी ध्यान नहीं था। फ़्रांसीसियों ने समुद्र-तटस्थ आंग्ल-जनता को भयंकररूप से लूटना शुरू किया और यदि उनके राजा चार्ल्स पंचम की मृत्यु न हो जाती, तो यह उपद्रव बहुत वर्षों तक जारी रहता। चार्ल्स का पुत्र रिचर्ड के ही सदृश अल्प-वयस्क था। अतः फ़्रांस में भी इँगलैंड के ही सदृश अराजकता फैल गई। फ़्रांसीसी इँगलैंड को सताने में सर्वथा असमर्थ हो गए।

(१) कृषक-विद्रोह (१३८१)

रिचर्ड के राज्यके चार वर्ष बाद ही इँगलैंड में श्रमियो, शिल्पियों तथा कृषकों का असंतोष बेहद बढ़ गया। इसका परिणाम यह हुआ कि १३८३ में कृषक-विद्रोह उठ खड़ा हुआ। कृषक-विद्रोह के बहुत-से कारण समझे जाते हैं, जिनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं—

(क) प्लेग से बहुत-से आंग्ल काल के ग्रास हो गए थे। अतः श्रमियों की संख्या न्यून हो गई थी। इससे भृति तथा मूल्य का बढ़ना स्वाभाविक ही था। राज्य में लॉर्डों की शक्ति होने के कारण श्रमियों का कुछ भी ध्यान न करते हुए 'श्रम-नियम' पास कर दिया गया था।

(ख) 'श्रम-नियम' की कठोरताओं से क्रुद्ध होकर

आंग्ल-श्रमियों ने इस नियम को हटाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। स्वतंत्र पुरुषों की अपेक्षा अर्ध-दासों में असंतोष बहुत अधिक था। स्वतंत्र श्रमियों के न मिलने के कारण भिन्न-भिन्न लॉर्डों ने अर्ध-दासों पर ही अत्याचार करना प्रारंभ किया और उनसे अपेक्षा से अधिक काम लेने लगे।

(ग) अर्ध-दास अपने अन्य भाइयों को अधिक भृति के द्वारा बहुत-सा रुपया कमाते देखकर लॉर्डों की सेवा से बचना चाहते थे। परंतु लॉर्डों को यह कब सह्य हो सकता था? उन्होंने राज्य-नियमों के द्वारा उनको अपने कार्य के लिये बाध्य किया।

(घ) इन्हीं दिनों वाइक्लिफ़ के अनुयायी कुल इँगलैंड में भ्रमण कर रहे थे और आंग्ल-जनता को बड़े-बड़े भूमि-पतियों तथा पादरियों के विरुद्ध उठाने का यत्न कर रहे थे। लो लॉर्डों (वाइक्लिफ़ के अनुयायियों का नाम है) का कथन था कि 'जब आदम फिरता था और ईव चरख़ा कातती थी, तब जेंटिलमैन था ही कौन ? अतः इन भूमि-पतियों तथा पादरियों की संपत्ति तथा राजनैतिक शक्ति ईश्वरीय इच्छा के विरुद्ध है।'

इन कारणों से इँगलैंड में कृषक-विद्रोह हो गया।

जोन के कुप्रबंध तथा वैयक्तिक कर (Poll-tax) की अधिकता से कैंट के उद्दंड तथा स्वेच्छाचारी पुरुषों ने

'वाटटेलर' के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया । विद्रोहियों ने लंडन की ओर प्रस्थान किया । इसी समय इँगलैंड के अन्य प्रदेशों में भी विद्रोह हो गया और वहाँ के विद्रोहियों ने भी लंडन की ओर ही चलना प्रारंभ किया । इन विद्रोहियों ने शीघ्र ही राजधानी अपने हस्तगत कर ली और राजा के बहुत-से मंत्रियों की हत्या कर डाली । यही नहीं, उन्होंने जोन के महल में भी आग लगा दी और कहा कि हम नहीं जानते कि कौन 'जोन' होता है ।

इस भयंकर समय में रिचर्ड १६ वर्ष का ही था । इसने अपूर्व साहस और धैर्य के साथ 'माइल-एंड' पर विद्रोहियों से मिलने का निश्चय किया । विद्रोहियों से मिलते ही इसने उनको 'स्वतंत्रता-पत्र' देने का प्रण किया और उनको अपने-अपने घर लौट जाने को कहा । परंतु कैंटिश लोगों ने अपनी शरारतें नहीं छोड़ीं । अतः रिचर्ड अपने मंत्रि-दल के साथ पुनः 'टेलर' से मिलने गया । टेलर ने राजा के साथ बहुत ही योग्यता से बातचीत की और उससे बहुत-सी बातें माँगीं, जो राजा ने स्वीकृत कर लीं । इसी समय एक राज-दर्बारी कह उठा कि टेलर तो कैंट में एक प्रसिद्ध चोर था और अब इतनी बढ़-चढ़कर बातें करने लगा है । यह सुनते ही टेलर ख़ंजर लेकर उस राज-दर्बारी पर टूट पड़ा, परंतु स्वयं ही

मारा गया। यह देखकर कैंटिश कृषकों ने राजा पर बाण तानने को हाथ उठाया ही था कि रिचर्ड उनके बीच में जा कूदा और कहने लगा—"मैं तुम्हारा नेता हूँ। जो चाहते हो, माँगो। मैं तुम्हें देने को तैयार हूँ।" इतने ही में विद्रोहियों को राज-सैनिकों ने घेर लिया और उनको हथियार रख देने को विवश किया। इसके अनंतर विद्रोहियों पर भीषण अत्याचार किए गए। उनको जो स्वतंत्रता-पत्र राजा ने दिया था, वह भी 'बलात् लिया गया है' कहकर फाड़ डाला गया।

(२) स्वेच्छाचारी बनने के लिये राजा का यत्न

रिचर्ड द्वितीय स्वेच्छाचारी, बदला लेनेवाला तथा जल्द-बाज़ था। नोबल्ज़ और लॉर्डों पर इसको विश्वास नहीं था, अतः इसने ऑक्सफ़ोर्ड तथा सफ़्फ़ोक के अर्लों के हाथ में संपूर्ण राज्य-शक्ति दे दी। १३८६ में पार्लियामेंट ने दोनों 'अर्लों' पर अभियोग चलाया और सफ़्फ़ोक को क़ैद कर लिया। कुछ ही समय बाद रिचर्ड ने सफ़्फ़ोक को बंदी-गृह से मुक्त कर दिया और न्यायाधीशों से कहा—"बतलाओ, पार्लियामेंट द्वारा नियत की गई ११ मनुष्यों की उप-समिति नियमानुसार है या नहीं?" न्यायाधीशों ने उप-समिति को नियम-विरुद्ध ठहराया। इस पर आयर्लैंड के ड्यूक ने सेना एकत्र की और बैरन लोगों की सहायता से उसने 'रैड्काट ब्रिज' पर

रिचर्ड को पराजित किया । इस विजय के अनंतर १३८८ में जो पार्लियामेंट बैठी, उसको 'निर्दय पार्लियामेंट' (Merciless Parliament) के नाम से पुकारते हैं, क्योंकि निर्दय पार्लियामेंट में राजा के मित्रों के प्रति 'देश-द्रोह' का अभियोग चलाया गया । ५ लॉर्डों की उप-समिति में अभियुक्तों का निर्णय हुआ और उनको प्राण-दंड दिया गया । निर्दय पार्लियामेंट के इन क्रूर कर्मों को रिचर्ड हृदय थामकर देखता रहा और उसने उन पाँचों लॉर्डों से बदला लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया ।

१३८९ में उसने लॉर्डों की प्रबंधकारिणी उप-समिति को सदा के लिये बर्ख़ास्त कर दिया और ग्लाउसस्टर के अर्ल से कहा कि भविष्य में मैं अपनी प्रजा का स्वयं ही शासन करूँगा, क्योंकि अब मेरी आयु काफ़ी अधिक हो गई है । इस बार रिचर्ड ने बड़ी चतुरता और धीरज से काम लिया और अपने बहिष्कृत मित्रों को इँगलैंड नहीं बुलाया । उसने विंचस्टर के बिशप विलियम (William of Wykeham) को तथा अन्य बहुत-से सुयोग्य व्यक्तियों को राज्य के उच्च-उच्च पद पर नियत किया । इसी समय 'जोन' (John of Gaunor) स्पेन से लौट आया और उसने रिचर्ड को उचित सलाह देनी प्रारंभ की । प्रथम स्त्री के मर जाने पर १३९६ में रिचर्ड ने फ़्रांसीसियों के राजा चार्ल्स षष्ठ की कन्या

से विवाह किया और फ़्रांस से २८ वर्ष के लिये संधि कर ली।

१३९७ में रिचर्ड ने उन लॉर्डों से बदला लेने का उपाय सोचा, जिन्होंने उसको 'निर्दय पार्लियामेंट' में अपमानित किया था। 'ग्लाउसस्टर का अर्ल राजा के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा है', इस किंवदंती के फैलते ही रिचर्ड ने बड़ी चालाकी से निम्न-लिखित व्यक्तियों को क़ैद कर लिया—

(१) ग्लाउसस्टर का अर्ल
(२) वार्विक का अर्ल
(३) अरंडेल

१३९७ की सितंबर में पार्लियामेंट का अधिवेशन हुआ और इन लॉर्डों पर राजा के मित्रों ने अभियोग चलाया। इसका परिणाम यह हुआ कि उनको मृत्यु-दंड मिला और उनकी संपत्ति राजा के मित्रों में बाँट दी गई। राजा को जीवन-भर के लिये पेंशन के तौर पर कुछ रुपया देना पार्लियामेंट ने पास कर दिया। कुछ दिनों बाद हर्फ़ोर्ड तथा नार्फ़ाक् के अर्लों का परस्पर झगड़ा हो गया और रिचर्ड ने दोनों को ही देश-निकाला दे दिया। इस प्रकार सब लॉर्डों की शक्ति को चकना-चूर करके उसने स्वेच्छाचार-पूर्ण राज्य करना प्रारंभ किया।

१३९९ में अपनी शक्ति को और अपने को सर्वथा स्थिर

समझकर वह आयलैंड गया। इसी समय हर्फ़ोर्ड के अर्ल हैनरी ने एक छोटी-सी सेना के साथ इँगलैंड में प्रवेश किया। राजा के स्वेच्छाचारित्व से पीड़ित सब उत्तरीय लॉर्डों ने उसका साथ दिया। यार्क के ड्यूक तथा नार्थंबलैंड के हैनरी पर्सी ने भी रिचर्ड का साथ छोड़ दिया। इस विद्रोही दल ने शीघ्र ही ब्रिस्टल को अपने हस्तगत कर लिया। रिचर्ड ने आयलैंड से लौटकर विद्रोहियों को दमन करने के लिये सेना एकत्र करने का यत्न किया, परंतु वह कृतकार्य नहीं हो सका। लाचार होकर उसने अपने आपको विद्रोहियों के सुपुर्द कर दिया। वह लंडन तक क़ैदी बनाकर लाया गया। पार्लियामेंट ने उसे राज्य-च्युत कर दिया तथा लंकास्टर के ड्यूक हैनरी को इँगलैंड का राजा बनाया। रिचर्ड द्वितीय के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१३७७	रिचर्ड द्वितीय का राज्याधिरोहण
१३८१	कृषक-विद्रोह
१३८८	निर्दय पार्लियामेंट
१३९६	फ़्रांस के साथ संधि
१३९७	रिचर्ड का लॉर्डों से बदला लेना
१३९९	रिचर्ड द्वितीय का राज्य-च्युत किया जाना

षष्ठ परिच्छेद

तेरहवीं और चौदहवीं सदी में ब्रिटन की सभ्यता

(१) राजनैतिक अवस्था

(क) राजा की शक्ति

तेरहवीं सदी के प्रारंभ में आंग्ल-राजाओं की शक्ति अपरिमित थी। जोन के अधःपतन के अनंतर आंग्लों की राजनैतिक अवस्था में एक प्रबल आक्रांति उपस्थित हो जाती है। सारी चौदहवीं सदी में एडवर्ड प्रथम तथा हैनरी तृतीय की शासन-पद्धति-संबंधी धाराओं के अनुसार राजों को शासन करने के लिये बाध्य किया गया। इस परीक्षण का परिणाम यह हुआ कि इँगलैंड परिमित एक-सत्ताक राष्ट्र में परिवर्तित हो गया। शासन-पद्धति में जाति के सम्मिलित होने से आंग्लों में जातीयता का भी प्रादुर्भाव हुआ। धर्म, साहित्य तथा व्यापार-व्यवसाय में भी क्रमशः उन्नति होने लगी।

इँगलैंड की उन्नति क्रमशः हुई है। यही कारण है कि चौदहवीं सदी तक आंग्ल-राजा से नियम-निर्माण-संबंधी अधिकार ही आंग्ल-प्रजा ने छीने थे। शासन के कार्य में राजा स्वतंत्र था। मंत्रियों का चुनना उसी के अधिकार में था। दुर्बल राजों के समय में लॉर्डों ने शासन का अधिकार भी राजा से छीना और १५ लॉर्डों की उप-

समिति (१२५८) के द्वारा शासन-कार्य चलाने का प्रयत्न किया, परंतु स्वार्थ, वैमनस्य तथा पारस्परिक कलह के कारण वे कृतकार्य नहीं हो सके। एडवर्ड प्रथम के सुधारों के अनंतर आंग्ल-प्रजा ने लॉर्डों की शक्ति लेनी शुरू की और उसका वास्तविक रूप चिर-काल तक प्रत्यक्ष नहीं हुआ।

(ख) आंग्ल-प्रजा की शक्ति

हैनरी तृतीय के समय में भूमि-पतियों की महा-समिति का नाम ही पार्लियामेंट था। सीमन के अनंतर इस महासमिति ने कुछ शक्ति प्राप्त की और इसमें भूमि-पतियों के साथ-साथ भिन्न-भिन्न मंडलों तथा नगरों के प्रतिनिधि भी उपस्थित होने लगे। एडवर्ड प्रथम के राज्य में पार्लियामेंट की शक्ति पहले की अपेक्षा बढ़ गई। पार्लियामेंट ने लॉर्ड, पादरी तथा साधारण जनों के प्रतिनिधियों की महासमिति का रूप ग्रहण किया और १३२२ के अनंतर इसने राजा के संपूर्ण नियामक अधि-कारों को अपने हाथ में ले लिया। एडवर्ड तृतीय के बाद, व्यय अधिक होने के कारण, छोटे-छोटे पादरियों तथा साधारण जनों ने अपने प्रतिनिधि पार्लियामेंट में भेजने बंद कर दिए। उनका स्थान धीरे-धीरे बड़े-बड़े पादरियों ने ले लिया और इस प्रकार लॉर्ड-सभा को जन्म दिया।

(ग) लॉर्ड-सभा

लॉर्ड-सभा के सभ्य मुख्यतः पादरी तथा बड़े-बड़े भूमि-पति ही थे। भूमि-पतियों की संख्या कम होने के कारण मध्य-काल तक लॉर्ड-सभा में पादरियों की संख्या ही अधिक थी। एडवर्ड तृतीय ने ड्यूक, मार्क्विस तथा विस्काउंट के पदों को बढ़ाकर भूमि-पतियों की संख्या में कुछ-कुछ वृद्धि की; परंतु इससे कोई विशेष अंतर नहीं हुआ।

(घ) लोक-सभा

लोक-सभा में निम्न-लिखित स्थानों से प्रतिनिधि आते थे—

(१) प्रत्येक मंडल की शासक सभा के द्वारा चुने जाकर दो नाइट्स

(२) प्रत्येक नगर के दो प्रतिनिधि

चैशायर तथा डर्हम के सीमा-प्रांतीय मंडलों का कोई भी प्रतिनिधि लोक-सभा में नहीं आता था। वेल्ज़ का भी कोई प्रतिनिधि लोक-सभा में नहीं था।

लोक-सभा में किस-किस स्थान से प्रतिनिधि आवें, इसका निर्णय राजा ही करता था। रेल न होने के कारण लोक-सभा के सभ्यों का अधिक व्यय होता था। इस व्यय से बचने के लिये बहुत-से नगर प्रतिनिधियों को नहीं भेजते थे। लोक-सभा के सभ्य अपनी शक्ति को बढ़ाने के उद्देश से बहुत-से ऐसे स्थानों को भी सभ्य भेजने

का अधिकार दे देते थे, जहाँ पर कि कोई बड़ी बस्ती नहीं भी होती थी। लोक-सभा के नेता प्रायः नाइट्स ही होते थे, क्योंकि ये धनाढ्य होते थे। अतः ये अपना समय राजनैतिक विषयों में स्वेच्छापूर्वक व्यय करते थे। मध्य-काल तक लोक-सभा की अपेक्षा विशेषतः लॉर्ड-सभा ही राजनैतिक सुधार करती थी।

(ङ) पार्लियामेंट की शक्ति

पार्लियामेंट की शक्ति काफ़ी अधिक थी। पार्लियामेंट के सभ्यों की प्रार्थना पर ही राजा कोई नया नियम बना सकता था। पार्लियामेंट की स्वीकृति के बिना कोई भी प्रस्ताव नियम नहीं बन सकता था। लोक-सभा प्रायः आर्थिक विषयों में ही हस्तक्षेप करती थी। इसका कारण यह था कि राज्य-कोष में धन प्रायः जनता की ओर से ही आता था। १४ वीं सदी के आरंभ से ही पार्लियामेंट की स्वीकृति के बिना राजा जनता पर किसी प्रकार का भी कर नहीं लगा सकता था। लोकसभा के सभ्य राजा के किसी भी मित्र पर अभियोग चला सकते थे। उनके अभियोगों का निर्णय करने के लिये लॉर्ड-सभा मुख्य न्यायालय का रूप धारण कर लेती थी। इस दशा में लॉर्ड-सभा का निर्णय अंतिम निर्णय होता था, जिसके सम्मुख राजा तक को सिर झुकाना पड़ता था।

(च) प्रिवी-काउंसिल

प्रिवी-काउंसिल को हम राजा की 'मित्र-सभा' का भी नाम दे सकते हैं। राजा के दर्बारी, बड़े-बड़े लार्ड्ज़ तथा बड़े-बड़े बिशप ही मुख्यतः इसके सभ्य होते थे। इसकी सलाह से ही राजा संपूर्ण शासन-कार्य करता था।

अक्सर प्रिवी-काउंसिल स्वेच्छाचारी हो जाती थी और पार्लियामेंट के अधिकारों का भी पूरी तरह अपलाप कर देती थी। नियम-निर्माण, न्याय तथा शासन-संबंधी तीनों ही शक्तियों को यह समय-समय पर काम में लाती थी। दुर्बल राजा के समय में इस सभा पर कलह के पर्वत आ टूटते थे। गुलाब-युद्ध में प्रिवी-काउंसिल का जो कुछ भाग होगा, उसका उल्लेख वहाँ पर ही किया जायगा।

(छ) न्यायालय

एडवर्ड प्रथम के समय से ही आंग्ल-न्यायालयों ने नवीन रूप धारण किया। उस समय इँगलैंड में तीन प्रकार के न्यायालय प्रचलित थे—

(१) राजकीय न्यायालय (King's Bench)

(२) आर्थिक न्यायालय (Court of Exchequer)

(३) साधारण न्यायालय (Court of Common Pleas)

धन-संबंधी अभियोगों का निर्णय आर्थिक न्यायालय में ही होता था। राजकीय न्यायालय ही इँगलैंड में सब

से मुख्य न्यायालय था। राजनैतिक अभियोगों का निर्णय एक मात्र यही न्यायालय करता था। समयांतर में आर्थिक न्यायालय ने 'संतुलन न्यायालय' का रूप धारण कर लिया। नियमों की व्याख्या तथा भाव-संबंधी संपूर्ण विवादों का निर्णय इसी न्यायालय में किया जाने लगा। चौदहवीं सदी में वकीलों के पेशे में लोगों को बहुत अधिक आमदनी होती थी। लंडन में बहुत-से नए-नए विद्यालय खोले गए, जिनमें एकमात्र आंग्ल-राज्य-नियम ही पढ़ाए जाते थे। ऊपर-लिखे तीन न्यायालयों के अतिरिक्त चर्च के निजी न्यायालय भी थे, जिनकी शक्ति भी थोड़ी न थी।

(२) धार्मिक अवस्था

१२ वीं सदी के विचारों का परिणाम १३ वीं सदी में फलीभूत हुआ। पोप तथा चर्च की शक्ति अपरिमित हो गई। संपूर्ण ईसाई-संसार का धार्मिक राजा पोप समझा जाने लगा। राजनैतिक विषयों में पोप के निरंतर हस्ता-क्षेप से बहुत-से देश असंतुष्ट भी हुए अवश्य, परंतु उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का किसी को भी साहस न हुआ। परंतु जब पोप तथा चर्च की बुराइयाँ दिन-पर-दिन भयंकर रूप धारण करने लगीं, तो असीसी-निवासी संत 'फ़्रांसिस' ने एक नवीन संप्रदाय प्रचलित किया, जो पोप तथा चर्च की शक्ति तथा समृद्धि के सर्वथा विरुद्ध था। संत फ़्रांसिस ने भगवान् बुद्ध के सदृश अपने पिता

की संपत्ति पर लात मारी और एक भिक्षु के रूप में प्रचार करना प्रारंभ किया। शीघ्र ही बहुत-से लोगों ने इसका साथ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि संपूर्ण योरप में इसकी प्रसिद्धि फैल गई और इसके साथियों को लोगों ने फ्रांसिस्कंज़ या ग्रेफ्रायर्ज़ के नाम से पुकारना प्रारंभ किया। दरिद्रता में ही अपना जीवन व्यतीत करने के कारण इन्हें 'मंडिकांट फ्रायर्ज़' का नाम भी दिया जाने लगा। इनकी देखा-देखी संत डामिनिक ने अपना एक नया पंथ चलाया, जो आंग्ल-इतिहास में डामिनिकंज़ या ब्लैकफ्रायर्ज़ के नाम से प्रसिद्ध है।

१२२१ में डामिनिकंज़ तथा १२२४ में फ्रांसिस्कंज़-भिक्षु इँगलैंड में पहुँचे। लंडन तथा ऑक्सफ़ोर्ड को केंद्र बनाकर ये शीघ्र ही संपूर्ण इँगलैंड में फैल गए और अपने मत का प्रचार करने लगे। ग़रीब-अमीर, सभी आंग्लों ने इनका साथ दिया। हैनरी तृतीय, एडवर्ड प्रथम, सीमन तथा 'ग्रासेटस्ट' इनके प्रबल पक्ष-पोषक थे। 'धर्म-परिवर्तन' के समय तक यही लोग दरिद्र आंग्लों में मुख्य प्रचारक का काम करते रहे।

१३ वीं सदी के प्रारंभ से ही योरप-जनता सार्वभौम भ्रातृ-भाव से पृथक् होने लगी। भिन्न-भिन्न देशों में जातीयता का भाव उदय हो गया। १३ वीं सदी से पूर्व तक आंग्ल तथा फ्रांसीसियों में कोई विशेष भेद-भाव नहीं था। यह स्वस्थ दशा १४ वीं सदी में नहीं

रही। फ़्रांसीसी तथा आंग्ल एक-दूसरी जाति के जानी दुश्मन हो गए। शत-वार्षिक युद्ध का भी बहुत कुछ कारण यह जातीय द्वेष ही था। फ़्रांसीसियों के प्रति भयंकर घृणा तथा द्वेष से प्रेरित होकर आंग्लों ने अपनी भाषा को ही उन्नत करना शुरू किया और धीरे-धीरे संपूर्ण स्थानों में फ़्रांसीसी भाषा का प्रयोग छोड़ते गए।

(३) साहित्यिक अवस्था

१३ वीं सदी तक आंग्लों की साहित्यिक अवस्था कुछ भी संतोष-प्रद नहीं थी। शत-वार्षिक युद्ध के समय में ही क्रमशः आंग्ल-भाषा ने उन्नति की ओर पैर आगे बढ़ाया। १३४० से १४०० तक जिआफ़्रे चौसर ने आंग्ल-भाषा को समृद्ध करने में बड़ा प्रयास किया। उसने 'मध्य-इँगलैंड' की भाषा में अपनी पुस्तकें लिखी थीं। १६ वीं सदी की (वर्तमान-कालीन) आंग्ल-भाषा ने चौसर की लेख-शैली पर ही अपनी उन्नति की। वाईक्लिफ़ ने पादरियों को नीचा दिखाने के लिये 'बाइबिल' के कुछ भागों का आंग्ल-भाषा में अनुवाद किया। इसकी आंग्ल-भाषा ने आगे गद्य-लेखकों को जो सहायता पहुँचाई, वह कभी भुलाई नहीं जा सकती।

योरप-निवासियों ने क्रूसेड के समय में बारूद तथा तोप बनाने की विद्या भी एशियावालों से सीखी और उसकी उन्नति का दिन-दिन प्रयत्न करने लगे।

चतुर्थ अध्याय

लंकास्टर और यार्क-वंश

प्रथम परिच्छेद

लंकास्टर-वंश का राज्य

सन् १४०० इँगलैंड के इतिहास में अति प्रसिद्ध है, क्योंकि इसके बाद लगभग ८० वर्ष तक आंग्ल-लॉर्डों तथा बैरनों में इस बात पर झगड़ा रहेगा कि आंग्ल-राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी कौन है। इस भयंकर भ्रातृ-युद्ध में कुलीनों के सैकड़ों परिवार नष्ट हो जायँगे। इसका परिणाम यह होगा कि प्रतिबंधक शक्ति के निःशक्त हो जाने से ट्यूडर राजे क्रमशः स्वेच्छाचारी हो जायँगे और आंग्ल-इतिहास एक नवीन रूप धारण कर लेगा।

(१) हैनरी चतुर्थ (१३९९-१४१३)

हैनरी चतुर्थ आंग्ल-राज्य का वास्तविक अधिकारी नहीं था। पार्लियामेंट ने देश में शांति स्थिर रखने तथा नियमपूर्वक शासन करने के लिये उसको योग्य समझा और इसीलिये उसे आंग्ल-राजा उद्घोषित कर दिया। हैनरी चतुर्थ को जब एक बार रुपए की आवश्यकता हुई, तो पार्लियामेंट ने उसको इस शर्त पर रुपया देना

स्वीकृत किया कि पहले वह आंग्ल-प्रजा के कष्टों को दूर कर दें। लंकास्टर-वंश के राज्य-काल में आंग्ल-जनता की शक्ति अनंत बढ़ गई और कर तथा धन-संबंधी विषयों का पास करना या न करना लोक-सभा के ही हाथ में हो गया। हैनरी चतुर्थ अंध-विश्वासी था और एक बार क्रूसेड पर भी जा चुका था। वाईक्लिफ़ के मतानुयायी लो लॉर्डों के कार्य उसको पसंद नहीं थे। १४०१ में आर्च-बिशप 'अरंडेल' ने चर्च के विरुद्ध नवीन सिद्धांतों के प्रचार करनेवाले व्यक्तियों को जीते-जी आग में जला देने का प्रस्ताव पास किया। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत-से 'लो लॉर्ड्ज़' वृथा ही आग में जला दिए गए।

रिचर्ड के पक्षपाती हैनरी चतुर्थ के अधःपतन के उपाय चिर-काल से सोच रहे थे। जब हैनरी ने उनकी संपत्ति तथा दुर्ग छीन लिए, तो उन्होंने एक टूर्नामेंट में हैनरी को मारकर रिचर्ड को राज्य पर बैठाने का षड्यंत्र रचा। दैवी घटना से षड्यंत्र का भेद खुल गया और विद्रोहियों को इँगलैंड छोड़कर भागना पड़ा। भावी विपत्तियों से बचने के उद्देश से कुछ ही दिनों बाद हैनरी ने यह प्रसिद्ध कर दिया कि रिचर्ड की मृत्यु हो गई है।

रिचर्ड की मृत्यु प्रकाशित करने के अनंतर भी

हैनरी को शांति से राज्य करने का अवसर नहीं मिला। वेल्ज़ में रिचर्ड का दल शक्तिशाली था। वेल्ज़ के राजा, ओवन का सीमा-प्रांतीय लॉर्ड ग्रे से एक मंडल के स्वामित्व के विषय में झगड़ा हो गया। ओवन ने ग्रे पर आक्रमण किया और उसको क़ैद करके अपने पार्वतीय प्रदेश स्नाउडन (Snowdon) में ले गया। संपूर्ण वेल्ज़-निवासी प्रजा ने ओवन का साथ दिया। इससे उसकी शक्ति पूर्वापेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई। उसने हैनरी तथा सीमा-प्रांतीय लॉर्डों के बहुत-से दुर्ग जीत लिए। यही नहीं, उसने 'पिलेथ' पर सर एडमंड मार्टिमर को भी पराजित करके क़ैद कर लिया और हैनरी को भी दो बार बुरी तरह से परास्त किया। तृतीय बार आक्रमण करने के अनंतर भी जब हैनरी ओवन को जीत नहीं सका, तो सर एडमंड मार्टिमर ने ओवन से संधि कर ली और उसकी कन्या से विवाह भी कर लिया। संधि की मुख्य शर्त यह थी कि हैनरी को राज्य-च्युत करके रिचर्ड या उसके वंश के किसी व्यक्ति को आंग्ल-राज्य पर बैठाया जाय और ओवन को सदा के लिये वेल्ज़ का राजा माना जाय।

स्कॉटलैंड ने भी हैनरी को काफ़ी कष्ट पहुँचाया। १४०२ में स्काच-सेनाओं ने इँगलैंड पर आक्रमण किया। हैनरी पर्सी ने 'हम्बलटन' नामक स्थान पर

स्काच-सेनाओं को पराजित किया और बहुत-से स्काच-नोबलों को क़ैद कर लिया। हैनरी पर्सी हैनरी चतुर्थ से असंतुष्ट था, अतः उसने स्काच-नोबलों को छोड़ दिया और एडमंड मार्टिमर से मित्रता करके ओवन को सहायता पहुँचाने के लिये वेल्ज़ की ओर रवाना हुआ। हैनरी चतुर्थ भी संपूर्ण घटनाओं को तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहा था। बुद्धिमत्ता से उसने श्रूयस्बरी का नगर अपने हस्तगत कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि हैनरी पर्सी को उससे अकेले ही युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में हैनरी पर्सी पराजित हुआ और साथ ही मर भी गया। हैनरी की इस विजय का ओवन पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। उसने हैनरी को दिन-पर-दिन सताना प्रारंभ किया और फ़्रांस से मित्रता करके उसने अपनी शक्ति पूर्वापेक्षा दूनी कर ली। हैनरी ने उस पर चतुर्थ आक्रमण किया, परंतु पहले के सदृश ही पराजित हुआ। अंत को इस विपत्ति से उसके पुत्र ने उसका उद्धार किया। उसने वेल्ज़ को टुकड़े-टुकड़े करके जीतना प्रारंभ किया और वह ओवन को धीरे-धीरे स्नाउडन की ओर ढकेलता गया।

१४०६ में स्कॉटलैंड का राजा, जेम्ज़ शिक्षा प्राप्त करने के लिये फ़्रांस जा रहा था कि मार्ग में ही आंग्ल-मल्लाहों ने उसको क़ैद कर लिया। इन्हीं दिनों फ़्रांस का

राजा, चार्ल्स षष्ठ पागल हो गया। इस प्रकार हैनरी फ़्रांस तथा स्कॉटलैंड से निश्चिंत हो गया। परंतु कुछ समय बाद ही वह बीमार होकर १४१३ में परलोक-वासी हो गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१३९९	हैनरी चतुर्थ का राज्य पर बैठना
१४००	ओवन का विद्रोह
१४०३	श्रूयस्बरी का युद्ध
१४१३	हैनरी चतुर्थ की मृत्यु

(२) हैनरी पंचम (१४१३–१४२२)

हैनरी पंचम १४१३ में आंग्ल-राज्य पर बैठा। आंग्ल-क्रानिक्लर का कथन है कि 'मुकुट धारण करते ही उसका स्वभाव बदल गया। वह एक नवीन मनुष्य में परिवर्तित हो गया। उसने धर्मपूर्वक जीवन व्यतीत करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।' वेल्ज़ के विद्रोहों को शांत करने के उद्देश से उसने विद्रोहियों के लिये एक क्षमा-पत्र निकाला और उनको अभय-दान दिया। ओवन को छोड़कर संपूर्ण वेल्ज़-निवासियों ने उसकी अधीनता स्वीकृत कर ली। उसने अरंडेल को चांसलर-पद से हटाकर 'हैनरी ब्यूफ़ोर्ट' को चांसलर नियत किया।

सीमा-प्रांतीय लॉर्ड 'ओल्ड कैस्ल' लोलॉर्डों का पक्ष-पाती था। हैनरी पंचम अत्यंत अंध-विश्वासी था। अतः उसने ओल्ड कैस्ल को क़ैद करके जीते-जी जला-

देने की आज्ञा दी। अपनी मृत्यु से पूर्व ही वह क़ैदखाने से भाग गया, परंतु १४१७ में पकड़ा जाकर वह देश-द्रोह के अपराध में फाँसी पर चढ़ा दिया गया। उसकी मृत्यु के अनंतर इँगलैंड में लोलॉर्डों का संप्रदाय सर्वदा के लिये नष्ट हो गया।

हैनरी पंचम स्वभावतः वीर क्षत्रिय था। एडवर्ड तृतीय के सदृश नवीन विजय प्राप्त करने की उसकी प्रबल इच्छा थी। पार्लियामेंट से आज्ञा लेकर उसने अपने आप को फ्रांस का राजा उद्घोषित किया। पार्लियामेंट ने विदेशी भिक्षुओं के गिरजाघरों तथा विहारों के विरुद्ध एक राज्य-नियम बनाया और उनको नष्ट कर देने तथा उनकी संपत्ति ज़बरदस्ती छीन लेने के लिये राजा को आज्ञा दी। इस नियम के बनाने का मुख्य कारण यह था कि विदेशी भिक्षु आंग्ल-धन को विदेश में भेजते थे, जो आंग्लों के ही विरुद्ध युद्ध करने में लगाया जाता था। जो कुछ हो, इस नियम से यह बहुत अच्छी तरह मालूम होता है कि अपने धर्म-मंदिरों की ओर से आंग्लों की श्रद्धा कितनी हट चुकी थी।

१४०७ के भयंकर प्लेग से आक्रांत होने पर भी आंग्ल-जनता की उन्नति नहीं रुकी थी। इँगलैंड में अर्ध-दासता क्रमशः नष्ट हो रही थी और श्रमियों की दशा पूर्वा-पेक्षा बहुत अच्छी थी। आंग्ल-जनता कपड़ों पर बहुत

अधिक रुपया ख़र्च करने लगी। अतः इसे रोकने के लिये राज्य-नियम बनाए गए। व्यापार-व्यवसाय की उन्नति के लिये बाल्टिक-सागर के बहुत-से नगर, फ़्लांडर्ज़ तथा वीनस आदि से आंग्ल-राज्य ने नई-नई संधियाँ कीं। न्यूकैस्ल के कोयले का व्यापार खूब चमक उठा। मुद्रा के भ्रष्टीकरण पर भी मुद्रा का संचलन कम नहीं हुआ। लंडन के बहुत-से व्यापारियों के पास खूब धन हो गया। नए-नए संघों (Guilds) ने श्रमियों तथा शिल्पियों की पूर्ण रक्षा करनी प्रारंभ कर दी। सारांश यह कि हैनरी पंचम के काल में इँगलैंड बहुत तेज़ी के साथ उन्नति करता रहा। इसी समय इँगलैंड तथा फ़्रांस के बीच शत-वार्षिक युद्ध पुनः प्रारंभ हो गया। इसके मुख्य कारण निम्न-लिखित हैं—

(१) पादरी-लोग लोलॉर्डों की ओर से जनता को हटाकर युद्ध की ओर प्रवृत्त करना चाहते थे।

(२) पार्लियामेंट की इच्छा थी कि किसी प्रकार राजा का ध्यान चर्च की संपत्ति लूटने की ओर से हटे।

(३) आंग्ल-व्यापारी अपना व्यापार-व्यवसाय बढ़ाना चाहते थे। उनके इस कार्य में फ़्रांसीसी जनता बाधक थी।

(४) हैनरी पंचम युद्ध के द्वारा अपनी कीर्ति बढ़ाना चाहता था।

१४१५ की एप्रिल में हैनरी ने अपने को फ़्रांस का राजा उद्घोषित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़्रांस से इँगलैंड का युद्ध छिड़ गया। १४ तारीख़ को 'हार्फ़्लियर' में पहुँचकर हैनरी ने नार्मंडी की विजय प्रारंभ की। कैले की ओर सेना-सहित जाते हुए 'अगिनकोर्ट' पर उसका फ़्रांसीसियों की ६० हज़ार मनुष्यों की सेना से सामना हो गया। उसके पास सिर्फ़ ९ हज़ार सैनिक थे। जो हो, उसने अपूर्व युद्ध-कौशल से फ़्रांसीसियों को भयंकर पराजय दी। इस युद्ध में ११ हज़ार फ़्रांसीसी मारे गए। अगिनकोर्ट का युद्ध आंग्ल-इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है।

रोग के कारण आंग्ल-सेना के नष्ट हो जाने के कारण हैनरी इँगलैंड लौट आया और दो वर्ष की तैयारी के अनंतर १४१७ में उसने पुनः फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया। इस बार उसने संपूर्ण नार्मंडी को हस्तगत कर लिया। रून के प्रसिद्ध दुर्ग को भी उसने ६ मास के घेरे के बाद क़ाबू में कर लिया। रून के बाद 'पांटाइज़' को जीतकर हैनरी ने पेरिस पर आक्रमण करने का यत्न किया। इसी समय 'संपद्संपदमनुबध्नाति' के अनुसार सौभाग्य-लक्ष्मी ने भी उसका पूरा साथ दिया।

'वर्गंडी' का ड्यूक चार्ल्स से मिलने गया हुआ था। वहाँ उसको आर्लींज़ के मित्रों ने धोखेबाज़ी से मार डाला। इसका परिणाम यह हुआ कि वर्गंडी के लोगों ने क्रोध

में आकर आंग्लों से मित्रता कर ली। विचित्रता की बात है कि चार्ल्स की धर्म-पत्नी, 'इसाबेला' ने अपने पति से रुष्ट होकर अपनी कन्या, कैथराइन का हैनरी से विवाह कर दिया। ट्रापस की संधि के अनुसार १४२० की २१ मई को हैनरी फ्रांस का रक्षक तथा उत्तराधिकारी नियत हुआ। १४२१ की ६ दिसंबर को फ्रेंच राजकुमारी से 'हैनरी' नामक एक बालक उत्पन्न हुआ। हैनरी पंचम का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। अतः १४२२ की ३१ अगस्त को वह परलोक सिधारा। दैवी घटना से उसकी मृत्यु के दो मास बाद ही अभागे चार्ल्स षष्ठ ने भी इस लोक से कूच कर दिया। इस प्रकार दस मास का बालक हैनरी षष्ठ के नाम से फ्रांस तथा इँगलैंड का राजा बना। हैनरी पंचम के राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४१३	हैनरी पंचम का राज्याधिरोहण
१४१४	ओल्ड कैस्ल का समुत्थान
१४१५	अगिनकोर्ट का युद्ध
१४१९	रूअन की विजय
१४२०	ट्रापस की संधि
१४२२	हैनरी पंचम की मृत्यु

(३) हैनरी षष्ठ (१४२२–१४६१)

हैनरी पंचम की मृत्यु के समय इँगलैंड की कीर्ति दूर-

दूर तक फैल गई थी। पार्लियामेंट, पादरी तथा आंग्ल-जनता ने हैनरी को फ़्रांस-विजय में बहुत ज़्यादा सहायता दी थी। इस विजय के ख़र्चों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि आंग्लों से रुपया प्राप्त करते हुए भी हैनरी पर बहुत ऋण था। उसने अपनी मृत्यु के समय वैडफ़ोर्ड के ड्यूक को आंग्ल-राज्य का संरक्षक नियत किया और उसको वर्गंडी के शासक से मित्रता बनाए रखने की सलाह दी। फ़्रांस-राज्य का प्रबंध भी वैडफ़ोर्ड के ही हाथ में था। अतः उसकी अनुपस्थिति में ग्लाउसस्टर के ड्यूक को आंग्ल-शासन का कार्य मिला।

हैनरी की मृत्यु के एक वर्ष बाद ही ग्लाउसस्टर का वर्गंडी के शासक से झगड़ा हो गया। परंतु वैडफ़ोर्ड ने सारा मामला बहुत ही बुद्धिमानी से शांत कर दिया। उसने फ़्रांस में भी अपना कार्य बहुत ही अच्छी तरह किया। ९ वर्ष के अथक परिश्रम के अनंतर उसने लोर के उत्तर का संपूर्ण फ़्रांस हस्तगत कर लिया। ग्रार्लीज़ के घेरे के लिये वह अभी आगे बढ़ना ही चाहता था कि एक अपूर्व आश्चर्यमय घटना घटित हो गई, जिससे उसकी सारी जीतों पर पानी फिर गया।

कैंपग्ना तथा लोरेन के सीमा-प्रदेश पर 'डामरेमी' नामक एक ग्राम था। इसमें एक मज़दूर रहता था, जिसके १८ वर्ष की नौजवान 'जेनोडार्क' नाम की एक कन्या

थी। डामरेमी में यह किंवदंती थी कि इसी ग्राम की एक कन्या किसी समय फ़ांस का शत्रुओं से उद्धार करेगी। जो कुछ हो, जेनीडार्क को किसी प्रकार यह विश्वास हो गया कि ईश्वर ने मुझे ही फ़ांस को स्वतंत्र करने के लिये भेजा है। उसने ग्राम के पुरोहित तथा चौधरी को इस बात पर विवश किया कि वे उसे राजा के पास पहुँचा दें। वहाँ पहुँचकर राजा से भी उसने सारी बातें निर्भय होकर कहीं। आख़िर राजा ने उसे १० हज़ार की सेना देकर आंग्लों से लड़ने के लिये भेज दिया। आश्चर्य की बात है कि उसने आर्लीज़ पर आंग्लों तथा बर्गंडियनों को बुरी तरह पराजित किया और रीम्ज़ तक संपूर्ण फ़ांस शत्रु-रहित कर दिया। १४२६ की १७ जुलाई को उसने अपने ही सम्मुख चार्ल्स सप्तम को फ़ांस का राजा बनाया और उससे अपने ग्राम को लौट जाने की आज्ञा माँगी। उसने कहा—"मेरा कार्य पूरा हो गया है। अब मुझमें शत्रुओं से लड़ने की शक्ति नहीं है।" मूर्खता से चार्ल्स ने उसको युद्ध करने के लिये प्रेरित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि १४३० में उसे आंग्लों ने पकड़ लिया और भूतनी कहकर जला दिया।

फ़ांस के राज्य को अपने हाथ से फिसलता हुआ देखकर ब्यूफ़ोर्ट ने हैनरी का पेरिस में राज्याभिषेक-संस्कार किया। इसके दो वर्ष बाद ही वह मर गया और बर्गंडी

सदा के लिये फ़्रांस से मिल गया। यार्क के ड्यूक रिचर्ड ने फ़्रांस में युद्ध जारी रक्खा, परंतु उसका कुछ भी फल नहीं निकला। धीरे-धीरे चार्ल्स ने सारा फ़्रांस अपने हाथ में कर लिया। १४५३ में शत-वार्षिक युद्ध समाप्त हो गया और एकमात्र कैले ही आंग्लों के हाथ में रह गया।

ग्लाउसस्टर का ड्यूक आंग्लों में सर्व-प्रिय था; परंतु वह राज-नीति-ज्ञ नहीं था। उसका चांसलर ब्यूफ़ोर्ट से झगड़ा हो गया। शांति रखने के उद्देश से 'ब्यूफ़ोर्ट' विदेश चला गया। १४२९ में हैनरी के राज्य पर बैठते ही ग्लाउ-सस्टर का अधःपतन हुआ और ब्यूफ़ोर्ट को शक्ति मिली। १४४७ तक ब्यूफ़ोर्ट बहुत अच्छी तरह काम करता रहा।

इधर पार्लियामेंट दिन-पर-दिन शक्ति खोती गई और राष्ट्र की संपूर्ण शक्ति राजा की गुप्त सभा (Privy Council) के हाथ में चली गई। इसका मुख्य कारण यह था कि प्रतिनिधियों का चुनाव स्वतंत्र भूमि-पतियों में से तथा गिने-चुने मांडलिक शासकों में से ही किया जाता था। ये लोग प्रायः राजा के ही पक्षपाती होते हैं। १४२५ में पार्लियामेंट के अंदर सशस्त्र जाना बंद कर दिया गया। इस पर सभ्य लोग 'बैट्स' ले-लेकर पहुँचे। इसीलिये इस पार्लियामेंट को बैट्सरी पार्लियामेंट के नाम से पुकारते हैं। १४३७ में हैनरी ने आंग्ल-शासक सभा का स्वयं ही चुनाव किया और इस प्रकार स्वेच्छाचार-पूर्ण शासन करने लगा।

हैनरी का शरीर तथा मन दुर्बल था। संपूर्ण राज्य-काल में वह किसी-न किसी व्यक्ति के प्रभाव में ही रहा। चार्ल्स षष्ठ के वंश से उसका संबंध था। अतः चार्ल्स के ही सदृश उस पर कभी-कभी पागलपन चढ़ आता था। उसने ईटन-स्कूल, किंग्ज़-कॉलेज तथा कैंब्रिज की उन्नति में बहुत अधिक प्रयत्न किया।

१४४५ में मार्गरट के साथ उसका विवाह हुआ। मार्गरट बहुत ही चालाक स्त्री थी। उसने हैनरी को अपनी इच्छा के अनुसार चलाना प्रारंभ किया। सफ़्फ़ाक का ड्यूक तथा सोमरसट का अर्ल मार्गरट के कृपा-पात्र थे। ग्लाउसस्टर ने फ़्रांस-विजय के लिये यत्न किया, परंतु उसने उसको ऐसा नहीं करने दिया। इसका कारण यह था कि वह स्वयं फ़्रांस की रहनेवाली थी। उसको यह कब सह्य था कि आंग्ल फ़्रांस की विजय प्राप्त करें। १४४७ में ग्लाउसस्टर पर देश-द्रोह का अपराध लगाया गया और दंड मिलने से पहले ही किसी ने उसको मार डाला। इसकी मृत्यु होने पर संपूर्ण इँगलैंड का शासन सफ़्फ़ाक के हाथ में चला गया। परंतु १४५० में उसको भी इस अपराध पर देश-निकाला दे दिया गया कि वह फ़्रांस से एक घृणित संधि करना चाहता था।

कर के अधिक लगने से, विदेशियों के प्रबंध से और फ़्रांस के साथ अनुचित संधि हो जाने से असंतुष्ट होकर

जैककेड के नेतृत्व में आंग्ल-जनता ने विद्रोह कर दिया। २० हज़ार की सेना के साथ जैककेड लंडन पहुँचा। उसने राजा से प्रार्थना की कि वह विदेशियों को आंग्ल-भूमि से निकाल दे और पार्लियामेंट के सभ्यों के चुनाव में जनता को स्वतंत्रता दे।

जैककेड के साथियों ने मूर्खता से राजा के मंत्रियों को मार डाला और बहुत-से लंडन के नागरिकों को भी लूट लिया। इसका फल यह हुआ कि लंडन-निवासियों ने जैककेड पर आक्रमण किया और उसको लंडन-ब्रिज पर पराजित किया। विद्रोह को शीघ्र ही शांत करने के उद्देश से हैनरी ने विद्रोहियों को क्षमा-दान दिया तथा उनको अपने-अपने घर लौट जाने के लिये विवश किया। जैककेड को यह पसंद नहीं था। अतः उसने ससेक्स में एक नवीन विद्रोह करवाना चाहा, परंतु उसको कैंट के किसी आदमी ने मार डाला। उसकी मृत्यु होने पर विद्रोह शीघ्र ही शांत हो गया।

इन्हीं दिनों यार्क का ड्यूक, 'रिचर्ड' अपने आयरिश-राज्य से लंडन आया। यह एडवर्ड तृतीय के वंश का था। इसने राजा के विदेशी मित्रों को देश से निकालने का यत्न किया। परंतु राजा को यह अभिमत न था। अन्य विदेशी मित्रों को देश से बाहर निकालना तो दूर रहा, इससे विपरीत उसने सोमरसट को राज्य-कार्य

सुपुर्द कर दिया। रिचर्ड ने सोमरसट को राज्य-कार्य से हटा देने के लिये हैनरी से कहा; परंतु जब उसने नहीं माना, तो रिचर्ड ने १४५२ में सेना एकत्र कर ली। इस पर हैनरी ने सोमरसट को क़ैद कर दिया और रिचर्ड को राज्य में मुख्य स्थान दे दिया। दैवी घटना से १४५३ में हैनरी पागल हो गया। उसके पागल होते ही मार्गरट ने राज्य-कार्य अपने हाथ में ले लिया और रिचर्ड को संपूर्ण राज्य-कार्यों से हटा दिया। इसी वर्ष राजा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इससे रिचर्ड की राजा बनने की भावी आशा पर सदा के लिये पानी फिर गया। १४५४ में पार्लिया-मेंट ने मार्गरट को नीचा दिखाया और उसकी इच्छा के विरुद्ध रिचर्ड को आंग्ल-राज्य का रक्षक नियत किया। वर्ष के समाप्त होते ही हैनरी का पागलपना उतरा। स्वस्थ होते ही उसने रिचर्ड को संपूर्ण राज्य-कार्यों से पृथक् कर दिया और उसका स्थान सोमरसट को दे दिया।

इस अपमान से क्रुद्ध होकर रिचर्ड ने हथियार उठा लिए और 'सेंट अल्बान' के प्रसिद्ध युद्ध में उसने अपने विरोधियों को बुरी तरह से पराजित किया। सोमरसट तो युद्ध में ही मारा गया और राजा हैनरी रिचर्ड के हाथ क़ैद हो गया। सेंट अल्बान का युद्ध आंग्ल-इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि 'गुलाब-युद्ध' (Wars of Roses) का प्रारंभ इसी युद्ध से माना जाता है। लंकास्टर तथा

यार्क-घरानों का युद्ध ३० वर्ष तक रहा । इसको गुलाब का युद्ध इसलिये कहते हैं कि लंकास्टर-दलवालों का लाल गुलाब और यार्क-दलवालों का सफ़ेद गुलाब चिह्न था। कइयों की सम्मति में शुरू-शुरू में दोनों दलों का चिह्न 'गुलाब' नहीं था । अतः इस युद्ध को 'गुलाब-युद्ध' का नाम देना वृथा है। जो कुछ हो, यह नाम अब इतना अधिक प्रचलित हो चुका है कि इसको छोड़ना सर्वथा कठिन है ।

'सेंट अल्वान' के युद्ध के अनंतर राज्य की संपूर्ण शक्ति रिचर्ड के हाथ में चली गई । १४५५ में राजा के पागल हो जाने पर रिचर्ड ही संपूर्ण आंग्ल-राज्य का रक्षक चुना गया । रानी मार्गरेट को यह पसंद नहीं था । राजा का स्वास्थ्य ठीक होते ही उसने 'अटेंडर का बिल' नामक नियम पास करवाया, जिसके अनुसार रिचर्ड के मित्रों पर देश-द्रोह का अपराध लगाकर उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया । दैवी घटना से रिचर्ड स्वयं आयर्लैंड में था । मित्रों की मृत्यु की ख़बर सुनकर १४६० में वह स-सैन्य इँगलैंड पहुँचा । उसने नार्थंपटन के युद्ध में राजा को क़ैद कर लिया । इस पर मार्गरेट स्कॉटलैंड में भाग गई । उसने वहाँ सेना एकत्र की और वेक-फ़ील्ड के युद्ध में रिचर्ड को पराजित किया । रिचर्ड युद्ध में ही मारा गया । अपने पिता की मृत्यु पर रिचर्ड का पुत्र, एडवर्ड एक बड़ी भारी सेना लेकर लंडन की ओर रवाना हुआ ।

इन्हीं दिनों वार्विक के अर्ल ने हैनरी षष्ठ को क़ैद कर लिया और एडवर्ड को एडवर्ड चतुर्थ के नाम से इँगलैंड का राजा उद्घोषित कर दिया।

हैनरी षष्ठ की स्त्री वीरांगना थी। उसने इँगलैंड के उत्तर में एक भयंकर सेना एकत्र की। इसका परिणाम यह हुआ कि लंकास्टर तथा यार्क-वंश का 'टाउटन-फ़ील्ड' पर भयंकर युद्ध हुआ। यार्क-वंश ने लंकास्टर-वंश पर विजय प्राप्त की। १४६१ की २८ जून को वेस्ट-मिनिस्टर में एडवर्ड का राज्याभिषेक-संस्कार हुआ और इँगलैंड में यार्क-वंश का राज्य प्रारंभ हो गया। हैनरी षष्ठ के राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४२२	हैनरी षष्ठ का राज्याधिरोहण
१४२९	आर्लींज़ की स्वतंत्रता
१४३१	जेनीडार्क की मृत्यु
१४३२	हैनरी का पेरिस में राज्याभिषेक
१४४७	हैनरी ब्यूफ़ोर्ट तथा ग्लाउसस्टर की मृत्यु
१४५०	जैककेड का विद्रोह
१४५५	सेंट अल्बान का युद्ध
१४६०	वेकफ़ील्ड का युद्ध
१४६१	हैनरी षष्ठ का राज्य-च्युत होना

द्वितीय परिच्छेद

यार्क-वंश का राज्य

(१) एडवर्ड चतुर्थ (१४६१–१४८३)

राज्य-सिंहासन पर बैठने के दस वर्ष बाद तक एडवर्ड को कुछ भी शांति नहीं मिली। मार्गरट ने वीरता से अपने पति तथा पुत्र के लिये आंग्ल-राज्य प्राप्त करने का यत्न किया। फ़्रांस तथा स्कॉटलैंड से सहायता लेते हुए भी वह हैज्लेमूर के युद्ध में (१४६४) पराजित हुई। अपने पुत्र के साथ वह फ़्लांडर्ज़ भाग गई और हैनरी पकड़ा जाकर क़ैद कर लिया गया। इस युद्ध के अनंतर एडवर्ड ने वार्विक के अर्ल की इच्छा के विरुद्ध 'एलिजावेथ वुडविल' के साथ विवाह कर लिया। इस पर वार्विक ने क्रुद्ध हो-कर अपनी कन्या का विवाह मार्गरट के पुत्र के साथ कर दिया और एडवर्ड चतुर्थ को राज्य-च्युत करने का यत्न करने लगा। १४६९ में लंकास्टर-वंशियों ने विद्रोह कर दिया और 'एजकोट' के युद्ध में एडवर्ड को पराजित किया और क़ैद भी कर लिया। वार्विक के भाई, आर्च-बिशप नैविल ने मूर्खता से एडवर्ड को छोड़ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बंदी-गृह से मुक्त होते ही उसने अपने विरुद्ध दलवालों को 'देश-द्रोही' ठहराया। परंतु इस कार्य से उसको कुछ भी शांति नहीं मिली। वार्विक

की सहायता प्राप्त करके मार्गरट इँगलैंड आई। उससे युद्ध करने में अपने को असमर्थ देखकर एडवर्ड चतुर्थ फ़्लांडर्ज़ भाग गया। छः मास के बाद एक बड़ी सेना के साथ वह पुनः इँगलैंड पहुँचा। ट्यूकस्वरी पर एक भयंकर युद्ध हुआ। इसमें हैनरी तथा मार्गरट एडवर्ड के हाथ क़ैद हो गए। वार्विक तथा मार्गरट के पुत्र की मृत्यु हो गई। एडवर्ड ने हैनरी की मृत्यु का भी समाचार एक ही पक्ष में सुनाया। १४७५ में बहुत-सा रुपया देकर रीन ने अपनी पुत्री, मार्गरट को एडवर्ड की क़ैद से छुड़ा लिया।

ट्यूकस्वरी के युद्ध के अनंतर इँगलैंड में शांति स्थापित हो गई। गुलाब-युद्ध के समय में नोबलों तथा अर्लों की मृत्यु से उनकी शक्ति सर्वथा कम हो गई थी। परंतु साधारण प्रजा की यह दशा नहीं थी। छोटे-छोटे भूमि-पति, व्यापारी तथा व्यवसायी दिन-पर-दिन खूब उन्नति कर रहे थे। उनमें धनाढ्यों की संख्या क्रमशः बढ़ रही थी। यही कारण है कि उल्लिखित युद्धों के अनंतर जब एडवर्ड ने देश में शांति स्थापित कर दी, तो उसको डाली के रूप में खूब रुपया मिला। १४७६ में इँगलैंड में पुनः प्लेग हुआ, परंतु इससे देश की समृद्धि नहीं रुकी। एडवर्ड ने पार्लियामेंट से पेंशन के तौर पर राज्यारंभ में ही कुछ धन-राशि प्राप्त कर

ली थी, अतः उसने पार्लियामेंट के बहुत ही कम अधिवेशन किए। इन्हीं दिनों महाशय विलियम 'कैक्सटन' ने बहुत वर्ष विदेश में रहकर छापेख़ाने का कार्य सीखा और १४७६ में सब से पहले इँगलैंड में छापेख़ाने का कार्य प्रारंभ किया। इस कार्य में राजा की ओर से भी उसको पर्याप्त सहायता मिली। १४८३ की ६ एप्रिल को एडवर्ड का देहांत हो गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४६१	एडवर्ड का राज्याधिरोहण
१४६४	हैज्लेमूर का युद्ध
१४७१	ट्यूकस्वरी का युद्ध
१४७६	कैक्सटन का छापाख़ाना
१४८३	एडवर्ड की मृत्यु

(२) एडवर्ड पंचम (१४८३, एप्रिल-जून)

एडवर्ड चतुर्थ का सब से बड़ा पुत्र केवल तेरह वर्ष का ही था। बालक की संरक्षकता उसकी माता स्वयं अपने ही हाथ में रखना चाहती थी। यार्क-वंशीय 'रिचर्ड' पार्लियामेंट को प्रभावित करके स्वयं उसका संरक्षक बन गया। संरक्षक बनते ही उसका मन मैला हो गया और इसने अपने को आंग्ल-राजा बनाने का यत्न किया। जब लॉर्ड हेस्टिंग्ज़ ने उसका विरोध किया, तो बड़ी धूर्तता से उसने उसको फाँसी पर चढ़ा दिया। इस घटना

के ९ दिन बाद ही 'सेंट पाल क्रास' के एक उपदेशक ने जनता को यह सूचना दी कि एलिज़ाबेथ वुडविल एडवर्ड चतुर्थ की वास्तविक स्त्री नहीं थी, इसलिये उसका पुत्र कामज होने से राज्याधिकारी नहीं हो सकता है। इस धूर्तता में उस उपदेशक की बात को बकिंघम के ड्यूक ने पुष्ट किया। २५ जून को बहुत-से लॉर्डों तथा साधारण जनों ने रिचर्ड को ही इँगलैंड का राजा बना दिया।

(३) रिचर्ड तृतीय (१४८३–१४८५)

राज्य पर बैठने के कुछ ही दिन बाद रिचर्ड ने एडवर्ड पंचम को मरवा डाला। जनता को इस भयंकर कर्म की उससे स्वप्न में भी आशा नहीं थी। जो कुछ भी हो, इस दुष्कर्म का रिचर्ड को भी अच्छा फल नहीं मिला। दो वर्ष के क्षणिक राज्य में उसने देश का अच्छी तरह प्रबंध किया। बालक के मरवाने से उसका चित्त हर समय विक्षिप्त रहता था। बकिंघम के ड्यूक ने रिचर्ड का साथ छोड़ दिया। हैनरी ट्यूडर को इँगलैंड का राजा बनाने के लिये वह यत्न करने लगा। बुद्धिमत्ता से हैनरी ट्यूडर ने एडवर्ड चतुर्थ की कन्या, एलिज़ाबेथ से विवाह करने का प्रण कर लिया। निम्न-लिखित तीन युद्धों के अनंतर हैनरी ने रिचर्ड को परास्त किया—

(१) प्रथम युद्ध १४८३ में हुआ, परंतु हैनरी सफल नहीं हुआ। रिचर्ड ने बकिंघम के ड्यूक को क़ैद करके फाँसी पर चढ़ा दिया।

(२) १४८४ के द्वितीय युद्ध में रिचर्ड का पुत्र मारा गया।

(३) तृतीय युद्ध में रिचर्ड के साथी हैनरी से मिल गए। परिणाम यह हुआ कि वास्वर्थफ़ील्ड के युद्ध में रिचर्ड स्वर्ग-वासी हो गया और हैनरी ट्यूडर हैनरी सप्तम के नाम से इँगलैंड के राज्य-सिंहासन पर बैठा।

रिचर्ड तृतीय की मृत्यु के अनंतर इँगलैंड 'मध्य-काल' से नवीन काल में प्रवेश करना प्रारंभ करेगा। 'एलिज़ाबेथ ट्यूडर' के समय में इँगलैंड एक महा-शक्ति का रूप धारण कर लेगा। सारांश यह है कि गुलाब-युद्ध के अनंतर इँगलैंड एक नवीन रूप प्राप्त करता है। अतः ट्यूडर-काल का इतिहास पूर्वापेक्षा कुछ अधिक विस्तृत लिखा जायगा।

तृतीय परिच्छेद

पंद्रहवीं सदी में ब्रिटन की सभ्यता

(१) राजनैतिक अवस्था

पंद्रहवीं सदी में आंग्ल-शासन-पद्धति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। लंकास्टर-वंश के काल में तो पार्लियामेंट ने बहुत अधिक शक्ति प्राप्त कर ली थी। परंतु

समय के परिपक्व न होने से उसकी वह शक्ति स्थिर नहीं रही। मध्य-काल में पार्लियामेंट की शक्ति नोबल लोगों के हाथ में थी। ये लोग दिन-रात परस्पर लड़ते रहते थे। अतः पार्लियामेंट की शक्ति का स्थिर रहना भी असंभव था। गुलाब-युद्ध में नोबल लोग निःशक्त हो गए। साधारण जनों के पास पहले ही शक्ति अधिक नहीं थी। परिणाम यह हुआ कि ट्यूडर-काल में आंग्ल-जनता के निःशक्त होने से राजा लोग स्वेच्छाचारी हो गए और उन्होंने पार्लियामेंट को अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने का एक साधन बना लिया। जन-राष्ट्र के सदृश ही चर्च-राष्ट्र भी पूर्ववत् शक्तिशाली नहीं रहा। लोलॉर्डों ने चर्च-राष्ट्र को जो धक्का पहुँचाया था, उसका वर्णन किया जा चुका है। उनके नष्ट हो जाने पर भी उसकी पूर्व-स्थिति नहीं रही। तेरहवीं सदी में चर्च के मुखिया ही राष्ट्र में भी मुखिया होते थे। परंतु पंद्रहवीं सदी में यह बात नहीं रही। इससे चर्च की शक्ति पर बहुत धक्का पहुँचा, क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर चर्च के अधिकारियों को राष्ट्राधिकारियों का मुँह ताकना पड़ता था। यही नहीं, चर्च की बुराइयों ने भी चर्च की शक्ति को बहुत कुछ नष्ट किया। उनकी बुराइयों का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि स्वयं उनके ही आदमी उनके विरुद्ध थे। विद्या-वृद्धि ने भी चर्च के

प्रभुत्व को नष्ट किया। गुलाब-युद्ध के काल में इँगलैंड में काफ़ी विश्वविद्यालय विद्यमान थे। दृष्टांत स्वरूप—

(१) ऑक्सफ़ोर्ड-विश्वविद्यालय। इसमें सब से मुख्य 'न्यू कॉलेज' गिना जाता था।

(२) कैंब्रिज-विश्वविद्यालय। इसमें 'किंग्ज़-कॉलेज' का मुख्य स्थान था।

(३) विंचस्टर-स्कूल तथा ईटन-स्कूल।

इन विद्यालयों तथा महा-विद्यालयों के खोलने में विशेषतः पादरियों का ही हाथ था। इस विद्या-वृद्धि का परिणाम चर्च की शक्ति के लिये कुछ भी अच्छा नहीं हुआ। ट्यूडर-काल में 'धर्म-परिवर्तन' में बड़ा भाग इन्हीं विद्यालयों के विद्वानों का था। सारांश यह कि पंद्रहवीं सदी में चर्च तथा जन-राष्ट्र दोनों ही निःशक्त हो गए। परिणाम यह हुआ कि ट्यूडर-काल में इँगलैंड ने नवीन युग में प्रवेश किया।

(२) आर्थिक अवस्था

गुलाब-युद्ध-जैसे भयंकर काल में भी आंग्ल-जनता निरंतर उन्नति करती चली गई। नोबल लोगों के पारस्परिक कलह का उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। क्रय-विक्रय तथा व्यापार पूर्ववत् ही उन्नत होता गया। अर्ध-दासता का इँगलैंड से सदा के लिये लोप हो गया और प्रत्येक स्थान पर स्वतंत्र श्रमी ही काम

करते दिखाई पड़ते थे। नीदरलैंड में अधिक ऊन पहुँचने से आंग्लों में ऊन का व्यापार दिन-पर-दिन बढ़ रहा था। जनता को कृषि की अपेक्षा भेड़ों के पालने में अधिक लाभ था। एडवर्ड चतुर्थ के उत्तम राज्य में आंग्लों का व्यापार-व्यवसाय बहुत अधिक उन्नत हुआ। जन-संख्या बहुत बढ़ गई।

नगरों में संघों (Guilds) द्वारा व्यावसायिक पदार्थ उत्पन्न किए जाते थे। संघ के प्रत्येक सभ्य को पर्याप्त अधिकार थे। लाभ में उनको पूर्ण रूप से भाग मिलता था। पदार्थों की क़ीमतें संघ द्वारा ही निश्चित होने के कारण बहुत कुछ स्थिर थीं। शुरू-शुरू में उत्तरीय जर्मनी के हंस-नगरों के ही हाथ में आंग्ल-व्यापार-व्यवसाय का एकाधिकार था। एडवर्ड तृतीय के समुद्र पर विजय प्राप्त करने से आंग्लों ने भी व्यापार-व्यवसाय में अपना हाथ दिया। दिन-पर-दिन अधिक संख्या में जहाज़ बनाए जाने लगे और नई-नई संधियों द्वारा आंग्ल-व्यापार-व्यवसाय उन्नत होने लगा। बहुत-से व्यापारियों ने स्कंडिनीविया में व्यावसायिक कार्य करना प्रारंभ किया और हंस-नगरों को व्यापार-व्यवसाय में बुरी तरह से नीचा दिखाया। लंडन की समृद्धि के विषय में तो कहना ही क्या है! सैकड़ों व्यापारी-जहाज़ों से लंडन हर रोज़ घिरा रहता था। आयर्लैंड तथा आइस-

लैंड के व्यापार से 'ब्रिस्टल' नामक नगर ने प्रसिद्धि प्राप्त की। 'कैले' नामक नगर इँगलैंड के हाथ में था। इसके द्वारा ही संपूर्ण आंग्ल-ऊन नीदरलैंड जाता था और जब आंग्ल-राजा फ्रांस पर आक्रमण करते थे, तो वह पहले-पहल कैले में ही स-सैन्य उतरते थे।

व्यापार-व्यवसाय की उन्नति के साथ-साथ आंग्लों के मकान भी पूर्वापेक्षा कुछ उत्तम हो गए थे। चर्च, विश्व-विद्यालय तथा महा-विद्यालयों के गृह देखने ही योग्य थे। यही नहीं, गृहों के ही सदृश अस्त्र-शस्त्रों ने भी नवीन रूप धारण किया। जनता में उत्तम-उत्तम बंदूक़ रखने का शौक़ बहुत अधिक था। तोपों का प्रचार भी दिन-पर-दिन बढ़ता जाता था। फ्रांस ने तोपों के ही सहारे आंग्लों को 'कैस्टिल्लन' के युद्ध में पराजित किया था।

(३) साहित्यिक अवस्था

चौसर के अनंतर चिर-काल तक आंग्लों में कोई बड़ा कवि नहीं हुआ। गुलाब-युद्ध के समय में आंग्लों में धार्मिक नाटकों का अधिक प्रचार हुआ। प्रत्येक रविवार को नगरों में नाटक खेले जाते थे। सारी जनता बड़े शौक़ से नाटक देखती थी। इन दिनों गद्य-साहित्य की अच्छी उन्नति हुई। प्रत्येक लेखक विशेषतः राजाओं के जीवन-चरित तथा इँगलैंड का इतिहास ही, अपने-अपने ढंग पर, लिखता था। कई लॉर्डों ने अपने यहाँ बहुत-से

लेखक नियत कर रक्खे थे, जो दिन-रात लिखने का ही काम किया करते थे। ग्लाउसस्टर का डयूक, हम्फ्रे आंग्ल-साहित्य की उन्नति में विशेषतर प्रसिद्ध है। पर्सी ने भी ऐसे ही कार्यों में बहुत-सा रुपया ख़र्च किया था। विद्या-वृद्धि तथा पुस्तकों की माँग बढ़ जाने के कारण बहुत-से व्यक्तियों ने पुस्तकों के उतारने में ही अपना जीवन दे दिया था। परंतु इस कार्य में परिश्रम तथा समय बहुत लगता था। लकड़ी के अक्षरों से छापने में भी किसी प्रकार की सुगमता नहीं थी। मैंज़-नगर-निवासी 'गूटनवर्ग' नामक एक जर्मन ने संसार का बहुत ही अधिक उपकार किया। इसने संसार में सब से पहले धात्वीय टाइप का आविष्कार किया। यह आविष्कार शीघ्र ही सारे योरप में फैल गया। १४५५ में लैटिन-बाइबल छपी। छपते ही उसकी सहस्रों प्रतियाँ बिक गईं।

एडवर्ड चतुर्थ के समय में 'विलियम कैक्सटन' ने योरप में रहकर धात्वीय टाइप का काम सीखा। उसने १४७७ में वेस्ट-मिनिस्टर के नीचे अपना मुद्रण-यंत्रालय खोला और उसमें बहुत-सी पुस्तकें छापकर आंग्लों का बहुत बड़ा उपकार किया। गुलाब-युद्ध का समय संपूर्ण योरप के लिये आवि-ष्कार, विद्या-वृद्धि तथा उन्नति का युग था। इँगलैंड ने भी इन कार्यों में कुछ-कुछ भाग लेना प्रारंभ कर दिया था।

लंकास्टर तथा यार्क-वंश
एडवर्ड तृतीय
एडवर्ड (ब्लैकप्रिंस)
रिचर्ड द्वितीय १३७७-१३९९
लायोनल (क्लैरेंस का ड्यूक)
सीमा प्रांतीय लॉर्ड मार्टिमर (धर्म-पत्नी फिलिप्पा)
रोजर मार्टिमर (मार्च का अर्ल)
एडमंड मार्टिमर (मार्च का अर्ल)
एनी मार्टिमर
I
जोन आव् घांट (लंकास्टर का ड्यूक)
ब्लैंच (लंकास्टर)
हैनरी चतुर्थ १३९९-१४१३
हैनरी पंचम १४१३-१४२२
हैनरी षष्ठ १४२२-१४६१
कांस्टैंस
कैथराइन
हैनरी (कार्डिनल ब्यूफ़ोर्ट)
जोन ब्यूफ़ोर्ट (सोमरसट का अर्ल)
जोन (सोमरसट का ड्यूक)
मार्गरेट ब्यूफ़ोर्ट (हैनरी सप्तम की माता)
थोमास
एडमंड (यार्क का ड्यूक)
एडमंड (कैंब्रिज का अर्ल)
II
हैनरी (बकिंघम का ड्यूक)

I
एनी मार्टिमर............विवाहित............एडमंड
II
(कैंब्रिज का अर्ल)
रिचर्ड (यार्क का ड्यूक)
एडवर्ड चतुर्थ
१४६१-१४८३
ज्यार्ज
(क्लेयरंस का ड्यूक)
रिचर्ड तृतीय
१४८३-१४८५
एलिज़ाबेथ
(श्री हैनरी सप्तम)
एडवर्ड पंचम
एप्रिल से जून तक
१४८३
रिचर्ड
(यार्क का ड्यूक)

पंचम अध्याय

ट्यूडर-वंश का राज्य

(१४८५–१५५८)

प्रथम परिच्छेद

हैनरी सप्तम (१४८५–१५०६)

अल्पावस्था में ही कारागार-जीवन व्यतीत करने के कारण हैनरी सप्तम को अपनी इच्छाएँ और इंद्रियाँ वश में रखने का पर्याप्त अभ्यास था। वह शांत प्रकृति, अविश्वासी, संदिग्ध-हृदय तथा मित-भाषी था। अधिक स्वार्थी होने के कारण वह सर्व-प्रिय कभी नहीं हो सका। शत्रुओं के साथ उसका व्यवहार कठोर रहता था। अपने को उसने सारी जाति का नेता बनाने का प्रयत्न किया और इसीलिये लंकास्टर-वंशीय होते हुए भी उसने यार्क-वंशीय लेडी एलिज़ाबेथ के साथ विवाह कर लिया। ये सब बुद्धिमत्ता-पूर्ण कार्य करते हुए भी आरंभ में उसको अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा।

(१) हैनरी सप्तम तथा विद्रोह

लंकास्टर तथा यार्क-वंश की कलह एक दिन में तो

समाप्त हो ही नहीं सकती थी। हैनरी ने राज्य पर आते ही लंकास्टर-दल के लोगों को उच्च-उच्च राज्य-पद दिए और यार्क-वंशियों को कई एक विश्वास-योग्य स्थानों से हटा दिया। इससे उनका विद्रोह करने पर सन्नद्ध हो जाना स्वाभाविक ही था। लॉर्ड लावल तथा स्टफ़्फ़ोर्ड ने १४८६ में विद्रोह किया, परंतु वे कृतकार्य न हो सके।

(क) लैंबेट सिम्नल का विद्रोह (१४८७)

इँगलैंड से बाहर यार्क-दल की शक्ति बहुत अधिक थी। एडवर्ड चतुर्थ की बहन, मार्गरट का नार्थंबरलैंड में बहुत प्रभाव था। इसने हैनरी सप्तम के विरुद्ध एक षड्यंत्र रचने का प्रयत्न किया। इस कार्य में किल्डेयर के अर्ल ने इसका साथ दिया। किल्डेयर हैनरी से बहुत रुष्ट था, क्योंकि हैनरी ने उसको आयर्लैंड के शासकत्व से हटाकर 'जस्पर ट्यडर' को वहाँ का शासक नियत कर दिया था। इन विद्रोहियों की सहायता प्राप्त करके १४८७ में एक द्वादश-वर्षीय बालक आयर्लैंड पहुँचा। बालक के साथ एक पादरी था, जो यह बतलाता फिरता था कि यह बालक ही वार्विक का अर्ल, 'एडवर्ड' है। यह लंडन-टावर से भाग आया है। परिणाम यह हुआ कि 'फिट्ज़ेरल्डज' ने उसका डब्लिन में राज्याभिषेक-संस्कार किया और उसको इँगलैंड का राजा

उद्घोषित कर दिया। वास्तव में वह बालक एडवर्ड नहीं था। किंवदंती है, वह ऑक्सफ़ोर्ड के घर बनानेवाले लैंबर्ट सिम्नल का पुत्र था। जो कुछ हो, हैनरी ने वास्तविक एडवर्ड को लंडन-टावर से निकालकर जनता को दिखला दिया और एक बड़ी सेना के साथ लैंबर्ट सिम्नल को स्टोक के युद्ध में पराजित किया और उसको क़ैद करके अपना रसोइया बना लिया। हैनरी ने अपने को निःशङ्क देखकर किल्डेयर के अर्ल का अपराध भी क्षमा कर दिया।

(ख) पर्किन वार्विक का विद्रोह (१४९२)

हैनरी के शत्रुओं ने उसको कष्ट पहुँचाने के लिये एक और षड्यंत्र रचा। मार्गरट ने तूरनाई-निवासी एक युवक को बहकाया और कहा कि तू आयर्लैंड जाकर अपने को एडवर्ड चतुर्थ का कनिष्ठ पुत्र, 'रिचर्ड' प्रकट कर। मैं तेरी सहायता करूँगी और तुझको इँगलैंड का राजा बना दूँगी। उसका वास्तविक नाम पर्किन वार्विक था। उसने इस बुद्धिमत्ता से सारा काम किया कि आंग्ल-जनता उसको चिर-काल तक रिचर्ड ही समझती रही। पर्किन वार्विक ने सात वर्षों तक हैनरी को अनंत कष्ट पहुँचाया। सब से पहले उसने किल्डेयर तथा फिट्जेरल्ड से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया, परंतु जब उनसे उसको कोरा जवाब मिला, तो वह फ़्रांस के राजा के समीप गया।

चार्ल्स अष्टम ने उसको इँगलैंड का राजा मान लिया और 'ईटाप्ले' की संधि से पहले तक उसको सहायता देता रहा। सर विलियम स्टैनले ने भी उसको गुप्त रूप से सहायता पहुँचाई। स्टैनले की गुप्त कार्रवाई हैनरी को मालूम हो गई। इस पर स्टैनले को प्राण-दंड दे दिया गया। पर्किन ने कैंट तथा आयर्लैंड से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया। परंतु सब ओर से निराश होकर अंत को उसने स्कॉटलैंड के बादशाह जेम्ज़ चतुर्थ से भी सहायता की याचना की। जेम्ज़ ने उसको सहायता देने का प्रण किया और उसके साथ अपनी भतीजी का विवाह भी कर दिया। इस ख़बर को सुनते ही हैनरी के क्रोध की कोई सीमा नहीं रही। उसने जेम्ज़ को स्कॉट-लैंड पर आक्रमण करने की धमकी दी। इस पर जेम्ज़ ने भी उसका साथ छोड़ दिया। इन्हीं दिनों कार्नवाल की आंग्ल-प्रजा अधिक करों के कारण हैनरी से रुष्ट थी। 'पर्किन' ने कार्नवाल पहुँचकर हैनरी के विरुद्ध युद्ध ठान दिया। टांटन नामक स्थान पर शाही-सेना द्वारा चारों ओर से घेरे जाने पर पर्किन ने हथियार धर दिए। फिर वह लंडन-टावर में क़ैद कर दिया गया। कुछ ही दिनों बाद हैनरी ने पर्किन तथा लैंबर्ट सिम्नल को इस अपराध पर फाँसी दे दी कि ये दोनों षड्यंत्र रचकर लंडन-टावर को ही अपने हस्तगत करने का यत्न कर रहे हैं।

(२) हैनरी सप्तम की विदेशी नीति

(क) ईटाप्ले की संधि

राज्य प्राप्त करने में हैनरी को बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। स्कॉटलैंड तथा फ़्रांस की शत्रुता के कारण उसका राज्य पूर्ववत् अस्थिर ही बना रहा। फ़्रांस से अपने को बचाने के लिये उसने ब्रिटनी के शासक के साथ मित्रता कर ली। १४८८ में ब्रिटनी का शासक मर गया और उसकी कन्या एनी उसके राज्य की शासिका बनी। फ़्रांस के राजा चार्ल्स अष्टम ने एनी से विवाह करने का यत्न किया, परंतु हैनरी-समेत योरप के अन्य राजाओं ने उसके इस कार्य में विघ्न डालना चाहा। सब विघ्नों को तरते हुए चार्ल्स ने एनी के साथ विवाह कर लिया। इस पर हैनरी ने फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स ने उससे युद्ध न करके उसके साथ ईटाप्ले की संधि कर ली और उसको बहुत-सा धन भी दिया। इस संधि से हैनरी के मित्र हैनरी-से रुष्ट हो गए।

(ख) व्यापार की निकृष्ट तथा उत्कृष्ट संधि

पर्किन वार्बिक को ईटाप्ले की संधि द्वारा फ़्रांस से निकलवाकर हैनरी ने उसको फ़्लांडर्ज़ से भी निकालने का प्रयत्न किया। 'मैक्समिलियान' से उसने प्रार्थना की कि वह पर्किन को अपने देश से निकाल दे; परंतु मैक्समिलियान ने जब उसकी यह बात नहीं मानी, तो उसने

इँगलैंड का फ़्लांडर्ज़ के साथ संपूर्ण व्यापार बंद कर दिया। परिणाम यह हुआ कि हैनरी का कहना उसको मानना पड़ा। १४९६ की उत्कृष्ट संधि (Magnus Intercursus) के अनुसार फ़्लांडर्ज़ तथा इँगलैंड में व्यापार प्रारंभ हो गया और दोनों ही देशों ने एक-दूसरे के शत्रुओं को सहायता न देने का प्रण किया।

इस संधि के दस वर्ष बाद १५०६ में मैक्समिलियान के पुत्र, फिलिप का जहाज़ एक आंग्ल-बंदरगाह में आ लगा। हैनरी ने उसका बहुत अच्छी तरह सम्मान किया, परंतु उसको अपने देश लौट जाने की आज्ञा नहीं दी। लाचार होकर उसको हैनरी के कथनानुसार व्यापार की कुछ शर्तों पर हस्ताक्षर करना पड़ा। इन शर्तों से फ़्लांडर्ज़ को बहुत हानि हुई और आंग्लों को बहुत ही लाभ पहुँचा। आंग्ल-इतिहास में यह संधि 'निकृष्ट संधि' के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि फ़्लांडर्ज़-निवासी इस संधि को इसी नाम से पुकारते थे।

(ग) योरप में राष्ट्रीय शक्ति-संतुलन (Balance of Power)

हैनरी सप्तम के काल से ही योरप में राष्ट्रीय शक्ति-संतुलन की नीति का योरपियन राजों ने अवलंबन किया। इसका मुख्य कारण यही था कि उस समय योरप में कोई युद्ध नहीं हो रहे थे। प्रत्येक राजा एक-दूसरे की शक्ति-वृद्धि को तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहा था।

ब्रिटनी की विजय के अनंतर फ़्रांस के राजा चार्ल्स अष्टम ने इटली पर आक्रमण किया और १४६४ में अपने को नेपल्ज़ का राजा बना लिया। अन्य योरपियन राजे भी चुप नहीं बैठे थे। उन्होंने फ़्रांस के विरुद्ध इटली को सहायता पहुँचाई। परिणाम यह हुआ कि इटली शीघ्र ही फ़्रांस के क़ब्ज़े से निकल गया। चार्ल्स के अनंतर स्पेन के राजा, फर्दिनंद ने 'कैस्टाइन' की राज्ञी से विवाह कर लिया और संपूर्ण स्पेन एक छत्र के नीचे हो गया।

हैनरी सप्तम ने फर्दिनंद से मित्रता कर ली, क्योंकि उसको फ़्रांस से सर्वदा भय रहता था। अरागान की राज्ञी, कैथराइन से अपने पुत्र, आर्थर का विवाह करके उसने स्पेन से इँगलैंड का संबंध और भी अधिक घनिष्ठ कर दिया। विवाह के कुछ ही समय बाद आर्थर की मृत्यु हो गई। इस पर उसने अपने द्वितीय पुत्र, हैनरी के साथ कैथराइन का विवाह कर दिया।

स्कॉटलैंड के राजा, जेम्ज़ को फ़्रांस से न मिलने देना ही हैनरी सप्तम का उद्देश था। इस उद्देश की पूर्ति के लिये उसने अपनी बड़ी पुत्री, मार्गरट का जेम्ज़ के साथ विवाह कर दिया। आगे चलकर इसी वंश का एक राजा स्कॉटलैंड तथा इँगलैंड दोनों पर ही इकट्ठा राज्य करेगा और आंग्ल-जाति की एकता-वृद्धि में बड़ा भारी भाग लेगा।

(३) हैनरी सप्तम की गृह्य नीति

हैनरी सप्तम् ने देश में शांति स्थापित करने का जो निरंतर प्रयत्न किया, वह सर्वथा प्रशंसनीय था। पार्लियामेंट के नियमों के अनुसार ही उसने देश में शासन किया और १४९५ में यह नियम पास किया कि आंग्ल-राज्य-सिंहासन पर बैठे हुए राजा की आज्ञा पालन करनेवाला कोई भी व्यक्ति देश-द्रोही नहीं कहलाएगा, चाहे वह राजा राज्य का वास्तविक अधिकारी न हो।

कैंटर्बरी के आर्च-बिशप, 'मार्टन' ने हैनरी को धनाभाव की चिंता कभी नहीं होने दी। इसने नियम-भंग किए बिना ही बीसों तरीक़ों से प्रजा से रुपया प्राप्त किया। इसकी मृत्यु के अनंतर एडमंड डड्ले तथा रिचर्ड एम्पसन ने इसकी कमी को पूरा कर दिया और कृपण-से-कृपण व्यक्तियों की जेबों से राजा के लिये रुपया निकाला।

लॉर्डों के पास बहुत-से नौकर रहते थे, जो समय-कुसमय सैनिक का काम भी दे देते थे। ये नौकर आंग्ल-प्रजा को सताते थे। उन पर अभियोग चलाना प्रजा के लिये निरर्थक था, क्योंकि लॉर्ड लोग उनका पक्ष लेकर न्यायाधीशों के द्वारा उनको छुड़ा देते थे। इस दूषण को दूर करने के लिये हैनरी ने एक नवीन न्यायालय बनाया,

जिसमें बड़े-बड़े योग्य व्यक्तियों को न्यायाधीश नियत किया । कुछ समय बाद इसी न्यायालय से स्टार-चैंबर (Star Chamber) नामक संस्था का उदय होगा, जिसका उल्लेख आगे चलकर किया जायगा ।

हैनरी ने आयलैंड में पायनिङ् को भेजकर आयलैंड की स्वतंत्रता नष्ट करने में बड़ा भारी भाग लिया । पायनिङ् ने वहाँ आंग्ल-नियम प्रचलित कर दिए और आयरिश पार्लियामेंट को आंग्ल-पार्लियामेंट के अधीन कर दिया । १५०६ में हैनरी का स्वर्गवास हो गया । उसके राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४८५	हैनरी सप्तम का राज्याधिरोहण
१४८७	लैंबर्ट सिम्नल का विद्रोह
१४६२	ईटाप्ले की संधि । पर्किन वार्विक का विद्रोह
१४६४	पायनिङ् के राज्य-नियम
१४६६	व्यापार की उत्कृष्ट संधि
१४६६	पार्किन तथा सिम्नल की फाँसी
१५०३	मार्गरट के साथ जेम्ज़ का विवाह
१५०६	हैनरी सप्तम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

हैनरी सप्तम के समय में इँगलैंड की दशा

(१) राजनैतिक दशा

हैनरी सप्तम के समय से इँगलैंड के इतिहास में एक नवीन काल प्रारंभ होता है। अतः यह आवश्यक प्रतीत होता है कि हैनरी सप्तम के समय में पार्लियामेंट की क्या नीति थी, इसको स्पष्ट कर दिया जाय। हैनरी सप्तम को राज्य प्राप्त करते ही निम्न-लिखित पाँच प्रण करने पड़े—

(१) वह पार्लियामेंट के सभ्यों (बड़े-बड़े लॉर्ड्ज़, पादरी, ग्राम, नगर तथा मंडलों के प्रतिनिधि, साधारण जनों के प्रतिनिधि) की अनुमति के बिना आंग्ल-प्रजा पर किसी प्रकार का भी राज्य-कर नहीं लगावेगा।

(२) पार्लियामेंट की स्वीकृति के बिना वह कोई भी नवीन राज्य-नियम नहीं बनावेगा।

(३) वारंट के बिना किसी भी आंग्ल को वह क़ैद नहीं करेगा और साथ ही क़ैद में पड़े हुए व्यक्ति के अपराध का शीघ्र ही निर्णय करेगा।

(४) राजकीय न्यायालय में ही फ़ौजदारी मुक़दमों का निर्णय होना चाहिए। यदि कार्य-वशात् वहाँ पर ऐसा नहीं किया जा सके, तो उस मुक़दमे का निर्णय

१२ साक्षियों के द्वारा वहाँ पर ही किया जाना चाहिए, जहाँ पर अपराधी ने अपराध किया हो।

(४) राज्याधिकारियों पर न्यायालय में अभियोग चलाया जा सकता है। उनके छुड़ाने में राजा को किसी प्रकार का भी प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

इन शर्तों पर चलने का प्रण करके भी हैनरी ने प्रजा से खूब रुपया वसूल किया। किंवदंती है, वह राज्य-कोष में १८,००,००० पाउंड धन छोड़कर मरा था। हैनरी सप्तम ने बुद्धिमत्ता से राज्य-नियमों पर चलते हुए भी स्वेच्छाचारित्व को प्राप्त किया। पादरियों की शक्ति नष्ट करने के लिये उसने यह नियम बनाया कि 'सर्व-प्रकाशित पापमय जीवनवाले पादरियों पर अभियोग चलाया जा सकता है। अपराध के सिद्ध होने पर बड़ा पादरी उसको क़ैद तक दे सकता है।' हैनरी अष्टम के काल में पादरियों की शक्ति सर्वथा नष्ट हो जायगी, जिसका विस्तृत वर्णन आगे किया जायगा।

(२) सामाजिक अवस्था

बहुत-से ऐतिहासिकों की सम्मति है कि हैनरी सप्तम के समय में इँगलैंड की संपत्ति पहले की अपेक्षा बढ़ रही थी और वह दिन-पर-दिन समृद्ध हो रहा था। तो भी इँगलैंड की जन-संख्या संतोषप्रद नहीं थी। 'वैनी-शियन' ने लिखा है कि "डोवर से ऑक्सफ़ोर्ड तक

जाते हुए संपूर्ण प्रदेश निर्जन प्रतीत होता है । कहीं पर भी जनता की कोई भी घनी बस्ती दृष्टिगोचर नहीं होती। दक्षिण के ही सदृश इँगलैंड के उत्तर की भी अवस्था है। संपूर्ण इँगलैंड में ४० लाख से अधिक मनुष्य नहीं हैं।" बहुत-से राज्य-नियमों के देखने से भी 'वैनीशियन' का कथन सत्य प्रतीत होता है । 'आइल ऑफ़ वाइट' (Isle of Wight) में जहाँ पहले २०० मनुष्य रहते थे, वहाँ हैनरी सप्तम के समय में केवल दो या तीन गड़रिए ही झोपड़ी डाले दिखाई पड़ते थे। जन-संख्या की इस भयंकर कमी का मुख्य कारण इँगलैंड से कृषि का नाश हो जाना ही कहा जा सकता है। ऊन का व्यापार बढ़ने से उसका मूल्य पूर्वापेक्षा अधिक हो गया था। आंग्ल-जनता को कृषि की अपेक्षा ऊन उत्पन्न करने में अधिक लाभ था। परिणाम यह हुआ कि कृषि की भूमि चरागाहों में परिवर्तित हो गई और कृषकों ने गड़रियों का रूप धारण कर लिया। महाशय मोर ने अपने आलंकारिक शब्दों में इसी घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है—

"हे परमात्मन्, मैं आपकी शपथ खाकर कहता हूँ, आपकी भोली-भाली, नम्र, मिताशी भेड़ें आज कल बहुत अधिक खानेवाली हो गई हैं। उन्होंने इँगलैंड के बहुत-से मनुष्यों को—खेत, मकान तथा नगरों को चर डाला है।"

इसमें संदेह करना भी वृथा है कि ऊन के व्यापार से आंग्ल-जनता खूब समृद्ध हो गई थी। चाँदी प्राप्त करने की इच्छा उनमें दिन-पर-दिन बढ़ती जाती थी। एक यात्री का कथन है—

"इँगलैंड में ऐसा भठियारा एक भी न होगा (चाहे वह कितना ही दरिद्र तथा दुरवस्था में क्यों न हो), जिसके गृह में चाँदी की थाली तथा प्याले विद्यमान न हों। इसका मुख्य कारण यह है कि आंग्ल-जनता उसको किसी भी हैसियत का नहीं समझती, जिसके गृह में चाँदी के बर्तन न हों। ....लंडन में सब से अधिक दर्शनीय वस्तु चाँदी की राशि ही है।"

हैनरी के समय में व्याज पर उधार रुपया लेकर व्यापार-व्यवसाय करना आंग्लों के लिये साधारण-सी बात थी। साथ ही उन दिनों आंग्लों का यह विश्वास था कि "समृद्ध तथा धनाढ्य बनने का एक ही मार्ग है कि दूसरे देशों से सोना और चांदी प्राप्त की जायँ और अपने देश से इनको बाहर नहीं जाने दिया जाय।" इस विश्वास की भयंकरता का अनुमान इसीसे लगा लेना चाहिए कि आंग्ल-राज्य अक्सर अपने अधिकारियों द्वारा विदेशियों की संपत्ति लुटवा लेता था। एक बार ईरासमस-जैसे विद्वान् के साथ भी ऐसा ही क्रूर कर्म किया गया था।

हैनरी के समय में राज्य ही बहुत-से पदार्थों का मूल्य नियत करता था। यह होते हुए भी पदार्थों का मूल्य अधिक होता था। कई पदार्थों का १६ पेंस उत्पत्ति-व्यय (cost of production) होते हुए भी उनका मूल्य ३ शिलिंग तक था। ५० वर्ष तक राज्य ने श्रमियों की 'भृति' (wages) नियत करने का भी प्रयत्न किया, परंतु यह नियम चल न सका। १४९५ में इस प्रकार के प्रयत्नों का करना राज्य ने छोड़ दिया। हैनरी के समय में राज्य-नियम बहुत ही कठोर थे। मोर का कथन है कि 'साधारण-से-साधारण अपराध पर श्रमियों के साथ दासों के सदृश ही व्यवहार किया जाता था। उनको क़ैद में डालकर कष्ट देना तो साधारण-सी बात थी।'

ट्यूडर-काल तक आंग्लों का आचार बहुत निकृष्ट था। ईरासमस का कथन है कि "आंग्लों-जैसे चोर तथा डाकू कदाचित् ही किसी देश में हों, क्योंकि इँगलैंड में इस बात का बाज़ार सदा गरम रहता है। भयंकर-से-भयंकर पापों की संख्या बहुत थी।" ईरासमस के सदृश ही एक दूसरे यात्री का कथन है कि "संसार में ऐसा कोई ही देश होगा, जिसमें इतने चोर तथा लुटेरे हों, जितने कि इँगलैंड में हैं।" हैनरी सप्तम के काल में शराब, पासे तथा ताशों का घर-घर प्रचार था। लोगों में भारी अज्ञानता फैली

हुई थी। विद्वत्ता का सब से मुख्य चिह्न बाइबिल की एक पंक्ति का बाँच लेना था।

सदाचार के सदृश ही स्वच्छता से भी आंग्ल-जनता दूर भागती थी। १६ वीं सदी के स्वेदक रोग (Sweating sickness) तथा १७ वीं सदी के प्लेग का बहुत कुछ संबंध आंग्लों की अस्वच्छता के साथ ही था। उनके गृह इस प्रकार बने हुए थे कि उनमें वात का प्रवेश सर्वथा असंभव था। ईरासमस ने लिखा है कि "आंग्ल अपने गृहों में एक भी वातायन नहीं रखते। जब मैं ३० वर्ष से कुछ कम आयु का था, तब मैं यदि किसी आंग्ल के गृह में सोता था, तो मुझे ज्वर से संतप्त होना पड़ता था।" महाशय राटर्डम का कथन है कि "इँगलैंड में मकानों के फ़र्श कच्ची ज़मीन के और छतें फूस की हैं। समय-समय पर इन मकानों पर फूस की नई छतें भी डाली जाती हैं, परंतु पुरानी छतों को हटाया नहीं जाता और यह दशा प्रायः २० वर्ष तक चली जाती है।" गृहों के सदृश ही आंग्लों के भोजन के विषय में उल्लिखित यात्री का कथन है कि "बहुत ही अच्छा होता, यदि ये लोग इतनी अधिक शराब न पीते और नमक डालकर सुखाए हुए पुराने मांस की जगह ताज़ा मांस ही खाते।"

हैनरी सप्तम के समय में आंग्लों में वर्तमान काल के

सदृश ही सहभोजों का प्रचार था। वैनीशियन ने अपनी पुस्तक में एक सहभोज का वर्णन किया है, जिसमें एक सहस्र मनुष्य समुपस्थित थे। साथ ही वह कहता है कि इस सहभोज में आंग्लों का शांति तथा नियम से बैठना प्रशंसा के योग्य था। इतने बड़े-बड़े सहभोजों का मुख्य कारण आंग्लों का यह विश्वास था कि किसी मनुष्य का सब से अधिक मान इसी में है कि उसको सहभोज दे दिया जाय।

आंग्लों की जाति तथा मातृ-भूमि की प्रीति के विषय में ईरासमस ने लिखा है कि "आंग्ल अपनी जाति तथा मातृ-भूमि के परम भक्त थे। उनको अपने देश की प्रत्येक वस्तु प्रिय थी।" इसी प्रकार वैनीशियन की सम्मति है कि "आंग्ल समझते हैं कि संसार में उनके सिवा और कोई मनुष्य ही नहीं रहते और इँगलैंड के सिवा अन्य कोई देश ही नहीं है और जब कभी आंग्ल किसी सुंदराकृति विदेशी को देखते हैं, तो कहते हैं कि यह तो आंग्ल मालूम पड़ता है।"

(३) विद्योन्नति

ट्यूडर-काल योरपीय संसार के लिये बहुत प्रसिद्ध काल है। 'पृथ्वी गोल है', इसका ज्ञान प्राप्त होते ही योरपीय जनता में भयंकर आक्रांति उत्पन्न हो गई। नवीन-नवीन देशों का ज्ञान प्राप्त किया गया, जिनमें से कुछ के नाम ये हैं—

(१) केप ऑफ़ गुडहोप

(२) कोलंबस ने अमेरिका का ज्ञान प्राप्त किया

(३) पुर्तगालवालों ने भारतवर्ष को ढूँढ़ निकाला

(४) 'सिबैस्टियन कैबट' ने आइसबर्ग तक अपने जहाज़ पहुँचाए

इस प्रकार संसार के भिन्न-भिन्न देशों तथा धर्मों के ज्ञान से योरप में हलचल मच गई। भिन्न-भिन्न सामुद्रिक यात्रियों के वृत्तांत की पुस्तकें प्रत्येक मनुष्य के हाथ में दिखाई देने लगीं। इन्हीं दिनों तुर्कों ने कांस्टैंटिनोप्ल पर आक्रमण किया और उसको अपने हस्तगत कर लिया। यूनानी विद्वान् कांस्टैंटिनोप्ल से भागकर इटली तथा संपूर्ण योरप में फैल गए। इटली ने यूनानी विद्वानों का पूर्ण स्वागत किया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में फ़्लारंस ने विद्यापीठ का रूप धारण कर लिया। होमर की कविता, सोफ़ाक्लीज़ के नाटक, अरस्तू और प्लेटो के दर्शन पुनः जीवित हो गए। फ़्लारंस की संपूर्ण शक्ति विद्या-वृद्धि में लग गई। यूनान की प्राचीन पुस्तकें और स्मारकों के क्रय-विक्रय ने फ़्लारंस में पूर्ण प्रबलता प्राप्त की। योरपीय जनता अल्प्स के शिखर को पार करके यूनानी भाषा पढ़ने के लिये फ़्लारंस में एकत्र होने लगी। 'ग्रासिन' नामक आंग्ल भी फ़्लारंस में पढ़ने गया। वहाँ से पढ़कर लौटते ही उसने ऑक्सफ़ोर्ड में

उपाध्याय का पद ग्रहण किया। इन्हीं दिनों ऑक्सफ़ोर्ड के एक छात्र, 'लिनैक्रिन' ने फ़्लारंस से विद्या प्राप्त करके 'गैलन' की आयुर्वेद की पुस्तक का आंग्ल-भाषा में अनुवाद किया।

महाशय कोलट ने भी अन्य आंग्लों के ही सदृश यूनानी तथा लातीनी भाषा का अध्ययन किया। यह धार्मिक मनुष्य था। अतः इसने यूनानी भाषा के सहारे ईसाइयों की धार्मिक पुस्तकों के रहस्य का उद्भेदन किया और पादरियों के भ्रमिक विश्वासों को दूर करने का प्रयत्न करने लगा। कोलट के सदृश ही ईरासमस नामक एक विद्वान् भी ईसाई-धर्म के अनुशीलन में दत्तचित्त था। विद्वत्ता में यह लूथर से दूसरे नंबर पर ही गिना जाता है। यह कोलट को अपना गुरु समझता था। कोलट के विषय में इसका कथन है कि "कोलट द्वारा ऑक्सफ़ोर्ड में ही मैंने इतनी विद्या प्राप्त कर ली है कि अब मुझको इटली जाने की इच्छा नहीं रही। जब मैं अपने मित्र कोलट के व्याख्यान सुनता हूँ, तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैं प्लेटो से पढ़ रहा हूँ।"

विद्या की यह उन्नति ऑक्सफ़ोर्ड की चार-दिवारी तक ही परिमित थी, ऐसा कहना साहस मात्र है। संपूर्ण योरप में मुद्रणालयों की संख्या दिन-पर-दिन बढ़ रही थी। १५ वीं सदी के अंतिम तीस वर्षों में कई पुस्तकों

के अनेक एडीशन निकल चुके थे। योरपीय जनता की आँखें दिन-पर-दिन खुलती जाती थीं। उनको कार्य करने के लिये एक विस्तृत क्षेत्र दिखलाई देने लगा। शीघ्र ही विज्ञान, दर्शन, साहित्य तथा राज-नीति में योरपीय जनता ने उन्नति करनी प्रारंभ कर दी।

इँगलैंड के विद्या-प्रचार में पादरियों ने जो भाग लिया, वह सर्वथा सराहनीय था। विंचस्टर के बिशप, 'लैंगटन' ने तथा कैंटबरी के आर्च-बिशप, वारहम ने आंग्लों का विद्या के प्रति प्रेम बढ़ाया और उनको विदेश जाकर शिक्षा प्राप्त करने के लिये उत्साहित किया। वारहम के विषय में किंवदंती है कि वह दिन-भर एकांत में बैठकर विद्याभ्यास किया करता था। कभी-कभी किसी विद्वान् का आगमन ही उसके मौन-व्रत को भंग कर दिया करता था। विद्वानों से वार्तालाप करने में उसकी रुचि अत्यधिक थी। दरिद्र विद्यार्थियों की वह हर वक़्त धन द्वारा सहायता किया करता था। ईरासमस को भी इसी ने अक्सर धन-संबंधी सहायता पहुँचाई थी।

हैनरी सप्तम के काल में राज्य की सहायता प्राप्त न होने के कारण इँगलैंड में विद्या-विस्तार की गति अति प्रबल नहीं हो सकी। एंपसन तथा डड्ले के अत्याचारों तथा रुपया चूसने के कार्य ने भी आंग्लों में विद्या-वृद्धि को बहुत रोका। सारांश यह कि हैनरी सप्तम के काल में

'विद्योन्नति' अंकुरावस्था में ही थी, जिसका विकाश राजा की विशेष सहायता न होने के कारण सर्वथा रुका हुआ था *।

तृतीय परिच्छेद

हैनरी अष्टम तथा वूल्ज़े (१५०६–१५२६)

अठारह वर्ष की आयु में हैनरी अष्टम राज्य-सिंहासन पर बैठा। ईसाई-साम्राज्य में हैनरी सुंदरता में एक ही था। वह टेनिस तथा शिकार खेलने में बहुत चतुर था, बहुत-सी भाषाएँ जानता था और विद्या का बहुत ही प्रेमी था। प्रसन्न-चित्त तथा हास्य-प्रिय होने के कारण वह धनियों और निर्धनियों का समान-रूप से प्रेम-पात्र था। उसके अंग-अंग से राज-भाव टपकता था। वह अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने में दृढ़-निश्चय था। बात की बात में ही दूसरों को परख लेता था। इसने अपने मंत्रियों को बड़ी सावधानी के साथ नियत किया था और उनसे काम भी पूरा-पूरा लेता था। अपने जीवन के अंतिम दिनों में वह कठोर-प्रकृति तथा क्रूर हो गया था।

---

* Historians' History of the World Vol. XIX. England. (1485-1642). Chapt. I.

राज्य पर बैठते ही इसने अपने पिता के भूतपूर्व मंत्री, एंपसन तथा डड्ले को क़ैद में डाल दिया। ऐसा करने का मुख्य कारण हैनरी ने उनका प्रजा से रुपया चूसना ही प्रकट किया। हैनरी के इस कार्य से प्रजा उससे बहुत प्रसन्न हो गई। एंपसन तथा डड्ले के अतिरिक्त अन्य सब उच्च राज्याधिकारी अपने-अपने पदों पर ही स्थिर रहे। हैनरी के सौभाग्य से उसको वूल्ज़े नामक एक बहुत योग्य व्यक्ति चांसलर के पद के लिये मिल गया। चांसलर नियत होने से पहले यह यार्क का आर्च-बिशप था। नीति-निपुण तथा अथक परिश्रमी होने के कारण इसने इँगलैंड की उन्नति में बड़ा भारी भाग लिया। हैनरी अष्टम का आरंभिक इतिहास वास्तव में वूल्ज़े का ही इतिहास है।

(१) हैनरी अष्टम तथा योरपीय शक्ति-संतुलन

हैनरी सप्तम के काल में योरपीय राज-नीति में इँगलैंड का बहुत प्रवेश नहीं था। वूल्ज़े ने अपनी अपूर्व नीति से योरपीय राज-नीति में इँगलैंड को जो उच्च पद दिलाया, उसका अब उल्लेख किया जायगा। हैनरी के राज्य पर बैठते ही, 'वीनस' को नष्ट करने के उद्देश से, उत्तरीय इटली का राजा लूइस और नेपल्ज़ का राजा फर्दिनंद परस्पर मिल गए। सम्राट् मैक्समिलियान ने इन दोनों राजों का साथ दिया। इस प्रकार संपूर्ण योरप की मुख्य-

मुख्य शक्तियाँ वीनस के अधःपतन में प्रयत्न करने लगीं। वीनस के राज-नीतिज्ञ भी शांत नहीं थे। कई वर्षों के लगातार परिश्रम के अनंतर १५११ में उन्होंने कैम्ब्रे के संघटन को तोड़ दिया और फर्दिनंद, मैक्समिलियान तथा पोप को अपने साथ मिला लिया और इस संघटन को 'पवित्र संघटन' (Holy League) का नाम दिया। वीनस के राज-नीतिज्ञों की चतुरता से फ़्रांस निस्सहाय हो गया। फ़्रांस को नीचा दिखाने के लिये इँगलैंड ने भी 'पवित्र संघटन' का ही साथ दिया। वूल्ज़े ने अथक श्रम से सेना तथा रुपया एकत्र किया और वह फ़्रांस पर आक्रमण करने का अवसर देखने लगा।

१५१२ में संपूर्ण योरप युद्ध की रंग-भूमि हो गया। हैनरी ने भी स्पेन के उत्तर में फ़्रांस के प्रदेश को जीतने के लिये मार्किस डोर्सेट् के आधिपत्य में सेना भेजी, परंतु उसका कुछ भी फल न निकला। १५१३ में वूल्ज़े तथा हैनरी आंग्ल-सेना लेकर स्वयं ही फ़्रांस गए। इन्होंने एड़ी के युद्ध (Battle of the Spurs) में फ़्रांसीसी सेना को पराजित किया और थिरान तथा तूर्नाई के नगर अपने हस्तगत कर लिए। इसी समय फर्दिनंद, नाबर तथा पोप के संघटन ने मीलान नगर को फ़्रांस से छीन लिया।

आंग्लों से अपना पीछा छुड़ाने के लिये फ़्रांस ने स्कॉटलैंड को भड़का दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि हैनरी

अष्टम का साला होते हुए भी जेम्ज़ चतुर्थ ने इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया और बहुत-से आंग्ल-दुर्गों को अपने हस्तगत कर लिया। इस विपत्काल में सर्रे के अर्ल ने एक आंग्ल-सेना के साथ स्कॉटलैंड के राजा को आगे बढ़ने से रोकना चाहा। 'फ़्लाडन-क्षेत्र' पर एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें जेम्ज़ चतुर्थ ससैन्य मारा गया। इस महान् वीरतामय कार्य के लिये हैनरी ने सर्रे को नार्फ़ाक का ड्यूक बना दिया।

फ़्लाडन-क्षेत्र के युद्ध के अनंतर स्कॉटलैंड का शासन मार्गरट ट्यूडर करती रही। इसने हैनरी अष्टम के साथ मित्रता का व्यवहार रक्खा। इन्हीं दिनों पोप जूलियस द्वितीय स्वर्ग-वासी हो गया था और 'लियो-दशम' पोप बन गया था। यह युद्ध के विशेष पक्ष में न था। फ़्रांस का राजा लूइस द्वादश वृद्ध था। यह अपने अंतिम दिन शांति में ही काटना चाहता था। परिणाम यह हुआ कि १५१४ में इँगलैंड ने फ़्रांस से संधि कर ली। हैनरी ने अपनी छोटी बहन, मैरी का लूइस से विवाह कर दिया।

सात वर्ष तक योरप तथा इँगलैंड में शांति रही। इसके अनंतर सम्राट् 'चार्ल्स' ने योरप में अनंत शक्ति प्राप्त कर ली। स्पेन, नीदरलैंड तथा जर्मनी आदि के राज्य इसी के एकमात्र शासन में आ गए।

जर्मनी　　　　　　　　स्पेन

फर्दिनंद+स्त्री ईस्वैला (कैस्टाइल की शासिका)

मैक्समिलियान+स्त्री मेरी (बर्गंडी की शासिका)

आर्चं ड्यूक फ़िलिप+स्त्री जौना　　कैथराइन (स्त्री हैनरी अष्टम)

चार्ल्स पंचम

चार्ल्स पंचम को मैक्समिलियान की मृत्यु होने पर जर्मनी और फर्दिनंद की मृत्यु होने पर स्पेन प्राप्त हुए। नीदरलैंड का प्रदेश उसका था ही। फ्रांस का राजा फ्रांसिस प्रथम इस प्रबल सम्राट् के विरुद्ध इँगलैंड की सहायता प्राप्त करना चाहता था। चार्ल्स पंचम भी हैनरी से मित्रता का व्यवहार रखने का इच्छुक था। नीति-निपुण वूल्ज़े ने दोनों ही राजों को खूब छकाया। फ्रांसिस ने हैनरी का बालाग्न के समीप खूब स्वागत किया। जिस स्थान पर स्वागत किया गया था, वह अपनी चमक-दमक के कारण 'स्वर्ण-वस्त्रीय क्षेत्र' के नाम से पुकारा जाता है।

योरपीय शक्ति-संतुलन की नीति चिर-काल तक नहीं चल सकी। वूल्ज़े की इच्छा न होते हुए भी हैनरी ने लोभ-वश चार्ल्स का साथ दे दिया और फ्रांस लूटने का अवसर देखने लगा। १५२१ से १५२६ तक चार्ल्स तथा

फ़्रांसिस में भयंकर युद्ध होता रहा । १५२५ में फ़्रांसीसी अश्वारोही अल्प्स को पार करके मीलान-विजय के लिये रवाना हुए । अभी मीलान की विजय पूर्ण नहीं हुई थी कि फ़्रांसिस 'पेविया' में चार्ल्स के हाथ क़ैद हो गया । इस घटना के होते ही वूल्ज़े ने हैनरी को चार्ल्स के विरुद्ध हो जाने की सलाह दी, क्योंकि यदि वह ऐसा न करता तो चार्ल्स इँगलैंड पर भी आक्रमण कर सकता था । हैनरी ने वूल्ज़े का कहना मान लिया और फ़्रांस से मित्रता कर ली । १५२६ में चार्ल्स ने फ़्रांसिस को क़ैद से मुक्त कर दिया । इटली के राजों ने तथा पोप ने फ़्रांसिस का साथ दिया और पवित्र संघटन के सदृश ही एक संघटन बनाया ।

चार्ल्स की शक्ति भी अपरिमित थी । इन सब संघटनों के होते हुए भी उसने रोम जीत लिया और पोप को क़ैद कर लिया । इस घटना से संपूर्ण योरप में तहलका मच गया । परंतु कोई कर ही क्या सकता था ? १५२६ में फ़्रांसिस ने चार्ल्स को इटली का स्वामी मान लिया और कैंब्रे की संधि के द्वारा उसने युद्ध बंद कर दिया ।

(२) इँगलैंड की अंतरीय अवस्था

हैनरी अष्टम के स्वेच्छाचारित्व तथा वूल्ज़े के महत्त्व से बहुत-से नोबल्ज़ रुष्ट थे । इन असंतोषियों का मुखिया बकिंघम का डयूक, एडवर्ड था । यह मूर्ख, स्वार्थी तथा

अभिमानी था। राजा के विषय में इसके मन में जो कुछ आता था, बक देता था। १५२१ में हैनरी ने इसे सहसा पकड़वा लिया और देश-द्रोह का अपराध लगाकर इसको फाँसी पर चढ़ा दिया। इस घटना से नोबल लोगों में हैनरी का आतंक छा गया और किसी ने भी उसके विरुद्ध चूँ करने का साहस नहीं किया। फ़्रांसीसी युद्ध में धन अधिक व्यय हो जाने के कारण राज्य-कोष धन-शून्य हो गया था। १५१२ की पार्लियामेंट ने उसको यथेष्ट धन दे दिया। इसका कारण यह था कि लोक-सभा को बने अभी थोड़े ही दिन हुए थे, अतः वह राजा के पक्ष में ही थी। १५२२ तथा १५२३ में राजा को और अधिक रुपयों की आवश्यकता हुई, परंतु पार्लियामेंट ने उसको यथेष्ट रुपया नहीं दिया। इससे क्रुद्ध होकर उसने अगले छः वर्ष तक पार्लियामेंट का अधिवेशन ही नहीं किया।

धन की अधिक आवश्यकता के कारण १५२५ में हैनरी तथा वूल्ज़े ने प्रत्येक आंग्ल से उसकी आय का $\frac{1}{6}$ भाग ऋण के तौर पर लेना प्रारंभ किया। इस प्रकार के ऋणों को रिचर्ड तृतीय के काल में ही नियम-विरुद्ध ठहरा दिया गया था। हैनरी ने अपनी धूर्तता से संपूर्ण दोष वूल्ज़े पर ही थोप दिया। इससे नोबल लोगों के सदृश ही प्रजा भी वूल्ज़े से रुष्ट हो गई।

(क) विद्योन्नति

हैनरी अष्टम का समय संपूर्ण योरप के लिये विद्योन्नति का समय था। मुद्रणालयों के आविष्कार से पुस्तकों का मूल्य पूर्वापेक्षा बहुत कम हो गया था। यूनान पर तुर्कों के आक्रमण से यूनानी कला-कौशल ने योरप में प्रवेश किया। इससे संपूर्ण योरप में विद्या का प्रचार हो गया और योरपीय जनता भी सभ्यता की ओर शीघ्रता से पग धरने लगी।

मतों का संबंध बहुत कुछ अंध-श्रद्धा से होता है। विद्या द्वारा अंध-श्रद्धा का नाश होता है और वास्तविक सत्य सम्मुख उपस्थित हो जाता है। विद्या के प्रवेश करते ही संपूर्ण योरप में प्राचीन चर्च का अधःपतन प्रारंभ हो गया। पादरियों तथा पोप का धार्मिक एकाधिकार नष्ट हो गया और नव-शिक्षितों ने चर्च के सिद्धांतों पर आक्रमण करना प्रारंभ कर दिया।

जोन्ह काले ने इँगलैंड में विद्योन्नति के लिये जो कुछ किया था, उसका उल्लेख किया जा चुका है। हैनरी अष्टम के काल में ईरासमस तथा सर टॉमस मोर अपनी विद्वत्ता के लिये बहुत प्रसिद्ध थे।

मोर की युटोपिया (स्वर्गीय राज्य) नामक संसार-प्रसिद्ध पुस्तक १५१५ में लैटिन में प्रकाशित हुई। इसमें इँगलैंड की दुरवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया

था। मोर समष्टि-वादी (Socialist) था। उसको राजा तथा नोबल लोगों के अत्याचारों से अति घृणा थी। आंग्ल-भूमियों का चरागाहों में परिवर्तित होना भी उसको सह्य नहीं था। कृषि से भूमियों के छूटने से कृषक-जनता बेकार थी और डाका मारना ही अपना धर्म समझती थी।

हैनरी तथा वूल्ज़े को मोर के विचारों के साथ विशेष सहमति नहीं थी। अतः उन्होंने इँगलैंड की दुरवस्था को दूर करने का कोई यत्न नहीं किया। वूल्ज़े को विद्या से प्रेम था, अतः उसने ऑक्सफ़ोर्ड में कार्डिनल कॉलेज तथा इप्स्विच में नोबल लोगों का एक स्कूल खोला।

(ख) धर्मोन्नति

योरप में यूनानी विद्या के प्रवेश करते ही धर्म में परिवर्तन प्रारंभ हो गए। जोन्ह काले ने इँगलैंड में जो कुछ धार्मिक परिवर्तन किया था, उसका उल्लेख किया जा चुका है। जर्मनी में 'मार्टिन लूथर' ने चर्च को सुधारने का यत्न किया और अपने यत्न में वह बहुत कुछ सफल भी हुआ। इसके अनुयायियों को प्रोटेस्टैंट्स (Protestants) के नाम से पुकारते हैं। स्विज़लैंड में ज़िंवग्ली तथा फ़्रांस में जोन काल्विन ने धर्म-परिवर्तन में बड़ा भारी भाग लिया।

हैनरी अष्टम को अपनी विद्या का अभिमान था। उसने लैटिन में पोप के पक्ष में एक पुस्तक लिखी। इस

पुस्तकको देखकर पोप ने हैनरी को धर्म-रक्षक (Defender of the Faith) की उपाधि दी। योरप के अन्य देशों में जिस शीघ्रता से धार्मिक परिवर्तन हो रहा था, इँगलैंड ने उसमें भाग नहीं लिया । इँगलैंड तो पूर्ववत् धीरे-धीरे उन्नति करता हुआ चिर-काल में अपने आप ही प्रोटेस्टैंट-मत में परिवर्तित हो गया।

(ग) कैथराइन का तलाक़ और वूल्ज़े का अधःपतन

'कैथराइन' हैनरी से पाँच वर्ष बड़ी थी। इसकी सब संतान मर चुकी थीं—केवल 'मेरी' नाम की एक कन्या ही अवशिष्ट थी । हैनरी को पुत्र की इच्छा थी। अतः वह कैथराइन को तलाक़ देकर 'एनी बोलीन' से विवाह करना चाहता था । मध्य-काल में योरपीय देशों में तलाक़ की विधि प्रचलित नहीं थी। १५२७ में हैनरी ने पोप क्लिमंट सप्तम से प्रार्थना की कि वह उसको कैथराइन के तलाक़ की आज्ञा दे दे। पोप ने इस कार्य में टाल-मटोल करनी प्रारंभ की । अंत को हैनरी ने तंग आकर 'एनी बोलीन' से विवाह कर लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया । वूल्ज़े इस विवाह का विरोधी था, अतः हैनरी ने उसको चांसलर-पद से हटा दिया और उसकी बहुत-सी संपत्ति भी छीन ली । वूल्ज़े ने राजा को प्रण दिया कि वह यार्क में रहते हुए शांति से अपने अंतिम दिन व्यतीत करना चाहता है। यार्क में पहुँचकर

उसने अपना प्रण तोड़ दिया और चांसलर बनने का पुनः प्रयत्न किया। इससे हैनरी ने उस पर 'देश-द्रोह' का दोष लगाया और उसको लंडन में उपस्थित होने की आज्ञा दी। लंडन को जाते हुए स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण १५३० के नवंबर में, लीसस्टर के गिरजा-घर में, वूल्ज़े का देहांत हो गया और उसके देहांत के साथ ही हैनरी के राज्य का अर्ध भाग भी समाप्त हो गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५०९	हैनरी अष्टम का राज्याधिरोहण
१५११	पवित्र संघटन (The Holy League)
१५१३	एड़ी तथा फ़्लाडन-क्षेत्र का युद्ध
१५१५	युटोपिया-नामक ग्रंथ का मुद्रण
१५१७	जर्मनी में धार्मिक परिवर्तन का आरंभ
१५१९	चार्ल्स पंचम सम्राट् बना
१५२१-१५२५	फ़्रांस से युद्ध
१५२५	बकिंघम का अधःपतन
१५२५	पेविया का युद्ध
१५२७	कैथराइन को तलाक़ देने के लिये हैनरी का पोप से पूछना
१५२९	वूल्ज़े का अधःपतन

चतुर्थ परिच्छेद

हैनरी अष्टम और धर्म-सुधार

वूल्ज़े के देहांत के अनंतर भी हैनरी के सिर पर कैथराइन के तलाक़ का भूत पूर्ववत् ही चढ़ा रहा। पोप को अपने पक्ष में करने के लिये उसने फ़्रांस के राजा फ़्रांसिस से मित्रता करने का प्रयत्न किया। परंतु जब इस कार्य में वह कृतकार्य नहीं हुआ, तो उसने योरपीय चर्चों से तलाक़ के औचित्य तथा अनौचित्य का निर्णय करवाया। जर्मनी के चर्चों ने हैनरी के विरुद्ध सम्मति दी और पोप ने भी उसका पक्ष नहीं लिया। इस कठिन दशा में उसने आंग्ल-पार्लियामेंट तथा चर्च की धार्मिक सभा का अधिवेशन किया। उसने दोनों ही सभाओं में परस्पर कलह करवाना चाहा, परंतु इस कार्य में भी वह निष्फल-प्रयत्न हुआ।

(१) हैनरी का स्वेच्छाचारित्व

टामस क्रांबल एक लोहार का पुत्र था। इसने अथक परिश्रम से बड़ी उन्नति कर ली और वूल्ज़े का अंत तक साथ दिया। अतः संपूर्ण आंग्ल-जनता इसको विश्वास-पात्र और स्वामि-भक्त सेवक समझती थी। एक दिन एकांत में बातें करते हुए हैनरी को इसने सलाह दी कि आप स्वयं शक्ति प्राप्त कीजिए और कैथराइन को तलाक़ दे दीजिए। क्रांबल की यह बात हैनरी की

समझ में आ गई। इसके अनंतर इसी को लक्ष्य बनाकर हैनरी ने कार्य प्रारंभ किया। उसने पार्लियामेंट में बहुत-से नियमों को पास करवाकर अपने को स्वेच्छा-चारी बना लिया। एक ही पार्लियामेंट १५२६ से १५३६ तक लगातार बैठती रही। पार्लियामेंट की प्रथम बैठक के समय इँगलैंड पुराना था और अंतिम बैठक के समय नवीन हो गया। यह महान् क्रांति कैसे आ गई, अब इसी का उल्लेख किया जायगा।

आरंभ में हैनरी ने 'प्रिमुनियर' के नियम पर पार्लियामेंट का ध्यान खींचा और पादरियों से कहा कि तुमने वूल्ज़े को पोप का प्रतिनिधि मानकर एडवर्ड तृतीय के राज्य-नियम को भंग किया है। इस पर पादरी लोग डर गए और उन्होंने उसको बहुत-सा रुपया जुर्माने के तौर पर दिया। इस पर ही बस न करके हैनरी ने अपने को आंग्ल-चर्च का मुखिया (Supremehead of the English Church) नियत करवाया।

आंग्ल-चर्च का स्वामी बनते ही उसने पोप को धमकाना शुरू किया और उसके विरुद्ध बहुत-से नियम पास करवाए। उसने १५३२ में राज्य-नियम के द्वारा पादरियों की प्रथम आय को पोप के स्थान पर स्वयं लेना आरंभ किया। यही नहीं, १५३३ में अपील-नियम (Act of Appeals) के द्वारा उसने संपूर्ण आंग्ल-अभियोगों का

पोप के पास निर्णयार्थ भेजना 'देश-द्रोह' ठहराया। इसी प्रकार १५३४ में मुख्यत्व-नियम (Act of Supremacy) के अनुसार पोप को मुखिया मानना भी देश-द्रोह में सम्मिलित हो गया। यह स्पष्ट ही है कि इन नियमों को पास करवाकर हैनरी कैसा स्वेच्छाचारी हो गया।

वूल्ज़े की मृत्यु के अनंतर आर्च-बिशप के पद पर टामस क्रैनमर नियत किया गया। यह बहुत विद्वान् था। हठी न होने के कारण प्रायः अपनी सम्मति बदल देता और दूसरे के कहने के अनुसार चलने लगता था। पोप से अपनी इच्छा पूर्ण होते न देखकर हैनरी ने 'एनी बोलीन' से चुपचाप विवाह कर लिया, कैथराइन को तलाक़ दे दी और आर्च-बिशप को इस बात पर विवश किया कि वह कैथराइन के तलाक़ को चर्च-सभा द्वारा नियमानुकूल ठहरा दे। चर्च-सभा को भी कैथराइन के तलाक़ को उचित ठहराना पड़ा, क्योंकि ऐसा न करने से बचने का उसके पास और उपाय ही कौन-सा था? यह सारा मामला पोप के पास ले जाया ही नहीं जा सकता था और जो ऐसा करता भी, उसको अपील-नियम के अनुसार फाँसी पर चढ़ना पड़ता। वास्तविक बात तो यह थी कि हैनरी ने अपनी चतुरता से आंग्ल-चर्च को रोम से सर्वदा के लिये पृथक् कर दिया और पोप की शक्ति स्वयं प्राप्त करके स्वेच्छाचारी बन गया।

(२) हैनरी का धर्म-परिवर्तन

हैनरी के ऊपर-लिखे स्वेच्छा-पूर्ण कार्यों से कुछ आंग्ल-विद्वान् असंतुष्ट थे। जोन फ़िशर तथा सर टामस मूर इन असंतोषियों के प्रधान थे। १५३३ के अंत में एनी बोलीन के 'एलिज़बेथ' नामक एक कन्या उत्पन्न हुई। इस कन्या को आंग्ल-रानी बनाने के उद्देश से हैनरी ने १५३४ में 'उत्तराधिकारित्व-नियम' (Act of Succession) पास करवाया और एलिज़बेथ को राज्य-नियम द्वारा आंग्ल-चर्च का मुखिया तथा आंग्ल-राज्य का वास्तविक अधिकारी नियत किया। यही नहीं, उसने एक नवीन राज-द्रोह-नियम (Treason Act) पास किया, जिसके अनुसार राजा तथा उसकी उपाधियों का अपलाप करनेवाले को मृत्यु-दंड दिया जा सकता था। मोर तथा फ़िशर ने इन नियमों का विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि इन दोनों को ही फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

हैनरी को रुपयों की आवश्यकता थी। गिरजा-घरों की संपत्ति लूटकर उसने रुपया प्राप्त करने का यत्न किया। इस उद्देश की पूर्ति के लिये उसने टामस क्रांबल को अपना विकार जेनरल नियत किया। उन दिनों आंग्ल-विहारों में बहुत-सी बुराइयाँ विद्यमान थीं। भिक्षु तथा भिक्षुनियों के कुमारी रहने के कारण व्यभिचार की कमी नहीं थी। १५३५ में क्रांबल ने इन विहारों

की आंतरिक अवस्था का पता लगाने के लिये बहुत-से राज्याधिकारी भेजे। उनकी सारी सूचनाएँ १५३६ की पार्लियामेंट में पेश की गईं। इस पर पार्लियामेंट ने २०० पाउंड से न्यून वार्षिक आयवाले विहारों को तोड़ना पास कर दिया। साथ ही उसने यह भी स्वीकृत किया कि टूटे हुए विहारों की संपत्ति राजा की ही संपत्ति समझी जाय।

छोटे-छोटे विहारों का नाश होते देख आंग्ल-जनता में असंतोष फैल गया। लिंकनशायर तथा यार्कशायर में विद्रोह हो गया। इस विद्रोह को आंग्ल-इतिहास में पिलिग्रमेज ऑफ़ ग्रेस (The pilgrimage of Grace) के नाम से पुकारते हैं। हैनरी ने नार्फ़ाक के ड्यूक को विद्रोह शांत करने के लिये भेजा। उसने विद्रोहियों को समझा-बुझाकर शांत किया और उनको वचन दिया कि तुम्हारी प्रार्थनाओं को राजा मान लेगा। ड्यूक के चले जाने पर अपनी इच्छाएँ पूर्ण होते न देखकर विद्रोहियों ने पुनः विद्रोह कर दिया। हैनरी ने सेना भेजकर विद्रोह शांत किया और विद्रोहियों के नेताओं को मरवा डाला। उत्तर में पुनः विद्रोह न हो, इस उद्देश से उत्तरी प्रांतों के निरीक्षणार्थ उसने 'उत्तरी समिति' (Council of North) नाम की एक समिति स्थापित कर दी, जो विद्रोहों को शांत करती रहे।

उत्तरी विद्रोह के अनंतर हैनरी ने बड़े-बड़े विहारों तथा गिरजा-घरों को भी तोड़ना प्रारंभ किया। इस कार्य में उसने बहुत-से उपायों का सहारा लिया। कभी-कभी वह किसी पादरी पर उत्तरी विद्रोह में सम्मिलित होने का दोष लगाता और उसके विहार को तोड़ देता था। कभी-कभी कुछ विहारों की संपत्ति इस अपराध पर भी लूट लेता था कि वे धूर्तता करके जनता के रुपए लूटते हैं।

राजा की धार्मिक विषयों में श्रद्धा न देखकर क्रैनमर तथा क्रांबल ने प्रोटेस्टेंट-धर्मावलंबियों को ही शनैः-शनैः संपूर्ण चर्चों का मुखिया बनाना प्रारंभ किया। 'नवीन बाइबिल' को चर्चों में प्रचलित करने के लिये उन्होंने हैनरी से आज्ञा निकलवा दी। इन सब सुधारों के कारण जनता में भयंकर असंतोष फैल गया। १५३६ की पार्लियामेंट में हैनरी ने यह अधिकार प्राप्त कर लिया कि उसकी आज्ञाएँ भी राज्य-नियम ही समझी जायँ। आश्चर्य की बात है कि उसने उसी पार्लियामेंट से धर्म-संबंधी छः धाराएँ * (Six Articles,

* छः धाराएँ निम्न-लिखित हैं—

(१) लॉर्ड्ज़ सपर में मांस-शराब खाना ईसा का मांस तथा रक्त है।

(२) पादरियों का गुप्त रूप से स्वापराध स्वीकृत करना ठीक है।

Statute) पास करवाईं, जिनका मानना संपूर्ण जनता के लिये आवश्यक था। ये धाराएँ प्रोटेस्टेंट-मत के विरुद्ध थीं। परिणाम यह हुआ कि प्रोटेस्टेंटों से क़ैदख़ाने भर गए। लैटिमर ने अपने को बिशप-पद से हटा लिया। भावी भयंकर विपत्ति को आता देखकर क्रैनमर ने भी अपना परिवार जर्मनी भेज दिया।

(३) हैनरी के विवाह तथा राज्य-प्रबंध

(क) विवाह

एनी बोलीन के भी एक कन्या के अतिरिक्त कोई पुत्र नहीं हुआ। हैनरी को पुत्र की इच्छा थी। १५३६ में हैनरी ने एनी बोलीन पर व्यभिचार का दोष लगाया और शीघ्र ही उसको फाँसी पर चढ़ा दिया। उसके अगले ही दिन उसने लेडी जेन सीमोर से विवाह कर लिया। रानी जेन के १५३७ में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। परंतु पुत्र की उत्पत्ति के बाद ही वह मर गई। पुत्रोत्पत्ति से पूर्व ही मैरी के ही सदृश एलिज़बेथ भी कामज ठहरा दी गई थी। हैनरी के नवीन धर्मावलंबी हो जाने से चार्ल्स

---

(३) पादरी लोग ब्रह्मचारी रहें।

(४) व्रतों को रखना चाहिए।

(५) निज का पूजा-पाठ करना आवश्यक है।

(६) पादरियों के लिये परस्पर मिलकर धर्म पर विचार करना आवश्यक है।

तथा फ़्रांसिस पोप की सहायता से इँगलैंड पर आक्रमण करना चाहते थे। उसको इस महा संघटन से बचाने के लिये क्रांबल ने जर्मन राजकुमारों से मित्रता कर लेने की सलाह दी और उसका एक जर्मन राजकुमारी 'एनी' से विवाह भी कर दिया। एनी बद-सूरत थी तथा आंग्ल-भाषा को समझती न थी। अतः इस विवाह से हैनरी असंतुष्ट हो गया। उसने क्रांबल को फाँसी पर चढ़ा दिया और क्रांबल की फाँसी के अगले ही दिन कैथराइन हार्वर्ड से विवाह भी कर लिया। १५४२ में इसके भी अधः-पतन की बारी आई और कैथराइन पार को हैनरी से विवाह करने का अवसर मिला। यह अतिशय बुद्धिमती थी। राजनैतिक मामलों में इसने हस्तक्षेप नहीं किया और इसीलिये हैनरी के जीवन-पर्यंत इसका अधःपतन नहीं हुआ।

(ख) राज्य-प्रबंध

जब तक स्कॉटलैंड का शासन उसकी बहन मार्गरेट के हाथ में रहा, तब तक हैनरी को उस ओर से कोई कष्ट नहीं मिला। कुछ वर्षों के अनंतर उसका पुत्र जेम्ज़ पंचम युवावस्था को प्राप्त करके राज्य पर बैठा। यह फ़्रांसीसियों का मित्र था। अतः इसने इँगलैंड पर आक्र-मण किया, परंतु १५४२ में 'साल्वेमास की लड़ाई' में मारा गया। जेम्ज़ के 'मैरी' नाम की एक कन्या थी।

हैनरी अष्टम ने मैरी का विवाह अपने पुत्र से करना चाहा और उसके लिये युक्तियाँ सोचने लगा।

स्कॉटलैंड के विद्वेष के समय फ़्रांस ने भी उसको बहुत कष्ट दिया। १५४४ में उसने चार्ल्स पंचम से मित्रता करके फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया और 'बालागन' को हस्तगत कर लिया। इसके छुड़ाने के लिये फ़्रांस ने बहुत ही यत्न किया, परंतु कृतकार्य नहीं हो सका।

हैनरी के राज्य-काल में आयर्लैंड पर भिन्न-भिन्न नार्मन-बैरनों का प्रभुत्व था। ये लोग आंग्ल-राजा को अपनी शक्ति तथा राज्य देने में सहमत नहीं थे। जब हैनरी ने इनके अधिकारों को छीनने का यत्न किया, तो इन्होंने १५३५ में विद्रोह कर दिया। उसने विद्रोह को शीघ्र ही शांत कर दिया और नार्मन-बैरनों को आंग्ल-राजा को ही अपना राजा मानने के लिये विवश किया। इस कार्य के अनंतर उसने अपने नाम के साथ 'आयर्लैंड का राजा' यह शब्द भी जोड़ना प्रारंभ कर दिया। वेल्ज़ के मामले में तो वह आयर्लैंड की अपेक्षा अधिकतर सफल नहीं हुआ। उसने वेल्ज़ के शासन के लिये 'वेल्ज़-सभा-' (Council of Wales) नामक सभा नियत की और उत्तम प्रबंध करने के उद्देश से उसको १३ मंडलों में विभक्त कर दिया। आज कल अन्य आंग्ल-प्रदेशों के ही सदृश वेल्ज़ के भी प्रतिनिधि आंग्ल-पार्लियामेंट में आते हैं।

हैनरी का स्वास्थ्य कुछ समय से दिन-पर-दिन अधिक ख़राब हो रहा था। १५४७ में उसका देहांत हो गया। उसके राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५२६	धर्म-सुधार-संबंधी पार्लियामेंट के अधिवेशन का प्रारंभ
१५३३	अपील-नियम (Act of Appeals)
१५३४	मुख्यत्व-नियम (Act of Supremacy)
१५३५	फ़िशर तथा मोर की हत्या
१५३६	छोटे-छोटे गिरजा-घरों तथा विहारों का नाश
१५३६	बड़े-बड़े गिरजा-घरों का नाश तथा छः धाराओं का नियम
१५४०	क्रांबेल की हत्या
१५४२	साल्वेमास का युद्ध
१५४४	बालागन की विजय
१५४७	हेनरी अष्टम की मृत्यु

पंचम परिच्छेद

एडवर्ड षष्ठ (१५४७–१५५३)

हैनरी अष्टम का लड़का एडवर्ड षष्ठ दस ही वर्ष का था,

जब उसके पिता की मृत्यु हो गई। छोटी उमर के कारण वह राज्य-कार्य सँभालने के अयोग्य था। हैनरी अपने मरने से पहले ही एक संरक्षक-सभा (Council of Regency) बना गया था। उसने संरक्षक-सभा में प्राचीन तथा नवीन धर्म के अनुयायियों को समान संख्या में रक्खा था। यह इसीलिये कि कोई दल प्रबल होकर दूसरे दल पर अत्याचार न कर सके। हैनरी के मरने के बाद संरक्षक-सभा का नेता सोमर्सट् का ड्यूक, हर्टफ़ोर्ड बना। यह धार्मिक संशोधनों के पक्ष में था। इसका प्रबंध बहुत उत्तम नहीं था। इसी कारण कुछ मामलों में इँगलैंड को नीचा देखना पड़ा।

(१) सोमर्सट् का राज्य-प्रबंध

सोमर्सट् अतीव दयालु स्वभाव का तथा बोलचाल में मीठा था। उसकी वीरता में भी किसी को कुछ संदेह न था। वह नवीन धर्म का प्रचार बहुत अधिक चाहता था। हैनरी अष्टम के समान वह शांतिप्रिय था। उसको विदेशीय राष्ट्रों से युद्ध करना नापसंद था। यह होते हुए भी उसमें कुछ दोष थे। वह निर्बल-हृदय, हठी और अदूरदर्शी था। उसको इस बात का कुछ भी विवेक न था कि कौन-सा काम हो सकता है, और कौन-सा काम नहीं हो सकता। यही कारण है कि तीन ही वर्ष के बाद उसको संरक्षक-सभा से हटना पड़ा। १५५२ में वह मार भी डाला गया।

स्कॉट्लैंड का आक्रमण (१५४७)—हैनरी अष्टम मरने से पूर्व ही फ़्रांस तथा स्कॉट्लैंड से संधि कर चुका था। कुछ एक घटनाओं ने सोमर्सट् को स्कॉट्लैंड से लड़ने के लिये बाधित किया। स्काच्-रानी, मैरी के संरक्षकों में से एक संरक्षक ने स्काच्-प्रोटेस्टेंटों पर भयंकर अत्याचार किया। इससे स्काच् लोगों ने विद्रोह कर दिया। विद्रोहियों को कैथोलिक संरक्षक ने बुरी तरह से पराजित किया। इस पर उन्होंने सोमर्सट् से सहायता माँगी। सोमर्सट् एडवर्ड षष्ठ का विवाह स्काच्-मैरी से करना चाहता था। यह इसीलिये कि दोनों ही देश एक दूसरे से मिल जायँ।

इस उद्देश्य से सोमर्सट् ने स्कॉट्लैंड पर चढ़ाई की और पिंकी नामक स्थान पर स्काच्-सेनाओं को बुरी तरह से पराजित किया। स्कॉट्लैंड को उसने ख़ूब लूटा और प्रजा को भी कष्ट पहुँचाया। इससे स्काच्-जनता उससे बहुत ही अधिक नाराज़ हो गई।

पिंकी के संग्राम के बाद ही सोमर्सट् को कुछ एक कारणों से इँगलैंड को लौटना पड़ा। स्काच्-जनता ने आंग्लों को तंग करने और चिढ़ाने के लिये स्काच् मैरी का विवाह फ़्रांस के राजकुमार से तय कर लिया। वहाँ पर ही उसकी शिक्षा हुई। वह कैथोलिक धर्म की अनन्य भक्त हो गई।

फ़्रांसीसियों ने स्काच् लोगों का साथ दिया। उन्होंने

बालागन पर आक्रमण कर दिया। आंग्ल-सेनाओं ने बड़ी मुश्किल से बालागन की रक्षा की। सोमर्सट् के अधःपतन के अनंतर एक संधि के द्वारा इँगलैंड ने बालागन फ़्रांसीसियों को दे दिया।

(२) सोमर्सट् के धार्मिक सुधार

सोमर्सट् ने नए धर्म के फैलाने का बहुत ही अधिक यत्न किया। वह इसको इँगलैंड का राजधर्म बनाना चाहता था। लोक-सभा के अधिवेशन से पूर्व ही आंग्ल-भाषा के द्वारा राजकीय चर्च में प्रार्थना की जाने लगी। सारे देश में राज-कर्मचारी भेजे गए। इन्होंने गिरजों की मूर्तियाँ तोड़ डालीं। सारी-की-सारी खिड़कियों के वे शीशे तोड़ डाले गए, जिन पर संतों-महंतों की तसवीरें बनी हुई थीं। गार्डिनर तथा बानर-नामक बिशपों ने इस बात का विरोध किया। उन्होंने कहा कि ऐसा करने के लिये लोक-सभा की आज्ञा की ज़रूरत है। इस पर उनको क़ैद कर लिया गया। नवीन लोक-सभा से सोमर्सट् ने कई बातें पास करवा लीं—

(१) हैनरी अष्टम ने नवीन धर्म के विरुद्ध जो राज्य-नियम बनाए थे, उनको रद करवा दिया।

(२) छः धाराओं का राज्य-नियम हटा दिया।

(३) उन मठों तथा विहारों को गिरा दिया, जिनको हैनरी अष्टम ने नहीं गिराया था।

(४) गिरजों की अंध रीति-रसमें भी हटाई गईं। पादरियों को विवाह करने की आज्ञा दे दी गई। ख़ास-ख़ास दिनों में मांस खाना बंद था। सो यह नियम भी हटा दिया गया।

(५) एडवर्ड की प्रथम प्रार्थना-पुस्तक १५४९ में प्रचलित की गई। सब गिरजों में यही एक पुस्तक पढ़ी जाने लगी। इससे पहले गिरजों में भिन्न-भिन्न प्रार्थनाएँ होती थीं। क्रैंमर ने ही इस पुस्तक को तैयार किया था। इस काम में उसकी सफलता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसकी पुस्तक को सभी क्रिश्चियनों ने मंजूर कर लिया। उसकी भाषा बहुत ही मधुर है। इस पुस्तक को सभी गिरजों में समान रूप से प्रचलित करने के लिये 'समानता का नियम' (Act of Uniformity) पास किया गया। जिन-जिन पादरियों ने इस नियम को न माना, वे क़ैद कर लिए गए।

उपर-लिखे धार्मिक परिवर्तनों से आंग्ल-जनता नाराज़ हो गई, क्योंकि सुधारों की भी कोई हद होती है। सोमर्सट् ने इसी हद को पार कर दिया। इसका फल उसके लिये अच्छा न हुआ। साधारण आंग्ल-जनता नवीन सुधारों के बहुत पक्ष में नहीं थी। डेवनशायर के एक गाँव में जब आंग्ल-भाषा की प्रार्थना-पुस्तक चर्च

में पढ़ी गई, तो लोगों ने पुस्तक को लैटिन-भाषा में पढ़ने के लिये पादरियों को वाधित किया। ऐन ऐसे ही समय में सोमर्सट् ने मूर्खता से गिरजों की कुछ जायदाद अपने निजी काम में लगाई। साथ ही एक श्मशान-भूमि को उजाड़कर और उसकी हड्डियाँ निकालकर दूर फिकवा दीं और वहाँ पर उसने एक महल बनवाया। इस पर दो प्रांतों के लोगों ने विद्रोह कर दिया। विद्रोह को बड़ी कठिनाई से शांत किया गया।

१५४९ में नार्फ़ोक में विद्रोह हो गया। इस विद्रोह का कर्ता-धर्ता राबर्ट कैट नामक एक रँगसाज़ था। इस विद्रोह के बहुत-से कारण थे, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(१) ज़मींदारों ने ऊन के व्यापार में अधिक लाभ देखकर खेतों को चरागाह बना दिया था और मुख्य रूप से भेड़ों को ही पालना शुरू कर दिया था। ग़रीब किसान तथा असामी भूख के मारे इधर-उधर बेकार फिर रहे थे।

(२) मोर की युटोपिया-नामक पुस्तक से आंग्लों की आँखें खुल गई थीं। वे लोग ज़मींदारों की बुराइयाँ देखने और उसके प्रतिकार का उपाय सोचने लगे।

(३) सोमर्सट् ने बहुत धार्मिक संशोधन कर दिए थे।

वार्विक के समीप, ओक-वृक्ष के नीचे, राबर्ट कैट ने अपना दरबार लगाया। उस दरबार में धार्मिक

संशोधनों पर विचार किया गया और राज्य से प्रार्थना की गई कि उनकी इच्छा पूरी की जाय । बहुत दिनों तक राबर्ट कैट के साथी नियमपूर्वक डेरा डाले पड़े रहे । निदान जब राज्य ने उचित उत्तर न दिया, तो नार्विक को उसने फ़तह कर लिया । शाही सेनाओं ने उसको हराना चाहा, परंतु वे आप ही बुरी तरह से हारीं । इस पर कुप्रसिद्ध डड्ले के लड़के, डड्ले ने जर्मन तथा इटैलियन सिपाहियों के सहारे कैट को परास्त किया । कैट क़ैद करके मरवा डाला गया । इस विजय से डड्ले आंग्ल-जनता का प्रिय बन गया और सोमर्सट् का स्थान लेने का यत्न करने लगा ।

सोमर्सट् का भाई, टामस सीमोर लोभी, मूर्ख और जल्दबाज़ था । वह सामुद्रिक सेनापति था । इस पद से संतुष्ट न होकर उसने अपने भाई के विरुद्ध गुप्त मंत्रणा शुरू कर दी । इस गुप्त मंत्रणा का भेद लोक-सभा पर खुल गया । लोक-सभा ने उसको क़ैद करके मरवा डाला । आंग्ल-जनता में डड्ले ने यह फैला दिया कि इस हत्या में सोमर्सट् का ही मुख्य भाग है । इस बात के साथ-साथ निम्न-लिखित और बातें भी थीं, जिससे सोमर्सट् को संरक्षक-सभा से हटना पड़ा—

(१) सोमर्सट् प्रजा का पक्ष लेता था, अतः ज़मींदार और ताल्लुक़ेदार लोग उससे सख़्त नाराज़ थे ।

(२) उसने धार्मिक संशोधनों में अति कर दी। लोग अभी बहुत ही अधिक संशोधनों के लिये तैयार न थे।

(३) उसने हैनरी अष्टम के बनाए हुए ताल्लुक़ेदारों के अधिकारों को कम कर दिया।

(४) स्काच्-रानी, मैरी फ़्रांस में रहने लगी। एडवर्ड का उसके साथ विवाह न तय हो सका। इस पर आंग्ल-जनता सोमर्सट् से नाराज़ हो गई।

(५) वह ताल्लुक़ेदार लोगों की कुछ भी परवाह न करता था। उनसे उसका व्यवहार भी अच्छा न था। शक्ति प्राप्त करके वह अभिमानी हो गया था।

(६) चर्चों, मठों और कॉलेजों के गिरवाने से पादरी लोग सोमर्सट् से बहुत ही जल-भुन गए थे।

(७) वह फ़्रांस के साथ इँगलैंड की मित्रता न करा सका।

इन ऊपर-लिखे कारणों से चतुर डड्ले को सोमर्सट् को नीचा दिखाने का मौक़ा मिल गया। उसने संरक्षक-सभा के सभ्यों को अपने पक्ष में कर लिया और सोमर्सट् को प्रधान पद से हटवाकर वह आप संरक्षक-सभा का प्रधान बन गया।

(३) डड्ले का राज्य-प्रबंध तथा धार्मिक संशोधन

सोमर्सट् को संरक्षक-सभा ने लंडन-टावर में क़ैद कर दिया। तीन महीने के बाद लोक-सभा ने उसको क़ैद से

छोड़ दिया और संरक्षक-सभा का सभ्य भी बना दिया। इस पर डड्ले ने उसको १५५२ में मरवा डाला।

डड्ले ने फ्रांस को बालागन का शहर देकर संधि कर ली। उसकी इच्छा थी कि फ्रांसीसी राज-पुत्री का विवाह एडवर्ड के साथ हो जाय। परंतु उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हुई।

पुराने धर्मवालों का ख़याल था कि डड्ले उनके पक्ष में होगा। गार्डिनर तथा बोनर ने प्रार्थना की कि उनको क़ैद से छोड़ दिया जाय। परंतु डड्ले ने उनकी प्रार्थना पर कान तक न दिया। उसका ख़याल था कि नवीन धर्म का पक्ष न लेने से नए लार्ड उसका साथ छोड़ देंगे। यही कारण है कि १५४९ की लोक-सभा में उसने सब से पहला राज्य-नियम यही बनवाया कि गिरजों की मूर्तियों को तोड़ दिया जाय। पादरी हीद, डे तथा अन्य कई एक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पादरियों को क़ैद कर लिया गया, क्योंकि ये लोग पुराने धर्म को मानते थे।

गिरजों की जायदाद को लूटने का काम पहले ही की तरह जारी रहा। बहुत-से पुराने पादरियों को हटा दिया और उनके स्थान पर नए पादरियों को रक्खा गया। ऑक्सफ़ोर्ड तथा कैंब्रिज के कॉलेजों को तोड़ देने की धमकी दी गई।

राजपुत्री, मेरी को आज्ञा दी गई कि वह रोमन् कैथोलिक

मत के अनुसार पूजा-पाठ न करे। इस पर उसने उत्तर दिया कि जब तक मेरा भाई नाबालिग़ है, तब तक मैं किसी की भी आज्ञा को न मानूँगी। स्पेन के सम्राट् चार्ल्स ने मेरी का पक्ष लिया। आंग्ल-दूत को नए ढंग से पूजा-पाठ करने से रोका और इँगलैंड पर हमला करने की तैयारी करने लगा।

इँगलैंड में नवीन-धर्मावलंबियों का ही ज़ोर था। क्रैनमर, रिड्ले, हड्ले आदि लोग नवीन-धर्म फैलाने को ही उत्सुक थे। उन्होंने प्रथम प्रार्थना-पुस्तक का संशोधन करके द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक को तैयार किया। १५५२ में लोक-सभा ने द्वितीय पुस्तक को स्वीकृत कर लिया। जो प्रोटेस्टेंट इसके विरुद्ध थे, उनको दबाया गया। इसी वर्ष एक और 'नवीन समानता-नियम' पास किया गया, जिसके अनुसार उन मनुष्यों को दंड देना था, जो द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक का विरोध करते।

महाशय क्रैनमर ने ४२ नियम बनाए, जिनका मानना सब प्रोटेस्टेंटों के लिये आवश्यक था। १५५३ में इन ४२ नियमों पर चलना सब आंग्लों के लिये आवश्यक ठहराया गया। इन नियमों का आधार लूथर के विचार थे।

(४) नार्थंबरलैंड का राज्य के लिये यत्न

हड्ले अर्ल-ऑफ़-वार्विक तो पहले से ही था। अब संरक्षक-सभा का प्रधान बनने से वह ड्यूक ऑफ़ नार्थं-

बरलैंड भी बना दिया गया। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि हैनरी अष्टम के दो लड़कियाँ थीं—(१) मैरी, (२) एलिज़बेथ। हैनरी की वसीयत के अनुसार एडवर्ड षष्ठ के निःसंतान ही मर जाने पर क्रमशः मैरी तथा एलिज़बेथ को इँगलैंड का राज्य मिलना चाहिए था और एलिज़बेथ के बाद हैनरी की बहन, मार्गरेट की लड़की, मैरी स्टीवार्ट और उसके न होने पर लेडी जेन ग्रे इँगलैंड के राज्य की उत्तराधिकारिणी थीं।

डड्ले एडवर्ड के बाद लेडी जेन ग्रे को राज्य पर बैठाना चाहता था। इसने एडवर्ड से कहा कि यदि तुम्हारे पिता ने अपनी इच्छा से वसीयत की है, तो एक वसीयत तुम भी कर सकते हो। मैरी कैथोलिक है। उसका इँगलैंड की रानी बनना ठीक नहीं है। अतः लेडी जेन ग्रे को ही तुम्हारे बाद आंग्ल-राज्य पर बैठना चाहिए।

चतुर डड्ले ने संरक्षक-सभा के प्रत्येक सभ्य को तथा क्रैनमर को अपनी सम्मति के अनुकूल कर लिया। वह लोक-सभा से भी यही बात मनवा लेता, परंतु छठी जुलाई को एडवर्ड का तपेदिक़ की बीमारी से शरीरांत हो गया। दो दिन तक उसकी मृत्यु छिपाई गई। १० तारीख़ को लेडी जेन ग्रे इँगलैंड की रानी घोषित कर दी गई।

एडवर्ड के समय में योरपीय राष्ट्र नए-नए देशों का पता लगाने की फ़िक्र में थे। उनकी देखा-देखी बिलग्बी-

नामक एक आंग्ल ने भी रूस तक के सामुद्रिक मार्ग का पता लगाया। इसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५४७	एडवर्ड का राज्याधिरोहण, पिंकी का संग्राम
१५४९	प्रथम प्रार्थना-पुस्तक, डेवन्शायर तथा नार्फ़ाक का विद्रोह
१५५२	द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक। सोमर्सेट् का क़तल किया जाना
१५५३	एडवर्ड छठे की मृत्यु

षष्ठ परिच्छेद

मेरी (१५५३–१५५८)

सफ़ोक तथा नार्थंबरलैंड की चालाकी से एडवर्ड ने अपनी मृत्यु से पूर्व ही लेडी जेन ग्रे को इँगलैंड की रानी के तौर पर मान लिया था। तो भी आंग्ल-जनता इस बात के लिये तैयार न थी। जेन ग्रे बहुत ही पढ़ी-लिखी थी। यूनानी, लातीनी तथा इटालियन भाषा की वह पंडिता थी। यहूदी, चाल्डियन तथा अरबी भाषा को भी वह

समझती थी। वह बहुत ही धर्मात्मा और कोमल स्वभाव की थी। वह माता-पिता की आज्ञा पर चलना अपना परम कर्तव्य समझती थी। अपने श्वशुर तथा पिता का कहना मानकर वह इँगलैंड की रानी बनी। परंतु उन दोनों ड्यूकों का आंग्ल-जनता में आदर न था। यही कारण है कि लोगों ने जेन ग्रे को अपनी रानी न माना। वह १० दिन तक ही राज्य कर सकी। इसके बाद मैरी ट्यूडर आंग्ल-रानी बनी। नार्थंबरलैंड जेन ग्रे को रानी बनाने के अपराध में क़ैद कर लिया गया।

(१) मैरी का कैथोलिक मत के प्रचार में यत्न

मैरी कैथोलिक थी। अतः वह अपने पिता तथा भाई के धार्मिक सुधारों पर पानी फेरना चाहती थी। राज्य पर बैठते ही उसने नार्फ़ाक, गार्डिनर बानर आदि बिशपों को क़ैद से मुक्त किया। लेडी जेन ग्रे तथा उसके पति को उसने क़ैद में डाल दिया। प्रोटेस्टेंट-बिशपों को इँगलैंड से बाहर निकाल दिया तथा और भी बहुत-से इसी प्रकार के काम किए, जो इस प्रकार हैं—

(१) बहुत-से पुराने चर्चों में पुरानी रीति-रिवाज के अनुसार पूजा-पाठ शुरू हो गया।

(२) क्रैनमर तथा लैटिमर को लंडन-टावर में क़ैद किया गया।

(३) नवंबर में पार्लियामेंट का अधिवेशन हुआ।

उसमें एडवर्ड षष्ठ तथा हैनरी अष्टम के धार्मिक संशोधन-संबंधी सभी राज्य-नियम हटा दिए गए।

(४) कार्डिनल पोल पोप के प्रतिनिधि के तौर पर इँगलैंड पहुँचा। क्रैनमर के क़ैद होने पर यही आर्च-बिशप बन गया।

(५) हैनरी अष्टम के समय में पोप के विरुद्ध जो-जो राज्य-नियम बने थे, वे रद कर दिए गए।

लोक-सभा की इच्छा थी कि मैरी किसी आंग्ल-नोबल के साथ ही शादी करे। परंतु चार्ल्स पंचम के समझाने पर उसने स्पेन के राजा, फ़िलिप से शादी करना मंजूर किया। फ़िलिप मैरी से ११ साल छोटा था। वह पक्का कैथोलिक था। १५५४ के जनवरी में मैरी ने फिलिप के साथ विवाह पक्का कर लिया। इससे आंग्ल लोग चिढ़ गए। सर टामस याट के नेतृत्व में कैंट के लोगों ने विद्रोह कर दिया। बड़ी मुश्किल से मैरी ने इस विद्रोह को शांत किया। उसने लेडी एलिज़बेथ को क़ैद कर दिया और टामस याट को फाँसी पर चढ़ा दिया। फाँसी पर चढ़ते समय याट ने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि एलिज़बेथ का कुछ भी अपराध नहीं है, उसको तो क़ैद से छोड़ देना चाहिए। इस पर मैरी ने एलिज़बेथ को क़ैद से मुक्त कर दिया। इसके अनंतर एलिज़बेथ ने मैरी की खूब सेवा-सुश्रूषा करनी शुरू की और उसके साथ चर्च में भी जाने लगी।

(२) मैरी का प्रोटेस्टेंट लोगों को जीते-जी जलाना

फिलिप तथा मैरी ने आपस में मिलकर प्रोटेस्टेंट लोगों को सताना शुरू किया । ४ फ़रवरी, १५५५ से लेकर १० नवंबर, १५५८ तक २८० मनुष्य जलाए गए । इन लोगों के जलाने से भी प्रोटेस्टेंट-मत का प्रचार इँगलैंड में नहीं रुका ।

राजर्स—राजर्स सेंटपाल के गिरजे का पादरी था । उसके एक स्त्री तथा १० लड़के थे । अपने धर्म से विचलित हो जाना उसके लिये स्वाभाविक बात थी । परंतु वह धर्म से विचलित न हुआ । जब उसकी चिता जलाई गई, तब उसने कहा कि ईसा के सिद्धांतों की सचाई में मैं अपने जीवन को सानंद समर्पित करता हूँ ।

हूपर—यह ग्लैडसस्टर का बिशप था । जब इसको चिता पर जलाने लगे, तब इसके सामने स्टूल पर रानी मैरी का क्षमा-पत्र रक्खा गया, जिसमें लिखा था कि यदि तुम अपना धर्म छोड़ दो, तो तुमको रानी क्षमा कर देगी । ऐसे विकट समय में भी यह अपने धर्म पर दृढ़ रहा । इसने स्टूल को उठा ले जाने के लिये कहा और जल मरा । इसको जलाते समय रोमन्-कैथोलिक लोगों ने बड़ी क्रूरता दिखाई । लकड़ियों में बहुत धीरे-धीरे आग लगाई गई । पूरे पौन घंटे के बाद उसकी जान निकली ।

टेलर—आग में जलाने से पहले टेलर के सिर में जलती

लकड़ी मारी गई । उसके माथे से खून की नदी बहने लगी। इस कष्ट में उसने बाइबिल के भजनों को पढ़ना शुरू किया । इस पर कैथोलिकों ने उसको बहुत मारा-पीटा। उसने आकाश की ओर देखकर प्रार्थना करना शुरू किया। अंत में पुराने धर्मवालों ने इसको जान से मार डाला।

रिड्ले तथा लैटिमर—हूपर के सदृश ही लैटिमर प्रोटेस्टेंट मत में दृढ़ था । इसको योरप में भाग जाने का काफ़ी मौक़ा था। लोग इसका बहुत ही अधिक आदर-सत्कार करते थे। यह लंडन पहुँचा । रिड्ले तथा क्रैनमर भी इसको वहीं पर मिले । १५५५ में तीनों को ही ऑक्सफ़ोर्ड में कैथोलिक् लोगों से शास्त्रार्थ करने के लिये भेजा गया । बड़ा भारी वाद-विवाद हुआ, परंतु उसका कुछ भी फल न निकला । ऑक्टोबर की पहली तारीख़ को रिड्ले तथा लैटिमर् को मृत्यु-दंड दिया गया। इन्होंने बड़ी शांति तथा धैर्य से मृत्यु-दंड को स्वीकृत किया और मरते समय तक किसी प्रकार के भी निराशा या दुःख के चिह्न नहीं प्रकट किए।

क्रैनमर—ऑक्सफ़ोर्ड में क्रैनमर पाँच महीने तक लगातार क़ैद रहा। क्रैनमर के अपराध का निर्णय पोप के सिवा और कोई भी नहीं कर सकता था । पोप ने पोल को क्रैनमर के स्थान पर नियत किया और १५५६ में

क्रैनमर को मृत्यु-दंड दिया गया। क्रैनमर भीरु स्वभाव का था—उसका दिल बहुत ही कमज़ोर था। यही कारण है कि वह कैथोलिक् धर्म की ओर कुछ-कुछ झुक गया। इस पर भी उसको मृत्यु-दंड दिया गया। उसको क़तल करने से पहले एक भारी सभा लगाई गई। मैरी का ख़याल था कि वह उस भरी-सभा में अपने धर्म परिवर्तन की बात मान लेगा। परंतु उसने ऐसा नहीं किया। भरी-सभा में उसने ये शब्द कहे कि अमुक हाथ ने ही ये सब पाप-कार्य किए हैं, अतः सब से पहले मैं इसी हाथ को जला डालूँगा। जो कुछ उसने कहा, वही बड़ी वीरता-पूर्वक करके दिखा दिया। इसका आंग्ल-जनता पर बहुत ही अच्छा असर हुआ। लोगों की सहानुभूति शहीदों के साथ हो गई और वह कैथोलिक मत को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

इन ऊपर-लिखी हत्याओं से रानी मैरी तथा उसके सलाहकारों का नाम बदनाम हो गया। असल बात तो यह है कि इस प्रकार की घटनाएँ मध्यकाल में आम तौर पर होती थीं। उन दिनों लोग धार्मिक सहिष्णुता को पाप समझते थे। क्या कैथोलिक और क्या प्रोटे-स्टेंट, मौक़ा पड़ने पर सभी अपना भयंकर रूप प्रकट करते थे और अपने से विरुद्ध मतवालों को जीते जी जला देते थे। एडवर्ड छठे ने 'अनाबैप्टिस्ट' (Anabaptist)

लोगों को इसीलिये जला दिया था कि वे बहुत ही अधिक सुधार चाहते थे।

(३) मैरी की विदेशी नीति

मैरी अभी धार्मिक सुधारों को कर ही रही थी कि उस पर कई विपत्तियाँ आ पड़ीं। प्रोटेस्टेंट लोगों ने इँगलैंड के किनारों को लूटकर कैथोलिक् लोगों को सताना शुरू किया। स्पेन का फ़ांस से झगड़ा था। यही कारण है कि फ़िलिप ने मैरी को भी फ़ांस से लड़ने के लिये बाधित किया। वह यह न चाहती थी।

फ़ांस तथा जर्मनी का युद्ध (१५५२-१५५६)— १५५२ से १५५६ तक फ़ांस तथा जर्मनी का युद्ध हुआ। फ़ांस का राजा हेनरी द्वितीय बहुत ही शक्तिशाली था। उसने जर्मनी के प्रोटेस्टेंट लोगों का पक्ष लेकर सम्राट् चार्ल्स को पराजित किया। १५५६ में चार्ल्स ने राजगद्दी छोड़ दी। उसके जर्मन प्रांत तथा सम्राट् का पद उसके भाई, फ़र्डिनंड को मिला। यह हैनरी और बोहीमिया का राजा था। स्पेन, इंडीज़, इटली तथा नीदर्लैंड के प्रांत फ़िलिप को मिले।

इँगलैंड का फ़ांस से युद्ध—फ़िलिप द्वितीय फ़ांस को नीचा दिखाना चाहता था। उसने १५५७ में मैरी को अपने साथ मिलाया और फ़ांस में सेंट क्वैंटेन नामक स्थान पर बड़ी भारी विजय प्राप्त की। उसने पोप को

नीचा दिखाया और अपनी इच्छा के अनुसार चलाना शुरू किया। फ्रांसीसियों ने फिलिप से चिढ़कर इँगलैंड को तंग करना शुरू किया। उन्होंने कैले पर आक्रमण किया और उसको फ़तह भी कर लिया। मैरी का स्वास्थ्य पहले से ही ठीक न था। कैले के हाथ से निकल जाने पर उसका दिल टूट गया और वह १५५८ की १७ नवंबर को परलोक सिधारी। दैवी घटना से उसके १२ घंटे के बाद ही कार्डिनल पोल की भी मृत्यु हो गई।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५५३	मैरी का राज्याधिरोहण
१५५४	पोप का इँगलैंड के चर्च पर प्रभुत्व
१५५६	क्रैनमर की मृत्यु
१५५८	कैले का फ्रांस के हाथ में जाना और मैरी की मृत्यु

सप्तम परिच्छेद

एलिज़बेथ तथा रानी मैरी (१५५८–१५८७)

(१) एलिज़बेथ का राज्याधिरोहण

एलिज़बेथ का स्वभाव तथा नीति—एलिज़बेथ २५ वर्ष की उमर में इँगलैंड के सिंहासन पर बैठी। वह

लंबे क़द की तथा ख़ूबसूरत थी । उसका चेहरा सुडौल तथा उसकी नाक बड़ी और आगे की ओर मुड़ी हुई थी। वह बहुत ही मेहनत करनेवाली और राजनीति को ख़ूब समझती थी। उसमें पिता के बहुत-से गुण मौजूद थे। वह गाँवों में जाकर ग्राम-वासियों का आतिथ्य प्रेमपूर्वक ग्रहण करती थी। आंग्ल-जनता को ख़ुश रखने में ही उसका ध्यान था। इन सब उत्तम गुणों के साथ ही उसमें कुछ दुर्गुण भी थे। सच बोलना तो वह जानती ही न थी। उसका स्त्रियों का-सा स्वभाव और व्यवहार नहीं था। स्वार्थ की तो वह देवी थी। अपना मतलब किस तरह पूरा किया जाता है, इसको वह अच्छी तरह जानती थी। आंग्ल-जनता के रुख़ को वह ख़ूब पहचानती थी। यही कारण है कि स्त्री होते हुए भी वह पिता के सदृश ही स्वेच्छाचारिणी बनी रही। आंग्ल-जनता उसके स्वेच्छाचार को कम न कर सकी। उसको धर्म-कर्म से कुछ भी मतलब न था। यही कारण है कि उसने किसी भी धर्म के प्रति अपनी विशेष रुचि नहीं प्रकट की। उसी के स्वभाव ने धार्मिक सहिष्णुता को इँगलैंड में प्रचलित किया।

एलिज़बेथ एनी बोलीन की पुत्री थी। बचपन में ही वह अच्छी तरह से पढ़-लिख गई थी। परंतु उसको विद्या और साहित्य से विशेष प्रेम नहीं था। उसको शक्ति

और शान की चाह थी। अपनी दूरदर्शिता, धैर्य, उत्साह, साहस तथा अभ्रांत विचार से उसने इन दोनों बातों को पूरे तौर पर प्राप्त किया। उसको शासन करने से कितना प्रेम था, इसका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि उसने विवाह तक न किया। पिता के सदृश ही कुटिल और शक्तिशाली होने से वह चंचल स्वभाव की हो गई। वह खुशामद को बहुत ही अधिक पसंद करती थी। सजने-धजने में उसका शौक़ हद दर्जे तक जा पहुँचा था। बुढ़ापे के दिनों में भी वह पाउडर और तेल-फुलेल के सहारे अपने को खूबसूरत और चटकीला-भड़कीला बनाने का यत्न करती थी।

एलिज़बेथ का कोई उच्च उद्देश न था। ४९ वर्षों के राज्य में उसने कोई एक नीति स्थिर रूप से नहीं प्रकट की। वह समय के अनुसार काम करती थी। हज़ारों तूफ़ानों को उसने चुटकी बजाते ही शांत कर दिया और अपना बुढ़ापा शांति से ही गुज़ारा। उसके राज्य-काल में इँगलैंड पर भयंकर-से-भयंकर विपत्तियाँ आईं, परंतु उसने अपने धैर्य से इँगलैंड की रक्षा की। उसी ने इँगलैंड के महाशक्ति बनने की नींव डाली। सारांश यह कि एलिज़बेथ ने इँगलैंड में एक नए युग को जन्म दिया। उसकी कृपा से इँगलैंड नौ-शक्ति-संपन्न बना और स्पेनियों को सामुद्रिक युद्ध में पराजित कर सका।

एलिज़बेथ के मंत्री—हैनरी अष्टम के सदृश ही एलिज़बेथ मनमाना काम करती थी। अपना मंत्री वह आप थी। इसमें संदेह भी नहीं है कि उसके समय में बहुत-से योग्य पुरुष आंग्ल-राज्य-कार्य में सहायता देने के लिये मौजूद थे। उसने इन सब योग्य मनुष्यों को राज्य-कार्य में रख लिया और अपनी इच्छा के अनुसार चलाया। उसने अपने किसी भी सेवक को फ़िज़ूल ही तंग नहीं किया। यही कारण है कि बहुत-से योग्य-योग्य आंग्लों ने उसकी सेवा में ही अपनी उमरें बिताईं। एलिज़बेथ बहुत ही कंजूस थी। वह अपने अच्छे-से-अच्छे काम करनेवालों को बहुत ही कम इनाम देती थी।

रानी का सब से अधिक निकटस्थ और सलाहकार विलियम सैसिल था। इसने रानी की पूर्ण रूप से सेवा की और उसका अंत तक साथ दिया। इस प्रभु-सेवा के बदले रानी ने उसको बर्गले का बैरन् बनाया। यह पद आंग्ल-लॉर्डों में सब से नीचा पद था। इसी प्रकार सर निकोलस बैकन ने उसकी अच्छी सेवा की। परंतु रानी की अनुदारता से वह भी चांसलर के पद तक न पहुँच सका। विलियम सैसिल के पुत्र, राबर्ट सैसिल ने भी रानी की अच्छी सेवा की। सर् फ़ांसिस बैकन और सर् फ़्रांसिस वाल्सिंघम ने रानी को अनेक बार विपत्तियों से बचाया। वाल्सिंघम ने ही बहुत-से ऐसे षड्यंत्रों का पता लगाया, जो रानी को

मारने के लिये रचे गए थे। इन सब योग्य सेवकों के कारण रानी का राज्य बहुत अच्छी तरह चलता रहा। शांति के कारण इँगलैंड भी समृद्धिशाली हुआ।

ऊपर-लिखे योग्य राजसेवकों के सदृश ही रानी के दर्बार में बहुत-से खुशामदी अयोग्य आदमी भी थे। इनका काम रानी की खूबसूरती तथा बुद्धि की प्रशंसा करना ही था। एकमात्र इन्हीं लोगों के समय रानी की कृपणता दूर हो जाती थी। वह इनको खूब धन तथा पद देती थी। इन खुशामदियों का मुखिया, रानी का बाल्यावस्था का साथी, लॉर्ड राबर्ट डडले था। रानी ने इसको लीसस्टर का अर्ल बना दिया। इसके साथ वह विवाह कर भी लेती, परंतु उसको तो शासन तथा शक्ति की बहुत ही अधिक चाह थी। यही कारण है कि उसने विवाह ही नहीं किया। डडले की मृत्यु-पर्यंत रानी ने उसका साथ दिया और उसको बहुत-से ऐसे राजकीय काम भी सौंपे, जिनको वह सफलतापूर्वक न कर सका।

(२) एलिज़बेथ का धार्मिक परिवर्तन

राजगद्दी पर बैठते ही रानी का सब से पहला काम धर्म-संबंधी झगड़ों को मिटाना था। एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी धार्मिक मामलों को सुधारने में क्यों असफल हुए, यह वह अच्छी तरह से जानती थी। उसको यह अच्छी तरह पता था कि अधिक धार्मिक सुधारों के पीछे पड़ने

का क्या नतीजा होता है। उसको अपने पिता पर अनन्य भक्ति थी और अपने पिता की नीति को ही वह पसंद करती थी। यही कारण है कि उसने मध्य का मार्ग सँभाला। धार्मिक सुधारों से जहाँ वह पीछे नहीं हटी, वहाँ उसने बहुत धार्मिक सुधार भी नहीं किए। एलिज़बेथ के राजगद्दी पर बैठते ही विदेश को भागे हुए प्रोटेस्टेंट लोग इँगलैंड में लौट आए और रानी पर धार्मिक सुधारों के लिये ज़ोर डालने लगे। रानी बड़ी कठिनाई में फँस गई, क्योंकि इँगलैंड में मुख्य-मुख्य पदों पर कैथोलिक लोग ही थे। उनको राजपदों से एकदम हटाना सारे देश में गड़बड़ मचा देना था। रानी ने बड़ी बुद्धिमत्ता से इस कठिनाई को दूर किया। उसने १५५९ के जनवरी में आंग्ल-लोक-सभा का अधिवेशन किया। लोक-सभा ने बिशपों के विरोध करने पर भी निम्न-लिखित दो राज्य-नियम बनाए—

(१) मुख्यता का राज्य-नियम (Act of Supremacy)—यह मुख्यता का नियम हैनरी अष्टम के १५३४ के राज्य-नियम की पूरी नक़ल थी। इस नियम के अनुसार एलिज़बेथ आंग्ल-चर्च का मुखिया तथा संरक्षक नियत की गई।

(२) एकता का राज्य-नियम (Act of Uniformity)—इस नियम के अनुसार एडवर्ड षष्ठ के

समय की द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक का सब चर्चों में पढ़ा जाना आवश्यक ठहराया गया। निःसंदेह इसमें स्थान-स्थान पर कुछ परिवर्तन कर दिए गए।

इन दो राज-नियमों के बाद १५६३ तक रानी ने कुछ भी धार्मिक सुधार न किया। १५६३ में उसने लोक-सभा को ३९ धार्मिक नियम (Thirtynine Articles) पास करने की आज्ञा दी। इन धार्मिक नियमों का आधार १५५३ के ४२ धार्मिक नियमों पर था। इन ३९ धार्मिक नियमों का स्वरूप रानी ने बदल दिया। उनके उन-उन शब्दों को हटा दिया, जिनके कारण पुराने धर्म के लोगों को बे-फ़ायदा बहुत तकलीफ़ पहुँचने की संभावना थी। रानी ने इन धार्मिक सुधारों को राजनीतिक दृष्टि से किया था। अतः इनके कारण आंग्लों का आचार-व्यवहार बहुत कुछ बदल गया।

उपरि-लिखित धार्मिक परिवर्तनों के अनंतर रानी ने अन्य धार्मिक परिवर्तन नहीं किए। उसने यही यत्न किया कि प्रजा उपरि-लिखित धार्मिक नियमों पर पूरे तौर से चले। इसका परिणाम यह हुआ कि एक बिशप को छोड़कर रानी मैरी के समय के अन्य बिशपों ने अपने-अपने धार्मिक पदों से इस्तीफ़ा दे दिया। रानी ने भी सभी बिशपों को क़ैदख़ाने में डाल दिया और उनके स्थान पर अन्य बिशपों को नियुक्त किया। मैथ्यु

पार्कर को उसने कैंटबरी का आर्च-बिशप बनाया। यह बहुत ही बुद्धिमान्, विचारवान् तथा शांत-स्वभाव था। यह भी रानी के सदृश ही धार्मिक सहिष्णुता को पसंद करता था। १५५६ में रानी ने एक धार्मिक कमीशन नियत किया। इसका प्रधान उसने पार्कर को ही बनाया। इस कमीशन का मुख्य उद्देश्य यही था कि उपरि-लिखित धार्मिक राज्य-नियमों पर चलने के लिये प्रजा को बाधित किया जाय।

एलिज़बेथ तथा रोमन् कैथोलिक—रानी की इच्छा थी कि राज्य-धर्म में सब लोग सम्मिलित हों। जो लोग आंग्ल-चर्च में सम्मिलित न हुए, उन पर रानी ने जुर्माना किया और उनको भिन्न-भिन्न प्रकार के दंड दिए। रोमन् कैथोलिकों को आंग्लों ने पोपिश कहकर पुकारना शुरू किया और उनको सब कामों में नीचा दिखाया। लाचार होकर बहुत-से छोटे-छोटे पादरियों ने रानी के धर्म को मान लिया। बड़े-बड़े पादरी इतने शक्ति-शाली न थे कि रानी का विरोध कर सकते। एलिज़बेथ को उन प्रोटेस्टेंट लोगों से ही डर था, जो उसकी सहिष्णुता की नीति के विरोधी थे। यह होने पर भी उसने अपनी नीति न छोड़ी और आंग्ल-प्रजा को अपनी इच्छाओं के अनुसार ही चलाया।

जिनोआ तथा काल्विनिस्ट—मैरी ने जिन प्रोटेस्टेंटों

को इँगलैंड से बाहर निकाल दिया था, उनमें से बहुतों का योरप में पहुँचकर विचार बदल गया । वे लोग फ्रांसीसी महात्मा जोन काल्विन के मत के हो गए । जोन काल्विन १२५४ से मृत्यु-पर्यंत जिनोआ नगर में राज्य करता रहा । इसने पोप के नियमों का तिरस्कार किया और एक छोटी-सी मंत्रि-सभा बनाई, जिसके सब सभ्य समान अधिकारवाले थे । यह सभा ही सारे राष्ट्र का शासन और लोगों को धार्मिक बनाने का यत्न करती थी । काल्विन का विशेष ध्यान आचार सुधारने की ओर था । वह किसी एक स्थिर प्रार्थना-पुस्तक के पक्ष में न था । ईश्वर की उपासना में उसको सादगी पसंद थी । काल्विन के मत को प्रेस्वीटे-रियानिज़्म के नाम से पुकारा जाता है । योरप में जाने से बहुत-से आंग्ल इसी मत के हो गए थे । आंग्ल-इतिहास में उनको प्यूरिटंज़ के नाम से भी पुकारा जाता है, क्योंकि इनका विशेष ध्यान सदाचार की उन्नति की ओर ही था ।

एलिज़बेथ तथा प्यूरिटंज़—आंग्ल-चर्च में जिनोआ के चर्च के सदृश पवित्रता नहीं थी । यही कारण है कि जिनोआ से लौटकर आए हुए आंग्ल अपने देश के चर्च से संतुष्ट न थे । उन्होंने शुरू-शुरू में धार्मिक सुधार करने के लिये रानी पर बहुत ही अधिक ज़ोर

डाला। परंतु उनका यत्न जब निष्फल हो गया, तब वे रानी से बहुत ही असंतुष्ट हो गए। उन्होंने आंग्ल-चर्च की प्रथाओं तथा संस्कारों को तोड़ना शुरू किया। वे लोग शक्तिशाली थे। अतः रानी ने उनका बहुत विरोध नहीं किया। रानी की शक्ति ज्यों-ज्यों धीरे-धीरे बढ़ती गई, त्यों-त्यों रानी ने उनको नियम के अनुसार चलने के लिये बाधित किया। १६६५ से प्यूरिटन लोगों पर सख़्ती करना शुरू किया गया। आर्च-बिशप पार्कर ने एक विज्ञापन निकाला और पादरियों को धर्म तथा चर्च के समय में विशेष प्रकार का कपड़ा पहनने के लिये बाधित किया। यह विज्ञापन आंग्ल-इतिहास में पार्कर्ज़ एड्वर्टिज़्मेंट्स (Parker's Advertisements) के नाम से प्रसिद्ध है। प्यूरिटन लोग इस विज्ञापन के सख़्त ख़िलाफ़ हो गए। १५६६ में एकमात्र लंडन में ही ३० के लगभग पादरियों ने अपने पद छोड़ दिए। इन्होंने शीघ्र ही आंग्ल-चर्च पर आक्षेप करना शुरू किया। इन्होंने आंग्ल-चर्च को भी जिनोआ के चर्च के सदृश प्रैस्बिटीरियन चर्च बनाने के लिये ज़ोर दिया। इनका नेता टॉमस कार्टराइट था। यह कैंब्रिज में प्रोफ़ेसर था। इसी के दो मित्रों ने आंग्ल-चर्च के विरुद्ध दो पुस्तकें लिखीं, जो बहुत ही उत्तम थीं।

सपरेटिस्ट्स या पृथक् दल—बहुत-से लोगों ने

आंग्ल-चर्च में जाना छोड़ दिया और अलग अपना उपदेश करना शुरू किया। इन लोगों ने अपने को सेक्टरीज़, सपरेटिस्ट्स, पृथक् दल आदि नामों से पुकारना शुरू किया। इनके बहुत-से नेताओं में से एक नेता रॉबर्ट ब्राउन भी था। इसका यह सिद्धांत था कि सारे देश के लिये किसी एक चर्च के होने की कुछ भी ज़रूरत नहीं है। लोग अपने-अपने विचारों के अनुसार अपने अलग-अलग चर्च बना लें। यही कारण है कि बहुत-से लोग सपरेटिस्ट को ब्राउनिस्ट, इंडिपेंडंट तथा स्वतंत्र दल के नाम से भी पुकारते हैं। पृथक् दल के बहुत-से लोग आंग्ल-चर्च में नौकर रहकर उसी पर अपना जीवन-निर्वाह करते रहे, यद्यपि इनका उस चर्च में कुछ भी विश्वास न था। इनको नान्कान्फ़र्मिस्ट नाम से पुकारा जाता है। इनके शत्रु इनको मक्कार तथा छली इत्यादि शब्दों से ही पुकारते थे।

आर्च-बिशप ग्रिंडल (१५८६)—१५७५ में पार्कर की मृत्यु हो गई। एडमंड ग्रिंडल आर्च-बिशप बना। यह प्यूरिटन लोगों का मित्र था। यही कारण है, कुछ ही वर्षों के बाद रानी का गुस्सा उस पर आकर पड़ा। रानी ने उसको उस पद से अलग कर दिया। १५८३ में एलिज़बेथ ने जॉन विट्गिफ़्ट को आर्च-बिशप नियत किया। यह विचारों में काल्विन का पक्षपाती होने पर

भी प्यूरिटन लोगों का दुश्मन था। एलिज़बेथ की धार्मिक सहिष्णुता की नीति का उत्तम फल शताब्दी के अंत में प्रकट हुआ, जब कि हुकर ने अपनी "धार्मिक नीति-" (Ecclesiastical Policy १५९३) नामक पुस्तक को प्रकाशित किया। इसमें इसने उत्तम-उत्तम संस्कारों तथा प्रथाओं का छोड़ना अनुचित ठहराया। इसके अनंतर बहुत-से आंग्ल-लेखकों ने देश के लिये एक चर्च का होना अत्यंत आवश्यक प्रकट किया।

जॉन नॉक्स—इँगलैंड में एलिज़बेथ की शक्ति तथा बुद्धिमत्ता से काल्विन का मत नहीं फैल सका। परंतु स्कॉट्-लैंड में यह बात न हो सकी। गाइस की मालकिन, मैरी स्कॉट्लैंड की रानी थी। यह कैथोलिक थी। इसने स्कॉट्लैंड के प्रोटेस्टैंटों को देश से बाहर निकाल दिया। इनमें महाशय जॉन नॉक्स भी था। यह बहुत ही उत्तम व्याख्याता तथा बड़ा भारी विद्वान् था। एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु होने पर यह जिनोआ में गया और काल्विन का चेला बन गया। एलिज़बेथ के राज्य पर बैठते ही इसने इँगलैंड में आने का यत्न किया, परंतु रानी ने इस आधार पर न आने दिया कि उसने 'स्त्री-राज्य' के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी थी। इस पर जॉन नॉक्स बड़े साहस के साथ स्कॉट्लैंड में जा पहुँचा। गाइस की मालकिन, मैरी ने स्कॉट्लैंड में आने से उसको रोकना चाहा, परंतु रोक न सकी। स्कॉट्-

लैंड में उसके पहुँचते ही बहुत से स्कॉच् लॉर्डों ने उसका साथ दिया। नॉक्स ने वहाँ काल्विन के धर्म को फैलाना शुरू किया। मेरी ने अपने को दुर्बल तथा निःशङ्क समझकर फ़्रांस से सहायता माँगी। फ़्रांस ने अपनी सेनाओं को स्कॉट्लैंड में उतार दिया और नॉक्स के पक्ष-पातियों को दबाना शुरू किया। मरता क्या न करता के अनुसार नाक्स तथा उसके साथी लॉर्डों ने एलिज़बेथ से सहायता माँगी। एलिज़बेथ ने बुद्धिमत्ता करके अपनी सेनाओं को स्कॉट्लैंड की ओर रवाना कर दिया।

आंग्लों ने लीथ-नामक स्थान पर फ़्रांसीसियों पर आक्रमण किया। इसी अवसर में स्कॉट्लैंड की रानी, मेरी की मृत्यु हो गई। युद्ध निरर्थक समझकर एडिन्बरा पर संधि हो गई और संधि के अनुसार फ़्रांसीसी तथा आंग्ल-सेना अपने-अपने देशों को लौटकर चली गई।

विदेशी सेनाओं से छुटकारा पाते ही स्कॉच-पार्लिया-मेंट ने जिनोआ के चर्च का अनुकरण किया और अपने चर्च को प्रेस्विटीरियन चर्च के नाम से पुकारना शुरू किया। स्कॉच-जनता ने पुराने चर्च को तबाह कर दिया। उसकी संपत्ति को लूट लिया। बड़ी मुश्किल से नॉक्स ने स्कॉच जनता को शांत किया। नॉक्स ने प्रोटेस्टेंट लॉर्डों को समझाया-बुझाया और दरिद्रों के लिये भोजन तथा शिक्षा का प्रबंध करना अत्यंत आवश्यक

प्रकट किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्कॉट्लैंड में प्रत्येक पैरिश के अंदर एक-एक पाठशाला खोल दी गई। नॉक्स तथा उसके भाई ने प्रेस्बिटीरियन चर्च की धर्म-सभा स्थापित की और उसको साधारण सभा (General Assembly) के नाम से पुकारना शुरू किया। इस सभा ने स्कॉच पार्लियामेंट से भी अधिक उत्तम ढंग से देश का प्रबंध किया।

मेरी ऑफ़् गाइस की मृत्यु पर द्वितीय मेरी स्कॉट्लैंड के सिंहासन पर बैठी। यह स्त्रीत्व-प्रधान थी और धर्म में कैथोलिक थी। इसका आचार-व्यवहार बहुत ही अच्छा था। फ़्रांस से लौटकर जब यह स्कॉट्लैंड पहुँची, तब वहाँ का धर्म बिल्कुल बदल चुका था। नॉक्स के प्रभाव से वहाँ प्रेस्बिटीरियन धर्म का ही सर्वत्र राज्य था। यही कारण है कि स्काच मेरी का सारा जीवन झगड़े में ही गुज़रा। उसको वास्तविक सुख न मिल सका।

(३) योरप में धार्मिक परिवर्तन

एलिज़बेथ के समय में योरप के अंदर धार्मिक विरोध शुरू हुआ और भिन्न-भिन्न धर्मावलंबियों ने आपस में लड़-कर खून की नदियाँ बहाईं। योरप के अंदर लूथर का प्रभाव अब घट चुका था और काल्विन का मत दिन-पर-दिन ज़ोर पकड़ रहा था। स्कॉट्लैंड प्रेस्बिटीरियन मत का हो ही चुका था और इँगलैंड भी उसी ओर जा रहा था।

नीदरलैंड तथा फ़्रांस में भी काल्विन के मत ने अपना सिक्का बैठाया। इसके विपरीत कैथोलिक मत का पुनरुद्धार योरप में होना शुरू हुआ। कैथोलिक लोगों ने अपने स्कूलों के द्वारा कैथोलिक मत का प्रचार करना शुरू किया। १५४० में जस्सूइट संघ का योरप में उदय हुआ, जिसका मुख्य उद्देश कैथोलिक मत को योरप में फैलाना था। इस संघ का स्थापक इग्नेटियस लायोला-नामक स्पेनी था। यह बहुत ही उच्च आचार का तथा बहुत ही विद्वान् था। इसकी शिक्षा-पद्धति अनूठी थी। इसने ग्रामों तथा अशिक्षितों पर अपना रोब-दाब जमाया और अशिक्षित जनता को कैथोलिक मत पर दृढ़ रहने के लिये उत्तेजित किया। इसकी शिक्षा ने बिजली-सा काम किया। कैथोलिक मत सब ओर बड़ी तेज़ी से फैलने लगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि किस तरह काल्विन तथा जस्सू-संघ के उपदेशों तथा विचारों से सारा योरप दो भागों में विभक्त हो गया। इसका क्या परिणाम हुआ, इसी पर अब प्रकाश डाला जायगा।

योरप के राष्ट्रों का पारस्परिक झगड़ा एलिज़बेथ के राजगद्दी पर बैठने के कुछ ही दिनों बाद शुरू होता है। फ़िलिप द्वितीय ने इँगलैंड की सहायता से फ़्रांस पर चढ़ाई की और फ़्रांस को बुरी तरह से पराजित किया। १५५९ के एप्रिल में फ़्रांस ने स्पेन से संधि की प्रार्थना

की । लीकटियो कैंब्रिसिस (Le Cateau Cambresis) नामक स्थान पर दोनों देशों की संधि होती और स्पेन का इटली पर प्रभुत्व स्थापित हो जाता है। स्पेनियों ने कैले फ्रांसीसियों के हाथ में दे दिया । इस संधि से योरप के राष्ट्रों का पुराना राजनीतिक झगड़ा मिटता और नया झगड़ा प्रारंभ होता है ।

लीकेटियो की संधि का एक मुख्य उद्देश यह भी था कि दोनों ही देशों के राजा कैथोलिक थे । उनके देशों में बड़ी तेज़ी के साथ प्रोटेस्टेंट-मत फैलता जाता था। उसको शीघ्र ही रोकना आवश्यक था । स्पेन तथा फ़्रांस यदि आपस में लड़ते रहते, तो यह बहुत ही कठिन था। दोनों ही देशों में प्रोटेस्टेंट-मत पूरे तौर पर फैल जाता और उनको घरेलू झगड़ों का सामना करना पड़ता ।

संधि के बाद ही फ़िलिप द्वितीय ने नीदरलैंड में कैथोलिक मत को फैलाने का यत्न शुरू किया और काल्विन-मत को जड़ से उखाड़ना चाहा । फ़्रांस ने भी इसी प्रकार की कोशिश की । फ़्रांस में काल्विन के पक्षपातियों को ह्यूगनाट्स (Huguenots) के नाम से पुकारा जाता था । फ़्रांसीसी राजा, फ़्रांसिस द्वितीय ने इन लोगों को जड़ से उखाड़ने का यत्न किया । यह सब होने पर भी फ़्रांस तथा स्पेन बहुत समय तक आपस में मिलकर काम न कर सके—उनमें पुराने झगड़े फिर खड़े हो गए ।

इससे इँगलैंड को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा, क्योंकि मैरी स्टीवार्ट फ़्रांस के साथ ही स्कॉट्लैंड की भी रानी थी। उसने एलिज़बेथ को तंग करने के लिये अपने को इँगलैंड की रानी भी पुकारना शुरू किया। कैथोलिक लोग एलिज़बेथ को कामज समझते थे, क्योंकि पोप ने हैनरी अष्टम की एनी बोलीन के साथ जो शादी हुई थी, उसकी अनुमति न दी थी। इस पर एलिज़बेथ ने स्कॉट्लैंड के प्रोटेस्टेंटों को सहायता देना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्कॉट्लैंड पर मैरी स्टीवार्ट का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। वह नाममात्र को ही वहाँ की रानी रही। वास्तव में स्कॉट्लैंड के अंदर प्रोटेस्टेंट लोगों का प्रजातंत्र राज्य ही था।

लीहैव्र (Le Havre) का हाथ से खो देना (१५६३)—कुछ ही महीनों के बाद फ़्रांसिस द्वितीय की मृत्यु हो गई। चार्ल्स नवम फ़्रांस के सिंहासन पर बैठा। इसकी स्त्री इटैलियन और बहुत ही अधिक चालाक थी। कुछ ही दिनों के बाद फ़्रांस में धार्मिक युद्ध हो गया। बेचारे ह्यूगनाटों ने तंग आकर एलिज़बेथ से सहायता माँगी। रानी ने उनको सहायता पहुँचाई। इस सहायता के बदले में ह्यूगनाटों ने रानी को लीहैव्र का बंदरगाह दे दिया। दुर्भाग्य से फ़्रांसीसियों का पारस्परिक झगड़ा शांत हो गया और उन्होंने आपस में मिलकर लीहैव्र से आंग्लों

को निकालने का यत्न किया। चार्ल्स नवम शक्तिशाली न था। अतः वह इँगलैंड को कुछ भी नुक़सान न पहुँचा सका। स्पेन ने भी फ़्रांस के विरुद्ध इँगलैंड से संधि कर ली। इससे इँगलैंड सब तरह सुरक्षित हो गया, क्योंकि यदि कहीं फ़्रांस तथा स्पेन आपस में मिल जाते और इँगलैंड पर आक्रमण करते, तो इँगलैंड को बहुत ही अधिक नुक़सान पहुँच सकता था।

(४) रानी मैरी तथा रानी एलिज़बेथ

१५६१ में स्टीवार्ट मैरी फ़्रांस से स्कॉट्लैंड में चली आई। पति की मृत्यु होने पर फ़्रांस में शक्ति प्राप्त करना उसके लिये असंभव था। वह पक्की कैथोलिक थी। यही कारण था कि स्कॉच्-जनता ने उसका उचित सत्कार न किया। उसने धीरे-धीरे चतुरता से बहुत-से स्काच् नोब्ल तथा लॉर्डों को अपने पक्ष में कर लिया। उसने अपने भाई, जेम्ज़ स्टीवार्ट को खुले तौर पर स्कॉट्लैंड का शासन करने दिया। उसने स्कॉट्लैंड का काल्विन-धर्म मान लिया। उसने जनता को स्वयं धार्मिक उपदेश देने की स्कॉच्-लोकसभा से आज्ञा ले ली। इस पर जॉन नाक्स चिढ़ गया। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा कि रानी के उपदेश से स्कॉट्लैंड को बहुत ही अधिक नुक़सान पहुँचेगा।

मैरी ने चार वर्षों तक लगातार यत्न किया, परंतु स्कॉट्लैंड को अपने क़ाबू में न कर सकी। स्कॉट्लैंड में

शक्ति प्राप्त करना असंभव समझकर उसने अपनी दृष्टि इँगलैंड की ओर डाली। आंग्ल-रोमन्‌कैथोलिक लोग एलिज़बेथ से सख़्त नाराज़ थे। वे लोग मैरी स्टीवार्ट को अपनी रानी बनाना चाहते थे। मैरी एलिज़बेथ की मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगी। १५६५ में उसने लॉर्ड डर्नले से शादी करने की इच्छा प्रकट की। एलिज़बेथ के अनंतर राज्य का उत्तराधिकारी यह हो सकता था। एलिज़बेथ को यह विवाह पसंद न था। अतः उसने मूर तथा स्काच्-लॉर्डों को विद्रोह करने के लिये उत्तेजित किया। मैरी ने डर्नले के साथ विवाह कर लिया और मूर को पराजित करके स्कॉट्लैंड से बाहर निकाल दिया। इससे एलिज़-बेथ को बहुत ही अधिक धक्का पहुँचा। उसने मैरी को नीचा दिखाने का अवसर देखना शुरू किया।

रिकियो की हत्या (१५६६)—विवाह के अनंतर मैरी को डर्नले के दुर्गुण दिखाई दिए। वह कठोर-हृदय, धूर्त और बेवक़ूफ़ था। मैरी को वह किसी प्रकार की भी सहायता नहीं पहुँचा सकता था। मैरी ने धीरे-धीरे डेविड् रिकियो नामक इटैलियन विद्वान् से सलाह-मशवरा करना शुरू किया। डर्नले को यह पसंद न था। उसको किसी तरीक़े से यह संदेह हो गया कि रिकियो के साथ मैरी ने अपना सतीत्व भंग किया है। उसने कुछ प्रोटेस्टेंट लॉर्डों के साथ मिलकर एक रात में मैरी के साथ भोजन करते समय

रिकियो को मरवा डाला । इस वध से मैरी बहुत ही असंतुष्ट हो गई । उसने हत्यारों को देश-निकाला दे दिया । इस घटना के तीन ही महीने बाद मैरी के जेम्ज़ षष्ठ के नाम से पुत्र उत्पन्न हुआ, जो जेम्ज़ प्रथम के नाम से इँगलैंड के सिंहासन पर बैठेगा । उसी के राज्य से इँगलैंड तथा स्कॉटलेंड सदा के लिये एक हो जायँगे और जातीय उन्नति में बड़ा भारी भाग लेंगे ।

डर्नले का वध (१५६७)—कुछ ही दिनों के बाद मैरी तथा डर्नले का फिर झगड़ा हो गया । पति के निर्दय तथा प्रेम-रहित कठोर व्यवहार से दुःखित होकर उसने किसी दूसरे पुरुष से शादी करने का इरादा किया । दैवी घटना से बोथवेल के अर्ल जेम्ज़ हर्प्बन से उसकी मैत्री हो गई । मैरी बोथवेल के कहने के अनुसार चलने लगी । वह जैसे उसको नचाता था, वह वैसे ही नाचती थी । बोथवेल ने डर्नले को मारने का इरादा किया और एक षड्यंत्र रचा । एडिन्बरा के दक्षिण में 'कर्क ओ फ़ील्ड-' नामक स्थान पर बोथवेल (बीमारी से उठकर) रहता था । बोथवेल के षड्यंत्रियों ने उसके मकान को बारूद से उड़ा दिया । डर्नले की लाश लोगों को मकान के बाहर पड़ी हुई मिली ।

डर्नले के पिता, लैनॉक्स ने बोथवेल पर मुक़दमा चलाया । मैरी ने उस मुक़दमे का फ़ैसला करने का दिन

नियत किया। मैरी से सब लोग डरते थे, अतः किसी की भी बोथवेल के विरुद्ध गवाही देने की हिम्मत न पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि बोथवेल बेदाग़ छूट गया।

मैरी बोथवेल के साथ विवाह करने से हिचकने लगी। क्योंकि सारे स्कॉट्लैंड में यह प्रसिद्ध था कि डर्नले को बोथवेल ने ही मारा है। ऐसे घातक और पापी आदमी के साथ विवाह करना मैरी के लिये ख़ुद ख़तरनाक था, क्योंकि इससे स्कॉच-जनता विद्रोह करके मैरी को स्कॉट्लैंड के बाहर निकाल देती। कुछ भी हो, "कामांधा हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु" के अनुसार मैरी ने बोथवेल को बलपूर्वक शादी करने की सलाह दी। इस सलाह के अनुसार जब मैरी स्टर्लिंग से एडिनबरा जा रही थी, बोथवेल ने उस पर आक्रमण कर दिया और उसके साथ बलपूर्वक शादी कर ली। यह भेद सारी स्कॉच जनता पर खुल गया। सारा स्कॉट्लैंड मैरी तथा बोथवेल के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। इस पर मैरी ने अपने धर्म को छोड़ दिया और प्रोटेस्टेंट लोगों को वश में करने के लिये उनके चर्च में उपदेश सुनने गई। परंतु इसका कुछ भी फल न निकला। उसके सैनिकों ने उसका साथ छोड़ दिया। कार्बरी हिल पर विद्रोही लॉर्डों ने उसको क़ैद कर लिया। बोथवेल स्कॉट्लैंड से भाग गया और कुछ ही समय के बाद उसकी मृत्यु हो गई। मैरी

राज्यच्युत की गई और उसका पुत्र जेम्ज़ राजगद्दी पर बिठाया गया । मूर तथा प्रोटेस्टेंट लॉर्ड विदेश से लौट आए और उन्होंने जेम्ज़ के नाम पर स्कॉट्लैंड का शासन शुरू किया ।

मैरी का इँगलैंड में भागकर पहुँचना (१५६८)— एक वर्ष तक रानी मैरी किनरास-शायर के लाकलिवेन दुर्ग में क़ैद रही । १५६८ में स्काच-लॉर्डों का आपस में झगड़ा हो गया । इस झगड़े से लाभ उठाने के विचार से मैरी लाकलिवेन से भाग खड़ी हुई । १३ मई को वह लैड्-साइड् नामक स्थान पर मूर से पराजित हुई । सब ओर से निराश होकर उसने एलिज़बेथ की शरण ली । रानी ने उसको अपनी क़ैद में रक्खा । इससे रानी की तकलीफ़ें बेहद हो गईं । रानी के विरुद्ध कैथोलिक लोगों ने षड्यंत्र रचने शुरू किए और मैरी को आंग्ल-सिंहासन पर बिठाने का इरादा किया ।

मैरी ने एलिज़बेथ से प्रार्थना की कि उसको क़ैद से छोड़ दिया जाय । एलिज़बेथ को यह मंजूर न था । कारण, इससे उसके शत्रु प्रबल हो जाते । यदि मैरी फ़्रांस को भाग जाती, तो फ़रांसीसी राजा मैरी को साधन बनाकर आंग्ल-रानी को तकलीफ़ें पहुँचाते । स्कॉच-जनता भी रानी से असंतुष्ट हो जाती, क्योंकि उसको मैरी का छूटना पसंद न था ।

इन सब ऊपर लिखे झमेलों से एलिज़बेथ बहुत ही अधिक परेशान हो गई। उसको यह न सूझता था कि इसका क्या उपाय किया जाय। मेरी को इँगलैंड में रखने से कैथोलिक लोग षड्यंत्र रचते और उसकी जान लेने की फ़िक्र में थे। उधर मैरी को क़ैद से छोड़ देने में स्कॉच् जनता नाराज़ होती थी और फ्रांस इँगलैंड को तंग कर सकता था। लाचार होकर उसने इँगलैंड में यह घोषणा कर दी कि मैरी के विषय में कुछ भी सोचने से पहले उसके दोषों की जाँच करना आवश्यक है। उसने नार्फ़ोक के सभापतित्व में एक कमीशन नियत किया और मैरी के दोषों की जाँच-पड़ताल शुरू कर दी। मूर तथा स्कॉच् लॉर्डों ने मैरी पर अभियोग चलाया और उसके सारे क़सूरों को कमीशन के सामने रक्खा। मूर ने मैरी के हाथ के लिखे कुछ पत्र कमीशन को दिए। आंग्ल-जनता का ख़याल है कि ये पत्र जाली थे। कमीशन कुछ भी अंतिम निर्णय न कर सका। एलिज़बेथ ने मैरी को क़ैद में रक्खा और मूर तथा स्काच्-लॉर्डों को सब प्रकार का दिलासा दिया।

उत्तर में विद्रोह (१५६९)—इँगलैंड के उत्तरी प्रदेशों में कैथोलिक मत ही प्रबल था। जो लोग प्रोटेस्टेंट थे, वे भी प्यूरिटंज़ के समान स्वतंत्र विचार के नहीं थे। एलिज़बेथ ने मैरी का अंतिम निर्णय न किया, इसका

परिणाम उसके लिये बहुत ही भयंकर हुआ। नार्थम्बरलैंड के अर्ल टामस पर्सी और वेस्ट मोर्लैंड के अर्ल चार्ल्स नेविल के नेतृत्व में उत्तरी प्रदेश के कैथोलिक लोगों ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह की १५३६ के पिल्ग्रिमेज़ आफ्-ग्रेस-नामक विद्रोह से ही उपमा दी जा सकती है। इस विद्रोह से यह पता लगता है कि उत्तरी प्रदेशों की वास्तविक दशा क्या थी? उक्त विद्रोह का मुख्य उद्देश एलिज़बेथ के स्थान पर मैरी को आंग्ल-रानी बनाना था। विद्रोही लोग सैसिल को भी मंत्री के पद से हटाना चाहते थे। एलिज़बेथ ने शीघ्र ही विद्रोह को शांत कर दिया। विद्रोहियों को भयंकर दंड दिया गया। इससे एलिज़बेथ की स्थिति और भी अधिक दृढ़ हो गई।

एलिज़बेथ का निकाला जाना (१५७०)—एलिज़बेथ के शत्रुओं ने कई अन्य ढंगों से उसे कष्ट पहुँचाने का यत्न किया। १५७० में स्कॉच मूर की किसी ने हत्या कर डाली। इससे स्कॉट्लैंड में भ्रातृ-युद्ध हो गया, जो तीन वर्ष तक जारी रहा। १५७२ में मार्टन के अर्ल ने देश में शांति स्थापित की और मूर के समान ही जेम्ज़ छठे के नाम से वह देश का शासन करने लगा। इन्हीं दिनों में पोप ने मैरी का पक्ष लिया। यह पोप पायस पंचम के नाम से प्रसिद्ध है। यह प्रोटेस्टेंट-मत का बड़ा विरोधी था। १५७० के फ़र्वरी महीने में पोप

ने एलिज़बेथ को निकाल दिया और सिंहासन से शीघ्र ही उतार देने की आज्ञा निकाली। मई के महीने में फ़ैल्टन-नामक व्यक्ति ने पोप की आज्ञा को लंडन के बिशप के घर पर लगा दिया। रानी ने उसको पकड़-कर मरवा डाला। लोक-सभा को जब इस घटना की ख़बर मिली, तब उसने पोप की आज्ञा को इँगलैंड में पहुँचाना देश-द्रोह ठहराया और रोमन कैथोलिक लोगों को देश का शत्रु प्रकट किया।

एलिज़बेथ की नीति थी कि वह किसी भी धर्मवाले को कष्ट न पहुँचावे। परंतु इस नीति में वह सफलता नहीं पा सकी। पोप ने उसको लोगों के धर्म-विश्वास में हस्तक्षेप करने के लिये विवश किया। रानी ने भी सावधानी से काम करना शुरू किया। उसने रोमन कैथोलिक लोगों पर तीक्ष्ण दृष्टि रक्खी। कारण, रोमन कैथोलिक लोगों की प्रबलता का दूसरा अर्थ आंग्लों की जातीयता का नाश था। यही सोचकर लोक-सभा ने भी पूरे तौर से रानी का साथ दिया।

रिडालफ़ी-षड्यंत्र (१५७१)—रिडालफ़ी फ़्लोरेंस का रहनेवाला था। वह बहुत ही अमीर था। रिडालफ़ी बहुत दिनों से इँगलेंड में रहता था और फिलिप तथा पोप के साथ उसकी मित्रता थी। उसने नार्फ़ाक के ड्यूक को एलिज़बेथ के विरुद्ध उभाड़ा और उसे इस बात के लिये

आमादा किया कि इँगलैंड के सिंहासन पर मैरी को किसी-न-किसी उपाय से बिठलाया जाय, जिससे कैथोलिक लोगों का राज्य इँगलैंड में हो जाय। नार्फ़ाक पहले ही से रानी से रुष्ट था, क्योंकि उसे राज-दरबार में यथोचित सम्मान नहीं मिलता था। रिडाल्फ़ी ने उसको यह भी प्रलोभन दिखाया कि मैरी के साथ उसका विवाह कर दिया जायगा। सैसिल को किसी तरह इस सारी गुप्त मंत्रणा का पता लग गया—सब भेद मालूम हो गया। उसने दोनों को मरवा डाला। इस तरह रानी एलिज़बेथ एक बड़े भारी संकट से बच गई।

(५) योरप में धार्मिक युद्ध

पेरिस में सेंट बार्थोलोम्यू (Bortholomew) की हत्या—घरेलू झगड़ों के कारण फ़्रांस बहुत ही अधिक शक्तिहीन हो गया था। योरप के शक्तिशाली राज्यों में वह दूसरे दर्जे पर जा पहुँचा। चार्ल्स चतुर्थ की उत्तेजना से सन् १५७२ में, २३ अगस्त के दिन, सेंट बार्थोलोम्यू के मेले पर ह्यूगूनाट लोगों की भयंकर हत्या की गई। हत्या-कांड की कथा इस प्रकार है—

सेंट बार्थोलोम्यू के मेले में, पैरिस नगर में ह्यूगूनाटों और कैथोलिक लोगों की बड़ी भीड़ होती थी। सारे फ़्रांस के लोग अपने बाल-बच्चों-समेत उस मेले को देखने के लिये जाते थे। इस मेले को ह्यूगूनाटों के विनाश का

अच्छा अवसर समझकर चार्ल्स, उसकी स्त्री और दरबारियों ने यह गुप्त मंत्रणा की कि उस दिन सहसा ह्यूगूनाटों पर आक्रमण कर दिया जाय। म्यूनिसिपैलिटी के अधिकारियों को यह सूचना दे दी गई कि मेले के दिन किसी भी ह्यूगूनाट को शहर से बाहर न निकलने दिया जाय। ड्यूक् ऑफ् गाइस ने इस पाप-कर्म में बहुत बड़ा भाग लिया। उस दिन संपूर्ण ह्यूगूनाटों की हत्या की गई। इस हत्या-कांड का हाल जब योरप में पहुँचा, तब सारा-का-सारा योरप काँप उठा। इस घटना से बेचारी एलिज़बेथ डर गई। उसने रानी मैरी का अंतिम निर्णय कर डालने का विचार किया, और स्कॉट्लैंड के संरक्षक मार्टन को लिखा कि 'मैं मैरी को तेरे हवाले करती हूँ। तू उसके साथ जैसा व्यवहार करना उचित समझ, वैसा कर। मैं तेरा साथ दूँगी।' अभी यह पत्र-व्यवहार हो ही रहा था कि मार्टन मर गया और मैरी एक नए संकट से बच गई।

नीदरलैंड का विद्रोह—यदि योरप के राजा लोग आंग्ल-कैथोलिकों को सहायता पहुँचाते, तो एलिज़बेथ को बहुत ही अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। वह उत्तरी विद्रोह तथा आंग्ल-कैथोलिक लोगों के षड्-यंत्रों को उस आसानी से नहीं दबा सकती, जिस आसानी से उसने उनको दबा दिया।

स्पेन का बादशाह फ़िलिप आंग्ल कैथोलिकों को जी से सहायता पहुँचाना चाहता था और आंग्ल सिंहासन पर मैरी का बैठना पसंद करता था। परंतु कुछ भी उसके वश में नहीं था। उसे फ़्रांस की बढ़ती हु शक्ति का भय था। फ़्रांस से अपने को बचाने के लिये उसने इँगलैंड के साथ मित्रता का ही व्यवहार किया। १५७२ में नीदरलैंड के भीतर भयंकर विद्रोह हो गया। फ़िलिप के लिये विद्रोह का दमन करना अत्यंत आवश्यक था। पाँच वर्षों तक फ़िलिप के सेनापति, राक्षसी प्रकृतिवाले आल्बा ने स्पेनी नीदरलैंड के सात प्रांतों पर अत्याचार-पूर्ण शासन किया। उसने वहाँ पर कैथोलिक-मत को फैलाने का यत्न किया। परंतु वह इस प्रयत्न में सफलता नहीं पा सका। कारण, किसी जाति के धर्म को बलपूर्वक बदलना सहज काम नहीं है।

आल्बा के अत्याचार और क्रूर व्यवहार से तंग आ-कर हालैंड और ज़ीलैंड ने विद्रोह कर दिया और वीरता के साथ स्पेन-निवासियों के आक्रमणों का सामना शुरू किया। १५७६ में अन्य प्रांतों ने भी हालैंड का साथ दिया और अपने को हालैंड के साथ पैसिफ़िकेशन ऑफ़ घेंट (Pacification of Ghent) के अनुसार पूर्ण रूप से संगठित किया।

यह संगठन चिर-काल तक स्थिर न रह सका, क्योंकि

फ़िलिप के कामज भाई, आस्ट्रिया के वान जोन ने नीदरलैंड के दस दक्षिण के प्रांतों को इस शर्त पर अलग कर दिया कि उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता में फ़िलिप कभी किसी तरह हस्तक्षेप नहीं करेगा। इस पर हालैंड के नेतृत्व में नीदरलैंड के सात प्रांत आपस में मिल गए। उन्होंने आरेंज़ के विलियम को अपना शासक नियत किया। डच प्रजा-तंत्र की उत्पत्ति इसी समय से है। एलिज़बेथ ने हालैंड के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की। इस पर फ़िलिप उससे अत्यंत रुष्ट हो गया। पर रुष्ट होने पर भी वह रानी का बाल बाँका नहीं कर सका। कारण, उसकी सारी शक्ति हालैंड को कुचलने में लगी हुई थी।

(६) इँगलैंड में कैथोलिक मत की नई लहर

सैमिनरी पादरी—एलिज़बेथ ने अपनी बुद्धिमानी, चतुरता और धर्म-संबंधी सहनशीलता की नीति से आंग्ल प्रजा को अपने वश में कर लिया। इँगलैंड में कैथोलिक मत की बहुत ही अधिक दुर्गति हो चुकी थी। कैथोलिक मत के नेता लोग इँगलैंड में उसके पुनरुद्धार के उपाय सोचने लगे। लंकाशायर के एक पादरी विलियम ऐलन ने स्पेनी नीदरलैंड में एक कॉलेज या सैमिनरी खोला, जिसका मुख्य उद्देश कैथोलिक मत के प्रचारक तैयार करना था, जो इँगलैंड के कैथोलिक मत का पुनरुद्धार कर सकें। पहले यह कॉलेज डोई में था। कई कारणों से यह डोई

से हटाकर रीम् में स्थापित किया गया। इस कॉलेज ने बहुत उन्नति की और इँगलैंड में अपने सैमिनरी पादरियों को भेजना शुरू किया। इससे पहले आंग्ल कैथोलिक लोग राजनीति में कुछ भी भाग नहीं लेते थे। सैमिनरी पादरियों ने इस सुस्ती को दूर किया और वे राजनीति में भाग लेने लगे। बेचारी एलिज़बेथ ने घबराकर इन्हें दबाने के लिये कठोर-से-कठोर नियम बनाए। १५७७ में इनके नेता कुथबर्ट मेन (Cuthbert Mayne) की हत्या करा डाली गई। लोगों ने इसको शहीद के तौर पर पूजना शुरू किया।

जेसुइटों का इँगलैंड पर आक्रमण (१५८०)—१५८० में इँगलैंड के भीतर जेसुइट लोग भी जा पहुँचे। इनसे आंग्ल प्रोटेस्टेंट लोग डर गए। इनके नेता राबर्ट पार्संज़ और एडमंड कैंपियन थे। ये दोनों बहुत चालाक और धार्मिक जोशवाले थे। इनके विरुद्ध नए-नए नियम बनाए गए—इनके चाल-चलन और व्यवहार की पूरी जाँच की गई। इस पर पार्संज़ योरप में भाग गया, और कैंपियन क़ैद कर लिया गया। एलिज़बेथ ने उसको भी मरवा डाला। लोगों ने उसका नाम भी शहीदों में लिख लिया। रानी के राज्य में कैथोलिक प्रचारकों को यही दंड मिलता रहा और वे शहीद बनते चले गए।

प्रतिज्ञापत्र (१५८४)—कैथोलिकों को मरवा डालने का एक मुख्य-कारण यह भी था कि वे लोग रानी

को मारकर मैरी को वह पद देने के लिये दिन-रात षड्यंत्र रचा करते थे। फ़िलिप इन षड्यंत्रकारियों को सहायता पहुँचाता था। यही कारण था कि रानी ने तंग आकर स्पेन के राजदूत को उसके देश म भेज दिया। बर्घले और बार्शिंघम ने एक प्रतिज्ञा-पत्र (The bond of Association) तैयार किया और उस पर सब आंग्लों के हस्ताक्षर कर-वाए। पत्र के अनुसार आंग्लों ने तन-मन-धन से राज्य की रक्षा का प्रबंध प्रारंभ किया। १५८५ की लोक-सभा ने भी इस प्रतिज्ञा-पत्र को स्वीकार कर लिया और कैथोलिक लोगों के विरुद्ध नए-नए राज्य-नियमों का विधान किया।

बैबिंग्टन-षड्यंत्र (१५८६)—१५८६ में एक नया षड्यंत्र रचा गया। इसका भी मुख्य उद्देश रानी की हत्या करना था। इस षड्यंत्र का नेता, सैमिनरी पादरी जान बैलर्ड (Ballard) था। इसने अंथनी बैबिंग्टन को अपना साधन बनाया। बैबिंग्टन ने बेवकूफ़ी से किसी से गुप्त मंत्रणा का हाल कह दिया। बार्शिंघम ने उसको क़ैद कर लिया। दैव-संयोग से उसके पास मैरी की चिट्ठी मिल गई, जिसमें उसने एलिज़बेथ को मार डालने की आज्ञा दी थी।

उस चिट्ठी के सहारे मैरी पर मुक़दमा चलाया गया। फ़ोथरिंगहे-दुर्ग में न्यायालय लगा। न्यायालय में बहुतों ने इस आधार पर गवाही न दी कि एलिज़बेथ को मैरी के अपराध-निर्णय का अधिकार ही नहीं है। मैरी स्वयं

एक रानी है । वह एलिज़बेथ की अधीन प्रजा नहीं है । इस पर भी न्यायालय ने १५८६ के ऑक्टोबर में मैरी को प्राण-दंड दे दिया । एलिज़बेथ ने १५८७ के फ़रवरी तक न्यायालय के निर्णय पर हस्ताक्षर नहीं किए और मैरी की हत्या को अनुचित ठहराया । डेवियन ने मैरी को १५८७ में, ८ फ़रवरी के दिन, मरवा डाला । एलिज़बेथ ने मैरी की मृत्यु के दोष से अपने को बचाया और बेचारे डेवियन का सत्यानास कर दिया । कुछ हो, मैरी की मृत्यु से रानी को ही विशेष लाभ हुआ । वह निष्कंटक राज्य करने लगी ।

एलिज़बेथ और पार्लियामेंट—१५६६ से १५७१ तक रानी ने लोक-सभा का एक भी अधिवेशन नहीं किया ; कारण, इधर उसे रुपयों की कोई ज़रूरत ही नहीं थी । लोक-सभा के अधिवेशन में सभ्य लोग कैथोलिकों के विरुद्ध राज-नियम बनाते थे । रानी को यह नापसंद था । वह धार्मिक सहिष्णुता को ही पसंद करती थी । रानी ने १५७१ में लोक-सभा का अधिवेशन किया । इसमें अधिक संख्या प्यूरिटन लोगों की थी । उन्होंने कैथोलिकों को सताने के लिये नए नियम बनाने चाहे, पर सफलता नहीं प्राप्त कर सके । कारण, रानी ऐसे नियमों के विरुद्ध थी । प्यूरिटन लोग सादा जीवन व्यतीत करते थ । स्वार्थत्याग, जोश और स्वतंत्र विचार में वे अद्वितीय थे । वे धर्म में नए-

नए सुधार करना चाहते थे। वे लोग पुराने संस्कारों और प्रथाओं के विरोधी थे। वे इन बातों को व्यर्थ समझते थे। क्रांवेल के समय में उनकी शक्ति चरम सीमा को पहुँच गई थी। इस पर विशेष प्रकाश उसी स्थान पर डाला जायगा। इसलिये इस प्रकरण को यहीं पर छोड़ देना उचित है।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५५८	एलिज़बेथ का राज्याधिरोहण
१५५९	मुख्यता व एकता का नियम (Act of Supremacy and Uniformity)
१५६१	मैरी स्टिवार्ट का स्कॉट्लैंड में पहुँचना
१५६५	पार्कर का विज्ञापन
१५६८	मैरी स्टिवार्ट का एलिज़बेथको लज्जित करना
१५६९	उत्तरी आंग्लों का विद्रोह
१५७०	पोप का एलिज़बेथ को बहिष्कृत करना
१५७२	स्पेन से हालैंड का अलग होना
१५७६	ग्रिंडल कैंटरबरी का आर्च-बिशप बनना
१५७७-१५८०	ड्रेक का सारे संसार का चक्कर लगाना
१५७९	भू-ट्रैक्ट का संगठन
१५८४	प्रतिज्ञा-पत्र, स्पेन से इँगलैंड का विरोध
१५८६	बैबिंग्टन का षड्यंत्र
१५८७	मैरी स्टिवार्ट की हत्या

अष्टम परिच्छेद

एलिज़बेथ के अंतिम वर्ष (१५८७-१६०३)

(१) इँगलैंड का योरप के राष्ट्रों से संबंध

इँगलैंड और स्पेन का पारस्परिक संबंध—मैरी जब क़ैद थी, उन दिनों इँगलैंड और स्पेन का परस्पर का संबंध दिन-दिन बिगड़ता जा रहा था। फ़िलिप ने आंग्ल षड्यंत्र-कारियों को बहुत उत्तेजित किया और मैरी को छुड़ाने के प्रयत्न में भी कोई बात उठा नहीं रक्खी। इँगलैंड ने भी स्पेन से इसका बदला लिया। उसने फ़िलिप के विरुद्ध नीदरलैंड के लोगों को पूरी सहायता पहुँचाई। फ़िलिप इँगलैंड से और भी अधिक चिढ़ गया। उसने आयरलैंड में अपनी सेनाओं को उतार दिया और आयरिश कैथोलिकों को विद्रोह करने पर उतारू किया। इतना ही नहीं, उसने स्कॉट्लैंड को भी इँगलैंड से लड़ाने का यत्न किया। जेम्ज़ षष्ठ को उसकी माता की क़ैद का हाल सुनाया और कैथोलिक बनने के लिये पत्र लिख भेजा। किंतु स्कॉट्लैंड में फ़िलिप को कुछ भी सहायता नहीं मिली।

भूमि के समान ही समुद्र पर भी आंग्लों और स्पेनियों के संबंध अच्छे नहीं थे। दोनों ही देशों के व्यापारी एक दूसरे से हर समय लड़ते थे। स्पेनी लोग आंग्लों का शिकार करते थे और आंग्ल लोग स्पेनियों के सोने-चाँदी से लदे जहाज़ लूटते थे। यह झगड़ा २० बरस तक लगातार

चलता रहा, पर स्पेन और इँगलैंड खुल्लमखुल्ला युद्ध के मैदान में नहीं उतरे। इसका मुख्य कारण यह था कि फ़िलिप और एलिज़बेथ दोनों भीरु स्वभाव के थे, और लड़ाई में पड़ने से घबराते थे। फ़िलिप को और भी तंगियाँ थीं, जिससे वह लड़ाई नहीं छेड़ सका। स्पेनी नीदरलैंड के बहुत-से भागों ने विद्रोह कर दिया और अपने को प्रजा-तंत्र राज्य के रूप में संगठित कर लिया। स्पेन इस प्रजा-तंत्र राज्य के विरुद्ध था। वह नीदरलैंड के विद्रोही भागों पर अपना ही प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था। स्पेन के साथ फ़्रांस का भी संबंध अच्छा न था। १५५९ के युद्ध को हुए ३० वर्ष के लगभग गुज़र चुके थे, तथापि स्पेन और फ़्रांस की शत्रुता पहले की-सी ही बनी हुई थी।

स्पेन यदि इँगलैंड से युद्ध करता, तो फ़्रांस स्पेन पर अपने पूरे बल से आक्रमण कर देता। इस झमेले में पड़कर ही स्पेन ने इँगलैंड से मित्रता नहीं तोड़ी। फ़िलिप ने सोचा कि आंग्लों और स्पेनियों का झगड़ा होने दो। राज्य का इन झगड़ों में पड़ना ठीक नहीं। झगड़े तो आपस में होते ही रहेंगे। वे आप ही शांत भी हो जायँगे। मँझधार में पड़ी नाव आख़िर कहीं-न-कहीं जाकर लगेहीगी।

नीदरलैंड में आंग्लों और फ़्रांसीसियों का हस्तक्षेप—नीदरलैंड के विद्रोह को शांत करने के लिये फ़िलिप बहुत ही चटपटा रहा था। आस्ट्रिया के डान जॉन ने फ़िलिप

का बहुत बड़ा उपकार किया। उसने दक्षिणी और मध्य नीदरलैंड को अपने वश में कर लिया। मगर उत्तरी नीदरलैंड के लोग उसके क़ाबू में न आए। डान जॉन के मरने पर नीदरलैंड का शासक परमा का ड्यूक अलेग्ज़ंडर फ़र्निंत बना। यह अपने समय का एक सेनापति था। इसके शासक बनते ही एलिज़बेथ और फ़्रांस का सम्राट् हैनरी तृतीय दोनों बहुत ही डरे। हैनरी तृतीय का छोटा भाई फ़्रांसिस था। यह अंजो का ड्यूक था और इसी को चार्ल्स नवम के नाम से फ़्रांस के सिंहासन पर बैठना था। १५७४ में फ़्रांस और इँगलैंड का पत्र-व्यवहार शुरू हुआ। एलिज़बेथ और फ़्रांसिस के ब्याह का मामला तय होने लगा। फ़िलिप को जब यह बात मालूम हुई, तब वह बहुत ही डर गया। कारण, इससे अंजो का प्रांत भी उसके हाथ से निकल जाता।

अंजो-विवाह का विचार (१५८१)—रानी के आंग्ल राज्य पर अधिकार करने के उपरांत उसके ब्याह के बारे में इधर-उधर किंवदंतियाँ उड़ती ही रहती थीं। लोग रानी से ब्याह करने के लिये कहते थे, क्योंकि लोगों की यह इच्छा थी कि रानी का कोई बालक ही आंग्ल-राज्यासन पर राजा के तौर पर बैठे। परंतु रानी के मन में कुछ और ही था। उसने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं जीवन-भर ब्याह नहीं करूँगी, अकेली ही मनमाने

तौर पर शासन करती रहूँगी। जब कोई रानी से ब्याह के लिये कहता, तो वह भी कह देती थी कि मैं अपने ब्याह के बारे में कई जगह बातचीत कर रही हूँ। जब कहीं ब्याह की बात पक्की हो जायगी, तब तुमको बता दूँगी। तुम ब्याह के लिये तैयारियाँ शुरू कर देना।

अंजो के साथ ब्याह के मामले की बात शुरू होने के समय रानी की अवस्था ५० वर्ष की थी। अंजो कुरूप और रानी से २० वर्ष छोटा था। जब वह ब्याह करने के लिये इँगलैंड पहुँचा, तब रानी ने बहुत अच्छी तरह उसका स्वागत किया। रानी ने उसे समझाया कि नीदरलैंड की विपत्ति दूर हो जाय, तब विवाह का विचार किया जायगा। वह भी रानी के कहने पर आंग्लों की ओर से नीदरलैंड में स्पेन के साथ लड़ने को चला गया। रानी ने उसको सेना और रुपयों के द्वारा बहुत ही अधिक सहायता पहुँचाई। अंजो सर्वथा अयोग्य पुरुष था। वह फ़िलिप का बाल भी बाँका न कर सका। इसका परिणाम यह हुआ कि एलिज़बेथ इस विवाह के संकट से न बच सकी। कुछ ही समय के बाद स्पेनियों ने अंजो को नीदरलैंड से भगा दिया। वह भागकर फ़्रांस पहुँचा और थोड़े ही दिनों बाद मर गया।

नीदरलैंड में लीसेस्टर (१५८६)—अंजो-विवाह का मुख्य उद्देश यही था कि किसी-न-किसी उपाय से रानी नीदरलैंड को स्पेन के आक्रमणों से बचावे। अंजो की मृत्यु

के बाद परमा की शक्ति दिन-पर-दिन बढ़ती ही गई। उसने बहुत-से प्रांतों को जीत लिया। १५८४ में किसी कैथोलिक ने विलियम ऑफ् ऑरेंज को क़तल कर डाला। इससे हालैंडवाले बहुत ही अधिक घबरा गए। वे अपनी स्वतंत्रता से निराश हो गए। इन्हीं दिनों में रानी ने स्पेनी दूत को इँगलैंड से निकाल दिया। १५८५ में परमा ने अंटवर्प को जीत लिया। इस दुर्ग के पतन से दक्षिणी नीदरलैंड अशक्त हो गया।

सब ओर से निराश होकर नीदरलैंड के लोगों ने रानी से कहा कि हम तुमको अपनी रानी बनाने के लिये तैयार हैं। तुम किसी तरह हमारी रक्षा करो— हमारी स्वतंत्रता को बचाओ। एलिज़बेथ बहुत ही चालाक और समझदार थी। उसने इस प्रलोभन से अपने को बचाया और लीसेस्टर के अर्ल को एक सेना के साथ नीदरलैंड को रवाना किया। ज़ुट-फ़ेन (Zut phen) पर एक भयंकर युद्ध हुआ। उसमें प्रसिद्ध आंग्ल लेखक और सेनापति, सर फ़िलिप सिड्नी मारा गया। १५८६ के अंत में हालैंडवालों से और लीसेस्टर से झगड़ा हो गया। वह इँगलैंड को लौट आया। इस घटना के कुछ ही दिनों बाद बैबिंग्टन के षड्यंत्र का भेद खुला और मेरी की हत्या की गई।

लगभग १०० वर्ष से स्पेनी और आंग्लों के सामुद्रिक

युद्ध हो रहे थे। कोलंबस ने अमेरिका का पता लगाया। इससे स्पेनियों का दक्षिण और मध्य अमेरिका पर प्रभुत्व स्थापित हो गया। स्पेनियों ने सामुद्रिक व्यापार, उपनिवेश और साम्राज्य के सहारे समृद्धि बढ़ाना आरंभ किया। १५८० में फ़िलिप ने पुर्तगाल पर विजय प्राप्त की। पुर्तगालवालों के हाथ में भारतवर्ष का व्यापार था। इस विजय से स्पेनियों की शक्ति बढ़ गई, पूर्वी व्यापार और ब्रैजिल पर भी उन्हीं का प्रभुत्व स्थापित हो गया। आरंभ में स्पेनियों और पुर्तगालवालों का कोई भी प्रतिस्पर्द्धी नहीं था। इँगलैंड से तो उन्हें कुछ भी भय न था। कारण, उस समय आंग्ल लोग सभ्यता में बहुत ही पीछे थे। उनको व्यापार करने की तमीज़ नहीं थी। समुद्र की यात्रा करने का और नए-नए देशों की खोज निकालने का उनको कुछ भी शौक़ नहीं था। मध्य काल में आंग्ल लोग घर ही में रहना बहुत पसंद करते थे। उनको लड़ने-झगड़ने और खाने-पीने में ही बड़ा आनंद आता था। मतलब यह कि वे व्यापार करके रुपए कमाना नहीं जानते थे। विदेशी लोग उनके यहाँ व्यापार करके लाभ उठाते थे, पर उनको इसकी कुछ भी परवा नहीं थी। लेकिन ट्यूडर-काल में इँगलैंड की दशा बिलकुल ही बदल गई। आंग्ल लोग भी समुद्र-यात्रा और व्यापार की ओर ध्यान देने लगे—इन कामों में हाथ डालने लगे।

(२) एलिज़बेथ के समय में समुद्र-यात्रा

ट्यूडर-काल में आंग्लों ने व्यापार और समुद्र-यात्रा की ओर पग बढ़ाया। कोलंबस और वास्कोडिगामा की खोजों से हैनरी सप्तम की आँखें खुलीं। उसने जॉन कैबट-नामक वैनीशियन व्यापारी को अमेरिका की ओर रवाना किया। उसने लैब्रेडार का ज्ञान प्राप्त किया। पर इससे फल कुछ भी न निकला। ब्रिस्टल के व्यापारियों ने कुछ मनुष्यों को अमेरिका की ओर फिर भेजा। इन लोगों ने न्यू फ़ाउंडलैंड का पता लगाया। आंग्लों ने मछलियों के व्यापार द्वारा इस जगह से लाभ उठाया। पश्चिमी आफ़्रिका की ओर भी आंग्लों ने जाना शुरू किया।

इन लोगों का सामुद्रिक उन्नति में बहुत बड़ा भाग है। एलिज़बेथ के समय तक आंग्लों की सामुद्रिक शक्ति कितनी कम थी, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि सन् १५४८ में ५३ छोटे जहाज़, सन् १५५८ में २६ बड़े जहाज़, सन् १५७५ में २४ बड़े जहाज़ और सन् १५८८ में ३४ बड़े जहाज़ इस राज्य के पास थे। आंग्ल-राज्य जहाज़ों की कमी को व्यापारियों के जहाज़ों से पूरा करता था। आंग्ल-रानी के राज्यकाल में दो प्रकार के आंग्लों के पास जहाज़ थे। एक व्यापारी या सामुद्रिक स्थानों और नए-नए प्रदेशों का ढूँढनेवालों के पास, दूसरे स्पेन के जहाज़ों को लूटनेवाले अँगरेज़ों के पास।

समुद्री डाकुओं से इँगलैंड को बहुत ही अधिक लाभ था। आंग्ल डाकू-जहाज़ों के नेता बहुत ही उत्साही, चतुर और समुद्र की लड़ाई में दक्ष थे। ये लोग दो-दो जहाज़ों से दस-दस जहाज़ों का मुक़ाबला करते थे, बीसों बार स्पेनियों के सोने-चाँदी से भरे हुए जहाज़ों को लूट चुके थे और उनसे समुद्री लड़ाइयाँ लड़ चुके थे। नए-नए देशों का पता लगानेवाले आंग्लों को भी अनेक बार यही काम करना पड़ता था। उन्हें स्पेनियों से अपने को बचाने के लिये युद्ध करना पड़ता था। इन्हीं लोगों ने इँगलैंड को समुद्र का स्वामी बनाया।

रानी के राजगद्दी पर बैठने के पहले ही पोप ने स्पेन और पुर्तगाल को योरप के सिवा सारे महाद्वीप बाँट दिए थे। आंग्लों को पोप का यह फ़ैसला भला कैसे मंज़ूर हो सकता था? ब्रेजिल, एशिया और आफ़्रिका पुर्तगाल-वालों को और ब्रेजिल को छोड़कर शेष सारा अमेरिका स्पेनियों को, पहले से ही, मिल चुका था। आंग्ल लोग इन दोनों देशों के राज्य में अपने जहाज़ों को ले जाते थे और वहाँ मनमाने तौर पर व्यापार करते थे। इस-से स्पेनवाले चिढ़ गए। उन्होंने आंग्ल व्यापारियों पर अत्याचार करना शुरू किया। आंग्ल भी उनके जहाज़ों को लूटने लगे। रानी के राज्यकाल में निम्न-लिखित

आंग्लों ने समुद्र-यात्रा और सामुद्रिक डाकों के कारण इँगलैंड में प्रसिद्धि प्राप्त की—

१. हाकिंज़
२. ड्रेक
३. आक्जनहस
४. फ़ाविशर
५. कैवाडिश
६. डेविश
७. रैले

(१) हाकिंज़—इसने १५६२ से १५६६ तक लगातार सामुद्रिक यात्राएँ कीं। इसीने सब से पहले दास-व्यापार शुरू किया। यह आफ़्रिका से निग्रो दासों को ख़रीदकर अमेरिका में ले जाता और बेचता था। स्पेनियों को यह नापसंद था। उन्होंने हाकिंज़ को स्पेनी-प्रदेशों में व्यापार करने से रोका। हाकिंज़ भला कब यों माननेवाला था? अमेरिका के लोग हाकिंज़ के पक्ष में थे। कारण, उन्हें दासों की आवश्यकता थी। अमेरिका की खानों को खोदना और वहाँ खेती करना सहज काम न था। दासों के द्वारा यह काम आसानी से ही किया जा सकता था। अमेरिका के प्राचीन असभ्य लोग किसी की भी मातहती में काम करने के आदी न थे। यदि उनसे काम लेने का कोई यत्न करे, तो वे शीघ्र ही बीमार पड़कर मर जाते थे। इसी कारण अमेरिकन स्पेनियों का हाकिंज़ से विशेष प्रेम था। यही कारण है कि हाकिंज़ १५६२ से १५६४ तक दो बार

दासों से भरे हुए जहाज़ों को मेक्सिको, हिस्पेनियाला आदि स्थानों में ले गया। उसने दासों को बेचकर बहुत ही लाभ उठाया था। वह बहुत ही अमीर होकर इँगलैंड लौटा।

फ़िलिप हाकिंज़ की बढ़ती से चिढ़ गया। उसने उसको स्पेन के प्रदेशों में व्यापार करने से रोका। पर उसने उस निषेध की कुछ परवा नहीं की और तीसरी बार फिर दास-व्यापार के लिये चल पड़ा। मेक्सिको के अंदर वेराक्रूज़ पर स्पेनी राज्याधिकारियों ने उसको दास-व्यापार करने से रोका। इसी पर उसका स्पेनियों से झगड़ा हो गया। स्पेनियों के बहुत-से जहाज़ों ने उसको सहसा आकर घेर लिया। हाकिंज़ समुद्र के युद्ध में चतुर था। उसने अपने जहाज़ों की कुछ भी परवा नहीं की, दो-तीन जहाज़ों को लेकर बड़ी सफ़ाई से निकल भागा और इँगलैंड में पहुँच गया। उसकी वीरता और साहस ने आंग्लों के पथ-प्रदर्शक का काम किया। हरएक आंग्ल अपने सौभाग्य और समृद्धि के लिये इन कामों में पड़ना आवश्यक समझने लगा।

हाकिंज़ से कुछ पहले इँगलैंड में 'साहसी व्यापारियों की कंपनी' (Company of Merchant Adventurers)-नाम की एक कंपनी खुल चुकी थी। उसका प्रधान सिवेस्टियन कैबट था। इस कंपनी ने स्कंडिनेविया और

बाल्टिक प्रांतों से बहुत ही अच्छी तरह व्यापार किया और उस व्यापार से खूब लाभ उठाया। शुरू में यह व्यापार हंसो की स्टील यार्ड कंपनी के हाथ में था।

साहसी व्यापारी कंपनी ने १५५३ में सर ह्यूग बिलग्बी और रिचर्ड चांसलर को नए-नए देशों और नए-नए सामुद्रिक मार्गों का पता लगाने के लिये भेजा। इन्होंने आर्कटिक समुद्र की ओर से चीन में पहुँचने का मार्ग ढूँढना चाहा, पर उनका यह प्रयत्न सफल नहीं हुआ। चांसलर ने सफ़ेद सागर (White sea) का पता लगाया और रूस के साथ सीधे व्यापार करने की राह भी ढूँढ ली। यही कारण है कि इसके कुछ ही दिनों के बाद इँगलैंड में रशिया कंपनी नाम की एक नई कंपनी खुल गई। रानी मैरी के समय में ये सब व्यापारी-कंपनियाँ खुल चुकी थीं।

धार्मिक परिवर्तन तथा धार्मिक सुधारों का ऊपर-लिखे गए साहस से संबंध रखनेवाले कामों से बहुत अधिक घनिष्ठ संबंध था। लगभग सभी आंग्ल व्यापारी प्रोटेस्टेंट थे। उनको पोप से घोर घृणा थी। मैरी के समय में भी आंग्लों ने कैथोलिक-मतावलंबी समुद्र यात्रियों को लूटने में कसर नहीं रक्खी। कुछ ही दिनों के बाद हालैंड और फ़्रांस के लोगों ने भी इस डाके मारने के काम में आंग्लों का अनुकरण किया। सभी लोग स्पेनी जहाज़ों को लूटते

थे। इस लूटमार को ये लोग पवित्र और धर्म का काम समझते थे। कारण, उनके विचार में पोप की प्रजा को लूटना कुछ भी बुरा न था। स्पेनी लोग भी इनको अपने प्रदेशों में व्यापार करने से रोकते थे। परंतु "मरता क्या न करता" के अनुसार अनेक बार स्पेनी औपनिवेशिक लोग इन डाकू और नियमविरोधी व्यापारी जहाज़ों का स्वागत करते ही थे और इनसे सामान ख़रीदकर अपनी ज़रूरतों को पूरा करने में कुछ भी कमी न करते थे। हाकिंज़ ने दास-व्यापार से किस तरह लाभ उठाया, इसका वर्णन किया ही जा चुका है।

(२) ड्रेक तथा (३) आक्ज़ंहम—ड्रेक हाकिंज़ का संबंधी था। वह हाकिंज़ के साथ बहुत दफ़े समुद्र-यात्रा कर चुका और स्पेनियों के जहाज़ों को लूट चुका था। १५७२ में १११ आदमियों के साथ ड्रेक स्पेनिश अमेरिका की ओर रवाना हुआ। वह डरायन की जलग्रीवा को पारकर नांम्रिदिदाये नामक बंदरगाह में जा पहुँचा। रात को ही उसने बहुत-से स्पेनी जहाज़ों पर आक्रमण किया और उनमें लदी हुई चाँदी तथा सोने को लूट लिया। इस आक्रमण में वह स्वयं भी घायल हो गया। उसने एक जहाज़ तो चाँदी से भरकर इँगलैंड की ओर रवाना कर दिया और दो जहाज़ों को अपने साथ रक्खा। उसने लूटमार का काम पहले ही की तरह जारी रक्खा।

पनामा की ओर रवाना होते हुए उसने एक पहाड़ी से पैसिफ़िक-महासागर को देखा और उसके द्वारा इँगलैंड पहुँचने का इरादा किया। अभी तक पैसिफ़िक-महा-सागर में किसी भी आंग्ल ने यात्रा न की थी। स्पेनी लोग ही पीरू से चाँदी प्राप्तकर पैसिफ़िक-सागर के द्वारा स्पेन पहुँचते थे। १५७७ में उसने पैसिफ़िक-सागर की यात्रा की और अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने का इरादा किया। तीन बरसों तक वह समुद्र में इधर-उधर भटकता रहा और तीन बरसों में सारे संसार का चक्कर लगाकर फिर इँगलैंड जा पहुँचा। ड्रेक की संसार-यात्रा से पूर्व ही १५७५ में आक्ज़ंहम ने स्पेन की चांदी को लूटने का यत्न किया। वह अपनी तोपें तथा जहाज़ों को लेकर नांत्रिदिदाये में जा पहुँचा। यहाँ से वह पैसि-फ़िक-सागर में पहुँचा और उसने वहाँ स्पेनियों के चाँदी से भरे हुए दो जहाज़ों को लूट लिया, पर बेवकूफ़ी से जहाज़ों पर के स्पेनियों को छोड़ दिया। इन छुटे हुए स्पेनियों ने आक्ज़ंहम के पीछे बहुत-से स्पेनी जहाज़ों को रवाना करवा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह स्पेनियों के हाथ में पड़कर मारा गया। इस घटना के कुछ ही दिनों बाद ड्रेक ने १५७७ में संसार-यात्रा का साहस किया। यात्रा करने के पूर्व ड्रेक की इच्छा मैगेलान की जलग्रीवा से गुज़रकर पैसिफ़िक-महासागर में पहुँचने

की थी। मैगेलान में पहुँचते ही भयंकर सामुद्रिक तूफ़ान आ गया। इससे उसके पाँचों जहाज़ एक दूसरे से अलग हो गए। कौन जहाज़ कहाँ गया, इसका उसको कुछ भी पता न चला। लाचार होकर उसने पैलिकान-नामक अपने जहाज़ को गोल्डन हिंड का नाम देकर समुद्र-यात्रा शुरू की। मैगेलान से वह वाल्परेशो पर जाकर ठहरा। वहाँ उसने स्पेनियों के चाँदी से भरे हुए जहाज़ों को लूटा। उसने स्पेनियों के एक जहाज़ को अपने साथ लिया और उस जहाज़ के सहारे स्पेनियों के एक और जहाज़ को लूटने का यत्न किया, जिसमें ख़ज़ाना था। इस यत्न में वह सफल हुआ। वह ख़ज़ाना लूटकर बड़ी तेज़ी से भाग निकला। पीरू से चलकर रास्ते में स्पेनियों के जहाज़ों को निर्भय होकर लूटता हुआ वह उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी किनारे पर जा पहुँचा। इस लूट-मार में उसको बहुत से सामुद्रिक नक़्शे मिल गए। इन नक़्शों के सहारे इँगलैंड को आगे चलकर बहुत ही अधिक लाभ पहुँचेगा। वह अमेरिका के पश्चिमी किनारे से लौटकर न्यू आर-लियन में पहुँचा और भारतवर्ष की ओर रवाना हुआ। वह भारतवर्ष, मलाका, चीन आदि में घूमता हुआ १५८० में इँगलैंड के अंदर पहुँच गया।

उसकी यात्रा तथा सफलता को सुनकर एलिज़बेथ ने उसको नाइट की उपाधि दी। सारी आँग्ल जाति ड्रेक को

मान्य की दृष्टि से देखने लगी। उसके बाद उसकी देखा-देखी १५७६ से १५८८ तक अन्य बहुत-से आंग्लों ने सामुद्रिक यात्राएँ कीं, जिनके नाम ऊपर दिए जा चुके हैं।

(४) फ़ाविशर—१५७६ से १५७८ तक फ़ाविशर ने इँगलैंड के उत्तरी भागों का पता लगाया। ग्रीनूलैंड को खोजनेवाला यही समझा जाता है। यही कारण है कि ग्रीनूलैंड के पास एक खाड़ी है, जिसका नाम फ़ाविशर है।

(५) कैव्रांडिश—१५८६ से १५८८ तक इसने सामुद्रिक यात्राएँ कीं। इसने स्पेनी यात्रियों को बहुत ही अधिक लूटा और कई स्थानों पर आग लगा दी। यह स्पेनियों को लूटकर और खूब अमीर होकर इँगलैंड लौट आया।

(६) जॉन डेविश—इसने १५८८ में तीसरी बार समुद्र-यात्रा की। समुद्र के यात्रियों में ड्रेक से दूसरे नंबर पर इसी की गणना की जाती है। ग्रीनूलैंड के पास इसी के नाम पर एक जॉन डेविश स्ट्रेट है।

(७) रैले—इसका विचार स्पेनियों के सदृश ही अमेरिका आदि देशों में उपनिवेशों को बसाना था। इसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

(३) इँगलैंड और स्पेन का युद्ध

इँगलैंड और स्पेन का युद्ध (१५८४)—स्पेनी लोग ड्रेक को डाकू से भी बढ़कर बुरा समझते थे। उसने स्पेनी राज्य के ख़ज़ानों को लूटा था और स्पेनियों की संपत्ति

पर डाका मारा था । फ़िलिप ने ड्रेक को रानी से माँगा । कारण, वह ड्रेक को उसके अपराधों का दंड देना चाहता था ।

इन्हीं दिनों जेसुइट लोगों का झुंड इँगलैंड पहुँचा था । अंजो-विवाह का मामला भी इसके कुछ ही दिनों के बाद शुरू हुआ था । रानी ने ड्रेक को नाइट बनाया था । रानी उसके साहस और उत्साह के कामों को बहुत पसंद करती थी । यही कारण है कि रानी ने फ़िलिप का कहा नहीं माना । ड्रेक को उसके सिपुर्द नहीं किया ।

स्पेनी दूत के इँगलैंड से बाहर निकाले जाने के उपरांत फ़िलिप ने आंग्लों की संपत्ति को लूटना शुरू किया । उसके साम्राज्य में जहाँ कहीं आंग्ल रहते थे, उनके साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया गया ।

रानी ने इसका बदला लेने के लिये ड्रेक और फ़ाविशर को नियुक्त किया । इन दोनों सामुद्रिक डाकुओं ने १५८५ में वीगो नाम के स्थान को लूटा । ये लोग वेस्ट इंडीज़ की ओर शीघ्र ही रवाना हुए । १५८७ में मैरी की हत्या होते ही स्पेन ने इँगलैंड से खुल्लमखुल्ला लड़ना शुरू कर दिया । फ़िलिप ने अपने जहाज़ों को एकत्रित किया और इँगलैंड पर हमला करने की पूरी तैयारी की । ड्रेक चुपके-ही-चुपके कैडिज़ में जा पहुँचा और स्पेन के

जहाज़ी बेड़े में आग लगाकर बहुत-से जहाज़ डुबा आया। इससे फ़िलिप के क्रोध की सीमा न रही। उसने १५८८ में एक और जहाज़ी बेड़ा तैयार किया, और वह इँगलैंड पर हमला करने का मौक़ा देखने लगा।

फ़िलिप का इँगलैंड पर आक्रमण करने का उपाय—फ़िलिप अपने जहाज़ी बेड़े को फ़्लैंडर्ज़ में रवाना करना और वहाँ से ही परमा की सेना को इँगलैंड के किनारे पर उतारना चाहता था। फ़िलिप को यह आशा थी कि इँगलैंड में स्पेनियों के पहुँचते ही आंग्ल कैथोलिक लोग विद्रोह कर देंगे और स्पेनियों के साथ आ मिलेंगे। मैरी के मरते ही फ़िलिप ने इँगलैंड पर आक्रमण करने का अच्छा मौक़ा पाया। उसने आंग्ल-राज्य पर अपना अधिकार प्रकट किया। क्योंकि जॉन ऑफ़ घेंट की ओर से ट्यूडरों की अपेक्षा वही नज़दीकी राजा था। रानी स्थल में स्पेनियों से लड़ने से डरती थी, क्योंकि उसके पास कोई स्थिर सेना न थी। अतः उसने स्पेनियों को इँगलैंड में उतरने से रोकना चाहा। आंग्लों को सामुद्रिक युद्ध में आत्म-विश्वास था। हाकिंज़ तथा ड्रेक के पास अच्छे-अच्छे लड़ाकू जहाज़ थे। स्पेनियों और आंग्लों के जहाज़ी बेड़े में जो भेद था, वह इस प्रकार दिखाया जा सकता है—

स्पेनी बेड़ा	आंग्ल बेड़ा
(१) स्पेनियों के जहाज़ बहुत बड़े, जल के ऊपर उठे हुए और भारी थे, पर शीघ्र-गामी न थे।	(१) आंग्लों के जहाज़ भी काफ़ी बड़े थे, परंतु स्पेनियों से छोटे ही थे। उनका बहुत-सा भाग जल में था। वे हल्के और तेज़ चलनेवाले थे।
(२) तोपें, बंदूक़ें और बारूद थोड़ी थीं।	(२) हथियारों से खूब सुसज्जित थे।
(३) स्पेनी जहाज़ व्यापार तथा बोझ उठाने ही के योग्य थे। वे लंबी यात्रा न कर सकते थे।	(३) केवल लड़ने के लिये ही बनाए गए थे।
(४) स्पेनियों का सामुद्रिक सेनापति, ड्यूक मैडीवा-सिडोनिया था। इसके मातहत जो सेनापति थे, वे सामुद्रिक युद्धों को न जानते थे।	(४) आंग्लों का सामुद्रिक सेनापति लॉर्ड हावर्ड था। इसकी मातहती में ड्रेक, हाकिंज़ और फ़्राविशर आदि सेना-पति थे। ये लोग बीसों बार सामुद्रिक

	युद्धों में स्पेनियों को पराजित कर चुके थे।
(५) इसमें सिपाही बहुत ही अधिक थे और मल्लाह बहुत ही कम।	(५) इनमें सिपाही थोड़े थे और मल्लाह बहुत अधिक। अतः इन्होंने शीघ्रगामी होने के कारण स्पेनियों को तंग करना ही सोचा और बराबरी की लड़ाई से अपने को बचाया।
(६) सिपाही और मल्लाह साधारण योग्यता के थे।	(६) आंग्लों के जहाज़ सामुद्रिक डाकुओं से भरे हुए थे।

दोनों ओर के जहाज़ी बेड़ों को देखने से स्पष्ट है कि आंग्ल अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होने के कारण शीघ्रगामी जहाज़ों तथा ड्रेक, फ़ाबिशर आदि के सुप्रबंध तथा साहसी कार्यों से स्पेनियों पर शीघ्र ही विजय प्राप्त कर सकते थे। वास्तव में यही हुआ।

स्पेनी बेड़े का नाम अजेय आमेडा था। स्पेनियों को अपने जहाज़ी बेड़े के बड़े होने का बहुत ही घमंड था। दैवसंयोगवश आरंभ से ही इस बेड़े पर विपत्ति पर

विपत्ति पड़ने लगी । लिसबन से मई में यह चला। परंतु तूफ़ान के कारण आगे न बढ़ सका । १६ जुलाई को स्पेनी आर्मडा आंग्ल चैनल में पहुँचा और सामुद्रिक तूफ़ान के कारण डोवर की ओर बह गया । आंग्लों ने अपने जहाज़ी बेड़े के द्वारा स्पेनिश आर्मडा पर पीछे से हमला कर दिया । सप्ताह-भर तक युद्ध होता रहा । आंग्ल वायु के प्रवाह के साथ अपने जहाज़ी बेड़े को रखते थे, और स्पेनी आर्मडा पर बुरी तरह से चोट पहुँचाते थे । आर्मडा के एक-एक जहाज़ को आंग्लों ने काट दिया और बहुत-से जहाज़ों को अपने क़ाबू में कर लिया । लाचार होकर स्पेनी आर्मडा ने अपना लंगर कैले में डाल दिया । आंग्लों ने बहुत-सी नावों में आग लगा दी और उनको स्पेनी जहाज़ों के बीच में छोड़ दिया । इससे स्पेनियों के बहुत-से जहाज़ जल गए और उनको कैले छोड़कर भागना पड़ा । आंग्लों ने भागते हुए आर्मडा का बुरी तरह पीछा किया । लाचार होकर स्पेनियों ने आंग्लों से भयंकर युद्ध किया । यह युद्ध ग्रेविलाइंस पर २६ जुलाई के दिन लगातार ६ घंटे तक होता रहा । इस युद्ध के अनंतर उन्होंने नियमपूर्वक पीछे हटना शुरू किया और अनुकूल वायु की प्रतीक्षा की। बहुत समय तक प्रतीक्षा करने पर भी जब उन्हें माफ़िक़ हवा न मिली, तो उन्होंने स्कॉट्लैंड का चक्कर लगाकर

लिसबन पहुँचने का विचार किया । इस यत्न में उनके आधे जहाज़ नष्ट हो गए और वह इँगलैंड पर हमला न कर सका ।

इँगलैंड की विजय का परिणाम—आर्मेडा की पराजय से इँगलैंड एक भयंकर विपत्ति से बच गया । वहाँ प्रोटेस्टेंट मत सदा के लिये स्थिर हो गया । इसी युद्ध से इँगलैंड एक नौ-शक्ति-संपन्न राज्य बन गया, उसके व्यापार और उपनिवेशों की नींव पड़ गई । स्कॉट्लैंड और इँगलैंड की एकता का बीज भी इसी विजय से उत्पन्न समझा जाता है, क्योंकि यदि इँगलैंड का राजा फ़िलिप बन जाता, तो जेम्ज़ की मातहती में दोनों देश एक दूसरे से जुड़ न सकते । इस पराजय से स्पेन की शक्ति क्षीण हो गई । योरप में कैथोलिक-मत का फैलना रुक गया । हालैंड सदा के लिये फ़िलिप के अत्याचारों से छुटकारा पा गया । योरप के इतिहास में और इँगलैंड के जीवन में इस युद्ध का बहुत बड़ा स्थान है । नवीन इँगलैंड की नींव इसी विजय से पड़ी, ऐसा समझा जाता है ।

फ़्रांस का हैनरी चतुर्थ (१५८९)—फ़्रांस पर इँगलैंड की विजय का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा । फ़्रांस में कैथोलिकों और काल्विनिस्टों का झगड़ा अंतिम सीमा तक जा पहुँचा । कैथोलिक लोगों ने हैनरी तृतीय का सत्या-

नास कर दिया और स्पेन के फ़िलिप को अपना नेता नियत किया। कुछ ही दिनों के बाद हैनरी को किसी कैथोलिक ने मार डाला। उसकी मृत्यु के बाद नावून का ड्यूक हैनरी चतुर्थ के नाम से फ़्रांस के सिंहासन पर बैठा। यह बुद्धिमान्, चतुर और एलिज़बेथ के समान ही धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपाती था। इसने नैंट की उद्घोषणाओं (edict of Nantes) के द्वारा फ़्रांस में भी धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार किया। इसने धीरे-धीरे योरप के सम्राटों में एक उच्च स्थान प्राप्त कर लिया। इसने रानी एलिज़बेथ से मित्रता का व्यवहार किया और दस बरसों तक दोनों ही स्पेन की शक्ति को नष्ट करने का यत्न करते रहे। १५९८ में फ़िलिप ने फ़्रांस से संधि की और संधि के बाद ही मर भी गया। इसकी मृत्यु के बाद स्पेन की शक्ति सर्वथा नष्ट हो गई।

स्पेन के साथ युद्ध (१५८९-१६०३)—एलिज़बेथ की मृत्यु तक इंगलैंड और स्पेन का युद्ध चलता ही रहा। ये सब युद्ध समुद्र पर ही हुए। इन युद्धों में इंगलैंड ने सफलता नहीं प्राप्त की, क्योंकि स्पेनी लोग भी आंग्लों के समान ही समुद्र-युद्ध में निपुणता प्राप्त कर चुके थे। १५८९ में ड्रेक ने लिस्बन पर आक्रमण किया, परंतु कृतकार्य न हो सका। १५९१ में लॉर्ड टॉमस हावर्ड ने अज़ोर्ज़ (Azores) पर आक्रमण किया। स्पेनी बेड़े

के शक्तिशाली होने के कारण उसको पीछे लौटना पड़ा। हावर्ड का एक जहाज़ सर रिचर्ड ग्रैनविल के पास था। यह स्पेनी जहाज़ों के बीच में फँस गया। उस पर ग्रैनविल ने स्पेनी जहाज़ों को चीर-फाड़कर निकल जाने का यत्न किया। रैवन्ज़-नामक स्थान पर बहुत ही भयंकर युद्ध हुआ। उसने घायल होकर ही हार मानी। इस युद्ध की कहानियाँ बहुत दिनों तक आंग्लों को उत्तेजित करती रहीं।

१५९५ में ड्रेक और हाकिंज़ ने वेस्ट इंडीज़ पर धावा मारा। स्पेनी लोग पहले ही से तैयार थे। इसका परिणाम यह हुआ कि इन दोनों को ख़ाली हाथ लौटना पड़ा। इसके अगले ही साल फ़िलिप ने कैडिज़ पर दूसरा आर्मडा तैयार किया। लॉर्ड हावर्ड और लॉर्ड डावरेक्स ने कैडिज़ पर हमला किया और दूसरे आर्मडा को भी नष्ट कर डाला। इन्होंने कैडिज़ पर प्रभुत्व प्राप्त किया। इससे स्पेनियों को शिक्षा मिल गई। उन्होंने इँगलैंड पर चढ़ाई करने का विचार ही छोड़ दिया। १५९८ में फ़िलिप की मृत्यु होने पर इस प्रकार की तैयारियाँ किसी भी स्पेनी राजा ने नहीं कीं।

रानी के अंतिम वर्षों में आंग्लों ने अमेरिका में उपनिवेश स्थापित करने का यत्न किया। १५८३ में सर हैनरी हंफ्रे गिल्बर्ट ने न्यू फ़ाउंडलैंड में आंग्ल उपनिवेश स्थापित करना चाहा, परंतु सफलता नहीं हुई। घर को

लौटते समय समुद्र में उसकी मृत्यु हो गई। १५८५ से १५९० तक सर वाल्टर रैले ने वर्जीनिया में तीन वार उपनिवेश स्थापित करने का यत्न किया। उसको राजा का पद प्राप्त करने की इच्छा थी, इसलिये वह स्वयं वर्जीनिया में नहीं गया और इसी से उसका यत्न भी व्यर्थ गया। रानी की मृत्यु के समय विदेशों में एक भी आंग्ल उपनिवेश नहीं था।

(४) एलिज़बेथ और आयरलैंड

यह पहले ही दिखाया जा चुका है कि हैनरी अष्टम ने आयरलैंड को इँगलैंड के अधीन रखने के लिये क्या-क्या उपाय किए। हैनरी के बाद मैरी के समय तक इसी प्रकार के उपाय किए गए, परंतु सफलता किसी को भी न प्राप्त हुई। एलिज़बेथ बहुत ही कंजूस थी। वह आयरलैंड को वश में करना चाहती थी। परंतु उसके लिये रुपए नहीं ख़र्च करना चाहती थी। इसलिये उसने औपनिवेशिक शैली ग्रहण की। रानी मैरी ने आयरलैंड के जो प्रांत जीते थे, उनका नाम किंग्ज़ काउंटी और क्वींज़ काउंटी रक्खा। इन काउंटियों में दो शहर भी बसाए गए। उनमें एक का नाम फ़िलिप्स टाउन और दूसरे का नाम मैरी-टाउन रक्खा गया।

रानी एलिज़बेथ कैथोलिक मत के विरुद्ध थी। उससे पहले के आंग्ल राजा लोग आयरिश सरदारों ही के

द्वारा आयरलैंड का शासन करते थे। परंतु १५५८ से १५६७ तक जो-जो घटनाएँ हुईं, उन्होंने रानी को इस बात के लिये विवश किया कि वह आयरिश सरदारों के द्वारा आयरलैंड का राज्य और शासन करे। अलस्टर में ओ-नील का एक प्रसिद्ध वंश था। हैनरी अष्टम ने इस वंश को अपने क़ाबू में रखने के लिये अलस्टर के ज़मींदार को अर्ल की उपाधि दी। जब वह अर्ल बहुत ही बूढ़ा हुआ, तब उसने हैनरी अष्टम से प्रार्थना की कि उसकी अर्ल की उपाधि पुश्तैनी बना दी जाय। उसके सब से बड़े पुत्र को उसकी नीति पसंद नहीं थी। वह आंग्ल राजा की दी उपाधियों को घृणा की दृष्टि से देखता था। उसने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। पिता को ज़मींदारी से निकाल दिया। उसके जिन-जिन भाइयों ने विरोध किया, उन्हें भी यमलोक पहुँचा दिया। ओ-नील की बहादुर जाति ने उसको अपना नेता बनाया, और अलस्टर को स्वतंत्र कर लिया। एलिज़बेथ ने उस वीर पुरुष को अपने वश में करना चाहा, परंतु सफल न हो सकी। १५६७ में सर फ़िलिप सिडनी के पिता सर हैनरी फ़िलिप ने उस वीर के साथ युद्ध किया। आयरलैंड के दुर्भाग्य से ओ-नील को एक विरोध रखने-वाली जाति के सरदार ने मार डाला। इससे अलस्टर इँगलैंड के हाथ में आ गया।

रानी ने अलस्टर का शासक अर्ल ऑफ़् एसेक्स को नियत किया। उसने वहाँ पर आंग्ल प्रोटेस्टेंटों को बसाया। परंतु इस काम में वह कृतकार्य नहीं हो सका। अलस्टर वहाँ की असली रहनेवाली जाति के ही हाथ में आ गया।

एलिज़बेथ के शत्रुओं ने आयरलैंड को अपना अड्डा बनाना चाहा। फ़िलिप ने सिपाही और पोप ने पादरी आयरलैंड में भेजे। उन्होंने आयरिशों को रानी के विरुद्ध कर दिया। मनस्टर में भयंकर विद्रोह हो गया। इस स्थान में स्कैट्स जैरल्ड का वंश रहा करता था। इनके नेता का नाम अर्ल ऑफ़् डस्मन था। रानी ने मंस्टर प्रांत के साथ बड़ी क्रूरता का व्यवहार किया। उसने उस प्रांत को उजाड़ दिया और वहाँ पर अँगरेज़ों को बसाया। उन्हीं को वहाँ की सारी भूमि बाँट दी। परंतु फिर भी बहुत थोड़े आंग्ल आयरलैंड में गए। जो आंग्ल वहाँ बसने लगे, उनको आयरिशों ने बहुत अधिक सताया। यह उपनिवेश भी वहाँ असफल ही रहा। यह होने पर भी रानी की क्रूरता और भय से बीस बरस तक आयरलैंड में शांति रही अर्थात् आयरिशों ने सिर नहीं उठाया। परंतु उसका परिणाम यह हुआ कि रानी की क्रूरता से तंग आकर आयरिशों ने आपस में एकता बढ़ाना शुरू कर दिया। इस संगठन के कारण १५९८ में आयरलैंड में

फिर विद्रोह हो गया। विद्रोहियों का नेता शान का भतीजा था। अलस्टर और मंस्टर में भी विद्रोह हो गया, क्योंकि मंस्टर में डस्मन पहुँच गया था।

इस विद्रोह का दमन करने के लिये रानी ने अर्ल ऑफ़ एसेक्स को भेजा। यह योग्य पुरुष नहीं था । इसलिये विद्रोह के दमन में इसको सफलता नहीं प्राप्त हुई। यह रानी की आज्ञा के बिना ही इँगलैंड को लौट गया। रानी को इसने अपने ख़ूनी कपड़े दिखाए और अपनी कठिनाइयों व कष्टों का वर्णन किया। सब सुनने के बाद रानी ने इसे क़ैद कर दिया और फिर कुछ दिनों के बाद छोड़ भी दिया।

अवधि समाप्त होने पर रानी ने इसे शराब का एकाधिकार नहीं दिया, इस पर इसने विद्रोह करने का यत्न किया। परंतु किसी भी आंग्ल ने इसका साथ नहीं दिया।

रानी ने एसेक्स के बाद लॉर्ड माउंटज्वाय (Lord Mountjoy) को आयरलैंड भेजा। इसने अपनी शक्ति और निर्दयता से विद्रोह को शांत कर दिया। ओनील्ज़ ने चिरकाल तक अलस्टर में आंग्लों का विरोध किया। परंतु रानी की मृत्यु से पहले उनको भी इँगलैंड की अधीनता माननी पड़ी। लॉर्ड माउंटज्वाय की निर्दयता ने आयरिशों के हृदयों को घायल कर दिया। उन्होंने आंग्लों से घृणा करना शुरू किया और अपने को उनके पंजे से निकालना चाहा।

(५) एलिज़बेथ के अंतिम दिन

आयरलैंड-विजय के उपरांत स्कॉटलैंड और वेल्स को अपने साथ मिलाने की ओर आंग्ल जनता का ध्यान गया। विलियम मार्गन ने वेल्श-भाषा में बाइबिल का अनुवाद किया। इससे वेल्स में भी इँगलैंड का प्रोटेस्टेंट मत ही फैलने लगा। स्कॉटलैंड पहले से ही प्रोटेस्टेंट था। अतः इन धार्मिक युद्धों के दिनों में स्वाभाविक रूप से ही आंग्लों से स्कॉच लोगों की मित्रता हो गई। एलिज़-बेथ की मृत्यु होने पर लोग स्कॉच राजा जेम्ज़ को हो इँगलैंड का भी राजा बनाने के लिये उद्यत हो गए।

सेसिल एसेक्स और रैले—स्पेन-विजय के बाद आंग्लों की समृद्धि दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ने लगी। आयरलैंड जीता जा चुका था। पोप और जेसुइट लोगों का कुछ भी भय न था। इँगलैंड समुद्र का स्वामी था। यही कारण है कि हंसो के समान ही उसने भी योरप के व्यापार को अपने हाथ में करने का यत्न किया।

एलिज़बेथ बुड्ढी हो गई थी। उसके मित्र और बंधु भी जीवित न थे। ऐसी दशा में शोक के कारण वह एकांत में ही रहना पसंद करती थी। १५९८ में बर्घले मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसने अपने पुत्र सर राबर्ट सेसिल को सब राज-काज सौंप दिया। एसेक्स और रैले ने स्पेन से युद्ध जारी रखने का यत्न किया। मगर राबर्ट सेसिल ने

बुद्धिमानी से इस काम को नहीं किया। बुढ़ापे के दिनों में एसेक्स से रानी नाराज़ हो गई थी। रानी ने उसे मरवा डाला। इससे भी रानी को बड़ा धक्का पहुँचा।

बुढ़ापे के दिनों में प्रजा से रानी का व्यवहार कठोर और क्रूर हो गया था। विट्गिफ़्ट ने प्यूरिटन लोगों को व्यर्थ ही सताना शुरू किया। रोमन कैथोलिकों पर भी किसी तरह की दया नहीं की गई। कारागार अपराधियों से भर गए थे।

एलिज़बेथ और पार्लियामेंट—रानी के राज्य-काल में लोक-सभा ने फिर शक्ति प्राप्त करना आरंभ किया। इसका मुख्य कारण यही था कि लोक-सभा के सभ्य धर्म के जोशीले और सुधारों के पक्षपाती थे। कैथोलिकों को तंग करने के लिये लोक-सभा ने रानी को धन की बहुत ही अधिक सहायता पहुँचाई। निम्न-लिखित बातों के लिये लोक-सभा ने रानी को तंग भी बहुत ज़्यादा किया। वे बातें ये हैं—

(क) विवाह करने के लिये।

(ख) प्यूरिटन लोगों को अधिकाधिक अधिकार देने के लिये।

(ग) विदेशों में रहनेवाली प्रोटेस्टेंट जातियों को सहायता देने के लिये।

रानी इन तीनों बातों से घबराती थी। इसीलिये

उसने लोक-सभा के बहुत कम अधिवेशन किए। ४५ वर्षों में केवल १३ बार लोक-सभा के अधिवेशन हुए। सभा को वश में रखने के लिये रानी ने कुछ नए-नए बरों को भी प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया। वह उन बरों से अपनी इच्छा के अनुकूल ही प्रतिनिधि चुनवाती थी। महामंत्री भी लोक-सभा का सभ्य था, इसलिये वह लोक-सभा को रानी के अनुकूल रखता था। जो सभ्य कुछ स्वतंत्रता प्रकट करते थे, उन्हें रानी क़ैद करवा देती थी।

१५९७ में लोक-सभा ने रानी से प्रार्थना की कि वह एकाधिकारों को हटा दे। इन एकाधिकारों से चीज़ों के दाम बहुत अधिक चढ़ गए थे। ऊपर लिखी हुई प्रार्थना पर रानी ने ध्यान नहीं दिया। १६०३ की लोक-सभा ने एकाधिकारों की सूची पढ़ी। एक सभ्य ने पूछा कि "इन एकाधिकारों में क्या रोटी का बेचना शामिल नहीं है? अगर इसका कुछ प्रतिकार नहीं किया गया, तो इसका भी एकाधिकार हो जायगा।"

सभ्यों के शोर मचाने पर रानी ने एकाधिकारों को हटाना मंजूर कर लिया। इस पर सभा ने रानी को धन्यवाद दिया। १६०३ के मार्च की २४ ता० को रानी की मृत्यु हुई।

सन्	मुख्य घटनाएँ
१५८८	स्पेनी आर्मडा का पराजय

१५६१	रैवन्ज़ का युद्ध
१५९६	कैडिज़ की विजय
१५९७	एकाधिकारों के विषय में लोक-सभा का रानी से पहला झगड़ा
१५९८	आयरलैंड का विद्रोह
१६०१	एकाधिकारों के विषय में लोक-सभा का रानी से दूसरा झगड़ा
१६०३	एलिज़बेथ की मृत्यु

नवम परिच्छेद

ट्यूडर-काल में इँगलैंड की सभ्यता

(१) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

ट्यूडर-काल में ही इँगलैंड मध्ययुग (Middle Age) से नवीन युग में प्रवेश करता है। सब तरफ़ परिवर्तन-ही-परिवर्तन हुआ। विद्या-विचार ने नवीन रूप प्राप्त किया और धर्म में भी नए ढंग का परिवर्तन आ गया। एलिज़बेथ ने इँगलैंड में अपनी धार्मिक सहिष्णुता (Religious Tolaration) का प्रचार किया। इँगलैंड को उसने एक ऊँचे स्थान पर पहुँचा दिया। उसी के राज्य में विद्या तथा विचार ने स्थिर उन्नति प्राप्त की और पुराने इँगलैंड को नया इँगलैंड बना दिया।

ट्यूडर-एकतंत्र राज्य—ट्यूडर राजों ने इँगलैंड की शासन-पद्धति को स्थिर रूप दे दिया। उन्होंने प्रजा को प्रसन्न करके अपनी योग्यता से स्वेच्छाचारी राजा का रूप धारण किया। उनके स्वेच्छाचार से इँगलैंड को अच्छी तरह मालूम पड़ गया कि उसकी शासन-पद्धति में कहाँ क्या दोष है। इसका मुख्य कारण यह था कि ट्यूडर राजों ने आंग्ल शासन-पद्धति की धाराओं को नहीं तोड़ा। उन्हों-ने लोक-सभा-से शक्तिशाली एंजिन को अपने क़ाबू में कर लिया और उससे मनमाने ढंग से काम लेना शुरू कर दिया। उनके स्वेच्छाचार का विरोध किया जा सकता था। मगर सवाल तो यही था कि विरोध करता कौन? हैनरी अष्टम ने पुराने चर्च का सत्यानास कर दिया था। उसने बिशपों की शक्ति को भी मिटा दिया था। लॉर्ड लोग फूलों के युद्ध में लड़कर पहले ही ख़तम हो चुके थे। जो लॉर्ड बच गए थे, उनमें भी वह सामर्थ्य न थी, जिससे वे ट्यूडर राजों के स्वेच्छाचार को कम कर सकते।

यह सब होने पर भी ट्यूडर राजों का स्वेच्छाचार हैनरी अष्टम के बाद ही समाप्त हो जाता, अगर आंग्ल-सिंहासन पर एलिज़बेथ-सी बुद्धिमती, चतुर और राज-नीति-निपुण स्त्री राज्य करने के लिये न बैठती। एलिज़-बेथ ने आंग्ल-जनता को अपने विरुद्ध उठने का अवसर ही नहीं दिया। वह उसी धर्म को पसंद करती थी, जिस-

के प्रचार के लिये आंग्ल जनता उत्सुक थी। कैथोलिक लोगों के विरोधों और षड्यंत्रों से उसकी शक्ति और भी अधिक बढ़ गई। वह आंग्ल जनता की आँखों का तारा बन गई। उसने स्पेन के आक्रमण से इँगलैंड को बचा दिया। उसको नौशक्ति-संपन्न भी बनाया। इसीसे जनता ने उसको और भी अधिक प्यार करना शुरू किया। ऐसी दशा में रानी अगर लोक-सभा को मनमाने ढंग पर चला सकी, तो उसमें आश्चर्य ही क्या है ?

ट्यूडर राजों के समय में लोक-सभा—अभी लिखा जा चुका है कि ट्यूडर राजों ने लोक-सभा का विरोध नहीं किया। उन्होंने लोक-सभा को अपनी इच्छा के अनुसार चलाया। एलिज़बेथ के राज्य के अंतिम दिनों तक लोक-सभा ने चूँ तक नहीं की। रानी ने जैसा कहा, वैसा ही कर दिया। ट्यूडर-काल में लोक-सभा का पहला रूप नहीं रहा। वह राजा की दासी बन गई। ट्यूडर राजों ने पुराने ज़माने की लॉर्ड-सभा को भी सर्वथा सब तरह से बदल दिया, उसकी उद्दंडता और उच्छृंखलता को बिल्कुल मटिया-मेट करके उसे एक धार्मिक सभा का रूप दे दिया। इसको धर्म-संशोधन की ही अधिक चाह थी। हैनरी अष्टम के समय में लोक-सभा के अंदर धार्मिक पादरियों की संख्या कम हो गई और लॉर्डों की संख्या बढ़ गई। १५३९ में तो बिशपों की संख्या नाममात्र को ही रह

गई। प्राचीन काल में लॉर्ड-सभा के अंदर पुराने घरों के उद्दंड स्वेच्छाचारी बैरन लोग थे। किंतु ट्यूडर-काल में उनमें के वे ही बैरन सभ्य रह गए, जो चर्च संपत्ति को लूटकर अमीर बने थे। इनमें वह वीरता और अभिमान न था, जो हावर्ड, नैविल और पर्सी के घराने के लॉर्डों में था। रसल, कैवांडिश और सैसिल आदि ट्यूडर-काल के लॉर्ड नाममात्र को ही लॉर्ड थे। उनमें शासन और न्याय करने की शक्ति बहुत ही कम थी। राजा की इच्छाओं के अनुसार ही उनको चलना पड़ता था।

हैनरी अष्टम ने लोक-सभा के सभ्यों की संख्या बहुत ही अधिक बढ़ा दी थी। उसने वेल्स, चैशायर तथा अन्य नए-नए बरों के लोगों को भी लोक-सभा में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया था। इससे राजा की शक्ति कुछ वर्षों के लिये बहुत ही अधिक बढ़ गई।

राजा और लोक-सभा—ट्यूडर-काल में राजा और प्रजा का बहुत कम विरोध हुआ। इसका मुख्य कारण यह था कि दोनों ने ही अपने-अपने कामों को समझ लिया था। राजा लोक-सभा के कामों में हस्तक्षेप नहीं करता था और लोक-सभा राजा के काम में विशेष रूप से हस्तक्षेप नहीं करती थी। लोक-सभा का मुख्य काम नए-नए नियमों का बनाना और राज्य-कर लगाना था। राजा का काम उन नियमों पर प्रजा को चलाना और राज्य-

कर एकत्र करना था। इसका परिणाम यह हुआ कि सब तरफ़ राजा की शक्ति बढ़ गई। स्थानीय तथा मुख्य राज्य में राजा का ही दबदबा था। वह जिस प्रकार चाहे, शासन करे। यह राजा पर ही निर्भर था कि कौन-से राज्य-नियमों पर चलने के लिये प्रजा को विशेष रूप से बाधित किया जायगा और कौन-से राज्य-नियमों पर चलने के लिये विशेष रूप से बाधित न किया जायगा। इसी शक्ति के सहारे एलिज़बेथ इँगलैंड में धार्मिक सहिष्णुता की नीति को चला सकी और हैनरी तथा मैरी खून की नदियाँ बहाने में सफल हो सके। परंतु प्रजा ने किसी का भी विरोध नहीं किया; क्योंकि जो कुछ वे करते थे, वह लोक-सभा के नियमों के अनुकूल ही करते थे।

राजा तथा मंत्री—ट्यूडर-काल में राजा लोग आप अपने मंत्री रहे। उन्होंने राज्य की बागडोर पूर्ण रूप से अपने ही हाथ में रक्खी। कहाँ युद्ध करना है और कहाँ नहीं करना है, इसका निश्चय वे ही लोग करते थे। जनता इस मामले में कुछ भी दख़ल नहीं देती थी, और न दे ही सकती थी। यह सब होने पर भी शासन का काम इतना बढ़ चुका था कि उसको प्रत्यक्ष रूप से स्वयं करने में ट्यूडर-राजा लोग असमर्थ थे। यही कारण है कि उन्हों-ने अपनी नीति के अनुकूल मंत्रियों को चुना और देश

के शासन का बहुत कुछ भार उनके ऊपर डाल दिया। मंत्री प्रायः पुराने राजघराने के लोग ही होते थे। वे मौजी होते थे, इसी कारण राजा लोग इन पर अधिक विश्वास नहीं करते थे। वे बहुत सोच-समझकर दो मनुष्यों को चुन लेते और उन्हीं से गुप्त बातों के बारे में सलाह करते थे। एलिज़बेथ के समय में वे दोनों मंत्री राष्ट्र-सचिव (Secretaries of State) के नाम से पुकारे जाते थे। राष्ट्र-सचिव प्रायः साधारण जनता में से ही चुने हुए होते थे। वे अक्सर नीच वंश के ही हुआ करते थे। अपने परिश्रम, बुद्धिमानी और चतुरता से ही वे उक्त उच्च पद पर पहुँच जाते थे। स्वामी का हित ही उनका मुख्य उद्देश होता था। उन्हीं के क्लर्क तथा अधीन शासकों से इँगलैंड के आधुनिक सिविल-सर्विस का उदय समझा जाता है, जिस पर कि आज कल आंग्ल-साम्राज्य का सारा-का-सारा भार है।

सभा (The Council)—विशेष-विशेष अवसरों और कठिनाइयों में राजा अपनी सभा से ही गुप्त मंत्रणा करता था। आज कल राजा की वही गुप्त सभा प्रिवी-कौंसिल (Privy Council) के नाम से प्रसिद्ध है। बहुत पुराने ज़माने में प्रिवी-कौंसिल के स्थान पर कांसिलियम आर्डिनिरियम (Concilium Ardinarium) नाम की सभा ही राजा को सलाह दिया करती थी। यह सभा इस प्रिवी-

कौंसिल से बड़ी होती थी, इसीलिये गुप्त मंत्रणा के काम के लायक़ नहीं थी। ट्यूडर राजों की गुप्त सभा में २० से भी कम सभ्य होते थे। वे भिन्न-भिन्न विचार रखते थे और उनकी योग्यता भी भिन्न-भिन्न हुआ करती थी। ऐसा इसीलिये होता था कि राजा भिन्न-भिन्न मामलों में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों से सलाह ले और उचित निर्णय पर पहुँच सके। ट्यूडर-काल में इस सभा की प्रधानता बहुत बढ़ गई थी। सभा के सभ्यों के लिये दिन-भर काम-ही-काम था। इसी कारण बहुत-से राज-नीतिज्ञ पुरुष ट्यूडर-काल को गुप्त सभा का काल भी कहते हैं। यहाँ पर यह स्मरण रखना चाहिए कि गुप्त सभा के पास किसी प्रकार की भी शक्ति न थी। उस-का मुख्य काम राजा या रानी को सलाह देना ही था। किंतु यह राजा या रानी पर ही निर्भर था कि वे कहाँ तक उनकी सलाह के माफ़िक़ काम करें।

राजा की इच्छा के अनुसार कार्य और प्रबंध करना भी इसी सभा का कार्य था। सारांश यह कि ट्यूडर-काल में इँगलैंड की मुख्य शासक-सभा गुप्त सभा ही थी। गुप्त सभा समय-समय पर राजा की आज्ञाओं को प्रजा के आगे प्रकट करती थी। उन आज्ञाओं को एक प्रकार से नवीन राज्य-नियम कहें, तो कुछ अनुचित न होगा। कभी-कभी लोक-सभा इन आज्ञाओं से चिढ़ भी जाती थी,

क्योंकि नए-नए राज्य-नियमों का बनाना लोक-सभा का काम था। अक्सर ऐसा भी होता था कि गुप्त सभा अपने कार्यों से लोक-सभा के अधिकारों पर भी हस्तक्षेप करती थी।

स्टार-चैंबर तथा स्थानीय सभाएँ (Star Chamber and the local Councils)—ट्यूडर राजा लोग बड़े-बड़े अपराधियों का न्याय-निर्णय एक सभा के द्वारा किया करते थे। इस सभा में बड़े-बड़े जज तथा राज्याधिकारी आते थे। सभा-भवन की छत में तारों के चित्र थे, इसी से इस सभा का नाम स्टार-चैंबर अर्थात् तारक-न्यायालय था। ट्यूडर-समय में शांति तथा राज्य-नियम की स्थापना में इस सभा ने बड़ा भारी भाग लिया। यही सभा बड़े-बड़े राजद्रोहियों का निर्णय करती थी। स्टार-चैंबर के समान ही भिन्न-भिन्न ज़िलों में राजकीय न्यायालय स्थापित किए गए थे। यार्क नगर में उत्तरी न्यायालय (Council of the North) और लड्लो में वेल्स-न्यायालय (Council of Wales) बहुत अच्छी तरह से अपना काम करते रहे। इन सभाओं में पादरियों का निर्णय नहीं होता था। इसीलिये एलिज़बेथ ने हाई कमीशन-न्यायालय (Council of High Commission) स्थापित किया और उसी में पादरियों के अपराधों का फ़ैसला करना शुरू किया। पादरी लोग हाई कमीशन-न्यायालय के कट्टर शत्रु बन गए। वे इस सभा को अपनी स्वतंत्रता

का नाश करनेवाली समझते थे । स्टीवार्ट राजों के समय में स्टार-चेंबर और उत्तरी न्यायालय ही लोगों पर अत्याचार के काम करेंगे और राजों के स्वेच्छाचार व अत्याचार के पूर्ण साधन बनेंगे । इसलिये इनके भाग्य का निर्णय स्टीवार्ट-काल में ही होगा । यहाँ पर हमको यही लिखना है कि ट्यूडर-काल में उल्लिखित सब न्यायालय बहुत अच्छी तरह से अपना काम करते थे । शांति और नियम की स्थापना करने में इन्होंने बहुत कुछ किया । इसमें कुछ संदेह नहीं कि इन न्यायालयों के कारण भी ट्यूडर राजों का स्वेच्छाचार पूरी तरह से बढ़ा और प्रजा उस स्वेच्छाचार को रोक नहीं सकी ।

स्थानीय राज्य—ग्रामों का प्रबंध ग्रामीणों के ही हाथ में था । ट्यूडर-काल में प्राचीन ग्राम-सभाएँ सर्वथा हीनबल हो चुकी थीं, परंतु फिर भी राजा ने बहुत-से लोगों को यह अधिकार दे रक्खा था कि छोटे-छोटे झगड़ों का फ़ैसला वे खुद कर लिया करें । प्रबंध तथा निर्णय का काम ग्रामीणों के हाथ में होने से ग्राम-वासियों को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा । वे शासन, न्याय और राज्य-नियम को कुछ-कुछ समझने लगे । स्टीवार्ट राजों के प्रति जब विद्रोह हुआ, तब इन ग्रामीणों ने लोक-सभा को बहुत ही अधिक सहायता पहुँचाई । यह स्थानीय स्वराज्य का ही परिणाम था ।

राजा के सिपाही—ट्यूडर-राजों ने सिपाहियों की सहायता के बिना ही स्वेच्छापूर्वक देश का शासन किया। उस ज़माने में इँगलैंड के अंदर स्थायी सेना नहीं थी। कुछ इने-गिने चुने हुए सिपाही होते थे, जो राजा के शरीर-रक्षक के तौर पर काम करते थे। कुछ थोड़ी-सी और आंग्ल-सेना भी थी, जो कैले, बार्विक तथा अन्य आवश्यक दुर्गों की रक्षा करती थी। हैनरी अष्टम ने अपने अंतिम दिनों में विदेशी सेना को अपने यहाँ रक्खा था। उसकी मृत्यु होने पर वह सेना इँगलैंड से हटा दी गई।

इँगलैंड में यह राज्य-नियम था कि देश पर कोई विपत्ति पड़ते ही हरएक आंग्ल को सैनिक के तौर पर काम करना पड़ता था। एडवर्ड षष्ठ तथा मैरी के बाद इन सैनिकों का स्थिर रूप से एक सेनापति नियुक्त किया जाता था, जिसे लॉर्ड लेफ़्टिनेंट कहते थे। लॉर्ड लेफ़्टिनेंट के नीचे डिपुटी लेफ़्टिनेंट होता था, जो ग्रामीण न्यायाधीशों के समान ग्रामीण सेनापति का काम करता था। सारांश यह कि न्याय के समान ही सैनिक प्रबंध में भी ग्राम-वासियों का यथेष्ट भाग था।

ट्यूडर राजे इँगलैंड को नौ-शक्ति बनाना चाहते थे। उन्होंने जहाज़ों को बड़ा और अच्छा बनाने का यत्न किया। स्पेनिश आर्मडा के आक्रमण के समय तक इग-

लैंड के पास बहुत जहाज़ नहीं थे। यही कारण है कि राज्य को उस युद्ध में व्यापारी जहाज़ों से बहुत अधिक सहायता लेनी पड़ी।

(२) इँगलैंड की सामाजिक दशा

विद्या और विचारों की उन्नति के साथ-साथ लोगों की सामाजिक उन्नति भी हुई। विहारों, मठों तथा चर्चों की संपत्ति लुटने से इँगलैंड की सामाजिक दशा में क्रांति आ गई। ग़रीब आदमियों को चर्च के दान और अन्न का सहारा था। चर्च की संपत्ति नष्ट होने से वे लोग अन्न-पानी के लिये निःसहाय हो गए। लोगों में भेद-भाव पहले की ही तरह बना रहा। ग्राम-वासियों का आचार-व्यवहार साधारण आंग्लों से भिन्न था। व्यापारी लोग दिन-दिन अमीर होते जाते थे। वकीलों और डॉक्टरों ने ख़ूब धन कमाना शुरू किया। समाज में इन लोगों की स्थिति भी बहुत ही ऊँची थी। हेनरी अष्टम के डॉक्टरी कॉलेजों (Colleges of Phygicians and Surgeons) ने अच्छी उन्नति की। लोग अपने लड़कों को डॉक्टर बनाने के लिये ख़ुशी से हर समय तैयार रहते थे। इसी कारण इन कॉलेजों में विद्यार्थियों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही चली गई। इस पर अभी प्रकाश डाला ही जा चुका है कि व्यापार दिनों-दिन उन्नत हो रहा था। व्यापार की उन्नति से व्यापारियों की समृद्धि

का कुछ ठिकाना नहीं रहा। समृद्धि के कारण उनको राजनीतिक अधिकार अधिकाधिक प्राप्त हो गए। आंग्ल-जनता उनको मान्य-दृष्टि से देखने लगी।

एलिज़बेथ खुद भी व्यापार से लाभ उठाती थी। ड्रेक ने जो लूटें की थीं, उनमें उसका भी हिस्सा था। ज़मीनों की क़ीमत दिन-ब-दिन चढ़ रही थी। ज़मीनें ख़रीदने में लोग बहुत ही अधिक लाग-डाँट करते थे। उसे पूँजी लगाने का एक बहुत अच्छा स्थान समझा जाता था। देश में बेकारी पहले की अपेक्षा बहुत ही कम हो गई। भिखमंगों ने भीख माँगने का पेशा छोड़कर काम करना शुरू कर दिया। ज़मीनों पर गेहूँ की खेती की जाने लगी। देश की आबादी पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई। लोगों ने योरपियन राष्ट्रों से काश्तकारी का काम सीखा और भूमि पर नई-नई चीज़ें बोना शुरू किया। आयरलैंड में प्रवासियों और रोज़गारियों की संख्या दिन-दिन बढ़ने लगी। कारण, वहाँ पर लोगों को धन लगाने का अच्छा मौक़ा था। इसका परिणाम यह हुआ कि आयरलैंड में किसानों और रोज़गारियों ने खूब धन कमाया। एलिज़बेथ की मृत्यु से पहले आयरलैंड में आलुओं की खेती शुरू हो गई थी।

ग्रामीणों और नागरिकों के परस्पर मिलने से पुरानी गिल्ड की प्रथा टूटने लगी। कारीगर लोगों ने रुपए पाकर

ज़मीनों को ख़रीदा और कारीगरी का काम छोड़ दिया। अशिक्षित ग्रामीण लोग कारीगरी के कामों को बड़ी तेज़ी से करने लगे। इससे इँगलैंड में उच्च कोटि की कारीगरी का नाश होने लगा। उसे रोकने के लिये रानी ने १५६३ का प्रसिद्ध राज्य-नियम (Act of Apprentices) पास किया। इसके अनुसार उन सब लोगों को व्यापार-व्यवसाय के काम करने से रोक दिया गया, जिन्होंने सात साल तक गिल्डों के नीचे काम न सीखा हो।

इस समृद्धि तथा उन्नति के साथ-साथ छोटे पादरियों की समृद्धि और उन्नति सदा के लिये रुक गई। चर्चों की संपत्ति लुट जाने से अपने परिवार का पालन करना भी उनके लिये कठिन हो गया। कवि ने ठीक कहा है—
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

दरिद्र-संरक्षण-नियम (Poor Law)—१५६३ में ही रानी ने उन ग़रीबों की रक्षा के लिये उपाय किया। उसने १६०१ में दरिद्र-संरक्षक नियमों को पास कराया। इन नियमों के अनुसार हरएक पैरिश में एक-एक निरीक्षक नियत किया गया, जिसका मुख्य काम जनता पर राज्य-कर लगाना था। इस राज्य-कर के द्वारा दरिद्र लोगों को सहायता पहुँचाई जाती थी—उनको खाना-पीना और कपड़ा आदि बाँटा जाता था। १८३४ तक इसी प्रकार दरिद्र लोगों की रक्षा की जाती रही। १८३४

के बाद नए नियम बनाए गए, जिनसे दरिद्रों की दशा और भी सुधारी गई।

भोग-विलास की वृद्धि—इँगलैंड की आर्थिक उन्नति का सबसे बड़ा चिह्न यह भी था कि ट्यूडर-काल में लोगों की रहन-सहन बहुत ही अधिक उन्नत हो गई। प्राचीन काल में ग़रीब लोगों के पास खाने-पीने को काफ़ी था। अमीर, ताल्लुक़ेदार, लॉर्ड लोग, नोब्ल और ड्यूक लोग ही भोग-विलास का जीवन व्यतीत करते थे। किंतु ट्यूडर-काल में साधारण लोगों को भी भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने का अवसर मिला। लोगों के मकान पहले की अपेक्षा बहुत ही अच्छे बन गए। घरों में धुआँ बाहर निकालने के लिये वेंटिलेशन और चिमनियों का प्रयोग किया जाने लगा। लोग चिमचे-काँटे से भोजन करने लगे। उँगलियों के सहारे भोजन करना दिन-ब-दिन छूटने लगा। अमेरिका का पता लगने के बाद तमाखू पीना भी इँगलैंड में बढ़ गया। आंग्ल लोग इतना मांस खाते थे कि उसे रोकने के लिये शुक्रवार को मांस खाना राज्य ने बंद कर दिया। कपड़ों का तो कहना ही क्या है? उन दिनों लंबे-लंबे कालर लगाने का आम-फ़ैशन था। कपड़े बहुत ही लंबे-चौड़े होते थे।

(३) साहित्यिक दशा

ट्यूडर-काल में इँगलैंड में शिक्षा की बहुत ही अधिक

उन्नति हो गई। पुराने धर्मवालों की जो पाठशालाएँ तोड़ी गईं, उनकी जगह पर नए-नए कॉलेज और स्कूल खोल दिए गए। हरएक सभ्य नागरिक के लिये कुछ-न-कुछ विद्या पढ़ना आवश्यक हो गया। योरप का विद्या-पीठ इटली था। जो आंग्ल विद्या-प्रेमी होते थे, वे इटली अवश्य जाते थे। पुराने ढर्रे के लोगों का विश्वास था कि विदेश में जाने से लोगों की फ़िज़ूल-ख़र्ची बढ़ जाती है और वे लोग स्वतंत्र विचार के हो जाते हैं। यह सब होने पर भी लोग दिन-दिन अधिक संख्या में विदेश को जाने लगे। सामुद्रिक पुलिस के स्थापित होने से यात्रियों को लूट-मार का भय बहुत ही कम हो गया। इँगलैंड में पक्की सड़कें बन गई थीं। लोग एक जगह से दूसरी जगह बग्गियों में आने-जाने लगे। ट्यूडर-काल में भी पहले ही की तरह घोड़े की सवारी का फ़ैशन मौजूद था। लोग घोड़े पर चढ़कर इधर-उधर जाना बहुत ही अधिक पसंद करते थे।

ट्यूडर-काल में गृह-निर्माण की विद्या में भी ख़ूब तरक़्क़ी हुई। चर्चों में गान-विद्या की अच्छी उन्नति हो रही थी। काव्य और साहित्य की उन्नति की ओर लोगों की रुचि दिन-दिन बढ़ती जाती थी। चित्रों के बनाने में अभी तक आंग्ल लोग बहुत पीछे थे। हैनरी अष्टम ने आंग्ल-चित्रकारों को पेंशनें देना शुरू किया। उसके

समय में इँगलैंड के अंदर अच्छे-अच्छे चित्रों के बनाने का काम विदेशी चित्रकार ही करते थे। दृष्टांत के तौर पर हैनरी अष्टम के राज्य में निम्न-लिखित विदेशी शिल्प-कार और चित्रकार थे—

(१) इटैलियन शिल्पकार, टारिगिएनो (Tarigiano)
(२) जर्मन चित्रकार, हालबिन (Halbein)

एलिज़बेथ से पहले आंग्ल-साहित्य की उन्नति बहुत कुछ रुक चुकी थी। हैनरी अष्टम के समय में प्रेस ने कुछ-कुछ उन्नति की और मूर ने युटोपिया (Utopia) नाम की पुस्तक लिखकर अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त की। एलिज़बेथ के राज्य-काल में आंग्ल साहित्य ने अपूर्व उन्नति की। रानी के समय में निम्न-लिखित लेखकों ने अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त की—

(१) एडमंड स्पेंसर
(२) शेक्सपियर (इँगलैंड का कालिदास)
(३) जेम्ज़ बर्बेज़ (सबसे प्रसिद्ध नट)
(४) क्रिस्टोफ़र मार्लो (नाटक-लेखक)
(५) रिचर्ड हुकर (गद्य-लेखक)
(६) सर फ़्रांसिस बेकन (निबंध-लेखक)
(७) हालिंशड (राज-वृत्तांत-लेखक)
(८) हाक्लिट (Haclayt—यात्रा-वृत्तांत-लेखक)

---

(४) ट्यूडर राजों का वंश-वृक्ष

एडवर्ड तृतीय
|
घेंट का जॉन
+ स्मीस्लिनफ़ोर्ड की कैथराइन्

ओवन+स्त्री, फ़्रांस की कैथराइन्
ट्यूडर | चार्ल्स षष्ठ की लड़की और हैनरी पंचम की विधवा स्त्री

जॉन ब्यूफ़र्ट सोमर्सेट् का अर्ल

(२) (१)

जास्पर ट्यूडर बैड्फ़ोर्ड का अर्ल

एडमंड ट्यूडर रिचमंड का अर्ल + स्त्री, मार्गरट् ब्यूफ़र्ट

|
हैनरी सप्तम १४८५–१५०६ + स्त्री, यार्क की एलिज़बेथ

|

हैनरी अष्टम १५०६-१५४७

आर्थर प्रिंस ऑफ़् वेल्ज़ मृ० १५०२

मार्गरट् स्त्री, (१) जेम्ज़ चतुर्थ स्टीवार्ट (स्काट्लैंड का राजा) (२) अंगस का अर्ल।

मैरी स्त्री, (१) फ़्रांस के सम्राट् लुइस १२वें की (२) सफ़ोक के ड्यूक चार्ल्स कांडन

एडवर्ड षष्ठ १५४७ १५५३

मैरी १५५३ १५५८

एलिज़बेथ १५५८ १६०३

*

फ़्रांसिस, स्त्री, हैनरी ग्रे सफ़ोक का ड्यूक
†

*

(१) जेम्ज़ पंचम स्कॉटलैंड का राजा
|
कामज पुत्र मोरे का अर्ल जेम्ज़ स्टीवार्ट
|
स्काटलैंड की रानी मैरी +
|
जेम्ज़ षष्ठ (स्काट्लैंड का राजा) या जेम्ज़ प्रथम (इँगलैंड का राजा)

(२) मार्गरट् स्त्री, लीनाक्स का अर्ल
|
हैनरी स्टीवार्ट स्त्री + डर्नले का अर्ल

†

लेडी जेन ग्रे, स्त्री, लार्ड गिल्फ़र्ड डड्ले

लेडी कैथराइन् ग्रे
|
लार्ड ब्यूकैंप
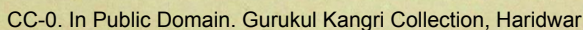
"माधुरी"

[हिंदी की सबसे बढ़िया मासिक पत्रिका]

संपादक—

हिंदी के लब्ध-प्रतिष्ठ सुलेखक और सुकवि

पं० दुलारेलाल भार्गव

(संपादक गंगा-पुस्तकमाला, महिला-माला, बाल-विनोद-वाटिका और भार्गव-पत्रिका)

और

पं० रूपनारायण पांडेय, कवि-रत्न

(भूतपूर्व संपादक नागरी-प्रचारक, निगमागम-चंद्रिका, कान्यकुब्ज आदि)

वार्षिक मूल्य ६॥), छमाही का ३॥) नमूने की कापी ।॥)

सभी प्रसिद्ध-प्रसिद्ध हिंदी-लेखक इस पत्रिका में लिखते हैं। पृष्ठ-संख्या १०४, दो रंगीन और २५ सादे चित्र। छपाई-सफ़ाई अद्वितीय।

माधुरी पर कुछ सम्मतियाँ

१. आपकी माधुरी हिंदी-साहित्य के लिये वास्तव में माधुरी ही है। (राय बहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा)

२. यह पत्रिका हिंदी की सब पत्रिकाओं से अच्छी है।

(ला० कन्नोमल एम्० ए०)

३. सचमुच यह पत्रिका उच्च कोटि की है।

(पं० श्रीधर पाठक)

४. सर्वांग-सुंदरी माधुरी से आपने हिंदी की एक बहुत बड़ी घटी पूरी की है। (ला० सीताराम बी० ए०)

५. मेरे विचार से माधुरी अनन्वयालंकार का उदाहरण है। (पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०)

६. पत्रिका अद्वितीय है। (पं० कामताप्रसाद गुरु)

७. बंगला के भारतवर्ष के टक्कर की हिंदी में यही पत्रिका है। (मिश्र-बंधु)

८. माधुरी ने सचमुच Hindi Journalism के सब Previous Records को beat down कर दिया है। (पं ईश्वरीप्रसाद शर्मा)

९. अब इतने दिनों के बाद हिंदी में एक पत्रिका का जन्म हुआ है, जो उसके शान और गौरव को प्रकट करती है। (श्रीप्रेमचंद)

संचालक

गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ